अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद

- उद्देश् -
समाज संगठन, धार्मिक शिक्षा प्रचार
समाज सुधार, आर्थिक विकास

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक

# शाश्वत धर्म

## बागरा नगरे श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनालय शताब्दी महामहोत्सव महाशतकोत्सव विशेषांक

Received
18/9/16

3007

(छपते-छपते)

प्रदेश शासन द्वारा राज्य योजना आयोग का उपाध्यक्ष (केबिनेट मंत्री दर्जा प्राप्त) नियुक्त किए जाने के बाद विधायक चेतन्य काश्यप ने जयंतसेनधाम पहुंचकर राष्ट्रसंत गच्छाधिपति श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. से आशीर्वाद लिया। गुरुदेव ने गरीबों का खूब कल्याण करने का आशीष दिया।

32506

# अहिंसा ग्राम

गरीबी से मुक्ति - विकास की युक्ति

## गरीबी उन्मुलन हेतु समन्वित आवासीय परिसर

**१०० गरीब परिवारों को निःशुल्क आवास, स्वास्थ्य, शिक्षा, आजीविका व संस्कार का रतलाम (म.प्र.) में गरीबी-मुक्ति का आदर्श प्रकल्प**

### आवास

१०० आवास : २ कमरे
(१०' X १०' एवं १०' X ६')
रसोई, स्नानागार व शौचालय ।

### स्वास्थ्य

प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र
नियमित चिकित्सा शिविर एवं
शासकीय योजना का क्रियान्वन ।

### शिक्षा

बच्चों की शिक्षा हेतु
निकटतम विद्यालय से
सम्बद्धता ।

### आजीविका

१५०० फीट का सभागार : महिलाओं द्वारा पापड़, सिलाई, क्रोशिया, एम्ब्रायडी, बाइंडिंग आदि का निर्माण । व्यक्तिगत योग्यताओं में गुणवत्ता एवं कार्यक्षमता विकास का प्रशिक्षण ।

### संस्कार

योग-प्राणायाम, ध्यान और सद्संकल्पों द्वारा शारीरिक, मानसिक व शाकाहारी अहिंसक जीवनशैली का विकास। सभी धर्मों के प्रमुख त्यौहारों पर सामुहिक प्रार्थना सभाएं।

## जीवन - विज्ञान

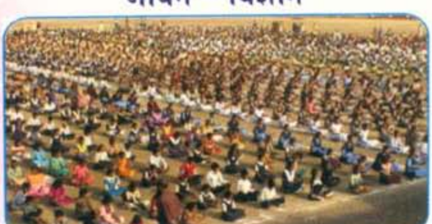

नैतिक एवं मूल्यपरक योग शिक्षा का कार्यक्रम -
मंदसौर, नीमच व रतलाम
जिलों में १२००० शिक्षक प्रशिक्षित ।

## काश्यप विद्यापीठ

चेतन्य ग्राम बदनावर में CBSE अंग्रेजी हाईस्कूल -
क्म्प्यूटर, संगीत एवं नृत्य, योग, खेल तथा
जीवन विज्ञान जैसे पाठ्यक्रम ।

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक

# शाश्वत धर्म

सितम्बर-2016 संस्थापक-श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. हिन्दी मासिक

संस्थापक :
**स्व. गुरुदेव श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.**

दिशा निर्देशक :
**पू. राष्ट्र संत जैनाचार्य श्रीमद्
विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा.**

सम्पादक :
**सुरेन्द्र लोढ़ा**
E-mail : shaswatdharmajain@yahoo.in

कार्यालय :
**शाश्वत धर्म**
ठि. गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग
धानमंडी, मंदसौर (म.प्र.)458002

शाश्वत वर्ष 64 अंक 9
वीर सं.2541 राजेन्द्र सं.109 विक्रम सं. 2072

| | | |
|---|---|---|
| इस अंक का मूल्य | - | 15रु. |
| एक वर्ष का शुल्क | - | 150रु. |
| पांच वर्ष का शुल्क | - | 600रु. |
| दस वर्ष का शुल्क | - | 1100रु. |



## शाश्वत धर्म संचालन समिति

| | |
|---|---|
| श्री शांतिलाल रामानी | (संयोजक) |
| श्री रमेशभाई धरू | (परिषद अध्यक्ष) |
| श्री सुरेन्द्र लोढ़ा | (सम्पादक) |
| श्री अशोक श्रीश्रीमाल | (महामंत्री) |
| श्री. ओ.सी जैन | (न्यासी) |
| श्री विनोद संघवी | (न्यासी) |



भारत सरकार का पंजीयन क्र. 13067/57
स्वामी अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के लिए **सुरेन्द्र लोढ़ा**, गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग, धानमण्डी, मंदसौर द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।
मुद्रक -छाजेड़ प्रिन्टरी प्रा.लि., रतलाम


## बागरा नगर शताब्दी उत्सव गीत

(जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.)

बागरा मंडन नाथ निरंजन पारस मेरा रे,
मैं सेवक तेरा रे ...01 ।।

शताब्दि उत्सव देखो मंडा, बाजे बेण्ड-शहनाई रे,
संगीत स्वर लहरी है माधुरी, ढोल नगारा गेरा रे...
मैं सेवक तेरा रे ...02 ।।

नगर सजाया नववधू जैसा, तोरण द्वार अनेक रे,
भाव भक्ति से प्रभु गुण गाये, भाव अनेरा रे...
मैं सेवक तेरा रे ...03 ।।

वामा नन्दन वन्दन करले, जय-जय मंगलकारी रे,
शताब्दि उत्सव देख हृदय में, सुखद सवेरा रे...
मैं सेवक तेरा रे ...04 ।।

आचार्य धनचन्द्रसूरिजी, हस्ते हुयी प्रतिष्ठा रे...
सौ बरस का उत्सव भारी, भार धणेरा रे...
मैं सेवक तेरा रे ...05 ।।

सूरि राजेन्द्र की परम कृपा से, आया योग सवाया रे,
जयन्तसेन सूरि निश्रा पाकर, आनन्द का डेरा रे....
मैं सेवक तेरा रे ...06 ।।

संचालक- अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद्

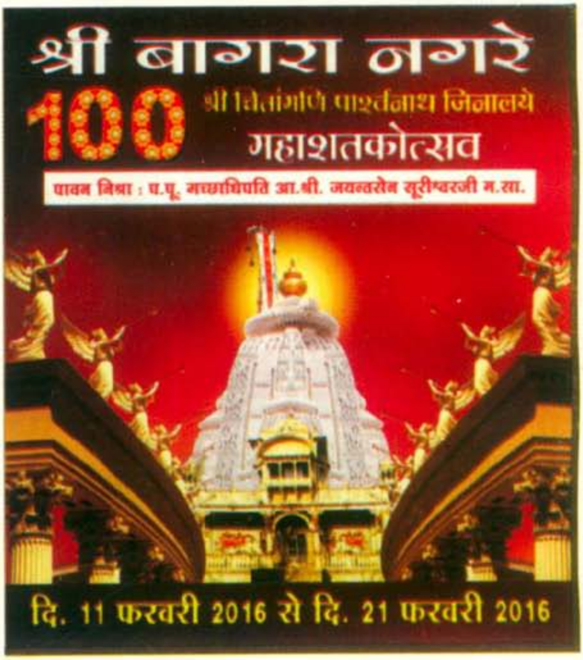
श्री बागरा नगरे
100
श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनालये
महाशतकोत्सव
पावन निश्रा : प.पू. गच्छाधिपति आ.श्री. जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.
दि. 11 फरवरी 2016 से दि. 21 फरवरी 2016

# बागरा नगराधिपति, बागरा के महाराजा
# श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवान

श्री सौधर्मवृहत् तपोगच्छीय

हितस्वी पाट परम्परा

यशस्वी पाट परम्परा

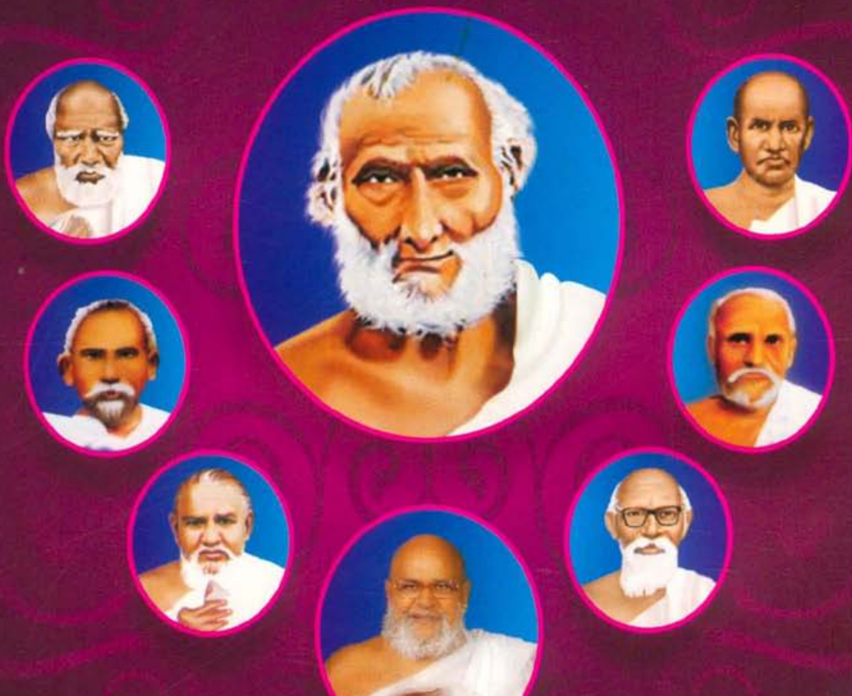

सूरि राजेन्द्र–धनचन्द्र–भूपेन्द्रजी–यतीन्द्रसूरि गुणवन्ता रे
विद्याचन्द्र सूरि गणधारी–जयन्तसेन जयवन्ता रे

# गुरू परम्परा को भावपूर्वक वंदना

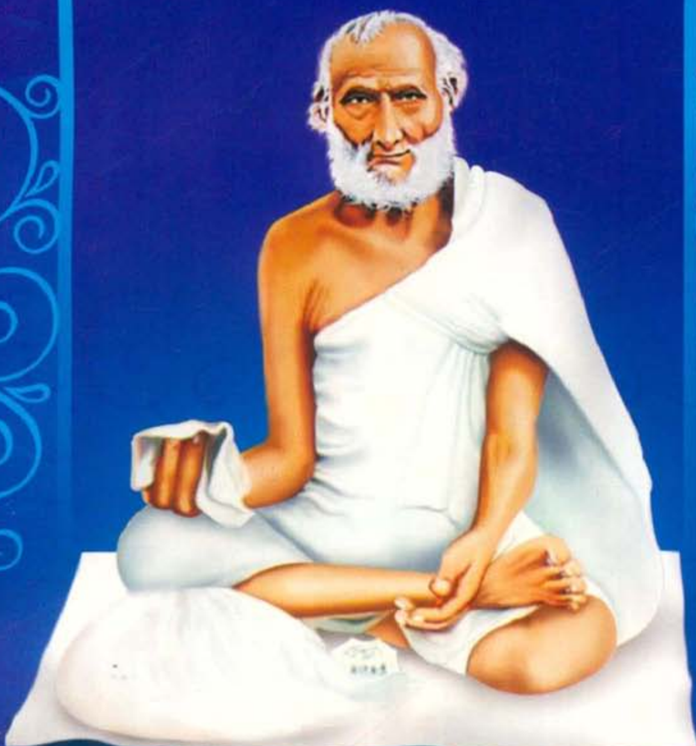

विश्व पूज्य, स्मरणीय, अभिधान राजेन्द्र कोष निर्माता, दादा गुरूदेव

**आचार्य देव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.**

**अतिविशेष : बागरा नगराधिपति श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवान की अंजनशलाका श्री सियाणा नगर में वि. सं. 1958 माह शुक्ला 13 को पूज्य गुरुदेव श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के वरद हस्ते हुई थी, जो हमारे लिए अति गौरवपूर्ण है ।**

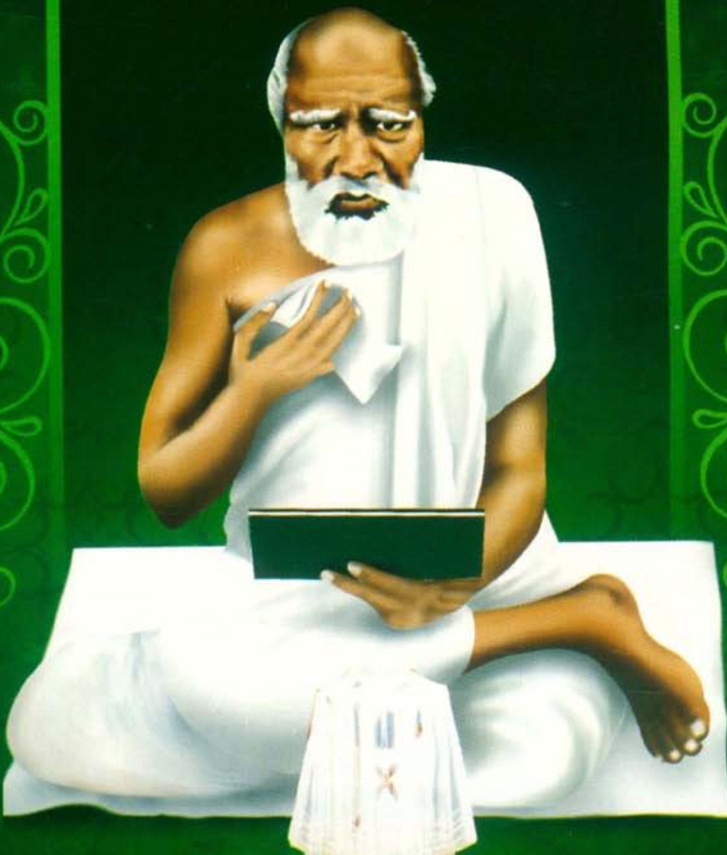

चर्चा चक्रवर्ती, चारित्र चुडामणि परम विद्वान, प.पू. आचार्य देवेश

श्रीमद् विजय धनचन्द्र सूरीश्वरजी म.सा.

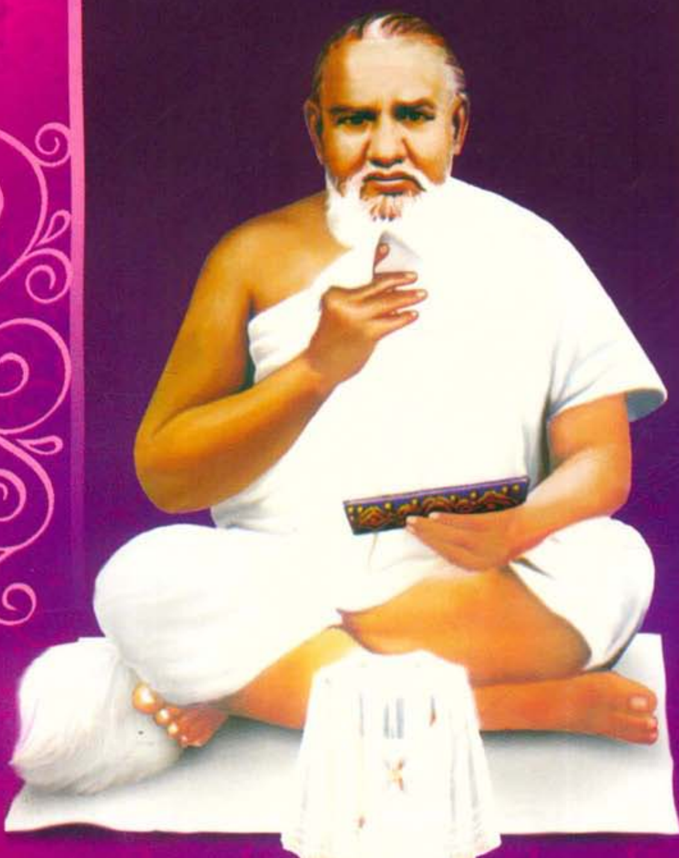

व्याख्यान वाचस्पति, गम्भीर गणनायक, प्रकाशपुंज के पथ प्रदर्शक

## श्रीमद् विजय यतीन्द्र सूरीश्वरजी म.सा.

# जिनशासन के राजा

संयम दानेश्वरी | जिनशासन सम्राट | संघ सारथी | युग प्रभावक | सरल स्वभावी
साहित्य मनिषी | त्रिस्तुतिक संघनायक | उग्रविहारी | राष्ट्रसंत | संघ एकता शिल्पी

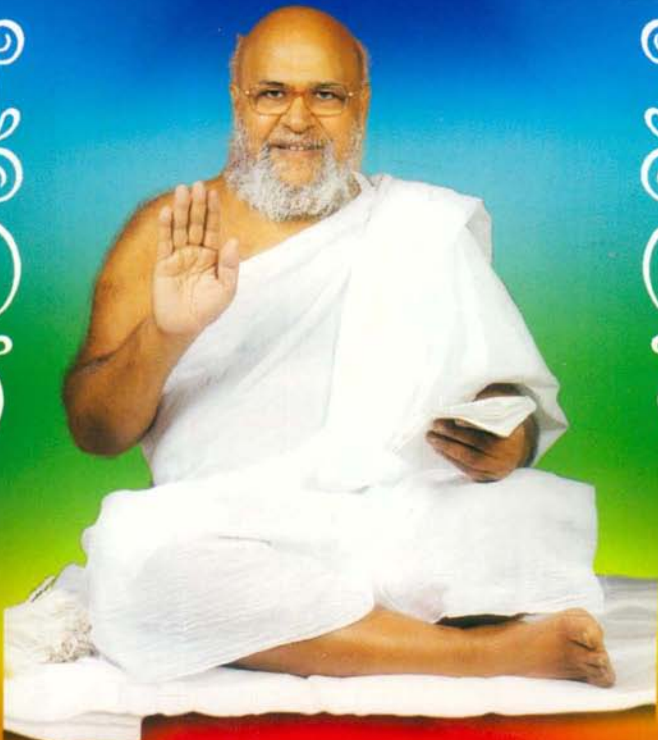

## हमारे बागरा संघ के लाडले प्यारे गुरुवर
## महाशतकोत्सव के सानिध्यदाता
## प.पू. सुविशाल समर्थ गच्छाधिपति
## श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

# श्री जैन श्वेताम्बर संघ बागरा

## शासन की सेवा में सदा तत्पर ट्रस्ट मंडल

मानव जीवन आत्म कल्याण के पुरुषार्थ की साधना करने के लिए
मिला है, सम्यक दिशा में पुरुषार्थ करने का संयोग बना है,
तो आत्मा को शुभभावों से सुवासित करना सरल है।
बात यही है... धर्माचरण कर समाज का कल्याण करें,
शासन के सेवक बनकर समाज और धर्म की
रक्षा करना ही जीवन का ध्येय बने,
यही परम कृपालु श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ
प्रभु से हमारी विनंती।

मोहनलाल शंकरलालजी
**अध्यक्ष**

भंवरलाल जेरुपचंदजी
**उपाध्यक्ष**

चंपालाल नथमलजी
**सह उपाध्यक्ष**

दिनेशकुमार पुखराजजी
**सचिव**

अंबालाल मूलचंदजी
**सह सचिव**

राजेन्द्रकुमार बाबुलालजी
**सह सचिव**

सुखराज प्रतापचंजी
**कोषाध्यक्ष**

प्रकाशचंद छगनलालजी
**सह कोषाध्यक्ष**

कैलाशचंद चंदनमलजी
**सह कोषाध्यक्ष**

नरेन्द्रकुमार रायचंदजी
**मैनेजिंग ट्रस्टी**

सुरेशकुमार मुलचंदजी
**सह मैनेजिंग ट्रस्टी**

भुरमल मगराजजी
**सह मैनेजिंग ट्रस्टी**

नरेन्द्रकुमार हंजारीमलजी
**सह मैनेजिंग ट्रस्टी**

हीराचंद ओटमलजी
**संगठन मंत्री**

संपतराज स्वरुपचंदजी
**सह संगठन मंत्री**

अशोककुमार मांगीलालजी
**सह संगठन मंत्री**

कैलाशचंद गणेशमलजी
**सह संगठन मंत्री**

अमीचंद नथमलजी
**ट्रस्टी**

जवेरीचंद कपूरचंदजी
ट्रस्टी

कांतीलाल ओटमलजी
ट्रस्टी

कैलाशचंद फुलचंदजी
ट्रस्टी

मदनलाल वस्तीमलजी
ट्रस्टी

उत्तमचंद ओटमलजी
ट्रस्टी

विजयकुमार भुरमलजी
ट्रस्टी

प्रमोदकुमार मगराजजी
ट्रस्टी

दिनेशकुमार जुहारमलजी
ट्रस्टी

देवीचंद हरकचंदजी
ट्रस्टी

दिलीपकुमार शेषमलजी
ट्रस्टी

विमलेशकुमार नैनमलजी
ट्रस्टी

# प्रभावक सान्निध्यता

शांतमूर्ति आचार्य देव श्रीमद् विजय विद्याचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.
के प्रवर्तमान प्रभावक पट्टधर सुविशाल समर्थ गच्छाधिपति,
अजोड शासन प्रभावक, संघ एकता शिल्पी, अतुल पुण्य साम्राज्यवर्ती

## राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.

मुनिराज **श्री नित्यानन्द विजयजी** म.सा.
मुनिराज **श्री जयरत्न विजयजी** म.सा.
मुनिराज **श्री अशोक विजयजी** म.सा.
मुनिराज **श्री सिद्धरत्न विजयजी** म.सा.
मुनिराज **श्री विद्वदरत्न विजयजी** म.सा.
मुनिराज **श्री प्रशमसेन विजयजी** म.सा.
मुनिराज **श्री निपुणरत्न विजयजी** म.सा.
मुनिराज **श्री प्रसिद्धरत्न विजयजी** म.सा.
मुनिराज **श्री प्रत्यक्षरत्न विजयजी** म.सा.

मुनिराज **श्री जयकीर्ति विजयजी** म.सा.
मुनिराज **श्री वीररत्न विजयजी** म.सा.
मुनिराज **श्री आनंद विजयजी** म.सा.
मुनिराज **श्री अपूर्वरत्न विजयजी** म.सा.
मुनिराज **श्री चारित्ररत्न विजयजी** म.सा.
मुनिराज **श्री अजितसेन विजयजी** म.सा.
मुनिराज **श्री विनीतरत्न विजयजी** म.सा.
मुनिराज **श्री तारकरत्न विजयजी** म.सा.
मुनिराज **श्री जिनागमरत्न विजयजी** म.सा.

मुनिराज **श्री पवित्ररत्न विजयजी** म.सा.

## * समताधारी श्रमणी वृंद *

साध्वीजी **श्री स्वयंप्रभाश्रीजी** म.सा.,
सा. **श्री कल्पलताश्रीजी** म.सा. आदि ठाणा
साध्वीजी **श्री सूर्यकिरणाश्रीजी** म.सा.,
सा. **श्री विज्ञानलताश्रीजी** म.सा. आदि ठाणा
सा. **श्री अविचलदृष्टाश्रीजी** म.सा.
सा. **श्री अनुपमदृष्टाश्रीजी** म.सा.
सा. **श्री अमितदृष्टाश्रीजी** म.सा.
सा. **श्री अनंतदृष्टाश्रीजी** म.सा.
सा. **श्री दर्शितकलाश्रीजी** म.सा.
सा. **श्री दर्शनकलाश्रीजी** म.सा. आदि ठाणा
साध्वीजी **श्री भक्तिरसाश्रीजी** म.सा. आदि ठाणा
साध्वीजी **श्री प्रीतिदर्शनाश्रीजी** म.सा. आदि ठाणा

सा. **श्री कनकप्रभाश्रीजी** म.सा.
साध्वीजी **श्री पूर्णकिरणाश्रीजी** म.सा. आदि ठाणा
सा. **श्री शासनलताश्रीजी** म.सा.
साध्वीजी **श्री दिव्यदृष्टाश्रीजी** म.सा.,

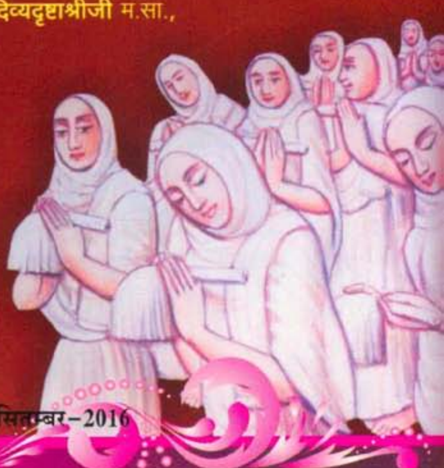

# प्राचीन श्री पार्श्वनाथ भगवान, बागरा

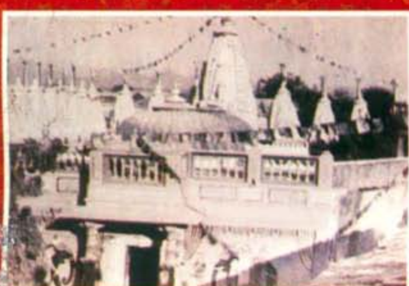

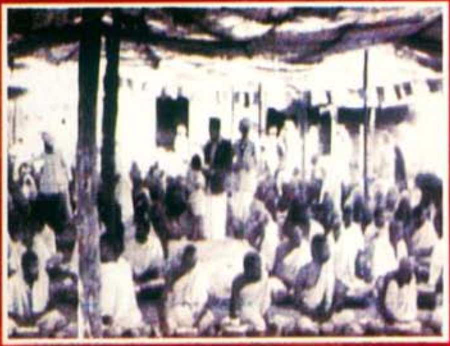

शताब्दी वर्ष पूर्व के ऐतिहासिक क्षण...

जो हमे आज रंगीन एहसास दिलाते है।

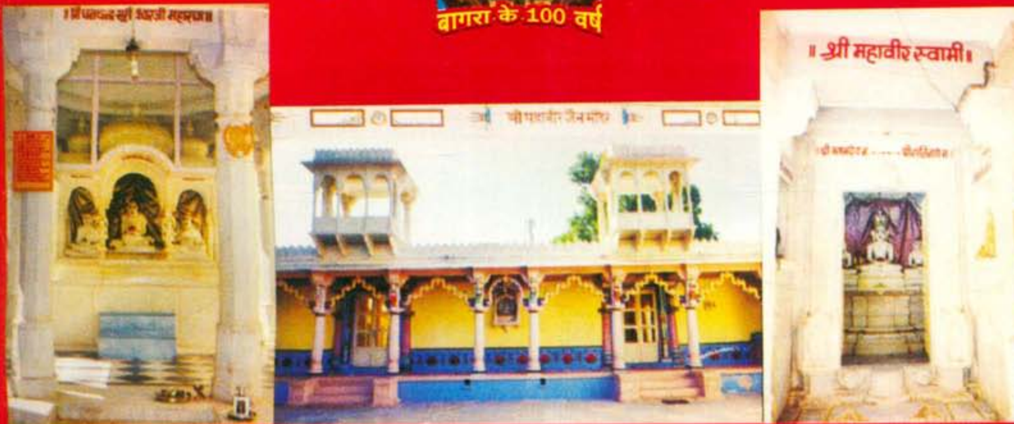


## श्री महावीर स्वामी जिनालय

श्री आदिनाथ
हेमेन्द्रसूरि स्मृति मंदिर

श्री वर्धमान राजेन्द्र जैन
आयबिल भवन

श्री राजेन्द्रसूरि राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय

श्री जैन आराधना भवन

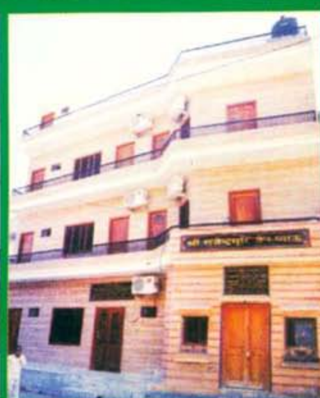

अतिथी भवन एवं श्री राजेन्द्रसूरि जैन प्याऊ

श्री जैन क्रिया भवन

राज-धन-यतीन्द्र-विहार

# श्री सौधर्म वृहत्तपोगच्छीय गुर्वावली

## (पट्टपरम्परा)

### भगवान महावीर से लेकर श्री जयंतसेनसूरीजी तक की सूची

1. श्री सुधर्मास्वामी
2. श्री जम्बूस्वामीजी
3. श्री प्रभवस्वामीजी
4. श्री शय्यंभवसूरिजी
5. श्री यशोभद्रसूरिजी
6. श्री संभूतिविजयजी
   श्री भद्रबाहुस्वामीजी
7. श्री स्थूलिभद्रसूरिजी
8. श्री आर्यमहागिरिजी
   श्री आर्यसुहस्तिसूरिजी
9. श्री सुस्थितसूरिजी
   श्री सुप्रतिबद्धसूरिजी
10. श्री इन्द्रदिन्नसूरिजी
11. श्री दिन्नसूरिजी
12. श्री सिंहगिरिसूरिजी
13. श्री वज्रस्वामीजी
14. श्री वज्रसेनसूरिजी
15. श्री चन्द्रसूरिजी
16. श्री सामन्तभद्रसूरिजी
17. श्री वृध्ददेवसूरिजी
18. श्री प्रद्योतनसूरिजी
19. श्री मानवदेवसूरिजी
20. श्री मानतुंगसूरिजी
21. श्री वीरसूरिजी
22. श्री विजयदेवसूरिजी
23. श्री देवानन्दसूरिजी
24. श्री विक्रमसूरिजी
25. श्री नरसिंहसूरिजी
26. श्री समुद्रसूरिजी
27. श्री मानदेवसूरिजी
28. श्री विबुधप्रभसूरिजी
29. श्री जयानन्दसूरिजी
30. श्री रविप्रभूसूरिजी
31. श्री यशोदेवसूरिजी
32. श्री प्रद्यम्नसूरिजी
33. श्री मानदेवसूरिजी
34. श्री विमलचंद्रसूरिजी
35. श्री उद्योतनसूरिजी

36. श्री सर्वदेवसूरिजी
37. श्री देवसूरिजी
38. श्री सर्वदेवसूरिजी
39. श्री यशोभद्रसूरिजी
    श्री देमिचंद्रसूरिजी
40. श्री मुनिचंद्रसूरिजी
41. श्री अजितदेवसूरिजी
42. श्री जयसूरिजी
43. श्री सोमप्रभसूरिजी
    श्री मणिरत्नसूरिजी
44. जगच्चंद्रसूरिजी
45. श्री देवन्द्रसूरिजी
    श्री विद्यानन्दसूरिजी
46. श्री धर्मघोषसूरिजी
47. श्री सोमप्रभसूरिजी
48. श्री सोमतिलकसूरिजी
49. श्री देवसुन्दरसूरिजी
50. श्री सोमसुन्दरसूरिजी
51. श्री मुनिसुन्दरसूरिजी
52. श्री रत्नशेखरसूरिजी
53. श्री लक्ष्मीसागरसूरिजी
54. श्री सुमतिसाधुसूरिजी
55. श्री हेमविमलसूरिजी
56. श्री आनन्दविमलसूरिजी
57. श्री विजयदानसूरिजी
58. श्री हीरविजयसूरिजी
59. श्री विजयसेनसूरिजी
60. श्री विजयदेवसूरिजी
61. श्री विजयसिंहसूरिजी
62. श्री विजयप्रभसूरिजी
63. श्री विजयरत्नसूरिजी
64. श्री क्षमासूरिजी
65. श्री विजयदेवेन्द्रसूरिजी
66. श्री विजयकल्याणसूरिजी
67. श्री विजयप्रमोदसूरिजी
68. श्री राजेन्द्रसूरिजी
69. श्री धनचंद्रसूरिजी
70. श्री भूपेन्द्रसूरिजी
71. श्री यतीन्द्रसूरिजी
72. श्री विद्याचंद्रसूरिजी
73. वर्तमानाचार्य श्रीमद्विजय जयंतसेनसूरिजी

## विशिष्ट सहयोगी

1. श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी जैन ट्रस्ट, चैन्नई (तमिलनाडु)
2. श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट मंडल, विजयवाड़ा (आंध्रप्रदेश)
3. श्री सांचा सुमतिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मदुराई (तमिलनाडु)
4. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, त्रिचनापल्ली (तमिलनाडु)
5. श्री सुविधिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मैसूर (कर्नाटक)
6. श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्र जैन श्वे. ट्रस्ट, गुंण्टुर (आंध्रप्रदेश)
7. श्री राजेन्द्र सूरि जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट, सायला (राजस्थान)
8. श्री सायला जैन श्रीसंघ, सायला (राजस्थान)
9. श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक संघ नारोली (ता. थराद, गुजरात)
10. श्री शंखेश्वर पार्श्व राजेन्द्र जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, दावणगेरे (कर्नाटक)

श्री राजेन्द्रसूरि कीर्ति मन्दिर तीर्थ ट्रस्ट

## हमारे गौरव

### राजस्थान

ट्रस्टीगण महाप्रभावक गुम्मीलेरू तीर्थ

राष्ट्रसंत श्री के पूज्य माता-पिता
स्वरूपचंदजी धरू एवं पार्वतीदेवी

जैन रत्न श्री गगलदासभाई
हालचंदभाई संघवी, अहमदाबाद

शा. तगराजजी जेठमलजी हिराणी
रेवतड़ा, बैंगलोर

शा. किशोरचंदजी खिमावत
खिमेल, मुम्बई

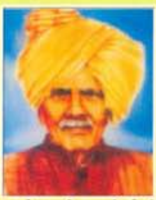
शा. जेठमलजी लादाजी चौधरी
गढसिवाणा, बैंगलोर

शा. मिश्रीमलजी उकाजी सालेचा
धाणसा, बैंगलोर

संघवी सांकलचंदजी इन्द्रजी वेदमुथा
बैंगलोर

श्री शांतिलालजी रामाणी
गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शा. माणकचंदजी छोगाजी बालर
बैंगलोर

शा. हजारीमलजी गजाजी वेदमुथा

मांगीलालजी शेषमलजी रामाणी
गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शंकरलालजी आईदानजी गांधी
नेल्लोर

चंपालालजी बालचंदजी बरली

श्री घेवरचंदजी एल. जोगानी, मुम्बई
भीनमाल

श्री शेषमलजी गुलाबचंदजी जैन
बागरा

# हमारे गौरव

श्री हीराचंदजी कानाजी गुंटुर
(सियाणावाला)

श्री लालचंदजी सोनाजी संघवी
धाणसा (राज.) विजयवाड़ा

स्व. सोलंकी चन्दनमलजी हीराजी
आहोर विजयवाड़ा

श्री शांतिलालजी सोलंकी
जालोर विजयवाड़ा

श्रीमती मोनंबीबाई पति स्व.श्रीचम्पालालजी
तखतगढ़, मुम्बई

श्री बाबूलालजी
गुण्टूर

कबदी जीतमलजी कुंदनमलजी
सायला

भंडारी वस्तीमलजी खीमाजी
विजयवाड़ा, आहोर

शा. रिखबचंदजी सरूपाजी
सोफाडीया, रेवतडा

भंडारी पीरचंदजी केवलचंदजी
बागरा

स्व. शा ओटमलजी गोराजी
वेदमुथा, रेवतडा

शा. पारसमलजी हस्तीमलजी
भंडारी, सायला

स्व. शा. गुमानमलजी
धुकाजी मोदी, धानसा

मुथा उदयचंदजी जवाजी
धाणसा

शा पुखराजजी फूलचंदजी
दुरगानी, मोदरा, विजयवाड़ा

शा. घेवरचंदजी हंजाजी
संघवी, धाणसा

शा. सरेमलजी गेनाजी
सियाणा, विजयवाड़ा

शा. छगनराजजी मांडोत
गुन्टुर

शा मोहनलालजी गोवानी
चोराउ

शा. नरसाजी आसाजी वाफणा
कोरा (राज.)

शा प्रतापचंदजी किसनाजी
कटारिया संघवी अमरसर, सरत

शा. कालूचंदजी हंजाजी सकलेचा

शा. दरगचंदजी हरकाजी सकलेचा

स्व. श्री मिश्रीमलजी भंडारी

शा. उत्तमचंदजी दरगाजी सकलेचा

श्रा. सेन्द्रकुमारजी रावकचंदजी पोरवाल
बागरा

श्री चंदनमलजी जेठमलजी
बागरा

श्री सुखाराजजी केसाजी
मेंगलवा

श्री रतनचंदजी कुन्दनमलजी
मेंगलवा

श्री नथमलजी खुमाजी
बागरा

श्री जेठमलजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री सांवलचंदजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री दूधमलजी मानकचंदजी
मेंगलवा

श्री बाबुलालजी सरेमलजी
मोदरा

श्री छगनराजजी भानाजी गांधी
सियाना

शा.मुमेमलजी वरदीचंदजी वाणीगोता
आहोर (राज.)

श्री संघवी मानमलजी वीरमाजी
दादाल

श्री कांतिलालजी मूलचंदजी नानावत
आहोर

शा. उकचंदजी हिमताजी हिराणी
रेवतड़ा

शा. ओपचंदजी जवाजी ओस्तवाल
सायला

श्री एम. फूलचंदजी शाह
दावणगिरी

शा. मोडमलजी जोईताजी बाफना
थलवाड नेल्लोर

मुथा थानमलजी कानाजी
आहोर विजयवाड़ा

स्व. सुखराजजी पिताजी कटारिया
संघवी धाणवसा विजयवाड़ा

संघवी भेरमलजी जेठाजी
मारवाड मे अमरसर (सरत) विजयवाड़ा

सेठ भगराजजी कुनणमलजी
सांचोर

शा. फुलचन्दजी सुखराजजी गांधी
सियाणा यादगीरी

श्री राणमलजी हिमताजी
दादाल

श्री पुखराजजी नेकाजी कटारिया
संघवी, धानसा

सा सांवलचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा तिलोकचन्दजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा नरसीगमलजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा पुखराजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा परकचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता अमरसर (सरत)

संघवी शा. मिश्रीमलजी विनाजी
पटियाल धाणसा/बैंगलोर

श्री फुलचन्दजी सांकलचन्दजी
कोशेलाव

डूंगरचंदजी सोलंकी
सायला (राज.)

मीठालाल मनोहरलालजी झोरा
दाधाल-कोयम्बतूर

श्री उम्मेदमलजी हरकचंदजी
बाफना, पाँथेड़ी

श्री भंवरलालजी कुन्दनमलजी
संघवी, मोदरा (राज.)

पातीबाई वस्तीमलजी
कबदी, सायला

श्री ओटमलजी वर्धन
सायला

श्री जुगराजजी नाथाजी कबदी
सायला

श्री हेमराजजी कबदी
सायला

श्री हस्तीमलजी गांधीमूथा
सायला

श्री घेवरचंदजी गांधीमूथा
सायला

श्री चम्पालालजी गांधीमूथा
सायला

शा. धर्मचंदजी मिश्रीमलजी संघवी
आलासन

श्री देशमलजी सरेमलजी
मोदरा/बैंगलोर

शा. श्री स्व. हीराचन्द
फुलाजी गांव चुरा

श्रीमती पवनीदेवी दूधमलजी
कबदी, सायला

श्री दूधमलजी पूनमचंदजी
कबदी, सायला

श्री हस्तीमलजी केवलचन्दजी
कोलामुथा, सायला

श्री रमेशभाई हरण
भीनमाल, राजस्थान

श्री उगमराजजी तोलचंदजी
कटारिया संघवी, धानसा (हैदराबाद)

शा. खुशालचंदजी गेबाजी
डामराणी मेंगलवा (हैदराबाद)

शा. जावंतराजजी
पावेडी

शा. बगराजजी नरसाजी
झोटा, दाधाल

भंवरलालजी कानुगा
जालोर

श्री तिलोचन्दजी झोटा
(हैदराबाद)

सवु अग्रवाल
जालोर

पुखराजजी समताजी
गांधीमुथा, सायला

धर्मचंदजी चंदाजी
नानेसा, आकोली

शा. धींगड़मलजी भंवरलालजी
पटवारी, मांडवला/तिरुचि

## गुजरात

वोरा अमृतलालजी डूंगरजी
अहमदाबाद

शा. तिलोकचंदजी चुन्नीलालजी छाजेड़
नैनावा

वोरा चिमनलालजी नथुचंदभाई

मोरखिया मणिलाल प्रेमचंदभाई
मुम्बई

श्री बाबूलालजी नाथाजी भंसाली
दाहोद

श्री चिमनलालजी पीताम्बरदासजी
देसाई

वेदलीया हालचंद भाई
भाणजी भाई, भोरडुवाला, डीसा

संघवी मुलचन्द भाई
त्रिभुवनदास, थराद

महाजनी ताराबेन
भोगीलाल सरूपचन्द, थराद

देसाई छोटालाल अमूलख भाई

संघवी धुड़ालाल अमृतलाल
(वकील)

शाह श्री राजमल भाई डूंगरजी भाई
थराद

संघवी श्री हीरालालजी कानजीभाई
थराद (लाटीवाला)

देसाई श्री हालचंदजी उजमचंदजी
थराद

श्री नरपतलाल वीरचंदजी संघवी
थराद

# हमारे गौरव

बागरा के 100 वर्ष

वोहरा श्री प्रेमचंदभाई जीतमल भाई थराद

संघवी चिमनलाल खेमचंद थराद

संघवी पूनमचंद खेमचंद थराद

संघवी वीरचंद हठीचंद थराद

श्री पुखराजजी ओरा थराद

वोहेरा श्री माणकलाल भूदरमल दुधवा (गुज.)

मोरखीया अमृतलालजी चुन्नीलाल लाखणी

दलपतभाई खेमचंद महाजनी

श्री मफतलालजी हंसराज वारिया, (वड़गामड़ा) डीसा

अदाणी अमृतलाल मोहनलाल थराद

श्री चन्दूमल मफतलालजी वोहेरा, दुधवा (गुजरात)

## मध्यप्रदेश

श्री शांतिलालजी भंडारी झाबुआ

श्री मदनलालजी सुराना रतलाम

श्री इन्दरमलजी दसेड़ा जावरा

स्व.मणिलालजी पुराणिक कुक्षी

स्व. समरथमलजी तळेरा कर्मड़वाला, उज्जैन

श्री सुजानमलजी जैन राणापुर (म.प्र.)

संघ शिरोमणी राजमलजी तलेसरा, पारा

भण्डारी चम्पालालजी रामाजी, पारा

श्री गट्टूलालजी रतिचंदजी सालेचा औरा, पारा

श्री कांतिलालजी केसरीमलजी भंडारी, पारा

स्व. भव्य हिमांशु लुणावत दाहोद (गुजरात)

स्व. श्री सुभाषजी भण्डारी मनावर (मेघनगर वाले)

श्री समरथमलजी पगारिया पारा जि. झाबुआ (म.प्र.)

श्री चांदमलजी वरदीचंदजी तांतेड़, लेडगांव

स्व.श्री कन्हैयालालजी सेठिया, कुशलगढ़

दलाल स्व. श्रीबाबूलालजी मेहता, कुशलगढ़

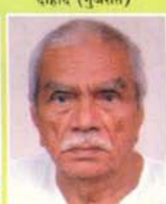
श्री मानसिंहजी राजगढ़

कालूरामजी औरा टोपीवाले, रतलाम

## कर्नाटक

श्री भंवरलालजी तिलोकचन्दजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री मनोहरमलजी फूजाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री हिराचंदजी पुखराजजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री शेषमलजी ताराजी
कांकरिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री इंदरमलजी नेनमलजी
संघवी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री रूपचंदजी फूलाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.भंडारी भुरमलजी भानाजी
मेंगलवा, (बीजापुर)

स्व. श्री दिनेशकुमार भुरमलजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री प्रतापचंदजी समनाजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री सुखराज प्रतापचंदजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुंदनमलजी फुलाजी
संकलेचा, मेंगलवा (कर्नाटक)

श्री उम्मेदमलजी प्रतापजी
कंकुचौपड़ा, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री नागराजजी वालचंदजी
पाटनी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री मोहनलालजी मुलचंदजी
चौवटिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुन्दनमलजी
फुलाजी सकलेचा (बीजापुर)

श्री धनराजजी नेनमलजी
संघवी, आलासन (बीजापुर)

श्री मुलचंदजी खुमाजी
बाफना, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री देवीचंदजी हजारीमलजी
कावदी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री रिखबचंदजी भभुतमलजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री डुंगरचंदजी हजारीमलजी
कवदी, बीजापुर (कर्नाटक)

शाह सोहनलाल
मिश्राचंदजी बीजापुर

सुमेरमलजी अनाजी
वाणीगोथा, बीजापुर/भीनमाल

शा. श्री वस्तीमलजी सोनाजी
बाफना, बीजापुर (सायला)

बागरा के 100 वर्ष

# अनुक्रम


| क्र. | | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| 1. | सम्पादकीय (सुरेन्द्र लोढ़ा) | 27 |
| 2. | धर्मजल जीवन को शीतल बनाता है (जैनाचार्य श्री जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा.) | 35 |
| 3. | अभिमान त्याग (जैनाचार्य श्री जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा.) | 39 |
| 4. | पूज्य मधुकरजी की डायरी के पृष्ठों से (जैनाचार्य श्री जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा.) | 47 |
| 5. | श्रीसंघ अध्यक्ष की पाती (वाघजीभाई वोरा) | 50 |
| 6. | अध्यक्षीय संदेश (रमेशभाई धरू) | 51 |
| 7. | मुनि भगवन्तों की विलक्षण वाणी | 56 |
| 8. | ट्रस्टीगणों के अलौकिक अभिमत | 65 |
| 9. | उद्‌गार | 72 |
| 10. | जयन्तसेन चरणों में झुकता बागरा (संयमरत्न विजयजी म.सा. 'प्रवासी') | 74 |
| 11. | मेरा कर्मा तू-मेरा धर्मा तू ओ मेरे बागरा- (नरेन्द्र कुमार रायचन्दजी पोरवाल) | 82 |
| 12. | जिन्दगी धूप तुम घना साया (नरेन्द्र पोरवाल, बागरा) | 87 |
| 13. | श्रीमद् यतीन्द्रसूरि और बागरा (नरेन्द्र पोरवाल, बागरा-चैन्नई) | 91 |
| 14. | सृजनशीलता का एक खास मुकाम आचार्यश्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा. (नरेन्द्र पोरवाल, बागरा) | 94 |
| 15. | जैनाचार्य से भेंटवार्ता (नरेन्द्र पोरवाल, बागरा) | 97 |
| 16. | वे द्विज हो गये (नरेन्द्र पोरवाल, बागरा) | 105 |
| 17. | जयंत तू यशवंत है, जयवंत है (नरेन्द्र कुमार रायचन्दजी, बागरा) | 107 |
| 18. | राष्ट्रसन्त श्रीमद् सूरीश्वरजी महाराज (सुरेश समीर, राणापुर) | 102 |
| 19. | श्री जयंतसेन सतसई (जैनाचार्यश्री जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.) | 108 |
| 20. | ऐतिहासिक महोत्सव की आँखों देखी (राहुल चौधरी, मंदसौर) | 113 |
| 21. | नरेन्द्र कुमार का उद्‌बोधन | 131 |
| 22. | संयमोत्सव : एक समीक्षा (अशोक कुमार नांदेचा, नीमच) | 244 |
| 23. | विधान की परम्परा (साध्वी डॉ. श्री सौम्यगुणाश्रीजी म.सा.) | 246 |
| 24. | श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनालय महाशतकोत्सव- विविध लाभार्थी | 248 |
| 25. | विशुद्ध धर्म के प्रचारक भगवान पार्श्वनाथ | 286 |
| 26. | अभिधान राजन्द्रेकोष के रचयिता जैनाचार्य श्रीमद् विजयराजेन्द्र सूरिश्वरजी म.सा. (उत्तमचन्द डामराणी, हैदराबाद) | 288 |

संपादकीय

# बागरा का मंगल मंत्र

सुरेन्द्र लोढ़ा की कलम से ...

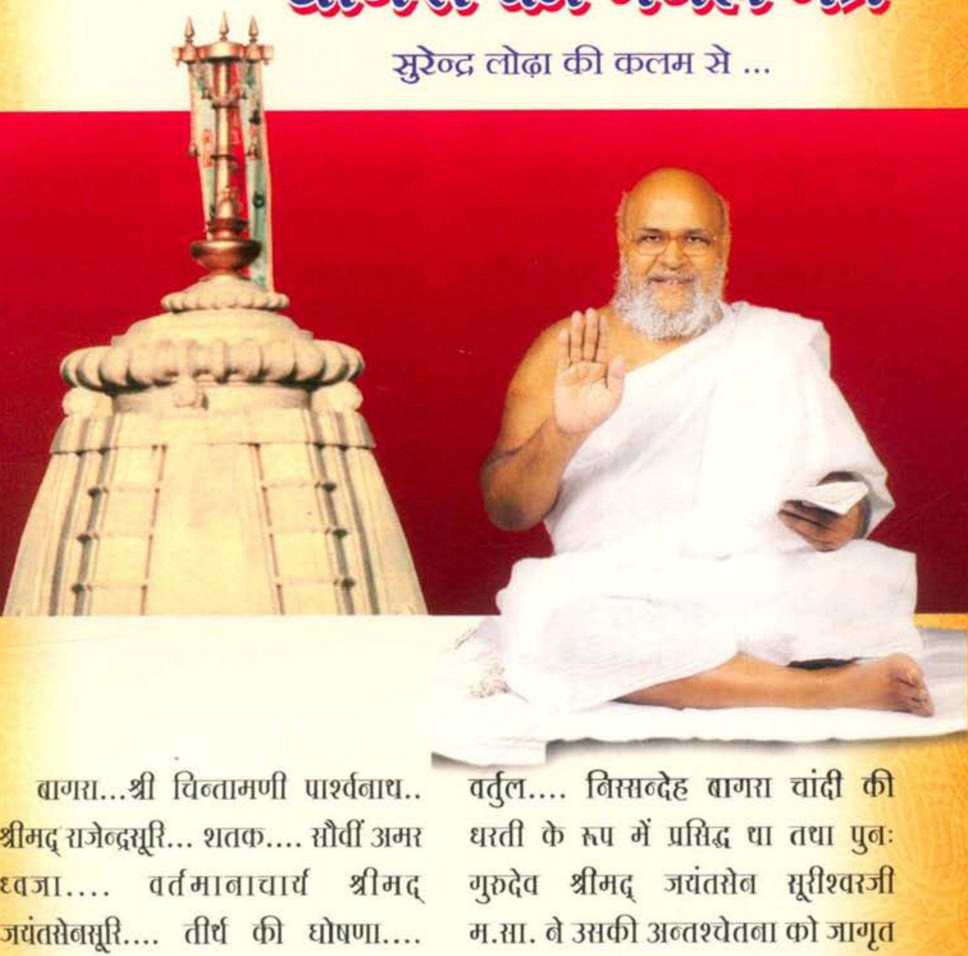

बागरा...श्री चिन्तामणी पार्श्वनाथ.. श्रीमद् राजेन्द्रसूरि... शतक.... सौवीं अमर ध्वजा.... वर्तमानाचार्य श्रीमद् जयंतसेनसूरि.... तीर्थ की घोषणा.... बागरा तीर्थ .... तीर्थ बना बागरा .... शब्दों का यह चक्र निरंतर दुहराव लेकर वर्तुल की संरचना कर पाने में सक्षम है। .... वर्तुल के आगे वर्तुल .... वर्तुल के पीछे वर्तुल.... वर्तुल के मध्य में वर्तुल.... निस्सन्देह बागरा चांदी की धरती के रूप में प्रसिद्ध था तथा पुनः गुरुदेव श्रीमद् जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. ने उसकी अन्तश्चेतना को जागृत कर दिया है। रूपहरी नगरी में स्वर्ण सरीखे गुरुभक्त यह नई परिभाषा पूज्य गुरुदेवश्री ने मण्डित कर दी है।

बागरा....... चिन्तामणी पार्श्वनाथ ............श्रीमद् जयंतसेनसूरि तीनों ने मिलकर एक वैसे ही मंत्र का निर्माण कर दिया जैसे ऊँ ह्रीं अर्हम् । ऊँ अर्थात वह ध्वनि जिसमें मात्राओं की सम्पूर्ण शक्तियां हैं । इसका उच्चारण पूरी शक्ति को जागृत कर हमें सर्वशक्तिमान बनने के लिए प्रशस्त बनाता है । ऊँ पवित्र संस्कृत शब्द है, जिसमें तीन अक्षर हैं अ,म,उ । 'अ' सृजनात्मक शक्ति है । 'उ' रक्षात्मक शक्ति है तथा 'म' संहारक शक्ति है । ये सभी वाक्य बागरा के ही तो परिचय हैं । बागरा में किस शक्ति का अभाव है, बागरा की माटी के पुत्रों ने दूर-दूर क्षेत्रों में जाकर सृजन के अद्वितीय आयाम गूंथ दिये हैं, वहीं से अपनी सम्पन्नता की किरणों को अपनी मातृभूमि पर प्रक्षेपित कर उसके गौरव की रक्षा की है, साथ ही आत्मा की शक्तियों के जागरण में उपस्थित बाधक तत्वों को ज्ञान व तप की साधना से नामशेष कर दिया है । बागरा निवासियों में न केवल व्यावसायिक दक्षता है बल्कि साधना की भूमिका निर्मित करने का कौशल है, वहां की दूसरी पीढ़ी ही वहाँ के जिनालय को तीर्थत्व विकसित कर पाने में सफलता अर्जित कर लेती है ।

बागरा ऊँ के स्थान पर है । ह्रीं यह नियंत्रण शक्ति है यह ब्रह्माण्ड तथा मानव को नियंत्रित करने वाली शक्ति से युक्त ही ह्रीं के उच्चारण से शक्ति तथा स्फूर्ति का संचार होता है। इसका जाप तथा उच्चारण मानव की आवश्यकताओं की सम्पूर्ति का जादू दिग्दर्शित करता है । यह व्यक्ति की प्रसन्नता तथा समृद्धि है । ह्रीं अक्षर की स्थिति को श्रीमद् जयंतसेनसूरिजी ने अधिग्रहित कर उसे स्वयं में समा लिया है। अर्हम् शब्द चिन्तामणी पाश्वनार्थ को आकार प्रदान करता है । अर्हम् पाँच शक्तियों का प्रतीक है- अरिहंत, अशरीरी (सिद्ध), आचार्य, उपाध्याय तथा मुनि । अर्हम का जाप सुषुम्ना नाड़ी को झंकृत कर देता है । 'अर्हम्' शब्द का उच्चारण व्यक्ति के मस्तिष्क को स्वच्छ निर्मित कर उसे परिमार्जित करता है । यह बीज ध्वनि भी है। ज्ञान इससे सम्बद्ध है । प्रभु चिन्तामणी पार्श्वनाथ की कृपा से यह सभी हमें प्राप्त होता है अतएव अर्हम् द्वारा उनके प्रतिनिधित्व में कोई दोष नहीं है । जैसे ऊँ ह्रीं तथा अर्हम् तीनों सामंजस्य कर मंत्र का निर्माण करते हैं, ऐसा मंत्र जिसका जाप तथा साधना सर्वांगीण सुख तथा सिद्धि देने में सक्षम है । ठीक ऐसा ही परिणाम बागरा, पार्श्वनाथ तथा श्री

जयंतसेनसूरि इन तीनों ध्वनियों के समन्वय से संगठित मंत्र से संभावित है और यह मंत्र सम्पूर्ण मरूधर क्षेत्र में श्रेष्ठता का प्रतीक बना हुआ है। इस मंत्र का ही प्रभाव महाशतकोत्सव के रूप में आयोजित उत्सव की आशातीत सफलता है। आईये, इन तीनों मंत्रित शब्दों से मंत्र वाक्य का निर्माण करने का प्रयत्न करते हैं। बागरा, चिंतामणी पार्श्वनाथ तथा श्री जयंतसेनसूरि को उलट-पलट कर अंकित करें तो वाक्य उत्पादित होता है 'बागरा में श्रीमद् जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. के पवित्र सान्निध्य में श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनालय का महाशतकोत्सव सम्पन्न हुआ' यह वाक्य पूरे सौ वर्षों के इतिहास को हृदयंगम कर जैन संस्कृति को गर्वित कर रहा है।

बागरा का मतलब चार हजार जैनों की बस्ती को संभाला हुआ बारह हजार जनसंख्या वाला ग्राम ही नहीं बल्कि ऐसा धाम जहां जैन समाज शताब्दियों से है। जिस श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ जिनालय का शतकोत्सव मनाया जा रहा है, उसका निर्माण ईस्वी सन् 1673 में हुआ। यह एक लघु देरासर था तथा इसमें कई आशातनाएँ थीं, वास्तु के अनुसार भी नहीं था। फलतः बागरा एक सामान्य ग्राम बना रहा एवं वहाँ निवास करने वाली जैन समाज भी कोई आर्थिक पक्ष तैयार नहीं कर पाया। गुरुदेव स्व. श्री धनचंद्रसूरीश्वरजी म. ने यहाँ की जैन समाज को जिनालय का जीर्णोद्धार करने का उपदेश दिया जिसे समाज ने स्वीकार कर जीर्णोद्धार कार्य प्रारंभ किया। ईसवी सन् 1915 में भव्य नूतन जिनालय की प्रतिष्ठोत्सव का विशाल समारोह सम्पन्न हुआ। यह ग्राम प्रारंभ से योगीराज दादा गुरुदेव श्रीमद् राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के प्रति श्रद्धावान रहा एवं गुरुदेव स्व. श्री धनचंद्रसूरीश्वरजी म.सा. द्वारा यहां जिनालय की प्रतिष्ठा करवाये जाने के पश्चात यहां के निवासियों की समृद्धि यात्रा प्रारंभ हुई। उसने दक्षिण भारत में प्रवास कर साहस के साथ व्यवसाय किया। बागरा के निवासी व्यवसाय हेतु वर्तमान में विशेषतः मुंबई, चैन्नई, बैंगलूरू, रानी बेन्नुर, विजयपुर, नैल्लोर, काकीनाड़ा, एलुरू, कोयम्बटूर, सामलकोट, राजमहेन्द्री, मुम्मडीवरम, ताड़पत्री, भीमावरम्, विजयवाड़ा, हैदराबाद, कड़प्पा, विशाखापट्टनम्, पिठापुरम्, मुद्देवीहाल, सोलापुर, गुंटुर, नरसापुर, पैद्दापुरम, अहमदाबाद, अमलापुरम आदि नगरों में प्रवासी हैं।

वहां पर उन्होंने जो आर्थिक सफलता प्राप्त की है, वह दादा गुरुदेव श्रीमद्

राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. द्वारा की गई भविष्यवाणी को सार्थक करने वाली है अतः ये अपने ठोस आर्थिक आधार के लिये गुरुदेवश्री की परमकृपा ही मानते हैं । समग्र मरूधर में जैन समाज के व्यवसायार्थ परदेश (याने दक्षिण भारत के नगरों में) जाने के बावजूद उनका मरूधर से सम्पर्क व सम्बन्ध अलग नहीं हुआ है। उनके पक्के मकान अपने मातृग्राम या मातृनगर में हैं जो चाहे तालों से शोभित रहते हों लेकिन हैं अवश्य । जालोर जिले के अधिकांश ग्रामों में दादा गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के प्रति अटूट श्रद्धा है । बागरा भी उन ग्रामों में से ही है । यहाँ प्रधानतः पोरवाल समाज है, कुछ प्रतिशत बड़े साथ अथवा लोढे साथ ओसवाल भी हैं । बागरा सदैव त्रिस्तुतिक आचार्यगणों, उपाध्यायगणों या मुनिवरों की कार्यस्थली रहा । यहाँ के श्रावकगण आचार पालन में पर्याप्त दृढ़ माने जाते हैं । कई सम्पन्न श्रावकगण चौविहार करते हुए रात्रि भोजन के त्यागी हैं । कई को मैंने मिठाई, फल या अन्य वस्तु का त्याग किये हुए पाया है । बागरा नगर ने त्रिस्तुतिक समाज को स्व. आचार्य श्री हेमेन्द्रसूरीश्वरजी म. तथा स्व. मुनिराज श्री जयकीर्ति विजयजी म. दिये। साथ ही बागरा की जन्म भूमि से निकली वैरागन श्राविकाओं की लम्बी सूची है । जिनमें साध्वी श्री कंचनश्रीजी म., श्री मोतीश्रीजी म., श्री कुसुमश्रीजी म., श्री कुमुदश्रीजी म., श्री तिलक प्रभाश्रीजी म., श्री मुक्तिनंदिताश्रीजी म. की गणना की जा सकती है । बागरा की पहचान कभी निष्णात लेखक, चित्रकार तथा कवि श्री इन्द्रमलजी भगवानलालजी एवं वर्तमान में शब्द शिल्पी, पारंगत लेखक-कवि श्री नरेन्द्रजी रामचंद्रजी पोरवाल के कारण है। अतीत में बागरा को त्रिस्तुतिक समाज का राष्ट्रीय स्तर पर पहले क्रम पर माना जाता था तथा हम बचपन में सुना करते थे कि - 'बागरा त्रिस्तुतिक समाज का अमेरिका है।' यह कहावत भी इस अंक में सामग्रीगत हुई है-'दिल्ली में आगरा, मारवाड़ में बागरा' कभी बागरा को आगरा के समकक्ष माना जाता था । महाशतकोत्सव का आयोजन जिस शान से हुआ वर्तमान ने भी बागरा को अतीत का गौरव लौटाने का प्रयास किया है।

बागरावासियों के आराध्य श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ की प्रतिमा लगभग एक सौ पंद्रह वर्ष प्राचीन है । इसकी अंजनशलाका दादा गुरुदेव श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के करकमलों से ईस्वी सन् 1901 में सियाणा में

आयोजित प्रतिष्ठांजनशलाका उत्सव में की गई थी। जिस दिन अंजनशलाका हुई, उस दिन तिथि माघ शुक्ला 13 थी। इस पूर्ण जानकारी का शिलालेख प्रतिमा पर है। उस समय श्री पार्श्वनाथजी के तीन बिम्ब थे- (1) श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ (2) श्री जीरावला पार्श्वनाथ (3) श्री गौड़ी पार्श्वनाथ। इन तीनों श्री पार्श्वजिन बिम्बों की प्रतिष्ठा ईस्वी सन् 1915 में बागरा में तैयार हुए भव्य नूतन जिनालय में सम्पन्न हुई। प्रतिष्ठाचार्य आचार्य श्री धनचंद्रसूरीश्वरजी म. तथा उपाध्याय श्री मोहनविजयजी म. थे। प्रतिष्ठा की तिथि भी माघ शुक्ला 13 थी याने प्रतिमाजी की अंजनशलाका तथा प्रतिष्ठा में चाहे पंद्रह वर्ष का कालांतर हो लेकिन दोनों अनुष्ठानों की तिथि एक थी। यहीं पर आश्चर्यजनक मंगलकारी संयोग है। इस सन् 2015 में प्रतिमाजी की प्रतिष्ठा को एक सौ वर्ष पूर्ण हुए। इन एक सौ वर्षों में बागरा के निवासियों के चेहरे की दमक भी एकदम चकाचौंध में परिणित हो गई। बागरा समृद्ध पूर्व से ही था लेकिन व्यवसाय की गतिशीलता नहीं होने के कारण अंतर में टूटन उपस्थित होने लगी थी। व्यवसायार्थ सुदूर दक्षिण भारत के नगरों में प्रवासित होने पर प्राणों में प्राणों का संचार हो गया। अब बागरानिवासी उल्लास तथा उत्साह से परिपूर्ण हैं। श्री चिन्तामणी पार्श्वनाथ की दया, दादा गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म. की कृपा, गुरुदेव श्रीमद् विजय धनचंद्रसूरीश्वरजी म. के अनुगृह तथा गुरुदेव श्रीमद् विजय यतीन्द्र सूरीश्वरजी म. के प्रताप को बागरावासी भूलते नहीं हैं। विभूतियां उनके मन-मस्तिष्क में छाई हुई हैं। अतएव एक सौ वर्ष पूर्ण होने के प्रसंग से बागरा नगर को तीर्थ की उपमा उपमित होने के उपलक्ष में शताब्दी महामहोत्सव आयोजन करने का श्रीसंघ ने निर्णय लिया तथा उसे सान्निध्य प्रदान करने के लिए सुविशाल गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म. की सेवा में पहुंचकर विनती प्रस्तुत की। समयावधि की समीकरण रहने पर भी गुरुदेवश्री ने अपनी स्वीकृति प्रदान की तथा पू. गच्छाधिपतिश्री द्वारा दिये गये मुहूर्त के दिन चढ़ावे की ऐतिहासिक जाजम सम्पन्न हुई। उपरांत आपश्री का भव्य आगमन बागरा में हुआ। आपने 11 से 21 फरवरी 2016 तक महाशतकोत्सव के कार्यक्रमों के अंतर्गत ग्यारह दिवसीय विराट् आयोजनों को पंचधातु श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ प्रभु की अंजनशलाका सहित सम्पन्न

करवाते हुए दिनांक 20 फरवरी 2016 को शतकोत्सव ध्वजारोहण उन्नत किया। बागरा तीर्थ घोषित हो गया। हजारों की जनमेदिनी ने साक्ष्य स्थापित की, गगन मंडल से हेलिकोप्टर ने पुष्पवर्षा कर उल्लास को चरम ऊँचाई तक पहुंचाया। बागरा के साथ जुड़ा श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ का नाम तथा उस नाम को आराधना के सलमे सितारों से सुसज्जित कर दिया, इस प्रकार मंत्र के तीनों शब्द बागरा, चिंतामणी पार्श्वनाथ एवं जैनाचार्य गच्छाधिपति श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा ने जैनाचार्य गच्छाधिपति श्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी गड्डमड्ड होकर मंत्र शक्ति का ब्रह्म शक्ति में अभ्युदय करने में साधनाशील बन गये हैं। प्रत्येक बागरावासी प्रसन्न है। उसकी पीढ़ियां देव-गुरु तथा धर्म के प्रति समर्पित हैं। तीर्थ बागरा का इतिहास नई अंगड़ाई ले बैठा है।

## साधना तथा अनुष्ठान विधान

आध्यात्मिक अभ्यास को साधना कहा जाता है। अध्यात्म में साधक स्वयं को काम तथा कषाय से दूर रखते हुए अपने मन को साधता है तथा उसे आत्म प्रवृत्तियों की ओर बढ़ाता है। साधना का उद्देश्य सिद्धावस्था की प्राप्ति अथवा भगवान का साक्षात्कार है। जैन साधना ज्ञान में साधक को किसी की शरण में नहीं जाना होता है, उसे अपने कर्मों को भुगतना होता है अथवा वैराग्य एवं तप से उनकी निर्जरा करनी होती है। जब परमपिता परमेश्वर द्वारा उपदिष्ट/ निर्दिष्ट मार्ग को वह जीवन में अपना लेता है, वह स्वयं परमेश्वर के समकक्ष हो जाता है। तीर्थंकर देवों ने यही फरमाया कि जैसा मैंने कहा है, वैसा तुम अपने जीवन में धारण/पालन करो, तुम स्वयं भी मेरे समान आध्यात्मिक स्थिति को प्राप्त कर लोगे।

भारतीय संस्कृति में वैदिक तथा श्रमण दो मार्ग प्रतिपादित होते रहे हैं। वैदिक संस्कृति प्रवृति मूलक है जबकि श्रमण संस्कृति निवृत्ति मूलक। प्राचीन समय में श्रमण संस्कृति में जैन तथा बौद्ध दो मार्ग ही नहीं थे और भी जैसे सांख्य, वैशेषिक, आजीविक आदि थे। इनमें से जैन व बौद्ध परम्पराओं के अलावा सभी वर्तमान में वैदिक संस्कृति या हिन्दू धर्म में विलीन से हैं। श्रमण संस्कृति के जैन धर्म की प्रारंभिक रूप में विधि विधान के रूप में छह आवश्यकों का विकास हुआ। उपरांत कर्मकांड के प्रतिपादन ने द्रव्यपूजा को भी महत्व दिया।

भावपूजा को उत्कृष्ट मानते हुए भी द्रव्य पूजा का अलग महत्व कम नहीं हुआ। दिगम्बर तथा श्वेताम्बर समूहों में कर्मकाण्डों तथा विधि विधान को लेकर अंतर रहा । फिर भी मूर्तिपूजा व्यापक रूप से लोकप्रिय हुई तथा मूर्तिपूजा को केन्द्र बिन्दु बनाकर कई विधि-विधान प्रचलित हुए । आज उनका महत्व है । विधि-विधान के अंतर्गत किये जाने वाले प्रतिष्ठा, अंजनशलाका, ध्वज-दंडारोहण, अभिषेक, विभिन्न आह्वान, देवपूजा, अधिष्ठायक पूजा ने अपने स्थान प्राप्त किये। इन सभी के साथ भक्त की आस्था जुड़ी हुई है । बागरानिवासियों के सन्मुख एक पवित्र अवसर था । जिनालय की प्रतिमा को एक सौ वर्ष पूर्ण होने पर जिनालय को तीर्थ घोषित करवाने का, बागरा श्रीसंघ ने विराट् ग्यारह दिवसीय कार्यक्रम आयोजित कर तीर्थत्व की महत्ता का वरण कर लिया । इस हेतु उन्हें हार्दिक बधाई तथा अभिनन्दन । गच्छाधिपति युग प्रभावक श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी महाराज साहब वर्तमान की ऐसी हस्ती हैं जिनके सान्निध्य में जिनोपासना के कीर्तिमान तीर्थों की स्थापना अथवा जिन मंदिरों के निर्माण एवं जिन बिम्बों की अंजनशलाका या प्रतिष्ठा के सफल आयोजन से स्थापित हो रहे हैं । उन्हें इस क्षमता में यश तो मिला हुआ ही है, साथ ही अनुष्ठानिक क्रियाओं में शुद्धता एवं सही शास्त्रोक्त विधि प्रवर्तन के कारण प्रभावशील पारंगता प्राप्त हो चुकी है । उनके करकमलों से सम्पन्न ये क्रियाएं आनंद तथा समृद्धिक्षयक सिद्धि से परिभाषित होती हैं । बागरा में आयोजित महाशतकोत्सव को सान्निध्य आपका ही प्राप्त हुआ ।

बागरा का यह आयोजन ऐतिहासिक तथा अभूतपूर्व माना गया । बागरा भारत में इसके सोने व चांदी के व्यापार के लिये विख्यात था। स्वतंत्रता के पूर्व यह गांव मारवाड़/जोधपुर राज्य का हिस्सा था और यह गांव ठाकुर दुर्जनसिंह ठि. दसपन की जागीर का गांव था। इस गांव के राजपुरोहित श्री मानजी जगरवाल ने मारवाड़ किसान आंदोलन एवं अंग्रेजों की सत्ता के खिलाफ भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया था।

बागरा की जनसंख्या 2001 की जनगणना के अनुसार 9,661 हैं। यहां के कई निवासी परिवार पूरे भारत में व्यापार के उद्देश्य से निवासरत् हैं।

बागरा के 100 वर्ष

# धर्मजल जीवन को शीतल बनाता है

(सुविशाल गच्छाधिपति युग प्रभावक राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्री जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा.)

परमज्ञानी परमात्मा श्रमण भगवन्त श्री महावीर देव ने अपने केवलज्ञान की दिव्य ज्योति में लोकालोक के समस्त पदार्थों और उनकी त्रैकालिक अनन्त पर्यायों का अवलोकन करते हुए समवसरण में उपस्थित बारह प्रकार की पर्षदा के आगे उन प्रकृतियों का वर्णन किया जिनसे आत्मा की अनंत चतुष्टय रूप शक्ति आवृत है । भगवान ने कहा है जब तक अज्ञान भाव से ज्ञान भाव की ओर प्रवृत्ति नहीं होगी तब तक ये प्रकृतियाँ समझ में नहीं आयेगी । एक या दो नहीं, अनेक प्रकृतियाँ हमारी आत्मा पर हावी हैं । मूल में कर्म के आठ प्रकार हैं और एक प्रकार के अनेक उप प्रकार हैं । प्रति समय सात या आठ प्रकार के कर्म हम पर हमला करते हैं कि उनके सामने हम पूरी तरह पराभूत हो जाते हैं ।

**कर्म प्रकृतियों से सावधान –** मूल कर्म के आठ प्रकार इस प्रकार हैं – ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय, मोहनीय, आयुष्य, नाम, गौत्र और अंतराय, इनकी उत्तर प्रकृतियाँ कुल मिलाकर 158 हैं । इन पर विजय प्राप्त करने के लिए ही यह मनुष्य जन्म है और

इन्हें जीतने में ही मनुष्य जन्म की सार्थकता है । अतः इनसे मुकाबला करते हुए और इन पर विजय प्राप्त करते हुए हमें अपनी स्थिति प्राप्त करना है । इसके लिये यह परम आवश्यक है कि हम सदा सावधान रहें । भगवान महावीर ने अपने प्रथम शिष्य और प्रथम गणधर श्री इन्द्रभूति गौतम को बार-बार शिक्षा दी है- सदा सावधान रहने की । उन्होंने कहा है - समयं गोयम मा पमायए - हे गौतम ! एक समय के लिए भी गाफिल मत रहना - सदा सावधान रहना । भगवान महावीर की यह शिक्षा श्री गौतम स्वामी के लिए जितनी आवश्यक है उससे कहीं ज्यादा हमारे लिए आवश्यक है । गौतमस्वामी इतने बेखबर नहीं थे, वे तो प्रति समय सावधान रहते थे । गाफिल और बेखबर तो हम हैं, इसलिए सावधान तो हमें होना है । हम बेखबर हैं, इस तथ्य से ही हम तो बिल्कुल अनजान हैं । मजे की बात तो यह है कि हम अपने को सावधान मान रहे हैं और सोच रहे हैं कि हम बड़े जानकार हैं । यह तो हमारा भ्रम है । हमें अपना यह भ्रम दूर करना है । सावधान व्यक्ति का जीवन अद्भुत होता है- अनोखा होता है । हम सभी सावधान नहीं हो पाये हैं, हम तो बेसुध हैं । ध्यान में रखना, असावधान व्यक्ति अपना धन खो बैठता है । हम धन के अधिकारी तो हैं, पर तिजोरी पर हमारा अधिकार नहीं रहा है। तिजोरी दूसरों ने हथिया ली है । इस कारण हम यह सोच और समझ ही नहीं पा रहे हैं कि मनुष्य जन्म का क्या मूल्य है ? यह कितना कीमती है यही कारण है कि हम अपनी जीवन की गाड़ी को व्यवस्थित चलाना नहीं सीख पाये हैं । ज्ञानियों ने कहा है कि इस जीवन की गाड़ी को व्यवस्थित चलाना सीखोगे तभी तुम्हारी साधना सफल होगी ।

**धन के पेट्रोल के साथ धर्म का पानी -** आपको मालूम है कि मोटरगाड़ी पेट्रोल से चलती है, लेकिन केवल पेट्रोल ही उसके लिए काफी नहीं है । साथ में पानी नहीं होगा तो गाड़ी के लिए खतरा रहेगा । इसलिए पेट्रोल के साथ पानी भी आवश्यक है । गाड़ी जब गरम हो जाती है, तब उसे ठंडा करने के लिए पानी की आवश्यकता होती है। पानी के अभाव में गाड़ी जल जाने का भय रहता है । अतः यदि गाड़ी को व्यवस्थित चलाना है तो पेट्रोल के साथ पानी भी रखना आवश्यक है ।

हमारा जीवन भी गाड़ी के समान ही है । इसके लिए धन के पेट्रोल के साथ धर्म के पानी की भी आवश्यकता होती है । केवल धन के पेट्रोल से जीवन की गाड़ी को चलाये रखा तो तृष्णा की आग इस जीवन को जलाकर खाक कर देगी । जीवन में कलह और तृष्णा की तथा असंतोष और लोभ की आग लग जायेगी । धर्म को भूलकर केवल धनार्जन में ही सन्तुष्ट रहते हुए

जीवन यापन करते रहे तो धन रूपी पेट्रोल, जीवन की गाड़ी को जलाकर भस्म कर देगा। धर्म का जल साथ में होगा तो गाड़ी सुलगेगी नहीं और ठीक ढंग से चलेगी। अतः यदि धन के साथ धर्म का भी ख्याल रखा गया तो जीवन सुख शांति और संतोषपूर्ण रहेगा।

**साधन को लक्ष्य न मानें–** हमने अब तक धर्म को तो समझा ही नहीं है, इसीलिए हम धर्मस्थान और बाजार को एक जैसा मानते हैं। जब धर्म समझ में आयेगा तब धर्मस्थान और बाजार में आकाश और पाताल का अन्तर दिखाई देगा। उपासना स्थान और व्यवसाय स्थान दोनों बिल्कुल भिन्न–भिन्न हैं। जो लोग धर्म से दूर हैं पर धन वैभव के निकटतम हैं, वे सोचते हैं कि मौका आने पर अच्छी बोलियाँ लगा लेंगे और चढ़ावे ले लेंगे तो धर्म हो जायेगा। उनकी यह मान्यता भूल भरी है। धर्म की सीमा केवल चढ़ावे लेने तक ही नहीं है। धर्म इससे बहुत आगे है। धन से धर्म होता ही नहीं है और यदि होता भी है तो बहुत थोड़ा। आपको मालूम है ? प्रतिदिन एक लाख खंडी सोने के दान से जो धर्मलाभ होता है, उससे कई गुना ज्यादा लाभ केवल एक सामायिक मात्र से होता है। क्या हम सामायिक–समता भाव के नजदीक पहुँचने का प्रयत्न करेंगे ?

हाँ, धन के सद्व्यय से भी धर्म जरूर होता है, पर एक शर्त है–वह धन न्यायपूर्वक कमाया हुआ होना चाहिए। दूसरे कि आत्मा को दुःख देकर, ठग कर किसी की मजबूरी का लाभ उठाकर कमाया हुआ धन धर्म लाभ नहीं करवाता। मार्गानुसारिता के पैंतीस बोलों में सर्वप्रथम बोल हैं– न्यायोपार्जित वित्त।

तो न्यायोपार्जित धन के सद्व्यय से धर्मलाभ यह तो केवल रास्ता है और हम रास्ते को ही धर्म समझ बैठे हैं यह हमारी भूल है यदि हम गाड़ी में बैठ चुके हैं, तो मुकाम पर भी अवश्य पहुँच सकते हैं, पर हम इतने भोले हैं कि गाड़ी को ही हम गाँव घर मुकाम समझ बैठे हैं। सोचिये, यदि हम आसन आरक्षित करवाकर गाड़ी पर बैठ जायें–बिस्तर लगाकर जम जायें और मुकाम आने पर भी यदि आसन न छोड़ें–डिब्बे को ही घर बनाकर बैठ जावें तो हमें कौन बैठने देगा ? घर जाने के लिये गाड़ी में बैठे थे, यह हम भूल गये और केवल सीट के लिए उलझने लगे। न तो गाड़ी में हम रहने वाले है और न कोई अन्य मुसाफिर। सभी को गाड़ी खाली करना ही है। विवाद मुकाम का नहीं है। सारे विवाद और झगड़े सीटों के लिए हैं। ज्योंही मुकाम आया कि सीट छोड़कर उतरना पड़ेगा। यदि नहीं उतरे तो उतार दिये जायेंगे।

आज भोले जीवों की ऐसी ही स्थिति हो रही है। धर्म जो हमारा लक्ष्य है उसे तो भूल गये हैं और केवल साधनों को पकड़ कर

बैठ गये हैं। केवल साधन को पकड़कर रखने से धर्म की उपलब्धि नहीं होगी। स्टेशन पर खड़ी गाड़ी में बैठ जाने मात्र से मुकाम नहीं आ जायेगा। गाड़ी सही होगी और वह चलेगी, तभी मुकाम आयेगा। जिस दिशा में जाना है, उसी दिशा की गाड़ी में बैठेंगे, तब मुकाम आयेगा। गाड़ी मुकाम पर पहुँचने का माध्यम है, लेकिन तभी जब मुकाम याद हो।

इसी प्रकार हमारी प्रवृत्तियाँ, हमारे साधन मुकाम तक ले जाने वाले हैं, पर यदि साधन को ही पकड़ कर बैठे रहे तो मुकाम पर कभी पहुंच ही नहीं पायेंगे। लोगों ने मुकाम को भुला दिया है और वे केवल साधन को ही पकड़ बैठे हैं, इस कारण उन्हें यह ज्ञात ही नहीं होता कि धर्म क्या है ? धर्म का मर्म क्या है और धर्म का स्थान क्या है?

**समता गई तामस आया–** लोग धर्मस्थान में जाने के बाद भी समता को खो बैठते हैं। जो समता का मंदिर है, जो ममता छुड़ाने वाला है, वहाँ भी जब हम समता को खो बैठते हैं, तब यह तो समता का उल्टा है। समता का उल्टा क्या है, जानते हैं आप ? समता का उल्टा है – तामस। यह समता का विरोधी भाव है। समता शब्द को उल्टा पढ़ो तो समझ में आ जायेगा। सीधा है समता और उल्टा है तामस।

**धर्ममय जीवन प्रकाशमान** हो सकता है, कभी किसी प्रकार से चंचलता भी आ जाती है, लेकिन यदि धर्म को समझ लिया है तो चंचलता स्थायी नहीं हो सकती क्षणभर में हम पुनः सावधान हो सकते हैं। सही बात तो यह है कि परमात्मा श्री महावीरदेव ने जो कहा है, उसे हम भूल गये। बाहर का हमें सब याद है, लेकिन अपने भीतरी जगत में क्या हो रहा है, यह हमें मालूम नहीं है। भीतर से हम अनभिज्ञ हैं और सभी प्रवृत्तियों से भिड़े हुए हैं। बेजान की तरह जीवन बीत रहा है। इसीलिए भगवान ने कहा है कि जीवन में धर्म के निकट आओ। हम जितने धर्म के निकट आयेंगे, हमारा जीवन उतना ही प्रकाशमान बनेगा। हम धर्म से जितने दूर रहेंगे, उतना ही जीवन अंधकारमय होगा। अंधकार में रहने वाले लोग एक – दूसरे की दुर्दशा कर डालते हैं।

इसी प्रकार जब आवेश आ जाता है तब भी अंधकार छा जाता है और व्यक्ति देखने पहचानने की क्षमता खो बैठता है। अंधेरे में। आवरण दशा में आदमी परस्पर भिड़ जाते हैं। एक बार एक गाँव में चोर आये। लोगों को मालूम हो गया। वे उन्हें पकड़ने के लिए घर से बाहर निकलने लगे। उस समय घना अंधेरा था और दियाबत्ती भी नहीं थी। परिणाम यह हुआ कि चोर तो भाग गये और रोज मिलने जुलने वालों ने एक–दूसरे को चोर समझ कर पकड़ लिया। इसी प्रकार जब मस्तिष्क पर आवरण आ जाता है, तब मनुष्य वास्तविकता भूल जाता है।

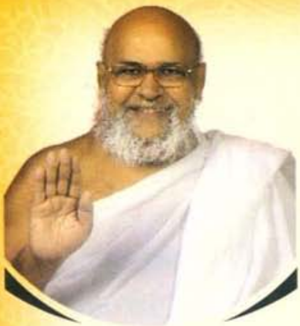

# अभिमान त्याग

(सुविशाल गच्छाधिपति युग प्रभावक राष्ट्रसंत
जैनाचार्य श्री जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा.)

चरम तीर्थंकर महावीर स्वामी अपने अन्तिम उपदेश का प्रारम्भ करते हुए शिष्यों से कह रहे हैं :-

संजोगा विप्पमुक्कस्स, अणगारस्स भिक्खुणो ।
विणयं पाउकरिस्सामि, आणुव्विं, सुणेह मे ॥

संयोगों से मुक्त अनगार भिक्षु के लिए मैं विनय का स्वरूप प्रकट करने वाला हूँ।

आत्मा से संयुक्त होने वाली दूसरी कषाय अभिमान के विषय में हम यहाँ चिंतन कर रहे हैं:-

सर्पों का राजा वासुकि नाग अपने दाँत में प्रचुर विष रखने पर भी घमंड नहीं करता, परन्तु बिच्छू के पास एक बूँद विष होता है, फिर भी वह डंक को घमण्ड से उठाये-उठाये फिरता है।

विषभारसहस्रेण, गर्वं नायाति वासुकि ः।
वृश्चिको बिन्दुमात्रेणाप्यूर्ध्वं वहति कण्टकम् ॥

ठाकुर स्वरूपसिंहजी अपने शिष्य राजिया को संबोधित करते हुए एक सोरठे के माध्यम से राजस्थानी भाषा में क्या ही सुंदर ढंग से यही दृष्टांत यों कहते हैं -

मणिधर विष अणमाव, धारै पण नाणे मगन ।
बिच्छू पूँछ बणाव, राखै सिर पर राजिया ॥

पोखर का गँदला जल पीकर भी मेंढ़क टर्र-टर्र करने लगता है, परन्तु दूसरी ओर मधुर आम के फल खाकर भी तोता घमंड नहीं करता । एक अंगुल गहरे पानी में भी मछली फड़फड़ाती है, परन्तु अथाह असीम जल वाले समुद्र में रहकर भी व्हेल मछली को गर्व नहीं होता । थोथा चना बाजे घना । जो चना थोथा होता है, उसमें से आवाज निकलती है, परन्तु जो चना ठोस होता है, वह आवाज नहीं करता । सोंठ का टुकड़ा भी मिल जाये तो चूहा अपने को पंसारी (जड़ी-बूटी रखने वाला व्यापारी) समझता है, क्योंकि आखिर वह चूहा ही तो है । साधारण व्यक्ति भी इसी प्रकार कहीं से जरा-सी जानकारी प्राप्त हो जाये तो अपने को बड़ा

भारी पंडित समझने लगता है । दूसरी ओर पंडित विनीत हो जाता है, क्योंकि उसकी जानकारी जैसे-जैसे बढ़ने लगती है, वैसे ही वैसे वह अपने को अज्ञानी मानने लगता है । एक शायर ने अपनी इस दशा का परिचय देते हुए लिखा है-

हम जानते थे, इल्म से कुछ जानेंगे ।
जाना तो यह जाना कि, न जाना कुछ भी ।।

शास्त्र पढ़कर हम विद्वान बनेंगे- ऐसा मान बैठे थे, परन्तु शास्त्रों का अध्ययन करने के बाद हमने यही समझा कि हम कुछ नहीं जानते, क्योंकि अध्ययन से बुद्धि का तो विकास होता है, परन्तु ज्ञान प्राप्त नहीं होता । ज्ञान तो अपने चिंतन-मनन से प्राप्त होता है, अनुभव से प्राप्त होता है, पुस्तकों से नहीं । पुस्तकों से सहायता मिल सकती है अवश्य, क्योंकि उसमें दूसरे के अनुभव लिखे होते हैं, परन्तु अपना अनुभव ही हमें सच्चा ज्ञानी बना सकता है । सच्चे ज्ञानी में अभिमान नहीं, विनय होता है ।

जो व्यक्ति पानी में तैर रहे होते हैं, वे ही बोल सकते हैं, परन्तु जो पानी में डुबकी लगा लेते हैं, वे बोल नहीं सकते । इस प्रकार जो ज्ञान की सतह पर होते हैं, वे ही बड़बड़ाहट करते हैं, बकवास करते हैं। परन्तु गंभीर ज्ञानी मौन रहते हैं । बहुत आवश्यक होने पर ही वे खूब सोच-समझकर बोलते हैं ।

पहले पंडितों में शास्त्रार्थ हुआ करता था । शास्त्रार्थ का मतलब यह होता है कि अमुक शास्त्रवाक्यों का अर्थ मैं ऐसा करता हूँ अथवा अमुक-अमुक शास्त्रीय वाक्य मेरी बात का समर्थन करते हैं, इसीलिए मेरी बात सच्ची है, मानने योग्य है । यही बात विपक्षी पंडित भी कहता था । इस शास्त्रार्थ के मूल में गर्व (अहंकार) होता है -

वादमिच्छन्ति गर्विताः ।।

जिसमें गर्व होता है, उसका चिंतन कुछ-कुछ इस प्रकार होता है : जो मेरी तरह सोचता है वही बुद्धिमान है, जिस आदमी के विचार मेरी विचारधारा से मेल नहीं खाते वही मूर्ख है, जिसका आचरण मैं करता हूँ, वही सबके लिए उपादेय कार्य है, आदर्श कर्त्तव्य है ।

आश्चर्य होता है यह देखकर कि दूसरों के घमंड से नफरत करने वाला स्वयं अपने घमंड को छोड़ने के लिए तैयार नहीं होता । घमंडी दो भूलें एक साथ करता है । अपने को सर्वोत्तम मानना उसकी पहली भूल है और दूसरों को हीन (तुच्छ) समझना उसकी दूसरी भूल है ।

अभिमानी कहता है : 'जगत मेरा सेवक है', जबकि विनयवान् यह कहता है : 'मैं जगत का सेवक हूँ ।' यही उन दोनों में अंतर है । फटी जेब में धन (रुपये-पैसे) जिस प्रकार

सुरक्षित नहीं रहता. उसी प्रकार अभिमानी के मन में विद्या सुरक्षित नहीं रह सकती ।

अभिमानी के हृदय में. ज्ञान न करता धाम ।
फटी जेब में क्या कभी. रह सकते हैं दाम ।।

अभिमान आँखों पर ऐसी पट्टी लगा देता है कि अभिमानी को अपने अतिरिक्त और कोई व्यक्ति दिखाई ही नहीं देता । वह एक प्रकार से अंधा हो जाता है - आँखों वाला अंधा ।

विचार करने पर पता चलता है कि अभिमानी दो प्रकार के होते हैं । जो यह सोचते हैं कि दूसरों की सहायता पाये बिना हम अकेले अपना काम बखूबी चला सकते हैं. वे एक प्रकार के अभिमानी हैं । दूसरे प्रकार के अभिमानी वे. जो यह सोचते हैं कि हमारे बिना दूसरों का काम चल ही नहीं सकता. हमसे यह दुनिया है. दुनिया से हम नहीं ।

पहले प्रकार के अभिमानी दूसरे प्रकार के अभिमानी से कुछ हल्के दर्जे के हैं । पहले प्रकार के अभिमानियों से जगत का उतना नुकसान नहीं होता. जितना दूसरे प्रकार के अभिमानियों से हो सकता है । अभिमानी अंधे होते हैं. इसका एक प्रमाण यह कहा जा सकता है कि जब वे एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा रहे होते हैं. तब उनके आगे-आगे चलने वाले नौकर-चाकर चिल्लाया करते हैं - हटो-हटो !

अभिमानी दूसरों के अपमान करने का कोई अवसर नहीं चूकते । वे भूल जाते हैं कि अभिमानी के अपमान की धार ऑपरेशन से भी तेज होती है -

खर्पीश्रीं ळी ीशं हिशपे शिीरींळेप

एक यहूदी धर्मग्रंथ के अनुसार लोगों के सामने किसी का अपमान करना. उतना ही बड़ा पाप है. जितना किसी का खून कर देना ।

मनुष्य बड़े से बड़ा कष्ट सह सकता है. परन्तु अपमान नहीं सह सकता । आदरणीय व्यक्ति को अपमान का कष्ट मृत्यु से भी अधिक असह्य लगता है ।

सम्भावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते ।

- गीता

मनुष्य की शोभा. यश और पौरुष उसके सम्मान पर ही निर्भर होते हैं । मानहानि होने पर ये सब नष्ट हो जाते हैं. अपमानित होकर जीने की अपेक्षा गौरवशाली पुरुष मरना अच्छा मानते हैं. क्योंकि मृत्यु का दुःख थोड़ी देर के लिए होता है. परन्तु अपमान का दुःख प्रतिदिन होता है ।

वरं प्राणपरित्यागो. मानभंगेऽपि जीवनात् ।
मृत्योर्हि क्षणिकं दुःखं. मानभंगाद् दिने दिने ।।

स्वाभिमानी पुरुष अपमान के दुःख को समझता है, इसलिए दूसरों को अपमानित नहीं करता और स्वयं भी अपमान से बचता है, अर्थात् अपमान के कारणों से बचता है। स्त्री अधिक दिनों तक पीहर में रहे, पुरुष अधिक दिनों तक ससुराल में रहे और साधु अधिक दिनों तक एक ही स्थान पर रहे तो अपमानित होता है।

स्त्री पीहर नर सासरे, संजमियो थिरवास ।
ए होवे अणखावणा, करताँ अधिक निवास ॥

यदि हम बराबर अपने कर्त्तव्य का पालन करते रहे तो कोई हमें क्यों अपमानित करेगा ? देव की आकृति वाले पत्थर का भी अपमान नहीं होता, फिर मनुष्यों की क्या बात ?

देवाकारोपेतः पाषाणोपि नावमन्यते, तत्कि पुनर्मनुष्यः ।

- नीतिवाक्यामृतम् 7/30

यदि अभिमानवश व्यक्ति जिनका अपमान नहीं करना चाहिये, उनका भी अपमान कर बैठता है तो उसका दुष्परिणाम उसी को भोगना पड़ता है। साँप, अग्नि, सिंह और कुलीन युवक- ये बहुत तेजस्वी होते हैं, इसलिए विदुरजी का कथन है कि इनका कभी अपमान नहीं करना चाहिये।

सर्पश्चाग्निश्च सिंहश्च, कुलपुत्रश्च भारत !
नावज्ञेया मनुष्येण, सर्वे ह्येतेऽतितेजसः ॥

- विदुरनीतिः 5/61

जब बाल सफेद हो जाते हैं, आँखे भीतर धँस जाती हैं, नाक बाहर निकल आती है और चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ जाती हैं, तब बुढ़ापे में शरीर के सौंदर्य का अभिमान समाप्त हो जाता है। बल का अभिमान बीमारी में नष्ट हो जाता है। धन का अभिमान अपने से बड़े धनवान को देखते ही नष्ट हो जाता है। विद्या और कुलीनता का अभिमान भी अवसर आने पर इसी प्रकार नष्ट हो जाता है। एक उदाहरण सुनिये -

एक राजकुमार था। उसे अपनी कुलीनता और धनुर्विद्या का बड़ा अभिमान था। एक दिन ससुराल गया। अपने साथ अंगरक्षक नहीं लिये। ससुराल से पत्नी को साथ लेकर जब वह लौटने लगा तब ससुरजी के बार-बार अनुरोध करने पर भी उसने सैनिक साथ रखने से इंकार कर दिया। अपने तूणीर में एक सौ पच्चीस बाण रखकर वह रथारुढ़ हुआ और अपने नगर की ओर चल पड़ा।

मार्ग में एक भील का सामना हो गया। वह एक डाकू था। उसके पास भी धनुष बाण थे। रथ का माल लूटने के लिए उसने अपने धनुष से बाण बरसाने शुरु कर दिये। राजकुमार

ने भी अपने धनुष को संभाला और एक के बाद एक बाण फेंकते हुए उसने भील के बाणों को बीच में ही गिराना प्रारंभ कर दिया ।

भील उसी जंगल में रहता था । उसके पास बाणों की कमी नहीं थी. किन्तु राजकुमार के बाण सीमित थे । जो भी थे. वे आत्मरक्षा में खर्च हो रहे थे. उसे आक्रमण का अवसर नहीं मिल रहा था ।

आत्मरक्षात्मक युद्ध में एक सौ चौबीस बाण नष्ट होने के बाद पत्नी ने विनयपूर्वक कहा - 'नाथ ! यह अंतिम बाण तभी फेंकियेगा. जब मैं वाह-वाह कहूँ. 'अन्यथा हम दोनों भयंकर मुसीबत में फँस जायेंगे।'

युवक ने उसका प्रस्ताव मान लिया । फिर पत्नी ने बाहर झाँककर भील पर एक कटाक्ष बाण फेंका । वह मंत्रमुग्ध-सा उसके मुखमंडल के सौंदर्य रस का पान करने लगा । ठीक उसी समय पत्नी ने 'वाह-वाह' कहकर संकेत दिया । राजकुमार ने निशाना साधकर ऐसा बाण फेंका कि इधर कुमार का बाण छूटा और उधर भील के प्राण छूट गये ।

पति - पत्नी सकुशल अपने राज्य में लौट आये. परन्तु उस दिन से राजकुमार का अभिमान नष्ट हो गया । भविष्य में वह कहीं भी जाता तो बड़ों का कहा मानकर अंगरक्षकों को साथ रख लेता ।

ऐसे ही एक अन्य अभिमानी राजकुमार को समझाने के लिए महात्मा बुद्ध ने एक युक्ति से काम लिया -

उन्होंने राजकुमार को आदेश दिया कि सामने नीम का एक पौधा उग रहा है. उसकी दो चार पत्तियाँ तोड़ लाओ । वह तोड़ लाया । महात्माजी ने कहा- इन्हें चबा जाओ ।

वैसा करने पर राजकुमार का मुँह कड़वा हो गया । पत्तियाँ थूक देने पर भी मुँह की कड़वाहट नहीं गई । गुस्से से भरे हुए राजकुमार ने उस पौधे को जड़-मूल से उखाड़कर फेंक दिया ।

महात्मा बुद्ध ने पूछा-पौधे को इस तरह उखाड़कर फेंकने का कारण क्या है ? तुम्हारी उससे दुश्मनी क्यों है ? उसने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है ?

राजकुमार ने उत्तर दिया :- जो पौधा अभी से इतना कड़वा है. वह वृक्ष बनने पर कितना अधिक कड़वा हो जायेगा ? इसकी कल्पना की जा सकती है । ऐसे पौधे को पनपने देने में कौनसी बुद्धिमानी है ? कहाँ की दूरदर्शिता है ?

इस पर महात्मा बुद्ध ने कहा- यदि यही बात प्रजा भी अपने अभिमानी राजकुमार के लिए सोच ले तो क्या होगा ? सोचा है कभी ?

यह सुनते ही अपने अभिमान का भान हो जाने से राजकुमार अत्यंत विनीत बन गया।

अभिमान के कारण बड़े- बड़े लोगों को भी बुरी तरह लज्जित होना पड़ता है. इसका एक ऐतिहासिक उदाहरण प्रस्तुत है-

भरत चक्रवती का शुभ नाम तो आप सबने सुना ही होगा। वे वर्तमान चौबीसी के प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेव के सौ पुत्रों में सबसे बड़े पुत्र थे। एक बार अपना नाम अमर करने की धुन उनके मन पर सवार हुई। उन्हें तीर्थ यात्राएँ करने का बड़ा शौक था. इसलिए उन्होंने सोचा कि जिस तीर्थ की यात्रा सबसे कठिन हो. वहाँ पहुँचकर किसी चट्टान पर अपना नाम खुदवा लिया जाये तो शायद यह अवश्य अमर हो जाये। ऐसा तीर्थस्थल था- वृषभाचल।

अपने विचार को कार्यरुप में परिणत करने के लिए वे वृषभाचल पर जा पहुँचे। वहाँ पूर्ववर्ती चक्रवर्तियों के स्थान-स्थान पर खुदे नामों को देखकर वे आश्चर्य के समुद्र में डूब गये। इससे उनका अभिमान तो गल ही गया. साथ ही अपना नाम खुदवाने के लिए स्थान ढूँढने की समस्या भी उनके सामने आ खड़ी हुई। पूरे पर्वत की किसी भी चट्टान पर तिलभर भी स्थान रिक्त नहीं था. जहाँ वे अपना नाम खुदवाने की इच्छा पूरी कर पाते।

अंत में किसी एक पुराने चक्रवर्ती का नाम मिटवाकर उसकी जगह उन्होंने अपना नाम खुदवा लिया। वहाँ के पुजारी को यह बात मालूम हुई तो उसने कहा - 'राजन्! आपने यहाँ किसी का नाम मिटाकर अपना नाम लिखवाने की नई परंपरा डाली है। कल नया चक्रवर्ती आपके नाम के साथ भी ऐसा व्यवहार कर सकता है। उस समय आपको कैसा लगेगा?'

भरत चक्रवर्ती को इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं सूझा। अपने नाम को अमर करने की इच्छा के मूल में जो प्रचण्ड अभिमान छिपा था. उसके कारण उन्हें लज्जित होना पड़ा।

रामकृष्णमिशन के संस्थापक विश्वविख्यात व्याख्याता विद्वान् स्वामी विवेकानन्द के साथ एक दिन उनके शिष्य भोजन करने बैठे।

शिष्यों में से एक का यह नियम था कि यदि किसी ने भोजन के समय कोई प्रश्न किया तो जब तक वह उसको संतोषजनक उत्तर नहीं दे देता. तब तक भोजन प्रारंभ ही नहीं करता था। उस दिन एक साथी ने यह प्रश्न उछाला - 'वह कौन है. जो जीव को नरक में ले जाता है?' इसके उत्तर में उसने कहा-

'(द्वारं किमेकं नरकस्य! नारी) नरक का एक मात्र द्वार क्या है? नारी. इसलिए नारी ही नरक में ले जाती है। किसी साधु ने नारी को नरक की खान तक बताया है (नार नरक की खानि)।'

प्रश्नकर्ता : 'यदि नारी ही नरक में ले जाती है तो फिर नारी को नरक में कौन ले जाता है?'

उत्तरदाता : जो काम- भोग में आसक्त हैं, वे अपवित्र व्यक्ति नरक में जाते हैं -

प्रसक्ता : कामभोगेषु, पतन्ति नरकेऽशुचौ ।।

इसलिए काम- भोग स्त्री-पुरुष दोनों को नरक में ले जाते हैं।

प्रश्नकर्त्ता : 'जो व्यभिचार से दूर रहकर विवाहित जीवन के सुख भोगते हैं, वे नरकगामी कैसे होंगे ?'

उत्तरदाता : 'काम, क्रोध और लोभ ये तीनों आत्मा के दूषक हैं- नरक के द्वार हैं, इसलिए इनका त्याग करना चाहिए ।

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः ।
कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत् त्रयं त्येनत् ।।

इससे मालूम होता है कि काम, क्रोध और लोभ जीवों को नरक में ले जाते हैं।

प्रश्नकर्त्ता : 'श्रीराम, श्रीकृष्ण, पैगम्बर मुहम्मद आदि सुशील व्यक्ति भी काम सेवन करते रहे हैं। अत्याचारियों के विरुद्ध युद्ध में ये तीनों क्रुद्ध भी होते रहे हैं, फिर भी ऐसे पुरुष नरक में जाते हैं - ऐसा कोई नहीं मान सकता। रही बात लोभ की, सो सिंह-साँप-भालू आदि क्रूर प्राणी भी नरक में जाते हैं, जबकि इनमें धन या उपहार का लोभ नहीं होता।'

उत्तरदाता : 'जो मित्रों के द्वेषी होते हैं, कृतघ्न (दूसरों के उपकार का आभार न मानने वाले ) होते हैं और विश्वासघाती होते हैं, वे लोग युगों तक नरक में रहते हैं।'

प्रश्नकर्त्ता : 'यह उत्तर भी संतोषजनक नहीं मालूम होता, क्योंकि गाय, बैल, बकरी, हाथी जैसे अनेक पशु नरक में नहीं जाते और हिंसक बाघ, सिंह, भालू आदि नरक में जाते हैं, परन्तु कोई भी पशु मित्र द्रोही, कृतघ्न और विश्वासघाती नहीं होता।'

देर तक चलने वाले इस वाद-विवाद को सुनकर स्वामी विवेकानन्द ने सहसा पूछा - 'यह प्रश्न है किसका ?'

प्रश्नकर्त्ता : 'मेरा।'

स्वामीजीः 'बस, यह 'मेरा-मेरा', अहंकार ही मनुष्य को नरक में ले जाता है।'

इससे प्रश्नकर्त्ता संतुष्ट हो गया और फिर सबने भोजन किया।

मोह के दो मंत्र हैं- 'मैं' (अहंकार) और 'मेरा' (ममता), जो जगत् को अंधा बना देते हैं।

श्रीकृष्ण बाँसुरी बजाने में बड़े निपुण थे। जब वे उसमें से कोई रागिनी निकालते तो दूर-दूर से स्त्री-पुरुष, पशु-पक्षी समीप आकर बैठ जाते और उसकी स्वर-लहरी में डूब

जाते थे। बाँसुरी की मधुर ध्वनि के बल पर ही भयंकर विषधर कालिया नाग को नाथने (वश करने) में उन्हें सफलता प्राप्त हुई थी। बाँसुरी की मीठी आवाज का महत्त्व वे समझते थे, इसीलिए राधा की अपेक्षा बाँसुरी उन्हें अधिक प्रिय थी। खेल-खेल में जब राधाजी बाँसुरी को छिपा देतीं तो वे अत्यन्त बेचैन हो उठते थे।

एक दिन राधाजी ने बाँसुरी से पूछा - 'हे बंशी ! श्री कृष्ण सबसे अधिक प्यार तुमसे ही क्यों करते हैं ? क्या रहस्य है इसका ?'

इसके उत्तर में बाँसुरी ने कहा - 'मैं भीतर से पोली हूँ, अहंकार शून्य हूँ, इसलिए मुझे श्रीकृष्ण जैसे भी चाहें, बनाकर सबको चकित किया करते हैं।'

यह सुनकर राधाजी ने समझ लिया कि जिसके मन में अहंकार नहीं होता, उसके मुँह से भगवान की ही वाणी प्रकट होती है- वह वाणी जो सभी को प्रभावित करने की क्षमता रखती है। उस दिन से स्वयं भी राधाजी ने अपने को अहंकार शून्य बनाने का प्रयास प्रारंभ कर दिया।

वैसे देखा जाय तो अहंकारी भी भीतर से शून्य होता है- बिल्कुल खोखला, परन्तु वह अपने को भरने की कोशिश करता है- सपने की सफलताओं से, नकली हीरों से, दिखावटी विनयों से।

शिकार खेलने के लिए कुछ लोगों ने एक दल बनाया। उसमें शामिल होने के लिए उत्कण्ठित एक आदमी वहाँ आया। आदमी दल के कप्तान से मिला। कप्तान ने दल में शामिल करने से पहले उस आदमी से इंटरव्यू लेना उचित समझा और पूछा - 'क्या आपने कभी किसी जंगली पशु को मारा है ?' आदमी ने उत्तर दिया - ' जी हाँ ! मैंने एक बार एक सिंह की गर्दन मरोड़ दी थी, एक हाथी की सूँड एक झटके में उखाड़ फेंकी थी, एक भालू के पाँव तोड़ दिये थे और एक अजगर के दो टुकड़े कर डाले थे।'

चकित कप्तान ने पूछा - 'फिर क्या हुआ ?'

आदमी ने कहा - 'फिर तो वही हुआ जिसके होने की संभावना थी। मेरी जान आफत में आ गई थी, बड़ी मुश्किल से बच पाई। खिलौने वाले ने धक्के दे-देकर मुझे अपनी दुकान से भगा दिया।'

कहने का आशय यह है कि अहंकारी अपने अहंकार को ऐसी झूठी सफलताओं से भरते हैं और फूले-फूले फिरते हैं, परन्तु क्या यह सब उचित है ? कभी नहीं।

अभिमान का नशा छोड़कर जो विनय को अपनाते हैं वे ही निश्चित रूप से विनय प्राप्त करते हैं।

# पूज्य मधुकरजी की डायरी के पृष्ठों से

(सुविशाल गच्छाधिपति युग प्रभावक राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्री जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा.)

(प.पू. परमश्रद्धेय आचार्यश्री जयंतसेनसूरीश्वरजी 'मधुकर' की स्वलिखित डायरी के पृष्ठों से चिंतन के संकलित अंश यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं )

**धर्म एक अमृतकुंभ** – धर्म अमृतकुंभ है और अधर्म विषकुंभ । धर्म अमरता प्रदान करता है और अधर्म मृत्यु। धर्म से विमुख होना कर्म के सन्मुख होना है । धर्म निरपेक्षता अन्त में जीव के लिए हानिकारक होती है । धर्म निरपेक्षता का अर्थ है धर्म की सहायता न लेना–धर्म के प्रति उदासीन होना । वैयक्तिक जीवन से लेकर पारिवारिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय जीवन तक जब धर्म निरपेक्ष हो जाता है, तब यह मान लेना चाहिए कि जीवन अंधकारमय हो रहा है ।

धर्म तो जीवन का कर्तव्य है । धर्म से दूर जानेवाला कर्तव्य परायण नहीं हो सकता धर्म जीवन का सत्व है, तत्व है अतः धर्म से ही जीवन मूल्यवान बनता है । वस्तु स्वभाव धर्म है। जीवन और धर्म का तादात्म्य संबंध है, अतः जीवन को धर्म से अलग करना जीवन के मूल को उखाड़ फेंकना है । जीवन का मूल ही समाप्त हो गया, तो फिर उसका पल्लवित पुष्पित और फलित होना असंभव हो जायेगा ।

धर्म के स्वरूप को समझने में असमर्थ व्यक्ति ही धर्म से परहेज रखता है । समझदार के लिए तो धर्म उसका जीवन साथी होता है ।

**उत्तम त्याग** – धर्म के दस अंगों में एक उत्तम त्याग भी है । जैन धर्म त्याग प्रधान है । इस त्याग भाव के कारण ही जैन धर्म आज तक अपना अस्तित्व बनाये हुए है । त्याग तन से होता है मन से होता है और वचन से भी होता है । तप, जप एवं धर्म क्रिया में प्रवृत्त रहना तन से किया गया त्याग है, आत्म स्वाध्याय में लगे रहना मन से किया त्याग, मानस शुद्धि भाव में प्रवृत्त रहना वचन किया गया त्याग है । मन से किया गया त्याग मानस शुद्धि का कारण है, वचन से किया गया त्याग वचन शुद्धि का कारण है और काया से किया गया त्याग आत्मिक बलवर्द्धक है । बाह्याभ्यन्तर यह त्याग आत्म परिणति को विशुद्ध करता है और आत्मा को प्रगति की ओर अग्रसर करता है ।

**त्याग के बिना सिद्धि असंभव है** – काम कोई भी हो, से त्याग तो

करना ही पड़ता है । हमें प्रति पल त्याग के लिए तैयार रहना चाहिए, क्योंकि त्याग किये बिना कभी यश नहीं मिलता । असफलता के मूल कारण की यदि खोज की जाए तो मालूम होगा कि असफलता का मूल कारण त्याग भाव का अभाव ही है।

सामाजिक संस्थाओं का विकास अवरुद्ध क्यों होता जा रहा है ? कार्यकर्ताओं में संस्था के प्रति जो लगाव होना चाहिये, वह नहीं है । वे संस्था के लिए त्याग करने में तत्पर नहीं हैं। इसी कारण से सामाजिक संस्थाएँ आज विफल हो रही हैं ।

त्याग प्रत्येक क्षेत्र में आवश्यक है । घर का त्याग करके दुकान पर जाने के पश्चात् ही व्यापारी व्यापार में सफलता पाता है । थोड़ा सा त्याग भी जीवन में बहुत लाभदायक होता है ।

आज्ञापालन- 'आणाए धम्मो।' भगवान महावीर ने कहा कि आज्ञा पालन में धर्म है । मनुष्य जब तक आज्ञा पालन करना नहीं सीख लेता, तब तक निर्माण की दिशा में उसकी गति नहीं हो सकती । जिसके हृदय में आज्ञा पालन की भावना होती है, वह विनयगुण सम्पन्न होता है । जिसमें विनय नहीं होता, वह आज्ञा पालन कभी नहीं कर सकता। आज्ञापालन मर्यादा की सुरक्षा है । मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम आज्ञापालक थे । आज्ञा जीवन की उन्नति के लिए मर्यादित कार्यप्रणाली की शिक्षा देती है । आज्ञा बेलगाम मनुष्य के लिए लगाम रूप होती है । आज्ञा एक लक्ष्मण रेखा है । इसे लांघनेवाला अपना अहित ही करता है । जिसने जीवन में आज्ञा पालन नहीं सीखा, उसने कुछ भी नहीं सीखा । आज्ञापालन से ही तत्व और सत्व की प्राप्ति होती है और व्यक्ति का महत्व बढ़ता है ।

मर्यादा का महत्व- मर्यादा जीवन में सबसे अधिक महत्वपूर्ण है । मानसिक, वाचिक और कायिक मर्यादा मनुष्य की आत्मशक्ति बढ़ाती है । मर्यादा रहित प्रवृत्ति जीवन को उत्थानक्रम में अनुरोध निर्माण करती है ।पिता-पुत्र, गुरु-शिष्य, आराध्य-आराधक, जेष्ठ-लघु, स्त्री-पुरुष सबकी अपनी पारस्परिक मर्यादा सुनियोजित है । मनुष्य जब अपनी मर्यादा का भंग करके कार्यरत होता है तब उसके विकास का स्थान विनाश ले लेता है । प्राणिमात्र को जल प्रदान करने वाली सरिता यदि अपने दोनों किनारों की मर्यादा में बहती है, तो सबको जीवन दान करती है । वह सरिता जब मर्यादा तोड़कर बहने लगती है, तब सब के जान-माल की हानि करती है ।

(अशुभ चिन्तन से निवृत्ति, निरवद्य वाणी विलास में प्रवृत्ति और सावद्य प्रवृत्ति से निवृत्ति जब जीवन में होती है, तब मर्यादा की सुरक्षा होती है और मर्यादा सम्पन्न जीवन बड़ा महत्वपूर्ण होता है ।)

# बड़भागी बागरा

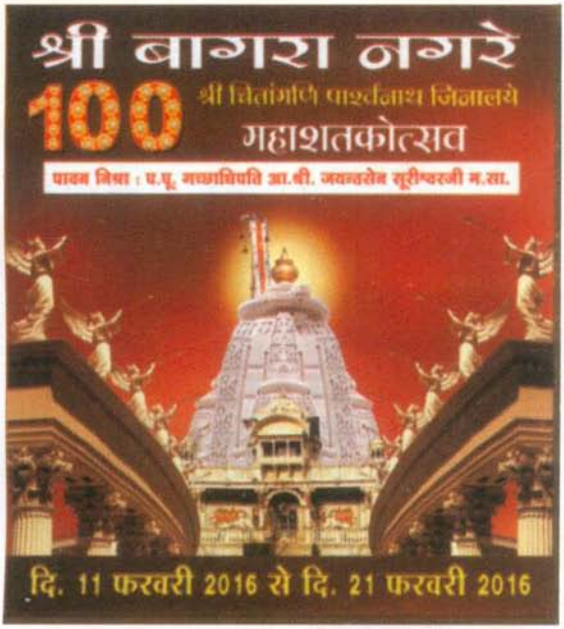


## शाश्वत धर्म

# महाशतकोत्सव विशेषांक

श्री संघ अध्यक्ष की पाती...

# नमन ओ ! तीर्थ बागरा

वाघजीभाई वोरा
राष्ट्रीय अध्यक्ष-श्रीसंघ

देव-गुरु-धर्म की उपासना तथा जिनशासन की प्रभावना में राजस्थान के बागरा नगर ने इस बार कमाल ही कर दिया। गच्छाधिपति, युग प्रभावक, जैनाचार्य, राष्ट्रसंत श्रीमद् विजयजयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा. के वरदायी- कल्याणकारी सान्निध्य में उसने श्री चिन्तामणी पार्श्वनाथ जिनालय के एक शताब्दी पूर्ण करने के अवसर पर 'महाशतकोत्सव' के रूप में आयोजित इन्द्रधनुषी कार्यक्रम को सफलतापूर्वक कर उसने सम्पूर्ण त्रिस्तुतिक समाज पर अपनी भक्ति तथा आस्था की छाप छोड़ी है। हम इस प्रसंग पर बागरा के श्रीसंघ को नमन करते हैं।

जिनेश्वर श्री पार्श्वनाथ प्रभु पुरुषादानी विशेषण से अलंकृत किये जाते हैं। इसका सीधा तात्पर्य है कि वे उदार तथा परोपकारी थे। प्रत्येक मानव तक उनकी कृपा तथा अनुगृहशीलता का प्रकाश उनके आभामंडल से प्रसारित होता था। वे अत्यंत लोकप्रिय थे। उस युग के कई राजाओं ने उनके उपदेश से जैन धर्म स्वीकार कर लिया था। ऐसे श्री पार्श्वनाथ प्रभु को बागरा ने अपने हृदय में बिराजमान कर तीर्थत्व साकार कर लिया है साथ ही दादा गुरुदेव योगीराज श्रीमद् विजयराजेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. की दया का अमृतघट बागरा की धरोहर है। वह बागरावासियों के नैत्रों को जगमगा रहा है। बागरा की भूमि पर गुरुदेव श्रीमद् धनचंद्रसूरीश्वरजी म.सा. का तथा गुरुदेव श्रीमद् विजय यतीन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. के वात्सल्य की गगरी छलक रही है। गच्छाधिपति श्रीमद् विजयजयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. का आशीर्वाद बागरा के लिये आलोक की आश्वस्ती है। इन सभी के व्यक्तित्व यश, समृद्धि तथा गौरव के असंख्य दीप बनकर बागरा को निखार रहे हैं। मेरा बागरावासियों को पुनः अभिवादन !

बागरा सदैव त्रिस्तुतिक समाज के भाल की तिलकमणी की भांति दीप्ति बिखेरता रहा है। महाशतकोत्सव की अनन्य सफलता ने बागरा तथा बागरावासियों की शान में चहुंमुखी श्रीवृद्धि की है। अब वह कई क्षेत्रों को अगवाई प्रदान करने में सक्षम हो गया है। उसकी इस गर्वभरी उपलब्धि को हार्दिक अभिनंदन !

जय राजेन्द्र- जय यतीन्द्र-जय जयंत।

अध्यक्षीय संदेश...

# बधाई ! तीर्थ बागरा

रमेशभाई धरू
राष्ट्रीय अध्यक्ष
नवयुवक परिषद

बागरा का यह भव्य महा-महोत्सव देखकर मन गदगद हो गया। बागरावासी अपने-अपने व्यवसाय एवं जीविका हेतु सम्पूर्ण देश में फैले हुए हैं। परन्तु अपनी मातृभूमि की पुकार पर सब एक सूत्र में बंध गए। महामहोत्सव की जब पत्रिका प्राप्त हुई उसी दिन से लग रहा था कि महोत्सव अपने आप में अनूठा होगा। बागरावासी सौभाग्यशाली हैं कि उन्हें शतकोत्सव के साथ-साथ पूज्य गुरूदेव का संयमोत्सव एवं पाटोत्सव मनाने का प्रबल सौभाग्य प्राप्त हुआ है। ऐसे अवसर बार-बार नहीं मिलते। बागरवासियों ने इन अवसरों का भरपूर लाभ लिया एवं ऐतिहासिक महोत्सव मनाकर अपनी गुरूभक्ति का साक्ष्य दिया है।

सदैव से बागरा निवासियों की एक परम्परा रही है। त्रिस्तुतिक समाज के प्रारंभिक वर्षों से ही इनकी उदान्तता तथा गुरूभक्ति ने समाज की अग्रणीयता को इनके शीश पर मुकुट की भांति सजा दिया था। बागरा के निवासी पूरे देश में व्यावसायिक उद्देश्य से फैले तथा उनने वहाँ अपने पराक्रम का खूब परिचय दिया। उनकी सफलता से ही आज बागरा का चेहरा इस तीव्रता के साथ दमक रहा है। पूज्य गच्छाधिपति राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजयजयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा. जब मुनि पर्याय में थे तब उनने यहाँ चातुर्मास किया था। इस चातुर्मास में समाज के उत्थान की कई धाराएँ प्रकाशित होकर त्रिस्तुतिक श्रीसंघ के व्यक्तित्व का अंश बनी। इससे पूर्व 'शाश्वत धर्म' के प्रकाशन का सपना ईस्वी सन् 1950 में गुरूदेव श्रीमद् विजययतीन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. ने बागरा में ही साकार किया था।

'शाश्वत धर्म' का प्रकाशन आज नूतन पंचरंगी परिवेश में जैन समाचार पत्रों के आसमान को शोभित कर रहा है। अब बागरा तीर्थ है। इस तीर्थत्व की घोषणा के अवसर का उपयोग बागरा ने महाशतकोत्सव के आयोजन के सफल आयोजन के रूप में कर, जैन संस्कृति के मस्तक को उन्नत कर दिया है। बागरा निवासियों का उनकी इस महानता के लिये शत्-शत् अभिनंदन।

# बागरा मंडन श्री पार्श्वनाथ स्तवन

(राग : ये है पावन भूमि)

चिन्तामणी पारसनाथ, चरणों में वन्दन है
प्रभु देव के देव दयाल, जो बागरा मंडन है ...
|| चिन्तामणी 01 ||

मंगलमय मूरत है, प्रभु सांवरी सूरत है,
मनवांछित पूरत है, चिन्ता सब चूरत है ...
|| चिन्तामणी 02 ||

दर्शन दुःखहारी है, पावन सुखकारी है,
महिमा जस भारी है, जग में जयकारी है ...
|| चिन्तामणी 03 ||

वाणारसी राया है, सुर नर मिल गाया है,
वामा दे जाया है, प्रभु मुझ मन भाया है ...
|| चिन्तामणी 04 ||

परमातम जिनदेवा, चाहुं भव भव सेवा,
दायक है शिवमेवा, पुरुषादानीय देवा ...
||चिन्तामणी 05||

सूरिराजेन्द्र गुरुराया, सूरियतीन्द्र पाया है,
जयन्तसेन ने गाया है, भक्तिभाव जगाया है ...
|| चिन्तामणी 06||

***

## श्री पार्श्वनाथ जिन चैत्यवन्दन

पास आस जग पूरणो, भवदुःख हरणो देव। सेवना सेवन सेवनी, मुझ मनमानी हेव ।। 1 समण समण ने समणता, सुमन-सुमन से सेव। दमन दमन ने दमनता, रमन-रमन ततखेव ।।2।। स्याद्वाद सुमतामयी, सुमत सुमत मुझ देय। पास-पास अम तोडिये आश-आश धरि लेह ।।3।। जो जाइने जाचिये, जो जइ पूरे आश। रीते सरोवर पेय गये, क्यों कर बूझे प्यास ।।4।। सूरि राजेंद्र मोहनो, मुझ मन वसियो लाल। 'धनमुनि' धरियो ध्यान में, वरिवा शिव वधुमाल ।।5।।

जयवन्त जिन जावालना, गुणवन्त गोडी पास। अरभक जाणी आपनो, उर धारो अरदास ।।1।। वामा वल्लभ जगधणी, बनारसी वरराय। तीर्थंकर तेवीसमा, अश्वसेन मन भाय ।।2।। प्राणप्रिया प्रभावती, सती शिरोमणि सार। पारस ने पद्मावती, यक्ष यक्षणी धार ।।3।। कमठ कुहठि हकारिने, अति कर्यों उपकार। दीक्षा पाली दीपती, वर्या शिववधु सार ।।4।। चक्षु षट रस चन्द्रमा, दरिशण कीधा देव। 'धनमुनि' ध्याने धारता, सारे सुरपति सेव ।।5।।

***

## श्री पार्श्वनाथ जिन स्तवन

**(शांतिनाथ ने स्मरण करी ने ए देशी)**

पार्श्वनाथ की प्रभुता जग में, फैल रही परतिख परचे। सौसठ इंदर नित प्रति ध्यावे, पूजा बहुत ही आप रचे ।।1।। काफर कमठ कुबुद्धि जान, न ले गुण कूँ ओगुन मान मचे। आप गुनी सब जगकूँ गुन में, समकित सुंदर ताहि जचे ।।2।। नाम अनेक आलम में जाहिर पिण जोधाणे चैत्य अछे। मुकनचंद मन मौजे कीना, मंदिर गोडीनाथ रुचे ।।3।। निपट तत्त्व लही दिल के भीतर, नाम मंत्र को ध्यान खुचे, कौन करे ताके पर दृष्टि, दृष्टिदोष से आप बचे ।।4।। वीस तीसरा सच्चा साहिब, सूरिराजेंदर शाह रचे। धन्यमुनि धारे चित भीतर वामेय जिनेसर सार अछे ।।5।।

# पार्श्वनाथ स्तवन

(पंथडो निहालु रे ... राग )

पारस प्रभुने विधियुत वंदिये रे, अविकल पद शिवधाम । भवजल तारक त्रिभुवन घणी रे, दाता शिव विश्राम, पारस. । तारो तारक पदधारी तुमे रे, दायक अक्षयत्वन शरणागत छुं प्रभु संभालजो रे, भटक्यो भवभव जान, पारस. । निर्मल शाश्वत जिन तमे प्रभो रे, वीतरागी जिनराज । जय अविकारी टालो आपदा रे, राखो मारी लाज पारस. । कन सी कान्ति कीर्ति ताहरी रे, शीतल शशि मुखचन्द । अनन्त गुरु के तारामां रह्या रे, निश्चय नित्यानन्द पारस. । भीलडीयाजी मण्डन भाव थी रे, भव-भव नो अन्त । सूरि राजेन्द्र यतीन्द्र सदा कह्यु रे, 'जयन्त' सौख्य अनन्त, पारस.

2. आवो आवो पासजी मुझ मलिाय रे ....राग

तारो तारो पार्श्वजी मने तारो रे, मारा कर्मना बंध निवारो, तारो. । मने क्रोधादि मारी भुलावे रे, वली विषयादि खूब सतावे रे । प्रभु तुज बिना कोण बचावे, तारो तारो तार्या कई जन जे अपराधी रे, मुक्तिपुरीनी पाघडी बांधी रे, तारी वाणीने में न अनन्त तारी तारो. । मन ममतामाँ रहीने मुंझाणुं रे, नथी शान्ति नुं साचुं ठेकाणु रे । कदी गायुं तामारू गाणुं तारो तारो. । तमे गुणी हुँ अवगुण दरियो रे, तुम देखत अन्तर ठरियो रे । तुम बिना न कोई ज बलियो तारो तारो. । कोई साथी न साचो मारो रे, मैं तो बांध्यो कर्मोनो भारो रे । नथी क्यांय देखातो किनारो, तारो तारो. । सूरि राजेन्द्र शिववधु स्वामी रे, सूरियतीन्द्र अंतरयामी रे । प्रभो । विनवे जयन्त शिरनामी, तारो तारो ।।7।।

प्रभु वामाजी के जाया, तोरी अपार माया ।। प्र.।।टेर।। नमे इन्द्र चन्द्र देवा, करे भक्ति नृत्य सेवा । सब देव में सवाया, तोरी. ।। प्रभु ।। 1।। छो पार्श्व पारस जैसा, नहीं देव कोई ऐसा । चिन्तामणी कहाया, तोरी. ।। प्रभु ।। 2।। जगजंतु के दयाला, अहि काष्ठ से निकाला । क्षण में कमठ हराया, तोरी. ।। प्रभु ।।3।। राजेन्द्र के भी राजा, आहोर में विराजा । मुनिराज यतीन्द्र गाया, तोरी. ।।प्रभु ।। 4।।

वामा नन्दन पारस प्रभु महाराज ।। टेर ।। सुमताधारी निर्मलकारी, दिल लाग्यो है जिनराज ।। पा.।। 1।। वांछित दाता मोक्ष निवासा, कर शाता शुद्धसमाज ।। पा.।। 2।। चित्त निराशी प्रभुजी सेवा, मिट जावे भव भव खाज ।। पा.।। 3।। सुरिराजेन्द्र । यतीन्द्र मुनिजी, सुमर हो जिन शिवकाज ।। पा.।। 4।।

पार्श्व पार्श्व नमो प्रभु मगन में ।। टेर ।। अविचल लीला केवल कमला, अतिशय सुक्ख शरीरन में ।।पा.।।1।। आश करो अब पूरण मेरी, सेवक आयो

शरनन में ।। पा.।।2।। अमिझरे सोहे वामानन्दन, जिम प्रभु समवसरन में ।।पा.।।3।। दुरगति चूरण वांछित पूरण, सुंदर मूरति करनन में ।। पा.।। 4।। विजय सूरिराजेन्द्र से अरजी, यतीन्द्र करत है चरनन में ।।पा.।।5।।

पार्श्वस्वामी मुक्तिगामी नहीं है खामी, जिनेन्द्र मेरे नाथ हैं ।।पा.।। टेर ।। परमब्रह्म परमातमा, आतम ज्योति स्वरूप । संजम रंग सुरंग में, कर्म निकन्दन भूप ।। आत्मरामी शुद्धधामी ज्ञान पामी, जि. ।।पा.।।1।। पारस परचा पूरन करे, हिमकर शोभा धाम । सेवा सुख मेवा लहे, पावे शुद्ध विराम ।। सुधर्मस्वामी कर्म वामी मोक्ष पामी, जि. ।।पा.।।2।। वही – पारस अवनिपति, सकल संघ भगवंत। दरशन मुनि नव रूप में, मगशिर तीज गुणवंत ।। कुकर्म वाणी पूर्णधामी योग पामी, जि. ।।पा।।3।। सूरीश्वरराजेन्द्रजी, परतिख आशा पूर । यतीन्द्र मुनि आनन्द में भेटे पार्श्व जरूर ।। जिनधर्म कामी पार पामी सत्यनामी जि. ।।पा.।। 4।।

## प्रस्तुत विशेषांक

*बागरा (जि. जालोर, राजस्थान) राजस्थान की ऐसी सुरम्य भूमि मानी जाती है जो धर्म और धार्मिकता से ओतप्रोत है । वहां श्री सौधर्मबृहद्तपोगच्छीय जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक त्रिस्तुतिक संघ बागरा (श्री जैन श्वेताम्बर संघ, बागरा) द्वारा संघ एकता शिल्पी, युग प्रभावक, राष्ट्रसंत, गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद् विजयजयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. की प्रभावक पावन सान्निध्य में श्री चिन्तामणी पार्श्वनाथ जिनालय के शताब्दी वर्ष सह पंच धातु श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ प्रभु की अंजनशलाका भव्यातिभव्य एकादशाह्निका महोत्सव महाशतकोत्सव के रूप में आयोजित किया गया ।*

*उत्सव निर्विघ्न, अपूर्व उल्लास के साथ अनूठी सफलता सहित सम्पन्न हुआ । उसकी स्मृति को युगों-युगों तक अक्षुण्ण बनाये रखने तथा इतिहास के एक अध्याय को शताब्दियों तथा शाश्वत संचय का रूप दिये जाने के उद्देश्य से शाश्वत धर्म के इस संग्रहणीय तथा अद्वितीय विशेषांक का प्रकाशन किया जा रहा हैं। इस हेतु बागरा त्रिस्तुतिक संघ द्वारा उपलब्ध संसाधन के लिये हार्दिक आभार !*

**–सुरेन्द्र लोढा, सम्पादक**

# मुनि भगवन्तों की विलक्षण वाणी

## बागरा अब तीर्थ है जिसकी अमर ध्वजा सदैव फहराती रहेगी

(मुनि श्री नित्यानंद विजयजी म.)

प्रतिष्ठा का प्रत्यक्ष प्रभाव विश्ववन्दनीय प्रतिक्षणानुस्मरणीय प्रभु श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म. साहेब के पट्टधर विद्वान शिष्यरत्न, चर्चा चक्रवर्ती श्रीमद्विजयधनचन्द्र सूरिश्वरजी म. के वरदहस्ते श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ की भव्य प्रतिष्ठा हुई थी। प्रतिष्ठा के बाद बागरा नगर की प्रगति दिन-प्रतिदिन उच्च शिखर को छूती चली गई।

'दिल्ली में आगरा और मारवाड़ में बागरा' प्रसिद्ध हुआ। देखते ही देखते 100 वर्ष पूर्ण हो गये। संघ की धर्मभावना और गुरु गच्छ की अखुट परम्परा के जाज्वल्यमान सुनक्षत्र आचार्य देवेश श्री धनचन्द्रसूरीश्वरजी के पंचम पट्टधर साहित्य मनिषी तीर्थ प्रभावक संयम दानेश्वरी, उग्रविहारी, युग प्रभावक वचनसिद्ध राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजयजयन्तसेनसूरीश्वरजी महाराज की पावन निश्रा पाकर बागरा नगर की जनता एवं गुरुभक्तों ने कमाल कर दिया जो सोचा था उससे कई गुना भव्य मूलनायक प्रभु के साथ चौबीस देहरियों की ध्वजा के दशान्हिका महामहोत्सव का आयोजन कर सर्वश्रेष्ठता का अनुपम उदाहरण प्रदर्शित किया।

जो दृश्य सौ वर्ष पहले रहा होगा जिसको वर्तमान पीढ़ी ने देखा भी नहीं होगा मानो उसी पल का अहसास कराने जैसी अनुभूति यह महामहोत्सव प्रदान कर रहा था। गांव की गली-गली इस प्रकार सुसज्जित थी जिसके आगे इन्द्रपुरी भी शर्मा जाए। यहाँ की जनता, प्रभु एवं गुरुभक्तों के उत्साह उमंग का कोई पार नहीं था।

सर्वकार्य की सफलता प्रबल पुण्यानुबन्धी, पुण्य के अधिपति, वात्सल्य की मूर्ति, करुणासागर पू. गुरुदेव की अमृतमय वर्षा आशीर्वाद के रूप में बरस रही थी। यहां परम कृपा निधान राष्ट्रसंत की पवित्र छत्रछाया में अति आनन्द एवं हर्षोल्लास के साथ महामहोत्सव सम्पन्न हुआ। बागरा अब तीर्थ रूप ले चुका है जिसकी अमर ध्वजा सदा के लिये फहरा रहीं है।

## भावों से तृप्त हूँ मैं

(स्व. वयोवृद्ध मुनिराज श्री जयकीर्ति विजयजी म.सा.)

मेरे संसारी नगर बागरा परमानन्द चिंतामणि पार्श्वनाथ प्रभु के महाशतकोत्सव के दिव्य प्रसंग के बारे में अवगत होकर मैं अस्वस्थ होते हुए भी स्वस्थता का अनुभव कर रहा हूँ। मेरे सांसारिक नगर में यह महान एवं अद्भुत महोत्सव अपार उत्साह के साथ मनाया गया इसकी मुझे बहुत प्रसन्नता है। मैं अस्वस्थता के कारण महोत्सव के कार्यक्रम में तो भाग नहीं ले सका परन्तु भावों से इस महोत्सव के प्रत्येक क्षण को अनुभव कर तृप्त हुआ।

## सभी के लिए यादगार रहा यह समारोह

(मुनिराज श्री वीररत्नविजयजी म.)

बागरा नगर के इस महोत्सव में शासन प्रभावना के अविस्मरणीय कार्य हुए। सभी नगरवासियों ने प्रत्येक धार्मिक आयोजन में सम्पूर्ण निष्ठा एवं भावपूर्वक भाग लिया। इस महोत्सव में बागरा नगर के प्रवासी बंधुओं एवं अन्य शहरों के गुरूभक्तों ने सम्पूर्ण कार्यक्रम के दौरान अपने व्यापार-व्यवसाय को छोड़कर दसों दिन समर्पण भाव से शिरकत की। पू. आचार्य श्री जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. भी इस महामहोत्सव में समस्त नगरवासियों एवं आगंतुकों के उत्साह को देखकर बहुत प्रसन्न हुए। सभी साधु-साध्वियों के लिये भी यह महोत्सव यादगार रहा।

## तन-मन-धन अर्पण हुआ इस बागरा नगर में

(डॉ. मुनिराजश्री सिद्धरत्नविजयजी म.सा.)

परम तारक परमात्मा श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ दादा की जिस प्रतिमा की अंजनशलाका प.पू. चरित्र चूडामणि, क्रियोद्धारक उत्कृष्ट क्रियापालक दादा गुरूदेव श्रीमद् विजयराजेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. के करकमलों से शुद्ध-विशुद्ध मंत्रोचार से सम्पन्न हुई एवं चर्चा चक्रवर्ती आचार्य देवेश श्रीमद् विजय धनचन्द्र सूरीश्वरजी एवं शुद्ध सात्विक प्रकांड विद्वान मोहनविजयजी म.सा. के हाथों से प्रतिष्ठित परमप्रभावी यह मनमोहनीय प्रभु पार्श्वनाथजी का महाशतकोत्सव अर्थात् पूरे बागरा नगर में

अति उत्साह, उमंग, हर्षोल्लास के साथ सभी प्रभु, गुरू के भक्तों ने देशावर में अपने सारे व्यापार को छोड़कर पूरे परिवार के साथ इस सौ वर्ष के ऐतिहासिक महोत्सव को मनाने के लिये बागरा नगर में आये और जिस तरह वो गीत की पंक्तियाँ हैं तन-मन-धन प्रभु ना चरणों माँ उसे चरितार्थ करते हुए।

इस बात का संपूर्णतया लाभ लेते हुए सभी ने गुरूभक्ति में भी पूरा-पूरा लाभ लिया और सभी जगह जिनशासन की प्रभावना करते हुए महाशतकोत्सव को इतिहास के पन्ने पर स्वर्णअक्षरों से अंकित किया। इस तरह प्रभु भक्ति एवं गुरूभक्ति को भाव से, श्रद्धा से समर्पण से व्यक्त कर आनंदित, उत्साहित, उल्लासित होकर सभी ने अपनी लक्ष्मी का सदुपयोग करते हुए प.पू. सुविशाल गच्छाधिपति राष्ट्रसंत जैनाचार्य देवेश् श्रीमद् विजयजयंतसेन सूरीश्वरजी गुरूदेवश्री के जय-जयकारों के साथ चांदी की प्रभावना करते हुए पुण्यानुबंधी पुण्य उपार्जन कर लाभ लिया और इतिहास बनाया।

इस तरह इन्द्रपुरी की तरह सजी-धजी बागरा नगरी धर्ममय, आराधनामय, प्रभुमय, गुरूभक्तिमय बनकर महाशतकोत्सव में चार चांद लगाकर अमर हुई।

## जीवन में मंगल भावना विकसित हुई

(मुनिराजश्री अपूर्वरत्नविजयजी)

बागरा नगर में बड़े जोर-शोर से निरंतर दस दिन तक धार्मिक आयोजन हुए, श्रावक-श्राविकाओं ने महामहोत्सव के सभी कार्यक्रमों में उत्साह एवं भक्तिभाव से भाग लिया। उग्रविहारी प.पू. राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा., मुनिमंडल एवं साध्वी मंडल द्वारा सभी कार्यक्रमों में निश्रा प्रदान कर धर्मोपदेश दिया गया। पू. गुरूदेव श्री की अमृतवाणी एवं मुनिवरों के श्रीमुख से प्रवचन की अमृतमयवाणी को भक्तों ने भक्तिभाव से श्रवण कर जीवन उत्थान के मार्ग को प्रशस्त किया। प्रभु पार्श्वनाथ के साथ तीर्थंकर प्रभु आदिनाथ से लेकर प्रभु महावीर एवं दादा गुरूदेव श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. की ध्वजा एवं चरण पादुकाएँ हर्ष पूर्वक प्रतिष्ठित करने के मंगल कार्य सम्पन्न हुए।

सभी भक्त आगे भी जीवन में मंगल भावना रखते हुए ऐसे महोत्सव में तन-मन-धन से भाग लेते रहे यही भावना एवं शुभाशीर्वाद।

## जिसे गुरु की कृपा प्राप्त है वहाँ बहार है

(श्री विद्वद्रत्नविजयजी म.सा.)

जीवन स्वयं अपने आप में एक उत्सव है, पर्व है, त्यौहार है लेकिन जब तक जीवन मर्यादा में न हो तब तक जीवन न तो उत्सव बन सकता है और न ही कोई पर्व बन सकता है। जिसके जीवन में गुरू की कृपा है वह व्यक्ति, वह संघ हमेशा आनन्द की बहार में सदा उत्सवमय जीवन जीता है। बागरा नगर भी इसी श्रृंखला में अपने आप को यह महामहोत्सव मनाकर धन्यता का अनुभव कर रहा है। शताब्दी महामहोत्सव में पूज्य राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा मिली और बागरा के भाग्य खुल गये। सभी को एक ही प्रेरणा, एक ही संदेश कि समता, समन्वय एवं संगठन जब तक बना रहेगा तब तक जीवन उत्सव और पर्व बना रहेगा अतः हमेशा गुरू के प्रति निष्ठावान रहते हुए संगठित रहें।

## अपार उत्सव व उमंग उछलते रहे

(मुनिराजश्री चारित्ररत्नविजयजी म.सा.)

बागरा मंडन श्री पार्श्वनाथ प्रभु की असीम कृपा से बागरा जिनालय के सौ वर्ष पूर्ण होने पर महाशतकोत्सव सम्पन्न हुआ। जिनालय की प्रतिष्ठा धर्म चक्रवर्ती श्रीमद्विजय धनचंद्रसूरीश्वरजी म.सा. के वरदहस्ते हुई थी। इस मंदिर ने अपने सौ वर्षों के इतिहास को पूर्ण कर बागरा की समृद्धि एवं निरंतर प्रगति का परिचय दिया। प्रारंभ से ही बागरावासी देव, गुरू और धर्म के प्रति समर्पित रहे हैं, इसी कारण इस नगर की जनता पर प्रभु एवं गुरू का आशीर्वाद सदैव रहा है। जिसके परिणाम स्वरूप यहाँ के लोग देश में ही नहीं विदेशों में भी अपनी ख्याती फैलाये हुए हैं। बागरा श्रीसंघ की भाव भरी विनती को स्वीकारते हुए पू. गच्छाधिपति, तीर्थ उद्धारक युगप्रभावक श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वर म.सा. की निश्रा में इस ऐतिहासिक शतकोत्सव का कार्यक्रम अपार उत्साह एवं उमंग के साथ सम्पन्न हुआ। यहाँ के भक्तों ने गुरू के प्रति समर्पण भाव का जो उदाहरण प्रस्तुत किया है वह अनुमोदनीय है जिन्होंने अपनी मातृभूमि के प्रति उदार भाव रखकर इस महाशतकोत्सव को भव्यातिभव्य रूप दिया। बागरा श्रीसंघ इसी प्रकार देव गुरू के चरणों में समर्पित रहते हुए नये आयामों को छुये यही भावना।

## अमिट छाप छोड़ी इस शतकोत्सव ने

(मुनिश्री प्रशमसेनविजयजी म.सा.)

बागरा नगर के भूतपूर्व इतिहास के बारे में जो सुना था उसका प्रत्यक्ष प्रमाण इस भव्य महाशताब्दी महोत्सव में देखने को मिला। श्रद्धा, समर्पण, गुरु भक्ति की ऐसी दिव्य ज्योत बागरावासियों के मन में प्रज्वलित हुई जो सदियों तक बुझ नहीं पाएगी। न जाने कितने समय पश्चात आज नगर के प्रत्येक घर का आंगन खुला था। लोगों ने इस शताब्दी महोत्सव को ऐसे दिल खोलकर मनाया कि इसकी कीर्ति चारों ओर सुदूर क्षेत्रों में फैल रही है। यह बागरावासियों का पुण्योदय ही है कि सुविशाल गच्छाधिपति श्रीमद् विजयजयन्तसेन सूरीश्वरजी म. की निश्रा प्राप्त हुई जिससे महोत्सव की रौनक ओर भी बढ़ गई।

यह अविस्मरणीय, अनुमोदनीय भव्य शताब्दी महोत्सव सभी के दिनों में एक अमिट छाप छोड़ गया।

## चांदी-चांदी हो गई

(मुनिराजश्री निपुणरत्नविजयजी म.सा.)

बागरा का भूतकाल भव्य था, ऐसा सूना भी है, पड़ा भी है। लेकिन इस शताब्दी महोत्सव को निहारकर ऐसा अहसास भी हुआ। वर्तमान बागरावासियों ने अपने पूर्वजों की उदारता को पुनः उजागर कर दिया। ऐसा सूना था कि पुराने समय में चांदी का विशाल व्यापार यहां से चलता था, घर-घर चांदी के पाट देखने को मिलते थे। इस महोत्सव में भी यह अनूठा दृश्य देखकर लगा की भूतकाल वर्तमान में दिख रहा है। महोत्सव में सुबह से शाम चलते सभी अनुष्ठानों में चाहे वो भक्तामर हो, पूजा हो, प्रवचन हो, भक्ति हो। सभी के चांदी के सिक्के की ही प्रभावना देकर बागरा श्रीसंघ ने अपनी भव्य भूतकाल की यादे सभी को दिला दी।

शताब्दी के श्रृंगाररूप पार्श्वनाथ 52 जिनालय में भी चांदी का अद्भूत कार्य करवाया। यह उदारता ही भव्यता का परिचायक रही साथ ही इस शतकोत्सव की एक सबसे बड़ी विशेषता यह रही की सान्निध्य प्रदाता प.पू. गच्छाधिपति श्री जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. बागरा श्रीसंघ की आग्रह पूर्ण विनंती को स्वीकार कर यहां पधारने की स्वीकृति एक वर्ष पूर्व बीजापुर में प्रदान कर दी थी। यह भी बागरा श्रीसंघ की गुरू भक्ति, गुरू समर्पण का प्रतिफल था। बागरा नगर से तीर्थ में परिवर्तित हुआ, स्वर्ग जयंती महोत्सव हुआ, लेकिन चांदी-चांदी हो गया।

## त्रिस्तुतिक श्रीसंघ किसी से कम नहीं है

(मुनिश्री प्रसिद्धरत्नविजयजी म.सा.)

बागरा का यह अभूतपूर्व महाशतकोत्सव जिसे देखने के बाद लगा कि यहाँ गुरुभक्तों की गुरु के प्रति जो समर्पण एवं अटूट आस्था है वह वाकई अनुमोदनीय है।

यहाँ के भक्तों को जिस समय भी देखो इनके चेहरों पर आनंद की लहरें ही दिखाई देती हैं, किसी के भी मन में किसी के प्रति कोई वैर या मनमुटाव नहीं है इन्हें देखकर ऐसा लगता है मानों यह सब एक ही वृक्ष की शाखाएँ हों। आज तक इससे पहले सिर्फ सुना था की बागरा चांदी की नगरी है लेकिन इस महाशतकोत्सव से तो यह वास्तविक रूप में सिद्ध हो गया। यहाँ विराजित प्रभु चिन्तामणि पार्श्वनाथ की मनमोहक छवि सभी को आकर्षित करती है। इस शतकोत्सव से यह सिद्ध हो गया कि त्रिस्तुतिक समुदाय दिखने में कम है लेकिन किसी से कम नहीं है। इस महोत्सव को आने वाली पीढ़ियाँ गर्व से याद करेगी। वे इस शतकोत्सव की गाथा को युगों-युगों तक गुणगान करते रहेंगे।

## अपार उत्साह देखने को मिला

(मुनिराजश्री तारकरत्नविजयजी म.सा.)

बागरा के महाशतकोत्सव में जैन-अजैन एवं समस्त नगरवासियों में अपार उत्साह देखने को मिला। इस गरिमामयी अवसर को जिसने नहीं देखा उसे यह बात जीवनपर्यन्त खटकेगी। श्रीसंघ के सभी सदस्यों एवं ग्रामवासियों ने प्रभु भक्ति एवं विभिन्न धर्माराधना में रहकर इस सुअवसर को मनाने में चार चांद लगा दिए। प्रतिदिन मंदिर में दर्शन वंदन हेतु समस्त श्रावक-श्राविकाओं द्वारा कतार लगाकर नित्य प्रभु वंदन, पक्षाल पूजा आदि विभिन्न धर्म अनुष्ठानों में बढ़चढ़ कर भाग लिया गया। भक्तामर एवं व्याख्यान में बड़ी संख्या में उपस्थिति गुरुदेव के प्रति निष्ठाभाव को दर्शाती है।

कहते हैं बागरा में पूर्व में चांदी के पाट ओटलों पर पड़े रहते थे परन्तु इस महाशतकोत्सव में सभी के हाथों में चांदी ही चांदी हो गई।

## अविस्मरणीय रहा यह उत्सव

(मुनिश्री प्रत्यक्षरत्नविजयजी म.सा.)

बागरा नगर के इस महाशताब्दी महोत्सव की तैयारियों के बारे में सुनकर पहले ही आभास हो रहा था कि यह महामहोत्सव अपने आप में

अविस्मरणीय रहेगा।

यहाँ के गुरूभक्तों ने 'एक ही डंडा, एक ही झंडा' वचन को सिद्ध कर इस भव्य महोत्सव के माध्यम से प्रत्यक्ष प्रमाण दिया है । दादा चिंतामणि की शताब्दी महोत्सव के ध्वजारोहण पश्चात अमर ध्वजा जिस प्रकार फरका रही है उसी प्रकार बागरा संघ भी उत्तरोत्तर प्रगति पथ पर बढ़ता रहे एवं जिनशासन की यशकीर्ति चारों ओर फैलाता रहे।

## भवसागर से तिरानेवाला तीर्थ ....

(मुनिश्री जिनागमरत्नविजयजी म.सा.)

दो प्रकार के तीर्थ हैं

जंगम और स्थावर...

साधु-साध्वी, श्रावक और श्राविका ये चारों में से साधु-साध्वी जंगम तीर्थ हैं, पुण्ययोग से जंगमतीर्थ के दर्शन होते हैं वैसे ही वो पुण्य बांधने के लिए स्थावर तीर्थ के भाव-सह दर्शन आवश्यक है। ऐसा ही स्थावर तीर्थ बनता हुआ नजर के सामने देखा । वह स्थावर तीर्थ यानी बागरा चिंतामणी पार्श्वनाथ प्रभु का दरबार... विशिष्ट योग से 100 साल जो मंदिर को पूर्ण हुए और वो तीर्थ बन गया ...

मैंने देखा की ये तीर्थ का महोत्सव.... सिर्फ बाह्य शासन प्रभावना ही यहाँ नहीं देखी पर उसके साथ आध्यात्मिक और आत्मविकास के पथ पर आगे बढ़ाने वाले अनुष्ठान भी ...

ऐसा लग रहा था मानो ये तीर्थ हजारों लोगों की कर्म निर्जरा की वजह बनके अनेक आत्मा के ऊपर वीतरागता का बीज बोता होगा । बागरा श्रीसंघ की अपूर्व प्रभु भक्ति, देव-गुरु और धर्म के प्रति की श्रद्धा और जिनाज्ञा प्रति रहा हुआ समर्पण भाव सभी के अंतर को आनंदित करने वाला बन गया था।

बागरा संघ का यह आनंद अनंत भव संचित कर्म को नष्ट कर निजानंद को प्राप्त करे यही शुभ भाव।

## प्रभु भक्ति व गुरूभक्ति का अनुपम दृश्य

(मुनिश्री पवित्ररत्नविजयजी म.सा.)

पूज्य गुरुदेव की कृपा से मेरे संयम जीवन लेने के पश्चात् यह प्रथम अंजनशलाका महोत्सव एवं शताब्दी महोत्सव देखा। यूं तो मेरे जीवन में कई सारे प्रसंग आए परन्तु बागरा यह महामहोत्सव अपने आप में अनूठा था । जहां नगरवासियों एवं समस्त गुरुभक्तों का प्रभु भक्ति एवं गुरूभक्ति का अनुपम दृश्य देखने को मिला। बागरा के नगरजनों ने तीर्थ को एक नई दिशा दी है और जिनशासन के इतिहास में अमर कीर्तिमान महाशतकोत्सव मनाकर त्रिस्तुतिक संघ का गौरव बढ़ाया । यह महोत्सव सभी के मन-मस्तिष्क में सुनहरी यादें छोड़ गया । गुरूकृपा से सभी भक्त इसी प्रकार जीवनपर्यन्त धर्मलीन रहें। यही भावना।

## हम कर सकेंगे वीतराग मार्ग की पहचान

(साध्वी श्री मोक्षगुणाश्रीजी म.सा.)

मरूधर भूमि के बागरा नगर में अंजनशलाका महोत्सव में भाग लेते हुए सभी को अनूठा आनंद है। जैनों को होना ही चाहिए। लेकिन जैनेत्तरों में भी इतनी ही खुशी है। ये प्रभु हमारे रागद्वेष हरने वाले हैं। कलिकाल कल्पतरू ऐसे पार्श्वनाथ प्रभु की प्रतिष्ठा सब में आनन्द और उल्लास का उद्‌भव करने वाली है। प्रभुजी की प्रतिमा के दर्शन से कईयों ने समकित प्राप्त किए। वीर के मार्ग का अनुसरण किया है। प्रभु के दर्शन, आत्मा के गुणों के दर्शन कराने वाले हैं। प्रभु की यह प्रतिष्ठा बागरा नगर के मंदिर में हुई है। अब हमें प्रभु को अपने हृदय में प्रतिष्ठित करना है।

तभी हमारे दोष एवं दुर्गुण दूर हो सकेंगे तथा हम वितराग मार्ग की पहचान कर सकेंगे। सोने में सुगंध तो यह है कि बागरा नगर के निवासियों ने महान ज्ञानी-ध्यानी, सरल स्वभावी राष्ट्रसंत पू. जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में यह कार्यक्रम आयोजित किया है। गुरूदेव के रोम-रोम में प्रभु और प्रभु का शासन बसा हुआ है। ऐसे गुरूदेव का उपकार जितना भी मानें यह कम है।

## महक उठा बागरा का मधुवन

(साध्वी श्री अनन्तदृष्टाश्रीजी म.सा.)

राष्ट्रसंत, श्री सौधर्मवृहत्तपोगच्छीय संघ के महानायक सरल स्वभावी, वात्सलयवारिधि, बागबान ऐसे हमारे परम पूज्य श्रीमद् विजयजयन्तसेन सूरीश्वरजी जिन्होंने बागरा की धरती को अपने परम पावन चरण कमलों से बाग-बाग कर दिया और यहां बागरावासियों के मन के बाग खिल उठे।

प्रगट प्रभावी चिन्ताचरण श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ प्रभु का शतकोत्सव, पंचकल्याणक, अंजनशलाका व ध्वजारोहण के पावन प्रसंगों की खुशबू से बागरा का मधुबन महक उठा। बागरा के प्रकर्ष पुष्य में चार चांद लग गये। पू. गुरूदेवश्री 'मधुकर' जी का संयमोत्सव और पाटोत्सव भी पूरी ठाठ-बाँट से मनाने का सौभाग्य भी बागराजन को मिला ऐसा लग रहा था कि गुरूदेवश्री के आशीर्वाद से जिनशासन का झंडा मात्र भारत देश में ही नहीं सम्पूर्ण विश्व में फहराएगा। यहाँ जैन बंधुओं के साथ-साथ अजैनों ने भी इस महोत्सव को पूरे उत्साह से मनाया। यह शतकोत्सव हमें युगों-युगों तक याद रहेगा।

## ऐसा लगा मानों देवलोक उतर गया बागरा में

(साध्वी श्री भक्तिरसाश्रीजी म.सा.)

बागरा के शताब्दी महामहोत्सव के अद्भुत प्रसंग को देखकर ऐसा लगा जैसे समर्पण की सरगम से, बेसुरता की मधुरता से, वीणा की सुशील तारों से तथा अंतर की संवेदनाओं के साथ यह महामहोत्सव स्वयं में उषा की रंगीली किरणों का संग लिये प्रस्तुत हुआ। जिसने हमारे हृदय में आनंद ही आनंद कर दिया। जिस प्रकार प्यासे को नदी, धूप में थके हुए व्यक्ति को छाया में विश्राम एवं अंधकार में दीपक मिलने से जो अवर्णनीय आनंद मिलता है वैसा ही आनंद बागरा संघ की अनमोल उदारता, पू. गुरूदेव के हृदय की विशालता एवं संघ के मन की निखालसता ने प्रकट किया, जिससे महोत्सव में चार चांद लग गए। हमने कई प्रतिष्ठाएँ एवं महोत्सव देखे किन्तु बागरा तीर्थ का शताब्दी महोत्सव देखकर ऐसा लगा कि पूरा देवलोक नीचे आ गया हो, यहाँ के प्रत्येक नगरवासी के दिलों में अपार प्रसन्नता का अलौकिक नजारा दिख रहा था। कहते हैं कि बागरा में किसी समय चांदी के पाट पड़े रहते थे वो तो हमने नहीं देखे किन्तु जीवन में पहली बार सभी भक्तों के हाथों को चांदी के सिक्कों से भर दिया। यह सब प्रभु चिंतामणि दादा एवं गुरूदेवश्री राजेन्द्र सूरीश्वरजी की ही कृपा है। हमारे पूज्य गुरूदेव श्री जयंतसेन सूरीश्वरजी का स्वास्थ्य प्रतिकूल होते हुए भी अति उग्रविहार कर 17 दिनों में बागरा की तस्वीर बदलने आए एवं महोत्सव में चार-चांद लगा दिए।

## यह प्रतिष्ठा मनमंदिर में हुई

(साध्वी श्री संवेग प्रियाश्रीजी म.सा.)

बागरा नगर की धन्यधरा पर शासन प्रभावना का अद्भुत अनुष्ठान यानि चिंतामणी पार्श्वनाथ प्रभु की प्राण प्रतिष्ठा सहशताब्दी महोत्सव वास्तव में देखे तो इस शतकोत्सव का अद्भुत आकर्षण यही था कि यह प्राण प्रतिष्ठा चैत्य मंदिर में नहीं अपितु हृदय मंदिर में हुई प्रतिष्ठा है।

जन-जन के प्राणों को प्रभु चेतनामय करने वाला अनुपम आलंबन यही चिंतामणी दादा का प्रतिष्ठान है।

राष्ट्रसंत पू.गुरूदेव श्री जयन्तसेन सूरीश्वरजी महाराजा की परम पावनकारी निश्रा में मनाये गये इस ऐतिहासिक शतकोत्सव के बारे में आज तक बहुत कुछ सुना था लेकिन जब आँखों से नहीं हृदय नयन से निरखा तो हमारा सर्वाङ्गी अस्तित्व तृप्त हो गया।

ऐसे शतकोत्सव महोत्सव की गरिमा को शब्दों में कैसे आलेखित करें ?

प्रत्येक अनुभूति अभिव्यक्ति का विषय नहीं बन सकती।

उसको तो निरखने में ही मजा होता है। सच में देखा जाए तो यह शतकोत्सव प्राण प्रतिष्ठा हमारे जीवन का एक अविस्मरणीय प्रसंग बना है।

# ट्रस्टीगणों के अलौकिक अभिमत

## समाज व बागरारत्न-श्री मोहनलालजी शंकरलालजी
### (अध्यक्ष बागरा ट्रस्ट मंडल)

बागरा का महाशताब्दी महोत्सव अविस्मरणीय रहा । यहाँ धूमधाम से प्रतिदिन धार्मिक अनुष्ठान अपार संख्या की उपस्थिति में सम्पन्न हुए । पूज्य गच्छाधिपति आचार्यश्री जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. की कृपा से नगर के प्रत्येक श्रावक-श्राविकाओं के मन में इस महा-महोत्सव को लेकर अपार हर्ष एवं उल्लास देखने को मिला । समस्त नगरवासी जो अपने कर्म के लिये बागरा से पलायन कर सम्पूर्ण देश-विदेश में बसे हुए हैं मातृभूमि की पुकार पर सभी बन्धुजन इस पुण्यकारी महोत्सव में भाग लेने के लिये अपने कार्य छोड़कर समर्पण भाव से अपनी मातृभूमि के प्रति कृतज्ञता का निर्वहिन करने हेतु दौड़ते हुए यहाँ पधारे । श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवान की अंजनशलाका दादा गुरुदेव श्री राजेन्द्रसूरिश्वरजी म.सा. एवं प्रतिष्ठा व ध्वजारोहण का शुभ कार्य श्री धनचन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. के कर-कमलों से सम्पन्न हुआ था । प्रभु जिनालय के 100 वर्ष पूर्ण होने पर बागरा की यह पावन भूमि तीर्थ भूमि का रूप लेने जा रही है। श्री बागरा संघ के ट्रस्ट मंडल के सभी ट्रस्टीगणों ने अपने तन-मन-धन से इस महोत्सव में भाग लिया एवं इसे भव्य ऐतिहासिक रूप देने के लिए निश्चित समय पर ही तैयारियों में जुट गए व अपनी जिम्मेदारियों का निष्ठापूर्वक निर्वाह करते हुए उन्हें पूर्ण भी किया । सभी ने अपूर्व उत्साह बनाए रखते हुए सम्पूर्ण महोत्सव को एक भव्य, अलौकिक एवं ऐतिहासिक रूप देने में अपनी सकारात्मक भूमिका निभाई ।

## श्री दिनेश कुमारजी पुखराजजी
### (सचिव)

यह कहने में बड़ा हर्ष हो रहा है कि बागरा मंडल मूलनायक श्री पार्श्वनाथ प्रभु यहाँ साक्षात विराजित हैं इसके कई प्रत्यक्ष उदाहरण हैं । जब यह तय किया गया था कि शताब्दी महोत्सव मनाना है तब नगरवासियों में इतना उत्साह नहीं था परन्तु 15 माह पूर्व पूज्य गुरूदेव द्वारा मूहूर्त प्रदान कर बागरावासियों के निवेदन पर उनकी निश्रा की सहमति के बाद से ही बागरावासियों में

नई ऊर्जा का संचार हुआ। पूज्यश्री द्वारा पूजा में चढ़ावों की जाजम का मूहूर्त प्रदान किया गया। गुरुदेव के आशीर्वाद से इतने जोरशोर से चढ़ावे बोले गए जिनकी हमने कभी कल्पना भी नहीं की थी। तत्पश्चात् पू. गुरुदेव को पालीताणा से विहार करके बागरा तक लेकर आए। विहार के दौरान भी भक्तों में अति उत्साह देखने को मिला जिसमें पू. गुरुदेव के सान्निध्य में कई धार्मिक शिक्षाएँ एवं ज्ञान वृद्धि कर जीवन के अमूल्य समय का सदुपयोग करने का मौका मिला वे भी अविस्मरणीय पल थे। गुरुदेव का धूमधाम से ऐतिहासिक नगर प्रवेश हुआ एवं सम्पूर्ण महा-महोत्सव के दौरान उनका स्वास्थ्य भी स्थिर रहा। गुरुदेव की प्रत्येक क्षण प्रसन्नचित्त मुद्रा ने इस महामहोत्सव की रौनक को और बढ़ा दिया। 11 दिवसीय महामहोत्सव में समस्त भारतवर्ष से भक्त पधारे एवं बागरा के भी प्रत्येक जन ने इसमें सहभागिता दी। सबसे अधिक प्रसन्नता तो इस बात की है कि इस महामहोत्सव में वर्तमान पीढ़ी ने प्रत्यक्ष रूप से उपस्थित रहकर पूर्वजों की गौरवगाथा को दोहराया जो हमारे लिए सौभाग्य की बात है। पूज्यगुरूदेव एवं समस्त साधु-साध्वीयों की निश्रा भी महत्वपूर्ण रही जिससे हम उनके सदा के लिए ऋणी हो गए। महामहोत्सव में राजकीय एवं सरकारी क्षेत्रों के गणमान्य अतिथि पधारे व बागरा के संघ, ट्रस्ट मण्डल एवं नगरवासियों ने पूरे तन-मन और निष्ठा से सहयोग देकर प्रत्येक कार्य में कंधे से कंधा मिलाकर चले। जिसका मैं सबको धन्यवाद देता हूँ एवं आभार प्रकट करता हूँ। पूज्य गुरूदेव के आशीर्वाद एवं परमात्मा चिंतामणि की कृपा से सम्पूर्ण आयोजन सफल हुआ। यदि साधु-भगवंतों के विहार एवं महोत्सव के दौरान भूलवश कोई असुविधा हुई हो तो 'मिच्छामि दुक्कड़म'। जिन आज्ञा विरूद्ध कुछ बोलने में आया हो तो 'मिच्छआमि दुक्कड़म'।

## श्री राजेन्द्रकुमारजी बाबूलालजी
### (सहसचिव)

पूज्य गुरूदेवश्री ने जब इस महामहोत्सव के लिये डेढ़ वर्ष पहले स्वीकृति प्रदान की थी तब से नगरवासियों के दिलों में अपार उत्साह हिलोरे खा रहा था। पूज्य गुरूदेव आचार्यश्री जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. वचनसिद्ध, सरल एवं अत्यंत आत्मीय हैं। यह हमारा परम सौभाग्य है कि ऐसे महान गुरू भगवंत की स्वीकृति हमें प्राप्त हुई एवं आपश्री की निश्रा पाकर बागरावासी एवं यहां की भूमि धन्य हो गई। हमारे पूर्वजों ने पूर्व में पुण्यकार्यों के सकारात्मक निर्णय लेकर जो वीरता दिखाई एवं प्रभु की प्रतिष्ठा करवाई। उस उपकार की वर्तमान पीढ़ी एवं हमारे आने वाली कई पीढ़ीयाँ कभी नहीं भूल पाएगी। उनके द्वारा प्रदान की गई विरासत हमारे लिये अमूल्य धरोहर है। मेरा अहोभाग्य है कि मुझे इस

महोत्सव में सेवा करने का अवसर मिला।

अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद, दक्षिण भारत के मंत्री के नाते गुरूदेव के पावन उद्देश्यों जैसे समाज सुधार, समाज संगठन, समाज के कमजोर व आर्थिक दृष्टि से पिछड़े बंधुओं का उत्थान व धार्मिक शिक्षा आदि संकल्पों को पूरा करने के लिये पूज्य गुरूदेव निरंतर प्रेरणा प्रदान करते रहते हैं। राष्ट्रसंत श्री के आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन से समाज को प्रगति की नई दिशा मिली है।

## श्री सुखराजजी प्रतापचंदजी पोरवाल
## (कोषाध्यक्ष)

मनुष्य के जीवन में प्रतिष्ठा अथवा कोई भी धार्मिक उत्सव आ सकता है परन्तु भगवान के शताब्दी महोत्सव का उत्सव भाग्यशाली ही मना सकते हैं। मैं इस महा-महोत्सव में शामिल हुआ यह मेरे लिए गर्व की बात है। मैं अजब उलझन में था कि बीजापुर संघ का अध्यक्ष होने के नाते प्रभु संभवनाथ जिनालय की वर्षगाठ में शामिल रहूँ। बागरा शताब्दी महोत्सव में जाऊँ। मेरी असमंजस्यता थी की दादा संभवनाथ की प्रथम वर्षगांठ में सम्मिलित रहूँ या दादा चिंतामणि के शताब्दी महोत्सव में अपनी सेवा प्रदान करूं। मगर असंभव को भी संभव करने वाले मेरे दादा संभवनाथ ने मुझे आदेश दिया कि बालक तेरी जरूरत चिंतामणि पार्श्वनाथ दादा के शताब्दी महोत्सव में है। अतः प्रभु के आदेश एवं पू. गुरूदेव के चरणों की निश्रा प्राप्त करने हेतु मैं परम उपकारी पूज्य गुरूदेव श्री जयन्तसेन सूरीश्वरजी महाराज के चरणों में उपस्थित हुआ। बागरा श्रीसंघ ने मुझ पर विश्वास कर संघ की सेवा करने का अवसर देकर मुझ पर बड़ा उपकार किया है। मैं इस उपकार को जीवन-पर्यन्त नहीं उतार पाऊंगा। बागरा श्रीसंघ के आदेश

मिलने पर मैंने पूरी कर्मठता से कार्य करने का प्रयत्न किया। कर्त्तव्य पालन करते हुए व्यवस्था हेतु बहुत से लोगों को कुछ कहना भी पड़ा परन्तु मेरे बागरा संघ के सभीजन इतने उदार हैं कि उन्होंने मुझे हृदय से क्षमा किया। मुझे जो भी छोटा-बड़ा कार्यभार सौंपा गया से मैंने सम्पूर्ण शक्ति से पूर्ण करने की कोशिश की। सभी की बेजोड़ कर्तव्यनिष्ठा एवं परस्पर तालमेल से बागरा श्रीसंघ का यह महाशतकोत्सव ऐतिहासिक प्रसंग बन गया।

आगे भी बागरा संघ मुझे कोई भी शासन प्रभावना का कार्य करने हेतु आदेश करेगा तो उसे मैं पूरी निष्ठा से पूर्ण करूंगा। जिन आज्ञा के विरूद्ध कुछ भी लिखा हो तो 'मिच्छामि दुक्कड़म'।

## श्री कैलाशचंदजी चंदनमलजी
### (सहकोषाध्यक्ष)

दो माह से निरन्तर दिन-रात तैयारियों का क्रम चला । पूज्य गुरुदेव श्रीमद् विजयजयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. की असीम कृपा से ही श्री पार्श्वनाथ जिनालय का ऐतिहासिक महोत्सव सम्पन्न हुआ । हमारे पूर्वजों द्वारा बनाए गए मंदिर अद्वितीय हैं जिस प्रकार के पाषाण एवं सामग्रीयों का उन्होंने उस समय उपयोग किया वह आज के समय में मिलना दुर्लभ है। दादा चिंतामणि पार्श्वनाथ की प्रतिमा, जिनालय एवं गुड़ी पार्श्वनाथ की प्रतिमाएँ बहुत ही सुन्दर एवं आकर्षक हैं । प्रभु की कृपा एवं पू. गुरुदेव का आशीर्वाद पूरे संघ पर निरंतर बरस रहा है, महाशतकोत्सव के चढ़ावे एवं इसकी भव्यता इनके आशीर्वाद का ही फल है । प्रभु की ऐसी ही कृपा श्रीसंघ पर सदा बनी रहे। 100 वर्षों की पूर्णता पर महाशतकोत्सव मनाने का सौभाग्य तीन पीढ़ियाँ बीत जाने के बाद बागरा श्रीसंघ को प्राप्त हुआ।

## श्री नरेन्द्रकुमारजी पोरवाल
### (मेनेजिंग ट्रस्टी)

बागरा महा-महोत्सव की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि पूज्य गुरुदेव द्वारा 15 माह पूर्व ही इस महोत्सव में निश्रा प्रदान करने की स्वीकृति प्रदान कर दी गई थी । प्रभु श्री पार्श्वनाथ की मनमोहक प्रतिमा जिसकी अंजनशलाका 1958 स्वयं दादा गुरुदेव श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के कर-कमलों से हुई एवं दादा गुरुदेव के प्रथम शिष्य, पट्टधर, चर्चा चक्रवर्ति श्री धनचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. एवं उपाध्याय श्री मोहनविजयजी म.सा. की निश्रा में प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई । उनमें भी विशेषता यह है कि इन दोनों शुभ दिवस की तिथि एक ही है माघ शुक्ला त्रयोदशी, प्रतिष्ठा के पश्चात बागरा की दिनोंदिन प्रगति होती गई एवं यहाँ की कीर्ति चहुँदिशाओं में फैलती गई । जिनालय के 100 वर्ष पूर्ण होने पर बागरा श्रीसंघ ने शताब्दी महोत्सव मनाने का निर्णय लिया एवं पू. गुरुदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. से इस महा-महोत्सव में निश्रा प्रदान करने की विनती की । वचनसिद्ध, शासन सम्राट, पूज्य गच्छाधिपति आचार्यश्री द्वारा डेढ़ वर्ष पूर्व ही निश्रा हेतु स्वीकृति प्रदान की

गई। तब से बागरावासी पूज्य गुरुदेव का इंतजार कर रहे थे। वे हर पल इसी अवसर के लिए बैचेन रहते थे कि कब पूज्य गुरुदेव बागरा पधारें एवं हमें उनकी ओजस्वी वाणी एवं सुआशीर्वाद से तृप्त करें। यहाँ पधारकर पूज्यश्री ने सब पर बहुत बड़ा उपकार किया है। पूज्य गुरुदेव एवं समस्त साधु भगवंतों की प्रखर ओजस्वी वाणी से बागरा में ज्ञान का प्रकाश फैल गया, 11 दिनों से सभी भक्तों ने प्रभु भक्ति में लीन होकर अपने जीवन के कल्याण का भावी मार्ग प्रशस्त किया।

## श्री भूरमलजी मगराजजी
## (सहमेनेजिंग ट्रस्टी)

इस महा-महोत्सव में भाग लेने के लिये आसपास के सभी गांवों एवं नगरों में निमंत्रण भेजे गए जिससे यहाँ आने वाले प्रभु भक्तों की उपस्थिति भी संतोषजनक रही। पधारे हुए प्रत्येक अतिथि ने नगर के लोगों की सुन्दर व्यवस्था देखकर भूरी-भूरी प्रशंसा की। नगर के मध्य स्थित श्री राजेन्द्र नगर में अत्यंत सुन्दर भव्य नगरियों की निर्माण किया गया। प्रतिदिन चार से पाँच हजार लोगों की उपस्थिति के बावजूद भी किसी भी प्रकार का कोई विघ्न नहीं आया। पूज्य गुरुदेव का स्वास्थ्य स्थिर रहा जिससे उन्होंने प्रत्येक प्रसंग पर अपने भाव व्यक्त कर भक्तों को अभिभूत किया। इस महोत्सव में उच्च कोटि के राजनैतिक नेताओं की उपस्थिति भी सराहना का विषय बनी। ट्रस्ट मंडल द्वारा किए गए कार्य की पूरे नगर एवं क्षेत्र में सराहना की गई।

## श्री नरेन्द्रकुमारजी हजारीमलजी
## (सहमेनेजिंग ट्रस्टी)

पू. गच्छाधिपति आचार्य गुरुदेव की बागरा श्रीसंघ पर असीम कृपा बरसी है। इस सम्पूर्ण महामहोत्सव को अद्भुत, अतुलनीय एवं ऐतिहासिक बनाने का श्रेय पू. गुरुदेव को ही जाता है उन्हीं की सद्प्रेरणा एवं आशीर्वाद से बागरा श्रीसंघ में नई चेतना का संचार हुआ एवं देखते ही देखते श्रीसंघ ने महा-महोत्सव का आयोजन कर सम्पूर्ण जैन जगत में अपनी अलग ही छटा बनाई। पू. गुरुदेव अनेक पीढ़ियों से हमारे परिवार पर भी

अपनी कृपा बरसाते आए हैं। गून्टूर चौमासे में आपकी सेवा का पुण्य लाभ एवं नैल्लोर गुरु मंदिर प्रतिष्ठा के दौरान भी आपकी प्रेरणा एवं मंगल आशीर्वाद से परिवार को अनेक सेवा कार्य करने का लाभ मिला। वर्तमान में पालीताणा से बागरा तक विहार के दौरान वैयावच्च व गुरुसेवा कर हम कृतार्थ हो गए। पू. गुरुदेव की सेवा से जो पुण्यलाभ मिला वह अवर्णनीय है। अपने समस्त मुनिमंडल के साथ बागरा पधारकर पू. गुरुदेव श्री ने हमें हमेशा के लिये उनका ऋणी कर दिया है।

बागरावासियों द्वारा वर्षों से संजोये हुए स्वप्न को साकार कर दिया। पूज्य गुरुदेव सभी के हृदय में विराजित हैं। उसी प्रकार आचार्यश्री भी अपने भक्तों की सेवा, भावना एवं निष्ठा का मान रखकर उनकी हर प्रार्थना को पूर्ण करते हैं। गुरुदेव इसी प्रकार सेवा के अवसर प्रदान कर श्रीसंघ एवं परिवार पर अपनी कृपा बनाये रखें।

## श्री हीराचंदजी ओटमलजी
### (संगठन मंत्री)

श्री चिंतामणि पार्श्वनाथजी के शताब्दी महोत्सव की तैयारियाँ 18 महीने पूर्व ही प्रारंभ हो गई थी। इस हेतु तय किया गया कि इस महामहोत्सव में पू. आचार्यश्री की ही निश्रा प्राप्त हो इसके लिये समस्त बागरा नगर के जन बीजापुर में पू. गुरुदेव से विनंति करने गए। बागरा संघ के अपार उत्साह एवं दृढ़भावों को देखकर पूज्य आचार्य श्री जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. ने 15 माह पूर्व ही निश्रा प्रदान करने की स्वीकृति प्रदान कर दी। स्वीकृति मिलते ही बागरा संघ में उत्साह की लहर फैल गई सभी भक्त खुशी से झूम उठे एवं महोत्सव की तैयारियों में लग गए। एक कमेटी बनाकर मंदिर का नए सिरे से जीर्णोद्धार कराया गया। मंदिर में पुराना मार्बल बदलकर गलिचे में नया मकराना मार्बल लगाया गया। मूल गंभारे के दरवाजे चांदी के बनवाये गए। समस्त 27 देवालयों

की घिसाई-सफाई कर उन्हें सुन्दर रूप दिया गया। पूरे मंदिर में जो भी कमियाँ थीं उसे पूरा किया गया। समस्त मंदिर की पूजा सामग्री नई लाई गई। तब से अब तक मंदिर को आकर्षक बनाने के लिए निरंतर कार्य चल रहा है। आज मंदिर मनमोहक रूप लिए हुए है जिसे देखकर प्रत्येक भक्त के मुँह से अनुमोदना के स्वर निकल रहे हैं। समय-समय पर बागरा श्रीसंघ के सदस्य पू. गुरुदेव से प्रेरणा एवं आशीर्वाद लेने हेतु पूना, मुंबई, पेपराल आदि स्थानों पर गए।

15 माह का समय मिलने से सभी व्यवस्थाएँ सुचारू रूप से पूर्ण हुई एवं शताब्दी महोत्सव ने भव्य ऐतिहासिक रूप ले लिया। पू. गुरूदेव के आशीर्वाद एवं दादा चिंतामणि की कृपा से सभी कार्य उत्साह पूर्वक सम्पन्न हुए । पू. गुरूदेव एवं प्रभु चिंतामणि की कृपा बागरा श्रीसंघ एवं परिवार पर बनी रहे और हम निरंतर शासन प्रभावना के कार्य करते हैं।

## श्री कांतिलालजी ओटमलजी
(ट्रस्टी)

कार्यक्रम की तैयारियाँ दो वर्ष से निरंतर चल रही हैं । पूरे मंदिर प्रांगण में नवीन फर्शीकरण कराया गया । महोत्सव के चढ़ावे भी अकल्पनीय हुए।

दूर-दराज से पधारे मेहमानों ने यहां आकर महामहोत्सव के प्रति संतुष्टि व्यक्त की इसकी समस्त बागरा संघ को प्रसन्नता है। अपने बाल्यकाल में भी पू. गुरूदेव यहाँ पधारे थे । पूर्व में गुरूदेव का नगर में चातुर्मास भी हुआ है । तब भी पूरे नगर में हर्षोल्लास एवं उत्साह का माहौल था। गुरूदेव बागरावासियों के हृदय में बसे हुए हैं।

सम्पूर्ण नगरवासी भावपूर्वक पू. श्री की अगुवानी करने पालीताणा पहुंचे एवं बागरा महोत्सव में आचार्यश्री की निश्रा पाकर सभी अभिभूत हो गए।

## श्री विमलेशकुमारजी नैनमलजी
(ट्रस्टी)

बागरा महा-शतकोत्सव के बारे में जो सोचा था उससे कई गुना अधिक उत्साह, आनंद एवं भव्यता से यह महा-महोत्सव सम्पन्न हुआ । हमारे पूर्वज बहुत ही दूरदर्शी रहे होंगे। जिन्होंने बागरा के हृदय स्थल पर आकर्षक भव्य जिनालय बनाकर अगली पीढ़ीयों को अमूल्य धरोहर विरासत के रूप में प्रदान की, उन्हीं की प्रेरणाओं एवं पू. गुरूदेव के आशीर्वाद से 18 माह की कड़ी मेहनत के बाद यह ऐतिहासिक शतकोत्सव मनाकर समाज की जहो-जहाली करने का अवसर प्राप्त हुआ जिसे नागरा श्रीसंघ ने सहज रूप से पूर्ण किया।

# उद्गार

## श्री अशोकजी श्री श्रीमाल
(राष्ट्रीय महामंत्री–अ.भा. नवयुवक परिषद)

बागरा महा–महोत्सव का भव्यतम दृश्य देखकर दिल बाग–बाग हो गया । अपूर्व अविस्मरणीय एवं अनुमोदनीय गुरु भक्ति देखने का अवसर मिला । पूरा बागरा नगर इस प्रकार दुल्हन की तरह सजा हुआ था मानों स्वयं देवताओं ने यहाँ आकर इसे सजाया हो । सच में यह बागरावासियों के पूर्व जन्मों के प्रबल पुण्यों एवं अटूट निष्ठा का ही परिणाम है जो उन्हें गच्छाधिपति, संघ अनुसारता, वचनसिद्ध राष्ट्रसंत श्रीमद विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी की पावन निश्रा में यह ऐतिहासिक महामहोत्सव मनाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ । बागरा के प्रत्येक व्यक्ति के चेहरे पर एक अलग ही आनंद छलक रहा था । यहाँ की साधार्मिक भक्ति भी अनुमोदनीय है । इस महामहोत्सव की यादें सभी के दिलों में अमिट छाप छोड़ गई।

## श्री अमृतलालजी बूटा (सुश्रावक)
(गून्टूर)

महाशतकोत्सव में आते ही मन बड़ा प्रफुल्लित हुआ । पू. गुरुदेव श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. के आचार्य पदोत्सव (पाटोत्सव) को देखकर अत्यंत हर्ष हुआ । पूज्य गुरुदेव एवं सभी साधु–भगवंतों की वाणी सुनकर मन तृप्त हो गया । बागरा श्रीसंघ की एकता एवं संघ की जहोजहाली अनुमोदनीय है । 11 दिन तक चांदी के सिक्कों की प्रभावना भी ऐतिहासिक है।

गुरुदेव हमेशा स्वस्थ्य रहें और उनके आशीर्वाद से श्रीसंघ एवं समस्त त्रिस्तुतिक समाज ऐसे शासन प्रभावना के कार्य करते हुए आगे बढ़ता रहे।

## श्री पारसमलजी कोठारी (सुश्रावक)
(सियाणा)

हमारे राजस्थान प्रांत में यह एक अनूठा प्रसंग है हमने पूरे जीवनकाल में ऐसा अलौकिक उत्सव नहीं देखा । सभी लोगों में अपार उत्साह व उमंग का नजारा देखने को मिला । इस महामहोत्सव से समस्त बागरावासियों का स्वप्न साकार हुआ है ।

यहाँ दादा पार्श्वनाथ का मंदिर तो देवलोक के समान प्रतीत हो रहा है। सम्पूर्ण कार्यक्रमों में पू. गुरुदेव का आशीर्वाद बरस रहा है यह बागरावासियों के अपार पुण्योदय का ही फल है। बाहर से पधारे हुए अतिथियों का स्वागत भी बागरावासियों ने आत्मियतापूर्वक करके उन्हें सम्मान दिया है।

## दीपकजी करनपुरियाँ
(संगीतकार)

शताब्दी महामहोत्सव में जो उत्साह एवं प्रेम, प्रभु एवं पूज्य गुरुदेव के प्रति दिखा वह अद्भुत है। यहाँ के लोगों ने सुबह से लेकर शाम तक प्रभु भक्ति में सराबोर रहकर निष्ठा एवं समर्पण भाव का उत्कृष्ठ उदाहरण दिया है, ऐसी भक्ति जीवन में पहली बार देखने को मिली। बागरावासियों में आपसी समन्वय, तालमेल एवं एकता का भाव प्रकट हुआ क्योंकि यहाँ सभी भक्तों में एक उमंग थी कि हमारा बागरा नगर अब तीर्थ रूप लेने जा रहा है। इस महोत्सव के लिए कुछ पंक्तियाँ अर्पित करता हूँ -

वह कौन सा फूल है, जिसमें शताब्दी की सुवास नहीं,
वह कौन सा दीप है, जिसमें शताब्दी का प्रकाश नहीं ।।
जमीं का जर्रा-जर्रा गाता है शताब्दी की गौरवगाथा,
वह कौन-सा पन्ना है जिसमें शताब्दी महोत्सव का इतिहास नहीं ।।

## श्री राजुजी
(संगीतकार मनमधुकर ग्रुप नागदा जं.)

शताब्दी महा-महोत्सव में जो आनंद की अनुभूति हुई वह अवर्णनीय है। बागरा के परमात्मा चिंतामणि पार्श्वनाथ दादा के दर्शन करके हमारा संगीत मंडल धन्य हो गया है। मेरे प.पू. गुरुदेव श्री की असीम कृपा से ही यह संभव हो पाया है। महाशतकोत्सव में बागरा सकल श्रीसंघ द्वारा भी बढ़-चढ़कर लाभ लिया गया। नित्य धार्मिक क्रियाओं एवं पूजा विधान आदि में बड़ी संख्या में भाग लिया। गुरु चरणों में रहकर उनके आशीर्वाद एवं प्रेरणा से बागरावासी इसी प्रकार संघ और समाज की जाहो-जहाली करते हुए परमात्मा की भक्ति में लीन रहते हुए गुरु-गच्छ की शोभा में अभिवृद्धि करते रहें यही मंगल भावना।

वीर रसमय-काव्य

# जयन्तसेन चरणों में झुकता बागरा

(श्री संयमरत्न विजयजी म.सा. ''प्रवासी'')

एक डंडा, एक झंडा, एक ही नारा,
राष्ट्रसंत गुरुवर, हमको प्यारा ।
आपकी विजय आगे, जगत हारा ,
जयन्तसेन चरणों में झुके बागरा ।।1।।

सोये रहे कब तक, अब तो पार आ,
सुख-दुःख आते, चढ़ता पड़ता पारा ।
आपने तो मधुकर, सबको तारा,
जयन्तसेन चरणों में, झुके बागरा ।।2।।

शुभ प्रसंगों में बजे, ढ़ोल नगारा,
धन दौलत गुरु के, मन में गारा ।
दिल के देवालय हमने, आपको धारा,
जयन्तसेन चरणों में, झुके बागरा ।।3।।

दिवाली में खूब भाये, शक्करपारा,
पालक बिना का बच्चा, होत बेचारा ।
जिनवाणी धारे बिना, न कोई चारा ,
जयन्तसेन चरणों में, झुके बागरा ।।4।।

गुरु की जयकार का, लगावो नारा,
किश्ती रुख मोड़े तो, बदलता किनारा ।
करमो के आगे मैं तो, गया रे मारा ,
जयन्तसेन चरणों में, झुके बागरा ।।5।।

नदी बन जाती एक, पतली धारा,
शीत ऋतु जब आए, खाएं छुआरा ।
कटु वेण सबको, लगता खारा ,
जयन्तसेन चरणों में, झुके बागरा ।।6।।

खेलों में खिलाड़ी होते, गिनती के बारा,
शादी करने की सोचे, वह कुंवारा।
गुरुवर ने रोग शोक, सब निवारा ,
जयन्तसेन चरणों में झुके बागरा ।।7।।

उल्टा काम सीधा हो तो, कहे पौबारा,
चार रस्ते जहाँ बने, वह चौबारा ।
असफल होवे तो, प्रयत्न दौबारा ,
जयन्तसेन चरणों में, झुके बागरा ।।8।।

तीर्थंकर सभी होत, चौथा जब आरा,
नरकगामी जीव बसे, षष्ठम आरा ।
सोता प्राणी खोता सदा, गोता खारा,
जयन्तसेन चरणों में, झुके बागरा ।।9।।

देव-गुरु महिमा है, अपरम्पारा,
आपने उबारा हमें, होगा निस्तारा ।
पारा संघ पर बरसे, कृपा अपारा,
जयन्तसेन चरणों में, झुके बागरा ।।10।।

स्वागत करें मिलकर, हम तुम्हारा,
जिनशासन में प्रभावी, आप सितारा ।
इष्ट से जो न हो, वो हो गुरु द्वारा ,
जयन्तसेन चरणों में, झुके बागरा ।।11।।

नजरों के बदलते, बदले नजारा,
हमने तो कह दिया, गुरुवर हमारा ।

विनयवान माने, गुरुवर का इशारा,
मोक्ष प्राप्ति का हो अपना, अंतिम मिनारा ।
धर्म कर कर्मो का, करो निपटारा,
जयन्तसेन चरणों में झुके बागरा ।।13।।

गुरु बिन नैया डोले, मझधारा,
गुरु चरणों का मुझे, मिले आधारा ।
तपे बिना हो न कभी, रूप निखारा ,
जयन्तसेन चरणों में, झुके बागरा ।।14।।

जाप करते पाप मिटे, जपो नवकारा,
ज्ञान-ध्यान बिना जीवन, लगे बेकारा ।
तरवर-सरवर-संतजन, उपकारा,
जयन्तसेन चरणों में, झुके बागरा ।।15।।

लाखों लोग मध्य लगे, सबसे न्यारा,
हर क्षण गुण गाऊँ, गुरु में धारा।
'प्रवासी' को नित तुम, ज्ञान देनारा,
जयन्तसेन चरणों में, झुके बागरा ।।16।।

अष्ट कर्मों ने, भवोभव में मारा,
'संवर' के 'चिंतन' से, होवे निस्तारा।
ज्ञान की 'सौरभ' फैली, 'सुमन' क्यारा ,
'धैर्य' रख तीरे, गुरु तारणहारा ।।17।।

मन हरे लगे प्रभु, मनोहारा,
'प्राची' दिशा भानु उगा, आज सोनारा ।
'संयम' का दान गुरु, देवनहारा,
गुरु का प्रताप जाने, सारा बागरा ।।

## स्तुति

राग द्वेष पर विजय बन्या छो
हमने विजयी करजो
भवसागर ने तरी गया छो
हमने भव पार करजो
केवल ज्ञान लहु छे आपे
हमने ज्ञानी करजो
सर्व कर्म नी मुक्त थया छो
हम बंधन ने हरजो
प्रभु हम बंधन ने हरजो (1)

अनंत ज्ञानी अंतरयामी
जय हो त्रिभुवन स्वामी
अनंत करुणा ना सागर छो
करुणा नो हुं स्वामी
अनंत शक्ति ना है मालिक
भवनी भम्रणा टालो
मुझ मनड़ा मा प्रसन्नता नी
प्रेमल ज्योत जगावो
प्रभु प्रेमल ज्योत जगावो (2)

आ संसार अटवा उना
एवो राह बतावो
जीवन पंथे भूलो पड़ुना
साथी बनी ने आवो
नेह नीतरता नय ने
जिनजी देजो ऐवा वाणी
आ तन-मन ना सवे दुखड़ा
जेती दऊं हुं ठाणी
प्रभु जेती दऊं हुं ठाणी (3)

संकलन - सुरेन्द्र गंग, रतलाम

# आश्चर्य से एकटक हो गये देखकर आकर्षक पत्रिका

बागरा में श्री चिन्तामणी पार्श्वनाथ जिनालय शताब्दी महामहोत्सव जिसे 'महाशतकोत्सव' के शब्द से पहिचान दी गई के आयोजन पर ग्यारह दिवसीय कार्यक्रमों का आमंत्रण एक सुनहरे आवरण से मंडित पत्रिका के माध्यम से सम्पूर्ण देश के श्रीसंघों को भेजा गया, जिसकी न केवल प्रशंसा हुई बल्कि उसे रुचिपूर्वक अवलोकन कर गुरुभक्त आश्चर्य से एकटक हो गये। पूरी पत्रिका आधुनिकता मुद्रण तकनीक से संवारी हुई है। इसमें बावन पूरे पृष्ठ तथा चार पृष्ठ कव्हर के अलग से हैं। पत्रिका की सुरक्षा पक्की बाइण्डिंग के पुट्ठों के मध्य की गई। इसे भिजवाने के लिये लिफाफा भी दृढ़ व आकर्षक तैयार किया गया। बागरा को प्रारंभ से चांदी की नगरी कहा जाता है अतएव इस लिफाफे के प्रथम पृष्ठ पर 100 वर्ष के आंकलन में इस संख्या के दोनों शुन्य के मध्य स्थान को रूपहरे पदार्थ से ऐसा सजाया गया कि वह वर्षों तक अपनी छबि बनाये रखेगा। पूरी पत्रिका कार्ड शीट पर है।

पत्रिका का प्रकाशन श्री सौधर्मबृहद् तपोगच्छीय जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक त्रिस्तुतिक संघ बागरा (जैन श्वेताम्बर संघ बागरा) द्वारा किया गया। इसमें बागरा मंडल श्री चिन्तामणी पार्श्वनाथ भगवान् दादा गुरुदेव, आचार्य श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. आचार्यदेवश्री धनचंदसूरीश्वरजी म.सा., जिनशासन के राजा गच्छाधिपति श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा. के पूरे पृष्ठों के संग्रह योग्य चित्र बहुरंगी मुद्रित किये गये हैं। एक सौ वर्ष पूर्व श्री पार्श्वनाथजी के प्रतिष्ठोत्सव के समय के चित्र भी एक पृष्ठ में मुद्रित हैं जो कि धरोहर के रूप में हैं। वर्तमान में बागरा नगर में जो श्रीसंघ के जिनालय, आराधना भवन, प्याऊ तथा श्री राजेन्द्रसूरि राजकीय उच्च माध्यमिक भवन आदि हैं उन सभी के चित्र भी पूरे आकर्षक पृष्ठ की रचना कर रहे हैं। इस शानदार समारोह का प्रतीक चिन्ह भी बनाया गया था, उसे पूरे पृष्ठ पर दिया गया है। पूरे कार्यक्रम का प्रतीक चिन्ह भी बनाया गया था, उसे पूरे पृष्ठ पर दिया गया है। पूरे कार्यक्रम से जुड़े हुए विविध लाभार्थी परिवारों के प्रमुखों के सजोड़े चित्र तथा उनके परिवार के पुरुष सदस्यों के नाम के साथ फर्म का नामांकन, व्यवसाय स्थल सहित पचरंगी स्याही में मुद्रित किये गये हैं। चढ़ावों को क्रमवार दिया गया है तथा

उनके साथ ही लाभार्थियों को शोभित किया गया है। इनके पृष्ठ भी सजावटी चित्रों से निखारे गये हैं। बड़े चढ़ावेवालों का पूरे पृष्ठ पर उल्लेख किया गया है तथा उनके पूरे परिवार का संयुक्त बहुरंगी चित्र दे दिया गया है। साथ ही उनकी समस्त व्यवसायिक फर्मों के नाम दिये गये हैं। महोत्सव से श्री चिन्तामणी पार्श्वनाथ की धातु प्रतिमा की अंजनशलाका का उत्सव भी संलग्न था, अतएव अंजनशलाका कार्यक्रम के चढ़ावे भी इस अवसर पर हुए। इन चढ़ावों के लाभार्थियों के चित्र तथा परिजनों के नामों की सूचि भी प्रत्येक के साथ प्रकाशित की गई है। कई लाभार्थियों के चित्र जोड़े सहित हैं। ये सभी पृष्ठ बहुरंगी तथा आर्टकार्ड पर हैं।

श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ के मुकुट सहित चित्र को बागरा निवासियों की प्रार्थना सहित जोड़ा गया है। इसमें प्रभु अभ्यर्थना की गई है कि – 'हे प्रभु ! आपकी कृपा हमारे ऊपर सदैव बरसती रहे। आपकी करुणामय आँखों से हमारे ऊपर कृपा दृष्टि बनी रहे।'

जिनशासन के राजा गच्छाधिपति राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म. के तीन कार्यक्रम इस महोत्सव में सौन्दर्य संयोजन कर रहे थे । 1. बागरा नगर प्रवेशोत्सव 2. 63 वां संयमोत्सव 3. पाटोत्सव का 33 वां वर्ष। तीनों कार्यक्रमों को पत्रिका में प्रमुखता से स्थान दिया गया है। श्रीसंघ ने ऐसे प्रत्येक अवसर पर आपकी भावपूर्वक वन्दना की।

आमंत्रण पत्रिका में महाशतकोत्सव के स्वर्ण स्तंभों व रजत स्तंभों की सूचि भी व्यवसायरत नगर सहित दी गई है। स्वर्ण स्तंभों की सूची तीन पृष्ठों में तथा रजत स्तंभों की सूची एक पृष्ठ में है। उपरांत श्री जैन श्वेताम्बर संघ बागरा के पदाधिकारियों एवं ट्रस्टीज के चित्र एक पृष्ठ में संयोजित हैं। कुल 29 चित्र इन प्रमुख कर्णधारों के हैं। अंत में दो पृष्ठों में महाशतकोत्सव में विभिन्न भूमिकाओं में सहयोग करने वाले जनों, संस्थाओं फर्मों के नाम दिये हुए हैं। कव्हर का अंतिम पूर्ण पृष्ठ 'जयजिनेन्द्र'का चढ़ावा प्राप्त करने वाले भाग्यशाली परिवार का है, जिनके पूरे परिवार का चित्र भी सुनहरे पृष्ठ पर है। पत्रिका के मध्य में बागरा नगरी की इन विभूतियों के चित्र तथा परिचय हैं, जिनने संसार त्याग का संयम जीवन अपनाया ऐसे संयमरत्नों को वंदन किया गया है।

पत्रिका एकदम सौंदर्य की सीढ़ियों को पार करते हुए उस स्वरूप तक पहुंची है। जहाँ सैंकड़ों वर्षों तक इसे संग्रहित व सुरक्षित रखने के लोभ का संवरण करना कठिन है। बागरा श्रीसंघ को ऐसी पत्रिका के प्रकाशन के लिये बधाई ! अभिनंदन !

# बागरा नगर की शान संयम लेकर बने महान

## आचार्य देवेश श्रीमद् विजय हेमेन्द्र सूरीश्वरजी महाराज सा.

जन्म : माघ वदि 6, वि. सं. 1975, बागरा

दीक्षा : आषाढ सुदी 2, वि.सं. 1999, भीनमाल

दीक्षागुरू : प.पू.श्री तपस्वीश्री हर्ष विजयजी म.सा.

## मुनिराजश्री जयकीर्ति विजयजी

जन्म : माघ कृष्णा 6, वि.सं. 1988, बागरा

दीक्षा : पौष सुदी 6, वि.सं. 2031, बागरा

दीक्षागुरू : प.पू.गच्छाधिपति
श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.

## मुनिराजश्री जयरत्न विजयजी म.सा.

जन्म : माघ सुदी 3, वि.सं. 2017, बागरा

दीक्षा : पौष सुदी 6, वि.सं. 2031, बागरा

दीक्षागुरू : प.पू.संयमवय स्थवीर श्रीशांतिविजयजी म.सा.

## श्रमणी वृंद

साध्वीजी श्री कुसुमश्रीजी म.सा.

साध्वीजी श्री मोतीश्रीजी म.सा.

साध्वीजी श्री तिलकप्रभाश्रीजी म.सा.

साध्वीजी श्री कृपादृष्टिश्रीजी म.सा.

साध्वीजी श्री कुमुदश्रीजी म.सा.

साध्वीजी श्री कंचनश्रीजी म.सा.

साध्वीजी श्री कृपानिधिश्रीजी म.सा.

साध्वीजी श्री मुक्तिनंदिताश्रीजी म.सा.

# बागरा की बहार

इस खंड के लेखक तथा संयोजक
श्री नरेन्द्र पोरवाल, बागरा

श्री नरेन्द्र पोरवाल

वचनसिद्ध युगपुरुष
## श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी

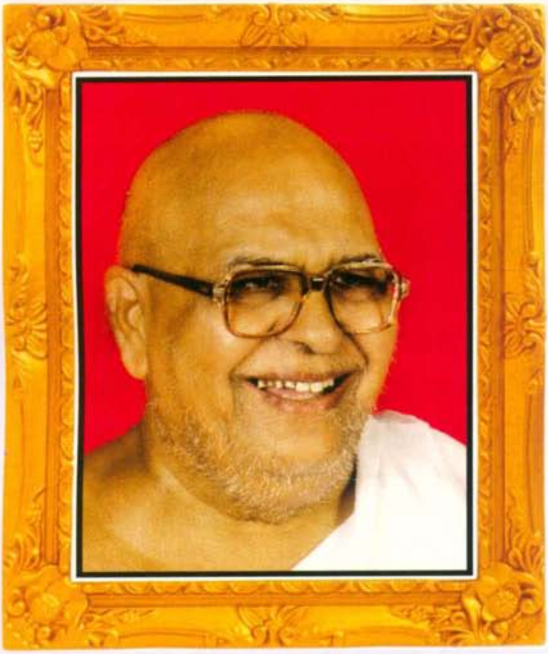

*'क्या मालूम क्यों मुझे इस गाँव (बागरा) से बहुत ही महत्व-अपनत्व है, बागरा मेरा अपना है क्योंकि, वह मेरे गुरुदेव का दुलारा है, मेरे हृदय की धड़कन है बागरा।'*

–श्रीमद् जयंतसेनसूरीश्वरजी

## श्री नरेन्द्रकुमारजी रायचंदजी पोरवाल

# परिचय

दिनांक 15 फरवरी 1956 को बागरा नगर में जन्म श्री नरेन्द्र कुमारजी का पांचवी कक्षा तक प्राथमिक शिक्षण बागरा में हुआ । पिताश्री के व्यवसायिक क्षेत्र महाराष्ट्र के देवलगांवराजा नगर से उन्होंने मराठी मीडियम में बी.कॉम की पढ़ाई की । 20 वर्ष की उमर में मुनिराज श्री जयन्तविजयजी म.सा. 'मधुकर' के सान्निध्य में आने पर उनके जीवन की दिशा ही बदल गई । आचार्य भगवंत श्री जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. ने ज्ञान की आराधना, माता सरस्वती की कृपा का वरदान उन्हें प्रदान किया । हिन्दी भाषा के अत्याल्प ज्ञान के बावजूद आचार्यश्री की प्रेरणा, मार्गदर्शन एवं शिक्षा से उन्होंने शाश्वत धर्म में लिखना प्रारंभ किया । सतत्- निरन्तर-अनवरत उनकी लेखनी चलती गई, अब तक 500 से ज्यादा गद्य एवं पद्य विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं से छप चुके है । जिसमें से 'अद्ये दानम्' नामक कविता को कई पुरस्कार भी मिल चुके हैं । चैन्नई चातुर्मास में प.पू. आचार्यश्री का उनके द्वारा लिखा गया साक्षात्कार 'रूबरू' तो करीब 20 पत्र-पत्रिकाओं में छप चुका है । श्री यतीन्द्रसूरि स्मृति ग्रंथ, जयन्तसेनसूरि अभिनंदन ग्रंथ, परिषद अर्धशताब्दी विशेषांक में उनके शोधपूर्वक आलेख विशेष सराहनीय रहे ।

श्री नरेन्द्रजी अत्यंत कुशल-ओजस्वी वक्ता एवं मंच संचालक भी हैं । 1995 के बिजापुर वर्षावास में आचार्यश्री ने उन्हें 'सरस्वती-पुत्र' का संबोधन दिया । विभिन्न नगरों में बागरा नगर की तरफ से आचार्यश्री को चातुर्मास विनंती के कार्यक्रम में उनके द्वारा दिये उद्‌बोधन  विशेष अनुमोदनीय रहे । वे श्री जैन संघ बागरा के सचिव, श्री बागरा जैन संघ चैन्नई के दो बार सचिव रह चुके हैं । वर्तमान में वे श्री जैन संघ बागरा के मैनेजिंग ट्रस्टी, श्री कुंथुनाथ ट्रस्ट मंडल वेपेरी चैन्नई के सचिव एवं श्री भरतपुर ट्रस्ट मंडल के ट्रस्टी हैं। अपनी सफलता का संपूर्ण श्रेय वे पू.

आचार्य भगवंत की कृपा, माता-पिता के संस्कार एवं धर्मपत्नी श्रीमती ललितादेवी के सहयोग को देते हैं । शाश्वत धर्म एवं परिषद् के प्रति आपका विशेष लगाव है । आपकी शैली में शब्दों की वह शक्ति है, जिससे बच्चों से लेकर वृद्ध तक सभी मुग्ध हो जाते हैं । पिछले कुछ वर्षों से वर्षों से आप बागरा नगर से संबंधित जिनशासन के समारोह की आमंत्रण पत्रिकाओं की पृष्ठ भूमि में आपका विशिष्ट सहयोग रहा है । बागरा नगर की 'एड्रेस बुक' की प्रस्तावना, नगर की महत्ता, परिचय का वर्णन आपके द्वारा लिखा गया है । आपकी समाज के प्रति सेवा भावना को लेकर पू. गच्छाधिपति राष्ट्रसंत श्री ने आपको 'समाज गौरव' अलंकरण से गौरवान्वित कर आशीर्वाद प्रदान किया है ।

# सोच में बदलाव

साध्वी श्री परमश्रीजी

एक साधु प्रकृति का व्यक्ति नदी के किनारे कुटिया बनाकर रहता था। वह अपनी कुटिया में आनंद से था, पर एक समस्या थी। जंगल के पशु-पक्षी-उसका सामान बिगाड़ जाते थे। इससे वह बहुत परेशान होता था। एक दिन वह तीर्थयात्रा के लिए निकला। यात्रा के दौरान एक गांव से गुज़र रहा था, जिसमें चारों ओर खेत फैले थे ओर फसल तैयार खड़ी थी। एक बुढ़िया पकी बालियों की रखवाली कर रही थी। लेकिन खेत पर बार-बार पक्षियों का हमला हो रहा था। बुढ़िया के नुकसान की कल्पना करके वह व्यक्ति बुढ़िया के पास गया और बोला - 'माई! तुम यहां क्या करती हो? खेत को तो चिड़िया चुगे जा रही हैं।'

इस पर बुढ़िया ने कहा, 'भैया! चिड़ियों को भगवान ने ही पैदा किया है। उनके घर में तो अनाज भरा है नहीं। बेचारी जाने कहां से उड़कर यहां आई हैं। फिर भी कितना चुगेगी। उनका पेट ही कितना बड़ा है। 'बुढ़िया की बात ने उसके सोच की दिशा ही बदल दी। जब यात्रा से वह वापस लौटा, तो अपनी कुटिया में आने वाले पशु-पक्षियों के प्रति उसके मन में कटुता नहीं, प्रेम था।

एक छोटी सी घटना ने उसकी आंखें खोल दी। उसे पहली बार अहसास हुआ कि साधुता का संबंध दिल की उदारता व सोच की सकारात्मकता से है। इस वाकये ने उसे घर-बार छोड़ने का सच्चा अर्थ समझा दिया। जो परेशान हो जाता है, वह धर्म के मर्म को अभी उपलब्ध नहीं हुआ है। धर्म कहो या प्रेम-यह हृदय की विराटता में ही संभव है।

# मेरा कर्मा तू-मेरा धर्मा तू ओ मेरे बागरा !

(श्री नरेन्द्रकुमार रायचंदजी पोरवाल)

'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' (वाल्मीकी रामायण - लंका काण्ड)

महर्षि वाल्मीकी ने भगवान राम के श्रीमुख से निकले इस वाक्य में जन्मभूमि की महत्ता को कितने मान से निरूपण किया है कि माँ और मातृभूमि स्वर्ग से भी श्रेष्ठ है । मानव जीवन में सबसे विशिष्ट माँ है, साथ ही साथ मातृभूमि भी माँ के ही समकक्ष है, समान है । बागरा (राजस्थान) गांव हमारी मातृभूमि है, इसलिए वह सर्व तीर्थमयी है । बागरा ही हमारी जन्नत है एवं उसकी अस्मिता को अक्षुण्ण रखना हमारी मन्नत है । अपनी मातृभूमि की सेवा करना-सम्मान करना सर्वोत्कृष्ट धर्म व तपस्या है । हमें गर्व है हमारे गांव पर जो हमारी सामाजिक और धार्मिक धरोहर है, हमें नाज है हमारी परंपरा व भाषा पर, हमारी संस्कृति और सभ्यता पर।

सारे जहाँ से अच्छा बागरा हमारा, हम बुलबुले हैं इसकी - ये गुलिस्ता हमारा । राजस्थान प्रान्त के जालोर-सिरोही राजमार्ग पर जालोर से 20 कि.मी. दूर करीब 3000 हेक्टर क्षेत्रफल में फैला हुआ 3000 घरों एवं करीब 12000 जनसंख्या वाला छोटा सा कस्बा है - बागरा । बागरा गांव उस जालोर जिले में है जहाँ उदयोतन सूरि ने 'कुवलयमाला' (779 ई.स.) का सृजन किया है, जहाँ 'कीर्ति कौमुदी' के लेखक यशोवर्मन एवं 'कन्हडदे प्रबन्ध' के सृजनकर्ता महाकवि पद्मनाभ हुए । बागरा उस गांव का नाम है जहाँ पर सतत् अनवरत समत्व की सरिता, ममत्व की कविता, क्षमता की शुचिता बहती है ।

'हाँ ! बागरा गांव मारवाड क्षेत्र का सिरमोर है ।
ऐसा सुंदर गांव क्या इस देश में और है ?'

2 नवम्बर 2002 के राजस्थान पत्रिका में बागरा के बारे में लिखा गया है कि 'दिल्ली में आगरा और मारवाड़ में बागरा- इस प्राचीन कथन के पीछे बागरा एक व्यापारिक केन्द्र होना दृष्टिगोचर होता है । जिस प्रकार मध्यकाल में दिल्ली सल्तनत का राजनैतिक व व्यवसायिक स्थल आगरा था, उसी प्रकार मारवाड़ क्षेत्र में वो स्थान बागरा को प्राप्त था । यहाँ पर सोने-चांदी का वायदा का थोक व्यापार होता था । वैसे आज भी बागरा रुपये-पैसे की लेन-देन - व्यवहारिक कुशलता के लिए प्रसिद्ध है । 9 अक्टूबर 2000 के दैनिक भास्कर में लिखा गया है कि, 'मारवाड़ के ढंढार क्षेत्र का बागरा गांव ग्रेनाइट पत्थर के व्यवसाय के

लिए प्रख्यात है । यहाँ के लोग विशेषकर दक्षिण-भारत में व्यापार के लिए फैले हुए हैं मगर अपनी मातृभूमि के लगाव को बरकरार रखते हुए बागरा में बड़े-बड़े हवेलीनुमा मकान बनाये हैं ।'

वर्तमान में श्री जैन श्वेताम्बर संघ-बागरा के करीब 730 सदस्य हैं जिसमें 620 पोरवाल समाज, 90 वीसा ओसवाल समाज एवं 18 दसा ओसवाल समाज के हैं, कुल मिलाकर बागरा गांव के जैनों की संख्या अंदाजे 4000 के करीब होगी । सभी बागरावासी जैन त्रिस्तुतिक परंपरा को मानने वाले हैं। बागरा के जैनों ने अपनी कड़ी मेहनत एवं ईमानदारी, संघर्ष करने की क्षमता, कार्य के प्रति निष्ठा, अपनी गतिशीलता तथा असमाप्त जिजीविषा के बल पर पूरे देश में न केवल स्वयं को स्थापित किया बल्कि वहां के लोगों का आदर व सम्मान भी प्राप्त किया । बागरा वाले देश में जहाँ भी गये, उस क्षेत्र के आर्थिक विकास में योगदान करने के साथ सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास में भी भूमिका निभाई मगर बागरा से वे अन्तःकरण से दिल से जुड़े रहे । विवाह-शोक तथा धार्मिक कार्यों के लिए उनका बागरा आना-जाना निरन्तर चलता रहा ।

'बागरा हमारी आस में है, बागरा हमारे विश्वास में है ।
चले आये भले ही परदेश, बागरा हमारे श्वास में है ।'

विगत से आगत को जोड़ने वाली कड़ी इतिहास हमारे भावी पीढ़ी के मन में संस्कृति और सभ्यता के प्रति सम्मान-उत्पन्न करती है । आचार्य देवेश चर्चाचक्रवर्ती श्रीमद् विजय धनचन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. का समाधि मंदिर होने से बागरा 'मारवाड का मोहनखेड़ा' तथा 'राजस्थान का राजगढ़' कहलाता है । बागरा का मुख्य गौरवशाली आकर्षण है गांव के मध्य में आम चोहटे पर स्थित चौबीस जिनालय श्री चिन्तामणी पार्श्वनाथ जैन देरासर जो आसपास के क्षेत्र में बहुत ही प्रसिद्ध है । मंदिरजी के सामने ही कबुतरों को दाना चुगने के लिए विशाल-सुन्दर चबूतरा है । पार्श्वनाथ चैत्यालय की सम्पूर्ण रचना वैज्ञानिक ढंग से जैन शास्त्रानुसार अत्यंत नयनाभिराम एवं मनमोहक ढंग से की गई है । वि.सं. 1730 में निर्मित श्री पार्श्वनाथ प्रभु के लघु देरासर के जिर्णोद्धार के लिए वि.सं. 1958 माघ शुक्ला 13 को दादा गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. के द्वारा अंजनशलाका की गई थी । श्री चिन्तामणि-श्री गोडीजी - श्रीजीरावला पार्श्वनाथ प्रभु के तीन जिन बिम्बों की प्राण प्रतिष्ठा दादा गुरुदेव के प्रथम पट्टधर आचार्य देव श्रीमद् विजय धनचन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. एवं परमज्ञानी उपाध्याय श्री मोहनविजयजी म.सा. द्वारा वि.सं. 1972 माघ शुक्ला 13 को सौध-शिखरजी नवीन भव्य-दिव्य मंदिरजी में ऐतिहासिक महोत्सव के साथ की गई ।

वि.सं. 1998 में मार्गशीर्ष शुक्ला 10 को आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय

यतीन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. के शुभ हस्ते भगवान आदीनाथ से लेकर भगवान महावीर स्वामी तक (पार्श्वनाथ भगवान को छोड़कर) 23 देव कुलिकाओं में जिन प्रतिमाएँ एवं दादा गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. की प्रतिमा जिसकी दांयी ओर उपाध्याय श्री मोहनविजयजी म.सा. व बांयी तरफ मुनिराज सेवास्वभावी श्री हर्ष विजयजी म.सा. की चरण पादुकाएँ हैं, एवं गांव के बाह्य प्रांगण में बस स्थानक के निकट श्री महावीर स्वामी के आसपास श्री आदिनाथ प्रभु व श्री शांतिनाथ प्रभु की सुंदर प्रतिमाएँ तथा वीर प्रभु के अधिष्ठायक श्री मातंग यक्ष, अधिष्ठायिका श्री सिद्धायिका देवी की मूर्ति साथ ही साथ जिनालय के समीप श्रीमद् विजय धनचन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. की प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। समाधि-मंदिर में गुरुदेव धनचन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. के प्रतिमा के दांयी तरफ श्रीमद् विजय भूपेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. एवं बांयी तरफ श्रीमद् विजय यतीन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. की प्रतिमा की अंजनशलाका - प्रतिष्ठा वि.सं. 2020 फाल्गुन शुक्ला 3 को आचार्य श्री विद्याचन्द्र सूरीश्वरजी एवं मुनिश्रेष्ठ श्री लक्ष्मण विजयजी म.सा. के शुभ हस्ते हुई। समाधि-मंदिर के नूतन कलशारोहण का महामहोत्सव वर्तमानाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञा से संयमश्रेष्ठ मुनिराज श्री जयानंद विजयजी म.सा. की शुभ निश्रा में वि.सं. 2052 वैशाख शुक्ला 14 को हुआ।

बागरा गांव त्रिस्तुतिक समाज के गुरु परंपरा से एक विशेष -अनोखे, एकमेवादित्य रूप से जुड़ा हुआ है। इस पावन भूमि पर एक पूज्य आचार्य भगवंत का निर्वाण (श्रीमद् विजयधनचंद्र सूरीश्वरजी म.सा.) हुआ तो एक पूज्य आचार्य प्रभु (श्रीमद् विजय हेमेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.) का अवतरण हुआ। ऐसा भाग्य संसार के किसी भी गांव को नसीब नहीं हुआ है। वि.सं. 1977 भाद्रपद शुक्ला 1 अर्थात् पर्युषण पर्व दरम्यान श्री महावीर जन्म वाचन के पवित्र दिन धनचन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. ने 'अर्हम् - अर्हम्' इस महामंत्र का उच्चार करते हुए बागरा के उपाश्रय में रात्रि आठ बजे सोमवार को अंतिम सांस ली। श्रीमद् विजय यतीन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. 'श्री धनचन्द्र सूरि चरित्रम्' नामक प्रसिद्ध ग्रंथ में लिखते हैं कि श्री बागरा संघ ने तीस-तीस कोस तक आसपास के छोटे बड़े गांवों में रातोंरात आचार्यदेवेश के स्वर्गवास के समाचार पहुंचा दिये और देशावर में पचास तार दिये। स्वर्गवास का समाचार सुनते ही भाद्रपद शुक्ला 2 को बागरा में आसपास के गांवों से पांच हजार श्रावक-श्राविकाएँ उपस्थित हुए। बाद में पक्की जरी की बनी तीन घुमट वाली दिव्य वैकुंठिका (मांडी) पर आचार्यश्री के शरीर को विराजमान कर भारी जुलूस के साथ गांव के बाहर तालाब के पास विधिपूर्वक अग्निसंस्कार किया गया। इस स्वर्गवासोत्सव पर बागरा के श्रीसंघ ने पांच हजार रुपये खर्च किये जिसमें एक हजार वैकुंठिका पर उछालने के लिए, दो

हजार गरीब लोगों को मान-दान देने के लिए और दो हजार पूजा-संघ भक्ति आदि में खर्च हुए।'

श्रीमद् विजय यतीन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. की बागरा गांव से विशेष स्नेह, लगाव एवं अनुकम्पा रही। अपने यशस्वी संयमकाल के 64 चातुर्मासों में सात ज्योर्तिमान-ऐतिहासिक चातुर्मास उन्होंने बागरा में किये, अन्य किसी एक स्थान पर उन्होंने इतने वर्षावास नहीं किये। अपने विविध विषयक और प्रचुर परिणाम वाले साहित्य का अधिकांश सृजन एवं अभिधान राजेन्द्र कोष के संशोधन का कार्य इस युगदृष्टा संत ने बागरा के उपाश्रय में ही किया। वि.सं. 1972 में आचार्य श्रीमद् विजय धनचन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. ने मुनि यतीन्द्र को 'व्याख्यान वाचस्पति' के अलंकार से बागरा में ही विभूषित किया। वि.सं. 2002 में आचार्यश्री यतीन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. ने श्री बागरा जैन संघ द्वारा आयोजित अत्यंत भव्य एवं अविस्मणीय उपधान तप में 340 तपस्वीयों को आराधना करवाई जो उस समय एक कीर्तिमान था।

बागरा के चरम भाग्योदय से वि.सं. 1975 माघ कृष्णा 6 को श्रेष्ठिवर्य श्री ज्ञानचंदजी एवं उज्जमबाई के घर गच्छाधिपति राष्ट्रसंत शिरोमणी-सरलस्वभावी-वचनसिद्ध आचार्य श्री हेमेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. का जन्म हुआ। वि.सं. 2040 माघ शुक्ल 9 को वे सम्पूर्ण त्रिस्तुतिक सम्प्रदाय के आचार्य बने। आचार्यश्री के सफलतम जीवनकाल के 90 वर्ष पूर्णोत्सव उन्हीं श्री की शुभ निश्रा में बागरा में अतीव धूमधाम से मनाया गया। श्री सिद्धाचल तीर्थ की पावन भूमि पर दि. 29 अगस्त 2010 को ब्रह्मलीन होने पर श्री मोहनखेड़ा महातीर्थ पर आचार्यश्री के पार्थिव देह को अग्निसंस्कार पर ओघा समर्पित करने का अभूतपूर्व लाभ श्री बागरा संघ को भाग्यीत हुआ। स्वर्गारोहण स्मरणार्थ दि. 21 फरवरी से 25 फरवरी 2011 तक यादगार महोत्सव का आयोजन बागरा में किया गया।

आचार्य श्री हेमेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के स्मरणार्थ श्रीमती श्रृंगारी बाई शंकरलालजी जैन रिलिजीयस एण्ड चेरीटेबल ट्रस्ट द्वारा उनके जन्मस्थल अर्थात् उनके पैतृक गृह पर श्री आदिनाथ हेमेन्द्रसूरि स्मृति मंदिर का निर्माण अत्यंत भव्य रूप से वि.सं. 2070 ज्येष्ठ सुद दिनांक 5 जून 2014 को 11 दिन के दिव्य अंजनशलाका एवं प्रतिष्ठा महामहोत्सव के साथ किया गया।

वर्तमानाचार्य श्री जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. बागरा के बारे में कहते है कि "क्या मालूम क्यो मुझे इस गांव से बहुत ही ममत्व-अपनत्व है, बागरा मेरा अपना है क्योंकि वह मेरे गुरुदेव का दुलारा है, मेरे हृदय की धड़कन है-बागरा।" आचार्यश्री की दीक्षा

बीच का महत्वपूर्ण समय बागरा में ही व्यतीत हुआ, संसारी से सन्यासी बनने के बीच की पूर्व तैयारी उन्होंने बागरा के धर्मशाला में ही शास्त्रोध्ययन कर पूर्ण की। आचार्यश्री बताते है कि "एक समय बागरा त्रिस्तुतिक समाज का गढ था, समाज की आर्थिक राजधानी थी-बागरा। संपूर्ण समाज का कोई भी कार्य बागरा के सहयोग, योगदान, मार्गदर्शन से ही कार्यान्वित होता था।" श्री राजेन्द्र नवयुवक परिषद-जो आज हमारे समाज की सबसे बड़ी संस्था है, को अखिल-भारतीय स्वरुप बागरा में ही प्राप्त हुआ तथा इस संस्था को अपने प्राथमिक अवस्था में सर्वप्रथम अनुदान भी पंच-महाजन-बागरा से ही प्राप्त हुआ। डॉ. श्रीमती कोकिलाजी भारतीय अपने प्रख्यात आलेख "शाश्वत धर्म की कहानी अपनी जुबानी" में लिखती है कि वि.सं. 2009 में श्रीमद् विजय यतीन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. द्वारा बागरा में ही शाश्वत धर्म का प्रकाशन करने का सपना साकार हुआ । इस तरह बागरा कई ऐतिहासिक महत्वपूर्ण घटनाओं का साक्षी रहा है । मुनिराजश्री जयकीर्ति विजयजी म.सा. साध्वीजी, श्री कंचनश्रीजी, सा. श्री मोतीश्रीजी, सा. श्री कुसमश्रीजी, सा. श्री कुमदश्रीजी, सा. श्री तिलकप्रभाश्रीजी, सा. श्री दिव्यदर्शनाश्रीजी सा., श्री मुक्तिनंदिताश्रीजी की जन्म भूमि इसी बागरा की पावन धरा रही । तीर्थप्रेरक मुनिराजश्री जयरत्नविजयजी म.सा. भी बागरा से हैं, उनकी दीक्षा भी बागरा में हुई है । भांडवपुर तीर्थ निर्माणकर्त्ता मुनिश्रेष्ठ जयरत्नविजयजी बागरा का स्वाभिमान हैं और बागरा को उन पर अभिमान है ।

ई.स. 2000 में शासन दीपिका वयोवृद्ध साध्वीजी म.सा. मुक्तिश्रीजी का बागरा में अत्यंत भव्यातिभव्य चातुर्मास सम्पन्न हुआ । बागरा के जैन समाज के प्रबल प्रयास एवं मुनिराज श्री रंग विजयजी (जैन-भिक्षु) के प्रेरणा से ई.स. 1966 में निर्मित 'श्री राजेन्द्र सूरि राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय' एवं दि. 19.2.1999 को शुरू की गई 'जीवदया गायत्री गौशाला' बागरा के शान में वृद्धि करते हैं। श्री जैन उपाश्रय के नवीनीकरण का कार्य प्रगति पर है ।

जैन आराधना भवन के साथ-साथ साध्वीजी म.सा. के आवास के लिए श्री यतीन्द्र क्रिया भवन एवं सामाजिक मांगलिक कार्यों के लिए श्री राजधन यतीन्द्र भवन एवं राजेन्द्रसूरीजी स्मृति भवन की व्यवस्था है ।

बागरा मरूधर-क्षेत्र का कोहीनूर है, बागरा जालोर जिले का नूर है । बागरा के समस्त सामर्थ्य एवं महिमा को शब्दों की अभिव्यक्ति में समेटना असंभव है । कहां से लाऊँ शब्द चयन करे, कहाँ से भाव जुटाऊँ- हे बागरा ! कैसे तेरा वर्णन करूं ?

'लहराता है, प्रतिक्षण जहाँ प्रेम स्नेह का पारावार ।
प्रणाम उसे हे बागरा ! बारम्बार - बारम्बार ।।'

# जिन्दगी धूप तुम घना साया

(श्री नरेन्द्र पोरवाल, बागरा)

'तू है अनादि, तू है अनंत, होता विराट में विश्व विलय ।
तू शब्द ब्रह्म हो प्रकट हुआ, वाणी बन हुआ अनिल में लय ।।'

जनजीवन को एक उन्मुक्त एवं स्वतंत्र जीवन दर्शन प्रदान करने के लिए समय-समय पर विभिन्न भूखंडों में संत-महात्माओं का आविर्भाव होना एक नैसर्गिक नियम है । वक्त की पुकार, युग की आवश्यकता, मानव चेतना के विग्रह आदि ऐसे आयाम हैं, जो हमारे जीवन और व्यवहार के प्रबुद्धता के अस्तमान प्रकाशपुंज को पुनः जीवित करने के लिए त्यागमय उच्च आत्माओं को समाज में गतिशील होने के लिए उत्पन्न करते हैं । वर्तमान के सक्रांति विश्वकाल में आचार्यश्री जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. जैसे समन्वययोगी, सहिष्णुता के अवतार, सत्य के ज्ञाता मानवता के निर्विकार परिशोधक, जन्मजात ज्ञानेश्वर, मूर्धन्य मौलिक प्रवक्ता को पाकर जैन संस्कृति धन्य हुई । हम अक्सर देखते हैं कि आध्यात्मिक भावना के व्यक्ति इस संसार को मायाजाल समझकर दूर रहने का यत्न करते हैं उन्हें सिर्फ खुद के कल्याण की चिन्ता रहती है, जन कल्याण से वे संबंध नहीं रखते मगर आत्म साधना एवं आत्म चिन्तन में हर पल मग्न रखते हुए भी मानव मनोविज्ञान के सुदक्ष ज्ञाता, सर्वाश्लेषी, सर्वसमन्वयी आचार्यभगवंत समाज-कल्याण, समाज सुधार, समाज विकास के साथ-साथ राष्ट्र धर्म तथा प्राणियों के हित में लगे रहते हैं ।

किसी भी धर्म, सम्प्रदाय एवं पंथ के प्रति न कोई आक्षेप न पक्षपात । सर्वधर्म समभाव का ध्येय एवं विविध धर्मों में, समाज में मैत्री, समता, शान्ति, स्नेह और सामंजस्य स्थापित करने के लिये किये हुए उनके अहर्निश प्रयत्नों से वे आज विश्वसंतों के पंक्ति में गिने जाते हैं ।

आचार्य समन्तभद्र से एक बार काशी नरेश ने पूछा- आप कौन हैं? आचार्य समन्तभद्र ने जवाब दिया -

आचार्यो हं, कविरहमहं, वादिराट पंडितोहं,
दैवज्ञोहं, भिषगहमहं, मांत्रिकस्तात्रिकोऽहं ।
राजन्यास्यां जलाधिवलया मेखलायाभिलाया
माज्ञासिद्धं:किमिति बहुना सिद्धसास्वतोहं ।।

मैं आचार्य हूँ, कवि हूँ, वाद विवाद कुशल हूँ, पंडित हूँ, ज्योतिषी हूँ, वैद्य हूँ, मांत्रिक और तांत्रिक हूँ, इस जल परिवेष्ठित भूमि पर मेरी आज्ञा चलती है, मैं सिद्ध सास्वत हूँ । प्रश्न हो सकता है कि क्या एक व्यक्तित्व में इतनी सारी विलक्षणताएं एक साथ आ सकती हैं ?

क्या वर्तमान में भी ऐसा कोई व्यक्तित्व है जिसमें ये सारी अर्हताएं उपलब्ध हैं । उत्तर है हाँ ! इन सारी विशिष्टताओं को चरित्रार्थ करने वाले व्यक्ति का नाम है- आचार्यश्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.। वे शाश्वत सत्यों पर जगमगाने वाली एक ऐसी ज्योति हैं जिसके अणु-अणु में पराक्रम भरा है, उनका अलौकिक व्यक्तित्व आदिम पुरुष भगवान ऋषभ की यादगार और इस युग के अन्तिम तीर्थंकर भगवान महावीर की परम्परा का सक्षम प्रतिनिधि है । वे पूर्णकाम हैं, उन्होंने जो चाहा पाया, जो चाहा किया, जो नहीं पाया समझिये उसे चाहा ही नहीं है । वे जैन साधना के कोलम्बस हैं, जैन ध्यान के अनेक अजनों, अचिन्हे टापुओं पर बुद्धि की प्रखरता एवं अनुभव के अद्भुत समन्वय से विजय प्राप्त की । उनका संस्पर्श होता है, मनुष्य में परमात्मा जाग उठता है ।

'इस जहां में कुछ लोग ऐसे नजीर होते हैं ।
जिन्हें जमीं झुकाए शीश, आस्मां सलाम करते हैं ।।'

आचार्यश्री जयन्तसेन सूरीश्वरजी म. सा. विश्व रंगमंच के उन व्यक्तियों में से हैं

जिनका जीवन सम्प्रदाय, पथ, समाज अथवा देव की सीमा रेखाओं से परे होता है, उनका सार्वभौमिक जीवन किसी सीमा में आबद्ध नहीं किया जा सकता । आज बहुत कम लोग हैं, उनके जैसे जीवन को समझने वाले और उनसे भी बहुत कम हैं उनके जैसे जीवन जीने वाले । हमारा जीवन अनेक सीमा बंधनों से बंधा हुआ है । कर्म, संस्कार, आनुवंशिकी, पर्यावरण आदि की परतंत्रता से नियंत्रित जीवन जीना और उसमें स्वतंत्रता की अनुभूति करना एक विशेष उपलब्धि है ।

परतंत्रता के घेरे में स्वतंत्रता की अनुभूति वही कर सकता है जिसका पराक्रम और पुरुषार्थी अमाप्य होता है एवं चिन्तन उदात्त। पराक्रम और पुरुषार्थ निस्पृहता का पोषण पाकर ही चिरंजीवी हो सकता है । पदार्थ जगत के प्रति निस्पृह होकर आचार्यश्री जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. ने अपने प्रबल पुरुषार्थ से ही समाज में व्याप्त सड़ी गली मान्यताओं को समाप्त कर समाज को नया परिवेश, नई शक्ल सूरत देने के लिए योग्य नेतृत्व प्रदान किया । हमारा समाज सौभाग्यशाली है क्योंकि उसे अनार्दृष्टि सम्पन्न (इन्ट्यूशन पॉवर) आचार्यश्री का मार्गदर्शन सुलभ हुआ । आचार्यश्री का जीवन आस्था और निष्काम कर्म का नंदीदीप है जिसकी ज्योति से कोटि-कोटि जीवन दीप ज्योतिर्मय हुए ।

आचार्यश्री जयन्तसेन सूरीश्वरजी का सम्पूर्ण जीवन तिल-मिल आत्मोत्थान और समाजोदय में लगा हुआ है । जैनों के सामाजिक जीवन का जो कटाव, जो क्षरण, जो नुकसान और टूट फूट हो गई है, जो शिथिलताएं और प्रमाद उनके सांस्कृतिक और नैतिक जीवन में आ गये हैं, आचार्यश्री ने चंदन के भांति स्वयं को पीसकर अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुए उनकी मरम्मत की, उन्हें संभाला ।

विकृतियों, दुर्बलताओं के द्वारों से आई अस्वच्छता को उन्होंने नैतिकता और धार्मिकता के असंख्य रोशनदानों को खोलकर उज्वल किया । अपने साधारण चरित्र बल से टूट रहे समाज को एक नई दिशा प्रदान की । वे चिन्तन के उन्मुक्त आकाश तले अकस्मात् आ खड़े हुए और अपनी वरदानी छांव से अपने समकालीन समाज को उपकृत अनुग्रहित किया, अभिव्यक्त किया । समीक्षा और आलोचना को अमृत की भांति पीकर अपनी समता, क्षमता और ममता से सेवा-धर्म के इस चंदन-पुरुष के

कार्यों की सुरभि से आज सारा वातावरण सुवासित हुआ और अनन्तकाल तक सुवासित रहेगा।

अपने अप्रितम ज्ञान, अनूठी प्रतिभा एवं युगप्रधान व्यक्तित्व, अद्‌भुत संगठन क्षमता, तपोबल और संयम निष्ठा से समाज को तत्व दर्शन से अनुप्रमाणित किया।

एक साधारण-सा बालक, सरल युवक बिना किसी स्कूली शिक्षा के अनेक भाषाओं का प्रकांड विद्वान, अध्यात्म का शिखर पुरुष, उत्कृष्ट चिन्तक, महान दार्शनिक, अनुपम साहित्यकार, कुशल गीतकार, प्रखर वक्ता, संघ-शिरोमणी और जन-जन का मनमोहक हृदय सम्राट कैसे बन गया ?

यह एक बड़े शोध का विषय है, आचार्यश्री जयन्तसेन सूरिश्वरजी म. सा. के जीवन उनकी कार्यशैली एवं क्षमता पर शोध किया जा सकता है। आश्चर्य है कि एक अनुशास्ता ने जिनका अधिकांश समय और शक्ति संघ के लिए समर्पित है, जो चातुर्मास के अतिरिक्त वर्ष के शेष काल में निरन्तर पद विहार करते रहे हैं, इतने विविध विषयक और प्रचुर परिणाम वाले साहित्य का सृजन कैसे किया ?

शायद इसलिए कि उन्होंने जीवन निर्माण की कठोरतम् विभिषिका में संघर्षों की चेतना से बीहड़ अंधेरे को मुट्ठियों में भींचकर तेल निकाला एवं उसमें अपनी आत्म ज्योति से ऐसे दीपक को जलाया जो उनकी समूची आत्मा को, सच्चाई को आलोकित करे। जीवन को उसकी आन्तरिक गहराइयों के परिप्रेक्ष्य में समाने और तदनुसार आचरण करने के, जीवन को उसके समग्रता से जानने, जीने और प्रयोग करने के जैसे वे पर्यायवाची शब्द हो गये।

आचार्यश्री जयन्तसेन सूरिश्वरजी म.सा. प्रयोगधर्मा चैत्य-पुरुष हैं। वे समग्र त्रिस्तुतिक समाज के विकास के लिए क्षण-क्षण नये स्वप्न देखते रहते हैं उनका सारा जीवन श्रमण संस्कृति की उत्कृष्टताओं पर तिल-तिल न्यौछावर है।

तुमने कितने बिगड़े सपनों को साकार किया ?
तुमने कितने वीरान गुलशनों को गुलजार किया ?
तुम्हारी किन-किन खूबियों का बयान करूँ ?
तुमने कितने पत्थरों को प्रतिमा का आकार दिया ?

# श्रीमद् यतीन्द्रसूरि और बागरा

(श्री नरेन्द्र पोरवाल, बागरा-चैन्नई)

भव्य व्यक्तित्व, विशाल काया, गौरवर्ण, प्रशस्त ललाट, उन्नत शीर्ष, मंजुल-प्रभविष्णु मुखाकृति, कोमल-निष्कलुष हृदय, स्नेहसिंचित सौहार्दपूर्ण व्यवहार, अभिव्यक्ति की सादगी मगर संवेदना की प्रखरता, अद्भुत स्मरणशक्ति और उच्चतर साधना-यही है शब्द कुबेर, अक्षरपुरुष चतुर्थ जैनाचार्य श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. का अल्प परिचय। अपने प्रबल पुरुषार्थ से गुरुदेव ने समाज को नया परिवेश दिया, अनेक घोष दिये जिससे सामाजिक चेतना को नये आयाम, नयी प्राणशक्ति प्राप्त हुई।

राजस्थान प्रान्त के जालोर जिले में बसा छोटा सा गाँव-बागरा। सूरीश्वरजी यतीन्द को इस गाँव से विशेष स्नेह था, अजीब सा लगाव था। अपने संयम काल के 64 चातुर्मास में से सात ज्योतिमान-ऐतिहासिक चातुर्मास उन्होंने बागरा में किये। अन्य किसी एक स्थान पर उन्होंने इतने वर्षावास नहीं किये। इससे बागरा गाँव एवं यहाँ के श्रावकों से उनका विशिष्ट जुड़ाव, वात्सल्य रहा। अपने विविध विषयक और प्रचुर परिणाम वाले साहित्य का अधिकांश सृजन इस युगदृष्टा संत ने बागरा के उपाश्रय में ही किया। इसलिए शायद उपाश्रय का नामकरण 'यतीन्द्र क्रिया भवन' किया गया। मरुधर बागरा की धूलि इस महाचेतना सम्पन्न महामनुज के पुण्य चरण स्पर्श से मधुबन बनी। बागरा की धरा-वसुंधरा बनी। इस नीतिशास्त्र के चलते फिरते विश्व विद्यालय के सान्निध्य एवं सहवास में आकर मेरी जन्मभूमि निहाल हुई, धन्य हुई।

वि.स. 1972 में चर्चाचक्रवर्ती द्वितीय जैनाचार्य श्रीमद् विजय धनचन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. ने बागरा में ही मुनि यतीन्द्र को 'व्याख्यान वाचस्पति' अलंकार से विभूषित करते हुए कहा, 'वाक् विभूषण' वाणी के जादूगर यतीन्द्रविजय के व्याख्यानों में भक्ति/त्याग का अनुपम तेज है, मानवीय सद्गुणों के प्रतिष्ठान का यत्न है। क्रान्तदर्शी व्याख्याकार मुनिश्री के

चिंतन की सूक्ष्मता, भाषा की सरसता, ह्दय की विराटता उनके प्रवचनों में स्पष्ट झलकती है । उनके प्रवचन जनमानस को सिर्फ मंत्र-मुग्ध ही नहीं करते उनके अन्तःकरण को छूकर विचारों को शुद्ध -पवित्र और निस्पृह बनाते हुए सम्यक् मोड़ प्रदान करते हैं। इसलिये इस 'व्याख्यान-वाचस्पति' के गौरव के वे पूर्णतः योग्य हैं।' वि.सं. 1998 को श्रीमद् यतीन्द्रसूरिजी ने माघ शुक्ला 10 को श्रीमद् धनचन्द्रसूरिजी के बिंब की अंजनशलाका बागरा में सम्पन्न कराई । साथ ही साथ जिन-बिंब, स्वर्ण-कलश और दण्ड ध्वज का कार्यक्रम भी सूरीश्वर की शुभ्र निश्रा में ही सम्पन्न हुआ । वि.सं. 2002 में श्रीमद् यतीन्द्रसूरिजी ने श्री जैन संघ बागरा द्वारा आयोजित उपधान तप में 340 तपस्वियों को आराधना करवायी । यह उपधान तप इतना भव्य एवं अविस्मरणीय था कि आज भी बागरा के वयोवृद्ध श्रावक एवं श्राविकाएँ इसकी याद से रोमांचित हो जाते हैं । सरलमना एवं बागरा के हर दिल अजीज उदार अमृत पुरुष गुरुदेव बागरा के बारे में सहज कहते थे कि दिल्ली में आगरा और मारवाड़ में बागरा।

प्रखर विचारक एवं प्रसिद्ध लेखक बागरा निवासी स्वर्गीय शा. इन्दरमलजी-भगवानजी अक्सर मुझसे सूरियतीन्द्र के बारे में बातें किया करते थे कि, 'शुद्ध सात्विक व्यक्त्वि के धनी सूरिजी इतने अप्रमत्त थे कि शासन संचालन करते हुए भी वे हरदम स्वयं से जुड़े रहते । निर्लोभ और निर्वैर, निर्भीकता और अविचलता की जीती जागती मूर्ति श्री यतीन्द्रसूरिजी के जीवन के महान सूत्र थे- साधना और संयम । चातुर्मास के अन्तर्गत वे रात-दिन स्वाध्याय में तल्लीन रहते थे । सिद्धान्त - दिवाकर श्रीमद् यतीन्द्रसूरि ने अपने समय में साहित्य-धर्म और समाजसेवा के लिए जितना काम किया, सौ पचास व्यक्ति मिलकर भी एक जीवन में उतना काम नहीं कर सकते ।' गुरुदेव के आजन्म चारित्र पालन का प्रताप ऐसा था कि उनके सामने जाने की, उनसे बात करने की किसी सामान्य श्रावक की हिम्मत नहीं होती थी । व्यर्थ की फिजूल की चर्चा में समय नष्ट करना वे पसंद नहीं करते थे । वे इतने धीर गंभीर थे कि चातुर्मास के समय गाँव के कुछ अति विशिष्ट श्रावक जैसे शा. जेठमलजी खुमाजी, केशरीमलजी, मुलाजी, पूनमचंदजी,

नरसिंगजी ही उनके समक्ष किसी कार्य के लिये जाते थे । सूरीश्वरजी का पौरुष अप्रतिहत था, ब्रह्मचर्य का उनके जीवन में विशेष स्थान था । वृद्धावस्था एवं रुग्णावस्था के दिनों में भी ब्रह्मचर्य के तेज से उनका ललाट एवं मुखाकृति किसी दिव्य मूर्ति के भाँति चमकती थी ।

मेरे पिताश्री स्वर्गीय शा. रायचंद्रजी ने सूरीश्वरजी के बारे में एक प्रसंग बताया था कि, 'बागरा चातुर्मास के समय एक बार स्वास्थ्य की प्रतिकूलता की वजह से यतीन्द्र गुरुदेव के लिए जालोर से डॉक्टर बुलाना पड़ा था, कुछ विशेष तकलीफ नहीं थी । मारवाड़ की भीषण गरमी की वजह से आचार्यश्री को बेचैनी अनुभव हो रही थी । डॉक्टर ने उनका संपूर्ण चेकअप किया और कहा कि कोई घबराने जैसी बात नहीं है, उष्णता की अधिकता से हुआ है । डॉक्टर ने उपाश्रय के बाहर आकर वहाँ खड़े श्रावकों से कहा कि 'मैंने अपने जीवन में हजारों लोगों का शारीरिक परीक्षण किया है, मगर ब्रह्मचर्य की इतनी अखंडता मैंने कहीं नहीं देखी, इतना संतुलित, इतना व्यवस्थित शरीर मेरे देखने में नहीं आया । चिकित्सा विज्ञान की दृष्टि से आपके गुरुजी का मानस ही नहीं शरीर भी शिशु सा कोमल और पवित्र है । गुरुदेव के श्वास-श्वास में, रोयें-रोयें में, कण-कण में ब्रह्मचर्य का निवास है, उनकी चित्तभूमि आसक्ति एवं लिप्सा से मलिन नहीं है । और शायद इसी विशिष्टता की वजह से निरन्तर पदयात्राएँ, रात-दिन साहित्य-सृजन एवं जनकल्याण के कार्यों में अथक-सतत-निरन्तर परिश्रम करते हुए भी आपके आचार्यश्री सदा-स्फूर्त एवं ताजे प्रतीत होते हैं। धन्य हैं आपके गुरुदेव, धन्य है उनका चारित्र, धन्य है उनका चारित्रपालन ।'

श्रमणधारा के तेजस्वी, ओजस्वी साधक, त्रिस्तुतिक समाज की अस्मिता, धरती पर नंगे पैर चलना जाज्वल्यमान ज्ञान-सूर्य विजय यतीन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. ने अपनी वरदानी छाँव से मेरी प्रिय जन्मभूमि बागरा को कई बार उपकृत किया, अनुग्रहीत किया, अभिषिक्त किया। गुरुदेव के नाम का स्मरण होते ही मेरे गाँव के सभी स्त्री-पुरुषों के हृदय में श्रद्धा का सागर उमड़ने लगता है । उनके प्रति वंदना में हजारों हाथों की अंजलियाँ उठने लगती हैं ।

# सृजनशीलता का एक खास मुकाम आचार्य श्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

(श्री नरेन्द्र पोरवाल, बागरा)

'आचिनोति हि शास्त्रार्थात् आचरते स्थापयात्यापि
स्वयं आचरते यस्तु, आचार्यः स उच्यते ।'
(अर्थात् जो शास्त्र के अर्थों का चयन करता है,
उन्हें आचार या आचरण में ढालता है, उसे आचार्य कहते हैं ।)

जैन धर्म और दर्शन के प्रति आम जैन में कोई जिज्ञासा नहीं है । जैन साहित्य में जो कुछ वजूद में है, वह या तो उपदेशात्मक है या फिर निपट आध्यात्मिक । हमारे शिक्षालय लगभग दफन हैं, कहीं कोई ऐसा इंतजाम नहीं, जो जैन धर्म की विशिष्टताओं अथवा उसके व्यवहार्य स्वरूप को जीकर प्रतिपादित कर सके । ऐसे में त्रिस्तुतिक समाज के वर्तमानाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा. आशा की वह अनवरत् ज्योति हैं जो ज्ञान-दर्शन-चारित्र की उपासना का मार्ग प्रशस्त करती है । नास्ति के किनारों में आचार्यश्री अस्ति का वह आलोक हैं जिन्होंने शाश्वत् भाव-दर्शिता और अर्थ-गर्भिता में गहरे उतरकर अपने सृजन को युगानुरूप नव्यतर आश्रय और रूप दिया ।

आचार्य श्री की रचनाओं की सार्थकता का रहस्य यही है कि उन्होंने लोक भावों को लोकभाषा में लोगों तक पहुंचाने का भागीरथ कार्य किया । जीवन का कोई भी पहलू क्यों न हो- धर्म, चरित्र, नैतिकता, शिक्षा, अध्यात्म, सेवा, प्रकृति, प्रवृत्ति, राजनीति, इतिहास सभी पर बहुत सूक्ष्म, स्पष्ट दृष्टि से अपने विचार रखकर उन्होंने युग सत्य को रेखांकित किया, परिभाषित किया, अपने विपुल साहित्य से आचार्यश्री ने युग की सभ्यता और संस्कृति को अनुप्राणित किया। उनकी रचनाएँ गहन विषयों को भी सरल भाषा में व्यक्त करती हैं। ऐसी सृजनशीलता, ऐसी संवेदनशीलता, ऐसी प्रखरता, ऐसी अभिव्यक्ति वर्तमान में बहुत कम नजर आती है ।

जहाँ आधुनिक कवियों का काव्य विद्वद्भोग्य और पुस्तकालयों की शोभा मात्र है, वहाँ पूज्य आचार्यश्री की सत्य-सुबोध कृतियां, जयन्तसेन सतसई, उनके रचित अनेक गीत जैसे 'आत्मभावना', 'ॐ नमो अरिहंताणं' जन जन के कंठों से अनुगुंजित होती हुई परिपार्श्व में पूरे वायुमंडल में थिरक जाती है । उनका काव्य मानव मन के परतों का विश्लेषण करता है। 'जयन्त-सेन-सतसई' लिखकर उन्होंने हिन्दी साहित्य में वह काम किया, जो कभी कबीर, रहीम, तुलसी ने किया था, जो साहित्यिक होते हुए सामाजिक और मनोवैज्ञानिक है ।

विश्व ज्ञान के कीर्तिस्तंभ आचार्यश्री के सृजनात्मक एवं चिन्तनपरक गद्य ने हिन्दी को एक नई शब्द संपदा, गहराई और अर्थता प्रदान की । भावों की पारदर्शिता और संवेदना की सघनता के लिए चर्चित उनके लेखन में कलात्मकता और सामाजिकता दोनों साथ-साथ प्रकट होती हैं । उनके विचारों और अनुभूतियों की रचनात्मक गूंज धड़कन बनकर हमारे समाज में मौजूद है । आदर्श और यथार्थ के बीच अद्भुत रूप से संतुलित उनका काव्य परम्परागत् गीतात्मकता और निरी आशावादिता की सीमा से ऊपर उठकर मानव वेदना के उदात्त शिखरों पर आरोहण करता है । जीवन और जगत के विषय में उनकी विकासोन्मुख सूझ-बूझ से उनके काव्य में आत्म-संशोधन की वृत्ति अधिक प्रकट होती है ।

'श्री अभिधान-राजेन्द्र कोष' के द्वितीय संस्करण के प्रकाशन के साथ-साथ हिन्दी, गुजराती तथा संस्कृत में लिखे गये करीब 100 ग्रन्थों के रचनाकार आचार्य जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा. वर्तमान काल के अग्रगामी और अतिक्रान्तिकारी साहित्य मनीषी हैं । आचार्यश्री की कृतियों का सौष्ठव, गाम्भीर्य और संगीतमयता सभी मनोमुग्धकारी हैं । आगम भाष्य, तत्त्वदर्शन, आख्यान जीवनियाँ, स्तुतिकाव्य, संस्मरण, पूजाएँ, उपदेश आदि विविधवर्णी रचनाओं का आकलन अपने आप में एक कीर्तिमान है ।

आचार्यश्री की रचनाओं से ज्ञान होता है कि वे जितने बड़े तत्त्ववैता हैं, उतने ही बड़े लोकमानस के अध्येता भी हैं । उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, दृष्टांत, उदाहरण आदि साम्यमूलक अलंकारों के सहज समावेश से आचार्यश्री के रचनाओं में सैद्धान्तिकता के साथ व्यवहारिकता और शास्त्रीयता के साथ लोकोन्मुखता अनायास आ जाती है । चाहे तात्विक विवेचन हो चाहे लोकभावना, उनकी भाषा की प्रासादिकता और प्रवाहमयता

में कहीं व्याधाता उपस्थित नहीं होती। अपने बेपनाह रचनात्मक ऊर्जा से अपनी मर्मबेधी रचनाओं के पूज्यश्री मानवीय मनोभूमि का विश्लेषण, सच्चाइयों को पकड़ने का यत्न, आसपास गुजरने वाले अनुकूल-प्रतिकूल क्षणों का विवेचन करते हैं।

बहुआयामी शख्सियत के मालिक जयन्तसेनसूरिजी एक ऊर्जावान् कवि, आस्थावान साहित्यकार तो हैं ही मगर सबसे बढ़कर वे एक दर्दमंद संत हैं जिनकी अपनी मखसूस अदा है, एक अलग बांकपन है । रचना-धार्मिता के स्तर पर ही नहीं, जिन्दगी के बर्ताव और व्यवहार से भी वे हमेशा सच्चे साबित हुए, अच्छे साबित हुए । उनकी सशक्त लेखनी ने जैन समाज के नव-जागरण एवं नव-निर्माण में अपूर्व योगदान दिया ।

उनके अक्षरों ने समाज को वह प्रकाश दिया जिससे कई अंधकारमय जीवन जगमगा उठे । भाषा की सजीवता, ललित शब्द रचना, कलात्मक भावाभिव्यक्ति, पर्याप्त अंतर्वेधकता के कारण आचार्यश्री का साहित्य युगान्तकारी परिवर्तन लाने की क्षमता रखता है । एक सुपथगा सरिता की तरह आचार्यश्री की प्रतिभा सहज प्रवाहित होती है और गूढ़ से गूढ़ तत्वों को इतना सरल बना देती है कि वे सहज ही गले उतर जाते हैं ।

आचार्यश्री सही मायने में 'अक्षर-पुरुष' हैं। वाणी और वर्ण पर उन्हें विलक्षण प्रभुता प्राप्त है । आचार्यश्री की सुदीर्घ शब्द साधना अनेक लेखकों का पाथेय बनेगी इस विश्वास के साथ उन्हें विनम्र वंदना ।

## गुरू बिन राह ना मिले

गुरु बिन राह ना मिलेगी
गुरु बिन राह ना मिले
गुरु बिन ज्ञान ना मिलेगा
गुरु बिन ज्ञान ना मिले
गुरु करूणा के सागर हैं
जिन शासन के सितारे हैं
धर्म का उपदेश देकर
जीवन कई सँवारे हैं

मिल जायेगा अब सहारा
मिल जायेगा अब किनारा
मिट जायेगा अब अंधेरा
गुरु जयन्त है मिले
गुरु बिन राह ना मिलेगी
गुरु बिन राह ना मिले

(श्रीजयंत सकलेचा, नीमच)

## जैनाचार्य से भेंटवर्ता

(श्री नरेन्द्र पोरवाल, बागरा)

# अच्छे कार्यों हेतु चढ़ावा बोलना गलत नहीं

*जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.*

राष्ट्रसंत आचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी का मानना है कि धर्म में कभी धन की घुसपैठ नहीं हो सकती और अगर होती है तो ठीक नहीं हो सकती। बोलियां भी त्याग धर्म की प्रतीक है और सामाजिक संस्थानों की व्यवस्था में सहायक मात्र हैं। धर्म के मार्ग पर खर्च किया हुआ अर्थ-अनर्थ नहीं है। अच्छे कार्यों के लिए चढ़ावे बोलकर धन की व्यवस्था करना गलत नहीं है।

राष्ट्रसंत आचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी से नरेन्द्र पोरवाल ने विभिन्न विषयों को लेकर उनसे बातचीत की, जिसका हम पुनः प्रकाशन कर रहे हैं। पोरवाल ने कई ऐसे ज्वलन्त प्रश्नों को उनके सामने रखा, जिसका आचार्यश्री ने बड़ी बेबाकी से जवाब दिया। आचार्य स्वयं एक साहित्यकार हैं, व्याख्याता हैं, तत्ववेत्ता हैं।

**प्रश्न–गुरुदेव राजेन्द्रसूरीश्वरजी म. की कई रचनाएं अप्रकाशित हैं जैसे– कल्पसूत्र, गणधरवाद, स्लाच्छचार–प्रकीर्ण, ई.स. 1877 में लिखी गई पाठ्य सद्‌बुद्धि, अभिधान का लघु संस्करण इत्यादि। क्या इनका प्रकाशन संभव है।**

**उत्तर** – विश्व की बेजोड़ विभूति गुरुदेव राजेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. ज्ञान क्रिया की सत्कृति थे। उनका साहित्य बींसवी शताब्दी की अनुपम अनुश्रुति है। हाँ, यह सच है कि उस समय छपाई के साधन कम होने से उनकी कई अद्वितीय रचनाएँ अप्रकाशित हैं। मैंने अपने जीवन में

यह यथाशक्ति प्रयत्न किया है कि पूजनीय गुरुदेव की कोई भी कृति जहां से भी मिले,

उसे किसी भी मूल्य पर प्राप्त कर प्रकाशित करूँ । मैंने गुरुदेव श्रीमद् विजय धनचन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. एवं श्रीमद् विजय यतीन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. की कई किताबों को प्रकाशित या पुनः प्रकाशित करवाने का कार्य किया है । गुरुदेव द्वारा रचित कल्पसूत्र और गणधरवाद तो प्रकाशित हुआ है लेकिन अपने प्रयत्नों की परकाष्ठा करके भी 'पाइय संदबुहि' को मैं प्राप्त नहीं कर पाया, इसकी पीड़ा मुझे हमेशा रहेगी ।

**प्रश्न– महावीर परिग्रह को हिंसा, गुरुदेव परिग्रह को पापकर्मों की कोख कहते हैं । सुनने में यह अच्छा लगता है मगर क्या वर्तमान काल में अपरिग्रही होना संभव है ? क्या कोई गृहस्थ बिना संचय के जीवन यापन कर सकता है ?**

**उत्तर–** व्यक्ति अपनी आवश्यकता पर नियंत्रण कर ले, अपनी इच्छाओं को मर्यादित कर ले तो बिना परिग्रह के भी जीवनयापन कर सकता है । बशर्ते उसके हृदय में ममत्व की भावना से मुक्ति जग जाए। व्यक्ति संचय करके भी यदि सत्कार्यों में सत्क्षेत्रों में उपयोग करता है तो वह परिग्रह के पाप से मुक्त हो सकता है, यदि संचय करके उपयोग न कर पाया तो वह पाप है । गुरुदेव परिग्रह को शांति का दुश्मन, अधीरता का मित्र, अज्ञान का विश्राम स्थल, बुरे विचारों का क्रीडोद्यान, घबराहट का खजाना, लड़ाई दंगों का निकेतन और विपत्तियों की जननी मानते हैं । परिग्रह अपने आप में बंधनकारक नहीं है, मगर जब उससे हमारी लालसा, हमारी तृष्णा जुड़ती है तो वह दुःखदायी बनता है । हमारे जैन इतिहास में ऐसे अनेक महापुरुष हुए हैं, जिन्होंने अपार धन-दौलत के स्वामी होते हुए भी अपरिग्रही, निस्पृह, अलिप्त रहकर अपना जीवन गुजारा है ।

**प्रश्न – राजेन्द्र भवन में गुरु सप्तमी (पोष सुद-7) को लोग चढ़ावा सप्तमी कहते हैं । पूजा के लिए चढ़ावा, माला के लिये चढ़ावा, चढ़ावों वालों का बहुमान करने के लिए चढ़ावा, चढ़ावे के लिए चढ़ावा, यह तो खुले रूप से धर्म में धन की घुसपैठ है । क्या यह ठीक है ?**

**उत्तर** – धर्म में कभी भी धन की घुसपैठ नहीं हो सकती और होती है तो टिक नहीं सकती । बोलियां बोलना भी त्याग-धर्म का प्रतीक है । बोलियां बोलना सामाजिक संस्थानों की व्यवस्था में सहायक स्वरूप है । धर्म के लिए धन की जरूरत नहीं है, मगर धार्मिक कार्यों को सम्पन्न करने के लिए धन की आवश्यकता होती है । इसलिए अच्छे कार्यों के लिए चढ़ावे बोलकर धन की व्यवस्था करना गलत नहीं है । होते हुए भी नहीं बोलना पाप का प्रभाव है और अल्प होते हुए भी यथाशक्ति लाभ लेना पुण्य का प्रभाव है । जब हमारे मन में देने के भाव जागें तब समझना पुण्य का उदय हुआ है । जो दिया वह सोना हो गया, जो बचा लिया वह मिट्टी हो गया ।

**प्रश्न– भक्तिवाद या शरणागति का सूत्र– ईश्वर-कृतत्ववाद से जुड़ा है, जैन -धर्म– ईश्वर– कृतत्ववादी नहीं है फिर यहाँ भक्तिवाद कैसे पनपा ?**

**उत्तर** – ऐसा नहीं है कि भक्ति का जैन धर्म में कोई स्थान नहीं है, अध्यात्म के साथ भक्ति का भी प्रावधान है । वैसे सामान्य श्रावक के लिए अपनी मानसिक निर्बलता और अध्यात्म में स्थित होने का भक्ति भी एक साधन और माध्यम है । जैन धर्म में भक्तिवाद शुरू से चलता आया है ।

महावीर के शिष्य श्रेणिक राजा सुबह उठकर जिस दिशा में महावीर का विचरण करते उस दिशा में 108 सोने के जब का स्वस्तिक बनाकर ही मुँह में पानी डालते, चन्द्रावती नगरी का राजा नित्य नई मूर्ति निर्मितकर, उसकी पूजा- अर्चना करके ही अपने दिन की शुरूआत करते थे । भक्ति सबसे सरल तरीका है । जीवन को पवित्र करने का, भक्ति करने से धीरे-धीरे व्यक्ति का जीवन निर्मल बनता है इसलिए भक्ति की साधना जीवन में आवश्यक है ।

**प्रश्न –धनवानों का ही समाज में सम्मान है, गुणवानों का नहीं । पैसे वालों के पास पैसा किस तरह आया है? यह देखने को कोई तैयार नहीं है । किसी भी सामाजिक या धार्मिक समारोह में धनवानों की उपस्थिति अनिवार्य क्यों है?**

**उत्तर**– जैन धर्म में धन का नहीं त्याग का सम्मान होता है । संसार का त्याग करने वाले साधु- साध्वियों को सभी वंदन करते हैं । धनवान होकर जो सामाजिक- धार्मिक कार्यों के लिए अपने धन का त्याग करता है, उसका ही आदर होता है । ऐसे कई पैसे वाले हैं, जिनका समाज में कोई अस्तित्व नहीं है क्योंकि वे पैसे का सदुपयोग करना नहीं जानते । धनवान से भी ज्यादा तप करने वाले तपस्वी का महत्व हमारे समाज में ज्यादा है । कितने भी अमीरों की सभा बैठी हो मगर पौषद करने वाला व्यक्ति आ जाये तो उसे ससम्मान आगे बिठाया जाता है । आप किसी भी करोड़पति को सुखशाता नहीं पूछते मगर तपस्या करने वाले तपस्वी से सभी सुखशाता पूछते हैं । समाज में होने वाले अनेक कार्य अर्थ से सम्पन्न होते हैं, इसलिए विशिष्ट स्थानों पर अर्थवान को आगे करना पड़ता है। अर्थ का त्यागी सर्वश्रेष्ठ मार्ग से आया हुआ है, अन्याय, अनिति का अर्थ उत्तम मार्ग में उपयोगी नहीं बनता है ।

**प्रश्न– जिस धर्म में अन्न को देवता माना, भोजन के पश्चात थाली धोकर पीना पुण्य समझा जाता है, उस धर्म में दीक्षार्थी द्वारा वर्षीदान के वरघोड़े में सैकड़ों किलो चावल उछालना क्या उचित है ?**

**उत्तर** – यह सच है कि जैन धर्म में खाने के पश्चात झूठा छोड़ना पाप समझा जाता है, व्यावहारिक दृष्टि से भी यह गलत है । इसलिए हमारे सान्निध्य में जितने भी आयोजन होते हैं, उसमें हम झूठा न छोड़ने की सख्त हिदायत देते हैं, रही बात दीक्षार्थी द्वारा वर्षीदान में चावल उछालने की तो मैं आपकी जानकारी के लिए बता दूं कि यह कार्यक्रम हमने कब से बंद करवा दिया है । चावल रास्ते में उछालने से अन्न की बरबादी होती है एवं अन्न किसी के काम नहीं आता अतएव हमने एक नई पद्धति की शुरूआत की है । हम एक दानशाला का निर्माण करवाते हैं एवं दीक्षा के पूर्व दीक्षार्थी

द्वारा अपने हाथों से जरूरतमंदों को चावल, कपड़े, सिक्के आदि उपयोगी वस्तुओं का दान दिया जाता है । यह वितरण अत्यंत अनुशासन से एवं व्यवस्थित होता है । किसी भी चीज का अपव्यय नहीं होता ।

**प्रश्न – मांसाहार करने वाले मोहम्मद पैगम्बर ब्याज को हराम मनाते हैं, जबकि अहिंसा में विश्वास करने वाले ज्यादातर जैन ब्याज का व्यापार करते हैं।**

**उत्तर** – ब्याज लेना या ब्याज का व्यापार करना कोई हराम नहीं है । ज्यादातर जैनों का ब्याज का व्यापार इसलिए है कि जैन लोग राजस्थान से अन्य राज्यों में व्यापार के लिए आये हुए हैं, अन्य व्यापारों की तुलना में ब्याज के व्यापार में ज्यादा साधनों की जरूरत नहीं होने से लोगों ने इसे अपनाया है । मगर यह पुरानी बात है, वर्तमान में तो जैन समुदाय के लोग विभिन्न-विभिन्न प्रकार के व्यवसाय करते हैं । वैसे ब्याज लेना मर्यादा के बाहर हो तो वह पाप कहलाता है । ब्याज लेने में शोषण अथवा अन्याय की भावना नहीं होनी चाहिए । ब्याज द्वारा किसी की मजबूरी का फायदा नहीं उठाना अपितु मजबूरों को मदद करना जो यह गलत नहीं । मोहम्मद पैगम्बर ने जो कहा है वो कुरान में ही रह गया, उनके समुदाय के लोग भी ब्याज का व्यापार करते दिखते हैं ।

**प्रश्न– कई जैन साधु धार्मिक ट्रस्टों के पदों पर हैं, क्या साधुत्व ग्रहण करने के पश्चात ऐसे पदों पर रहना उचित है ।**

**उत्तर** – धार्मिक हो या सामाजिक ट्रस्ट, किसी भी पद पर जैन साधु का रहना जिनशासन के नियमानुसार अयोग्य है । क्योंकि पद पर रहते हुए आदेशात्मक वाणी का उपयोग करना पड़ता है और इससे सावद्य- प्रवृत्ति का दोष लगता है । धार्मिक अथवा सामाजिक संस्थाओं को जैन साधु मार्गदर्शन कर सकते हैं, प्रेरणा और प्रोत्साहन दे सकते हैं, मगर पद स्वीकारना मर्यादा के अनुरूप नहीं है । संसार में बड़ा पद 'जैन साधु' या 'जैन मुनि' है, इसके आगे संसार के सभी पद सम्मान गौण हैं ।

**प्रश्न – जैन मुनि को 'महाराज' क्यों कहा जाता है ? जबकि पुराने शास्त्रों में 'महाराज'शब्द का उल्लेख नहीं मिलता । वैसे भी 'महाराज' शब्द सामन्तवाद का प्रतीक समझा जाता है ।**

**उत्तर** – नहीं ! जैन मुनि को जिस 'महाराज' शब्द से सम्बोधित किया जाता है वह सामन्तवाद का प्रतीक नहीं है, बल्कि आदरसूचकता का प्रतीक है । महावीर के शासन में धार्मिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक प्रवृत्तियों का संचालन जैन मुनियों की प्रेरणा द्वारा होता है और इसी कारण से जैन समुदाय में समय प्रधान धर्म के नाते मुनियों को महाराज कहा जाता है । यहां महाराज शब्द का अर्थ विशाल हृदय से समाज एवं शासन को व्यवहार कुशलता संचालन करना होता है ।

**प्रश्न – या तो आपके जैसे बड़े आचार्य या फिर ज्योतिष जानने वाले मंत्र-तंत्र करने वाले साधुओं का ही हमारे समाज में सम्मान है । सीधे-सीधे अपनी क्रिया में मग्न रहने वाले साधु**

**एवं साध्वीजी के लिए कोई लगाव नहीं है। क्या यह ठीक हो रहा है ?**

**उत्तर–** माल लेकर व्यापारी आता है तो जहाँ अपने खप का माल मिल जाता है, वहाँ ग्राहकों का पहुंचना स्वाभाविक है। जैसे दृष्टि वैसी सृष्टि। जो श्रावक ज्ञान–ध्यान से सम्पन्न है, वह ज्ञानी–ध्यानी संतों के पास जाता है, स्वार्थवृत्ति के चाटुकर लोग तंत्र–मंत्र की बात करने वाले साधुओं के पास जाते हैं। जो मनुष्य स्वयं बंधा हुआ है, वह दूसरों को कैसे मुक्त करने की क्षमता रखता है अतएव योग्य साधु–साध्वियों का योग्य व्यक्तियों की निगाहों में सम्मान हमेशा से है, अयोग्य व्यक्ति योग्य का अनुभव नहीं कर सकता है।

**'लोभी गुरु तारे नहीं, तारे सो तारणहार जो तू तरवो चाहे तो निर्लोभी गुरु धार।**

**प्रश्न – आज कल लोग चमत्कार को ही नमस्कार करते हैं, इसलिए हमारे समाज में भी कई जैन मुनि चमत्कार करने का दावा करते हैं, क्या चमत्कार संभव है ?**

**उत्तर** – वर्तमान काल में व्यक्ति इतना तनावग्रस्त और भ्रमित है कि वह चमत्कार को नमस्कार कर चमत्कारों के सामने अपने आपको समर्पित कर देता है। वे बाह्य ऋद्धि को ही आत्मा के उत्कर्ष का चिन्ह समझ लेते हैं और जो बाह्य ऋद्धि दिखला सकता है उसे ही भगवान या सिद्ध पुरुष मान लेते हैं, मगर यह विचार भ्रमपूर्ण है। बाह्य चमत्कार आध्यात्मिक उत्कर्ष का चिन्ह नहीं है और जो जानबूझ कर अपने भक्तों को चमत्कार दिखाने की इच्छा करता है और दिखलाता है वह संत नहीं जादूगर है, समझना चाहिए। उसे सच्ची महत्ता प्राप्त नहीं हुई है। जैन साधु का काम चमत्कार करना नहीं बल्कि जनता की शुभ और पवित्र भावनाओं को बढ़ावा देना, संसार में शान्ति की स्थापना करना है।

**प्रश्न– वर्तमान में हम देखते हैं कि कई जैन साधु 'माईक' फोन इत्यादि यांत्रिक साधनों का उपयोग करते हैं, जबकि कई समुदायों के साधुओं में इतनी कट्टरता है कि वे ऐसे किसी भी साधनों का स्पर्श करना भी अधर्म मानते हैं, क्या उचित है क्या अनुचित ?**

**उत्तर–** आज हम यांत्रिक युग में जी रहे हैं, हकीकत की सच्चाई को नकार कर कोई साधु अपने आपको कितना भी बड़ा या महान समझे, मगर उसे भी यांत्रिक साधनों का सहारा लेना ही पड़ता है। जैसे 'माईक' में बोलना यांत्रिक साधनों का प्रयोग है वैसे ही लाखों किताबों को छपवाना भी यांत्रिक साधनों से ही संभव है। माईक पर बोलने वाला माईक को छोड़ने के पश्चात यांत्रिक साधनों के ममत्व से मुक्त हो जाता है। मगर किताबों को छपवाने वाले का ममत्व कभी नहीं छूटता। अर्थात् पुस्तक को देखते ही 'मैंने लिखी' यह ममत्व जागृत होता है तब यांत्रिक साधनों से होने वाली हिंसा का दोष उसे भी लगेगा। डाक या पोस्ट का आदान–प्रदान भी यांत्रिक साधनों से ही होता है।

# राष्ट्रसंत श्रीमद् जयंतसेन सूरीश्वरजी महाराज

(सुरेश समीर, राणापुर)

दीपावली (अमावस्या) की सघन तीमिर (कालीरात) के पश्चात निशा को धवल श्वेत स्वरूप प्रदान करने वाले पूर्णिमा के चंद्र की तरह समाज को देदीप्यमान-उज्वल (वर्तमानस्वरूप) करने वाले एक बालक का जन्म गुजरात के पेपराल की धरती पर धरूकुल ने स्वरूपचंद और माँ पार्वती के यहाँ हुआ।

पूनमचंद नाम का यह बालक शिक्षा, व्यवहार एवं संस्कार में दक्ष होकर दादा गुरुदेव श्रीमद् राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के पट्ट प्रभावक श्रीमद् यतीन्द्रसूरीश्वरजी म. के चरणों का शिष्य बना। दीक्षा (चारित्र) ग्रहण करने के 60 वर्षों के लम्बे अंतराल के बाद आज यदि कश्मीर से कन्याकुमारी तक सम्पूर्ण देश में त्रिस्तुतिक परम्परा का अक्षुण्ण एवं जाज्वल्यमान बनाए रखने का श्रेय थोपा जाय तो वह नाम है श्रीमद् जयंतसेन सूरिजी का।

श्रीमद् के विषय वस्तु की बात करें तो ऐसा कोई विषय नहीं है जो राष्ट्रसंतश्री से अछुता हो।

वैसे श्रीमद् बालब्रह्मचारी हैं किन्तु घर-परिवार-संस्कार-व्यवहार -शिक्षा-चारित्र के अथाह भंडार हैं। लगभग 8 भाषाओं पर पूरा अधिकार रखने वाले साहित्य मनीषी ने 200 से अधिक पुस्तकों की रचना की है वहीं अनेक साहित्य के संपादन एवं प्रकाशन का (अनेक भाषाओं में) भागीरथी कार्य किया है। श्री राज राजेन्द्र प्रकाशन एवं शाश्वत - धर्म साहित्य के प्रति आपके लगाव को प्रदर्शित करता है। श्री जयंतसेन म्यूजियम के प्राक्कलन एवं निर्माण के अलावा भरतपुर, राजेन्द्रनगर, शंखेश्वर, पालिताणा, लादुरी, सूरत, राणापुर आदि सैकड़ों नगरों शहरों में भव्य जैन मंदिर एवं धर्मशाला आपके कला एवं संस्कृति के प्रेम को उजागर करता है। पर्यावरण के क्षेत्र में राजस्थान की रेतीली जमीन पर लगभग 20 हजार से ज्यादा नीम के पौधे लगाकर वृक्ष में तब्दील करना आपकी प्रेरणा का

ही परिणाम है। आपकी ही प्रेरणा से राज राजेन्द्र गोपाल गौशाला में वीरेन्द्र जैन ने 108 नीम वृक्ष लगाकर 5 वर्ष तक सिंचित करने का बीड़ा उठाया। देशप्रेम, जीवदया, स्वास्थ्य एवं शिक्षा के प्रति आपका मानस हिलोरे लेता है जिसके परिणाम स्वरूप अनेक स्थानों पर अस्पताल, गौशाला एवं स्कूलों का प्रबंधन किया जा रहा है । आजीवन खादी धारण कर स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग एवं कारगिल फतह या भुज तथा ऋषिकेश जैसी घटनाओं में लाखों रुपये सहायतार्थ भेजना देशप्रेम को ही परिलक्षित करता हैं। परस्परोप ग्रहो जीवानाम एवं जियो और जीने दो के संदेश को लगभग 2 लाख कि.मी. पैदल चलकर जन-जन के मानस तक पहुँचाया है । श्रीमद् को एक कुशल संगठक भी कहा जाय तो अतिश्योक्ति नहीं, श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक महिला, तरुण परिषद् इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हैं।

पूज्य श्री के कौशल को देखते हुए ही इन्हें राष्ट्रसंत एवं आचार्य पद से अलंकृत किया गया।

राष्ट्र पति, प्रधानमंत्री, सर संघचालक, राज्यपाल, मुख्यमंत्री, मंत्री, उद्योगपति एवं अभिनेता इनके चरणों में आकर आत्मशांति का अनुभव करते हैं। विश्व पूज्य दादा गुरुदेव श्रीमद् राजेन्द्रसूरिश्वरजी की पूज्य भूमि मोहनखेड़ा तीर्थ से एक प्रकाश (ज्योत) लेकर देश के 13 प्रदेशों में 108 दिनों में घुमाकर भरतपुर में स्थापित करना इनके दिमाग की ही उपज हैं।

गुरुदेव श्री ने पराक्रमी बनते हुए समाज के प्रत्येक प्राणी को अनुशासित रहने का मार्ग बताया है । टी.वी. की पाश्चात्य संस्कृति पर प्रहार एवं पहनावे पर (महिलाओं के) चिंता जाहीर की है । विशाल मुनि भगवंत एवं साध्वीजी का समूह एकत्र कर भगवान महावीर एवं दादा गुरुदेवश्री के मार्ग पर आरूढ़ करना पराक्रम ही माना जायेगा।

मेरे मन मंदिर में एक ध्येय वाक्य 'जयंत कृपा ही केवलम्' का नाद गुंजायमान होता रहता है जो मुझे विरासत में तेजकुंवर-समीरमल से मिला । मैंने जयंतसेनसूरि के प्रभाव को नजदीक से महसूस किया है । नागेश्वर की प्रतिष्ठा भांडवपुर की आचार्य पदवी या परिषद् का प्रवास हो या हो अखंड ज्योत यात्रा का कार्यक्रम, गुरुदेव का मात्र नाम स्मरण का इतना प्रभाव जिसे हम हमारे शब्दों में चमत्कार कहते हैं बयां नहीं किया जा सकता।

16 अगस्त 2005 का दिन दोपहर

1 बजे के समय दाहोद में लगभग 20 दिन इलाज लेने के बाद डाक्टरों ने मेरी पत्नि ज्योति को कहा की इसे घर ले जाओ यह 'बच' नहीं सकती, पत्नि के होश उड़ गए। बेटा अभी रो रोकर अधमरा हो गया था। ज्योति ने नगर के उर्जावान मनोहर सेठिया को दूरभाष पर बताया जो मुझे लगभग 4 बजे राणापुर ले आए। पूज्य राष्ट्रसंतश्री बेंगलोर चातुर्मास में विराजमान थे, दूरभाष पर जानकारी दी और अंतिम बार मांगलिक सुनने की इच्छा जाहिर कि, गुरुदेव ने दिल से मांगलिक सुनाई और कहा कि तुम अभी 10 साल नहीं मरोगी। 16 अगस्त 2015 को 10 साल पूरे हो जाएंगे। ऐसे गुरुदेव साक्षात वर्तमान के वर्धमान और मेरे भगवान हैं।

बालकवि ने कहा है...

अंधेरे जीवन में उजाला कर दे जिसके भी सर पे हाथ धर दे
मान नहीं इनको न इनको राग है, जयंतसेन धरती का भगवान है
भाग्य उदय हो तो दश पाऐगा, चरणों में आ जा नित्यानंद पाएगा
कर वंदना तू कौन से नशे में चूर है, जयंतसेन सूरि एक कोहिनुर है।

# गुरु और शिष्य

**-श्री चांदमल सेठिया**

शिष्य कोई पुरुष शिष्य तब है, जब वह गुरु भक्त हो। गुरु की सेवा करे, उसका उपदेश ध्यान से सुने और उसके बताए हुए मार्ग पर चले, तभी वह शिष्य है। शास्त्र का कथन है कि शिष्य अपने गुरु को भगवत् स्वरूप ही माने। गुरु भक्ति से ही ईश्वर भक्ति प्राप्त होती है। शास्त्रों का गहन तात्पर्य भी गुरु-कृपा से प्रकट होता है। गुरु और शिष्य में जब हृदय से आंतरिक तालमेल होता है, तब गुरु का ज्ञान शिष्य के हृदय अवतरित होता है और शिष्य भी गुरु के समान महान हो जाता है। गुरु को शिष्य का धन नहीं, वरन उसकी श्रद्धा चाहिए। गुरुवचन में श्रद्धा रखने वाले शिष्य ही आध्यात्म पथ पर आगे बढ़ पाते हैं। अपने स्वतंत्र प्रयास से आध्यात्मिक सफलता चाहने वाले पुरुषों को बहुत दिन भटकना पड़ता है और अपनी शक्ति नष्ट करनी पड़ती है। गुरुजनों की आशातना करने वाला तीव्र कषायों की स्थिति में मिथ्यात्व तक में चला जाता है। जब तक इस आशातना के दुष्परिणाम भोग नहीं लें अथवा विनयादि तप के द्वारा निर्जरा नहीं कर लेवें तब तक उसका मोक्ष नहीं होता है।

# वे द्विज हो गये

(नरेन्द्र पोरवाल, बागरा)

*नहीं शब्दों में समेट पाता मैं, जयन्तसूरि आध्यात्म के संज्ञाता हैं ।*
*उनकी कृति में आस्था-विश्वास, संसार अवतार उन्हें मानता हैं।।*

इंसान भले ही एक जीवन में एक बार जन्म लेता है परन्तु उसके एक जन्म में पुनः जन्म लेने की संभावना भी छिपी होती है, यानी एक जन्म तो वह जिसे प्राणी संयोगवश अपनी माता के गर्भ से शरीर रूप में प्राप्त करता है और दूसरा वह जिसे अपने कर्मों एवं साधना द्वारा, अपनी प्रज्ञा के माध्यम से आत्मरूपांतरण से प्राप्त करता है । शास्त्रों में दूसरे जन्म को सही मायने में वास्तविक जन्म कहा गया है । पहला जन्म तो केवल जीवन में आने का बहाना मात्र है और जो वास्तविक अर्थात दूसरे जन्म को उपलब्ध होता है, उसको 'द्विज' कहा जाता है । द्विज का अर्थ होता है दुबारा जन्म, लेने वाला पुनः पैदा होने वाला यानी जो पहले जैसा नहीं रहा, जो जाग गया । इस द्विजता को हर कोई प्राप्त नहीं होता और जो द्विजता को प्राप्त होता है, अमूमन उसका नाम, कृत्य जीवन व लीला में बदल जाती है । पेपराल जैसे छोटे से गांव के अबोध बालक से जयन्तविजयजी म.सा. और फिर आगे आचार्य भगवंत जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा. तक की यात्रा में मात्र उनका नाम परिवर्तित ही नहीं हुआ बल्कि जीवन का रूपांतरण हुआ जो उनकी द्विजता का प्रतीक है, पुनर्जन्म का प्रमाण है जिसे उन्होंने अपनी प्रज्ञा, त्याग, साधना, समर्पण एवं अभ्यास आदि से पाया ।

पवित्र गुणों से पूज्य आचार्यश्री 'द्विज' होते ही धीरे-धीरे अपनी चेतना से परमात्मा की क्षमता को अपने व्यक्तित्व और कृतित्व में प्रगट करने लगे । वे पारदर्शी हो गये, सारी अशुद्धियाँ अपने आप छूट गईं और उनके भीतर का प्रकाश बाहर आने लगा जिसने सारे विश्व को प्रभावित ही नहीं किया, प्रकाशित किया, उनकी ख्याति भाषा और भूगोल की सीमाओं को लांघने लगी । आचार्यश्री के व्यक्तित्व में महावीर का ध्यान, बुद्ध की करुणा, राम की मर्यादा, कृष्ण की गीता, राजेन्द्र की स्थिरता, यतीन्द्र की वाणी, आइन्स्टीन की थ्योरी समाविष्ट होने लगी । अग्नि की तरह उनका जीवन भी सदा ऊपर की ओर उठता रहा । अपना पूरा जीवन देकर आत्मबोधि विधिदाता गुरुवर ने ध्यान साधना की सहज सुगम-सरल पद्धति का आविष्कार कर आराधना अनुष्ठान द्वारा परमात्मा की दिव्य शक्ति से संबंध - अनुबंध स्थापित प्रतिष्ठित किया तथा नवकार साधना द्वारा पंच परमेष्ठि महामंत्र की दिव्य शक्ति से हर हृदय को श्रद्धापीठ बनाया । इस तरह वे एक संत या विराट व्यक्तित्व ही नहीं

एक नई सोच, एक नया संस्कार बन गये ।

वर्षों तक सतत अनवरत ध्यान-साधना-तप-आराधना में संल्लीन रहने से आचार्यश्री जयन्तसेनसूरि आत्मा की गहराईयों तक पहुँचने में सक्षम हुए, सत्य का स्पर्श करने में समर्थ हुए, आंतरिक चेतना को जागृत कर वे सूक्ष्म व्यवहृत और दूरवर्ती दृश्य को सहज देखने में अभ्यस्त हुए । वे केवल जैनाचार्य न रहकर तत्वदृष्टा, परम विशिष्ट ध्यान योगी एवं सूक्ष्म जगत के अन्वेषक बन गये । प्रतिक्षण जागृत रहकर भीतर स्थित जीवन के गहन रहस्यों को जानने की असाधारण प्रतिभा से उन्हें अतीन्द्रिय आभास होने लगा । जीवन की जटिल से जटिल तथा गूढतम अनुभूतियों को अत्यंत सहजता से शब्दों में उतारने की आचार्यश्री की विलक्षण क्षमता की वजह से जब भी वे बोले, ऐसा लगा चेतना बोली । उनकी उपस्थिति ने ही पूरे वातावरण को एक प्रयोगशाला बना दिया । धर्म के नित्य नए प्रयोग और मानव मन को परिवर्तन कर सात्विक बनना ही उनके जीवन का मूल उद्देश्य बन गया, जैविक मानव सम्प्रदाय को अन्तस से प्रतिष्ठित, निजत्व से परिचित करना ही उनका जीवन बन गया । सामाजिक वैमनस्य एवं वैयक्तिक जीवन के कषायों के प्राबल्य को धार्मिक सौहार्द्र से कम करने के लिए उन्होंने खुद को तिरोहित कर आने वाले कल के लिए मार्ग प्रशस्त व उज्वल किया । हर हृदय एवं कंठ में अर्हम स्थापित -प्रतिष्ठित करने की अपनी बेजोड़ कला से वे एक चलता-फिरता विश्वविद्यालय बन गये ।

भगवान महावीर ने कहा कि जरूरी नहीं जो ज्ञान में श्रेष्ठ हो, उसका आचरण भी उच्च हो, अथवा जिसका आचरण अच्छा हो वह ज्ञानी भी हो । विद्या और चरित्र, श्रुति और शील दोनों में जो श्रेष्ठ हो वही वास्तव में विशिष्ट है । वर्तमान काल में विशिष्ट व्यक्तियों की इस श्रेणी में आचार्य भगवंत जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. का नाम बड़े गौरव से लिया जाता है । आचार्यश्री की गहन विद्याभिलाषा, सतत अध्ययनशीलता और निरंतर ज्ञान गंगा में डुबकियां लगाते देखकर मन 'ज्ञानयोगी' के रूप में उनकी अभिवंदना चाहता है तो उनकी सहज सरलता, विनम्रता, साधुजनोचित आचार निष्ठा और संयम साधना में सदैव जागरूकता निहार कर उनका 'कर्मयोगी' रूप मन के चित्रपट पर अंकित हो जाता है ।

आचार्य प्रभु का चित्त चरित्र से उज्वल, तन तप की ताजगी, जप की ज्योति से दैदिप्यमान है । आज समाज की आँखों के सामने जो जाले हैं, जो अंधेरा है, उन्हें साफ करने के लिए तथा उन आँखों में रोशनी भरने के लिए आचार्यश्री का दर्शन बहुत उपयोगी है, उनका चिंतन हमारी सांस्कृतिक -निधि की अमूल्य धरोहर है ।

आप वर्तमान के दृष्टा संत, मैं आपके चरित्र का संगायक ।
आप मेरे जीवन के महानायक, मैं आपका चिर परिचायक ।।
आभा दो अमिताभ ! कोई अवगुण रहे ना शेष ।
चाह रहे ना मन में कोई, राह रहे ना कोई शेष ।।

नरेन्द्रजी पोरवाल

# जयंत तू यशवंत है, जयवंत है

(नरेन्द्र कुमार रायचंदजी,बागरा)

महावीर का सच्चा अनुगामी, सूरी यतीन्द्र का लाड़ला ।
तू सत्य का दृष्टा, जय - कल्याणक, अमीरों का अमीर है ॥
राग-द्वेष-मोह-माया के दुर्जय गढ़ पर विजय दिलाने वाला ।
तू जितेन्द्रीय समत्व योगी, वीर नहीं शूरवीर है ॥
जातीमद-धर्मान्ध से घायल है मानव का अहंकार ।
तू शांतिसुधा का पान कराता, दया का क्षीर है ॥
कराह रही है इन्सानियत युद्ध संघर्ष के दुर्गों में ।
तू स्याद्वाद के गुलदस्ते लुटाता, गुलाल अबीर है ॥
भोगलिप्सा, स्वार्थग्रहिलता, अपरिग्रहता में डूब रहा है समाज ।
तू समता की सौगातें बाँटता, मृदु समीर है ॥
हिंसा-नफरत, असत्य-आडम्बर की ज्वाला में जल रहा है जन ।
तू शीतल करूणा की धारा बहाता पावन नीर है ॥
पददलीत-अपमानित है जो नीच वर्ग कहलाते ।
तू स्वाभिमान की रोशनी जगमगाता अमूल्य हीर है ॥
जयंत तू यशवंत है, जयवंत है, शीलवंत है, अनंत है ।
तुझ पारस को छूकर कंचन बन गया मैं, नरेन्द्र का तू वंदनीय है ॥

# श्री जयंतसेन सतसई

(जैनाचार्य श्री जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा.)

किसके दिल में क्या रहा, जान सका नहीं कोय ।
जयंतसेन कुछ भी करो, होनहार सब होय ।।

सत्य सदा सिर पैर का, झूठ को पाँव न हाथ ।
जयंत बेसिर पैर का, करो कभी ना साथ ।।

ऊपर से उजला रहे, भीतर से रहे श्याम ।
जयंतसेन ऐसा जीवन, निम्न कोटि का धाम ।।

अखंड आनंद के लिए, मानस रख लो साफ ।
जयंतसेन निश्चय सफल, यही अदल इंसाफ ।।

मैं ही सब कुछ कर सकूँ, मत कर मिथ्या मान ।
जयंतसेन वह भूलता, सत्य धर्म का ज्ञान ।।

सरल हृदय सद्भावना, स्नेह सुमति सहकार ।
जयंतसेन निज मार्ग में, सुखदा पाँच स' कार ।।

पाकर के अधिकार को, किया न पर उपकार ।
जयंतसेन अधिकार से, निकला आद्य अ' कार ।।

अहंकार अज्ञान अरु, अवगुण का भंडार ।
जयंतसेन उस जीव का, दुर्लभ है उद्धार ।।

आवेश आज्ञाहीनता आक्रंदन आक्रोश ।
जयंतसेन छोड़ो इन्हें, दुःख कारक ये दोष ।।

सापेक्षता से समझना, पदार्थ स्वरूप विचार ।
जयंतसेन निरपेक्ष से, नित्य नई तकरार ।।

बाह्य जगत से अब चलो, भीतर रख विश्वास ।
जयंतसेन बाहर नहीं, भीतर ज्ञान प्रकाश ।।

सब जीवों के हित गया, जिसका समय सुकान ।
जयंतसेन वह पा गया, जीवन सत्य विधान ।।

पात्र अनुकंपा अभय कीर्ति ज्ञान निदान ।
जयंत जीवन का धर्म है, दान महात्म्य महान ।।

पर दुःख से दुःखिया नहीं, करे न पर उपकार ।
जयंतसेन उस मनुज का, जीवन शून्य विचार ।।

दुःख देकर नहीं सुख मिले, दुःख से दुःख ही जान ।
जयंतसेन कटंक बिछा संकट हे श्वीमान ।।

विनय विभव नहीं हृदय में, विवेक दीप हुआ अस्त ।
जयंतसेन उस मनुज का बिगड़ा कार्य समस्त ।।

किस्मत बिन कुछ है नहीं, लाख करो तुम यत्न ।
जयंतसेन शुभभाव रख, कीजै शुद्ध प्रयत्न ।।

बाह्यभ्यंतर भेद रख, जो करता व्यवहार ।
जयंतसेन उस जीवन में, रहता है अंधकार ।।

कोकिल ना कछु देत है, कौआ ना है लेत ।
जयंतसेन मीठे वचन, जग-जन-मन हर लेत ।।

हाथी चले निज चाल से, श्वान भसत तसलार ।
जयंतसेन क्या बिगड़ता, आखिर श्वान की हार ।।

माता मर पुत्री बने, पिता मरे हो पूत ।
जयंतसेन अनादि से, कर्मों की करतूत ।।

जन्म मरण के चक्कर में, घूमे जीव अनन्त ।
जयंतसेन समझे बिना, हो नहीं दुःख का अंत ।।

आयु घृत तन पात्र में, जलता जीवन दीप ।
जयंतसेन दिन-दिन घटे, आखिर अस्त प्रदीप ।।

जब तक तन में प्राण है, कार्य करो हितकार ।
जयंतसेन ये निकलते, जग में है अंधार ।।

सज्जन निर्मल मन सदा, दुर्जन कुटिल स्वभाव ।
जयंतसेन सज्जन मिलन, दायक सुखद प्रभाव ।।

उदधि बड़ा किस काम का, खार भरा जल पास ।
जयंतसेन सरवर भला, हरे जगत की प्यास ।।

संशय का नहीं फैसला, करे न जग में कोय ।
जयंतसेन निर्मल रहो, संशय कोई न होय ।।

लुक छिप कर करना नहीं, कभी किसी की बात ।
जयंतसेन इस सीख से, गुण का हो नहीं घात ।।

दोष किसी के क्यों ग्रहे, रख गुण ग्राहक भाव ।
जयंतसेन गुण ग्रहण से, निश्चल नित्य स्वभाव ।।

त्रिया नेह नहीं काम का, करे सुगुण को छेद ।
जयंतसेन नित दूर रह, आखिर नहीं हो खेद ।।

## कौन कैसे केवली बना?

–मुनि मनितप्रभ सागरजी

गोचरी परठते हुए (ढंढण मुनि को)
विलाप करते हुए (गौतम स्वामी को)
पश्चाताप करते हुए (चन्दनबाला को)
आहार ग्रहण करते हुए (कुरगडु मुनि को)
भिक्षा परठते हुए (सुव्रत मुनि को)
पत्नी का श्रृंगार करते हुए (रतिसार को)
वध कराते हुए (झंझरिया मुनि को)
काउसग्ग करते हुए (प्रसन्नचन्द्र मुनि को)
जिनप्रतिमा के दर्शन करते हुए (धनाढ्य राजा को)
पुष्प पूजा करते हुए (नागकेतु को)
गोचरी लेकर जाते हुए (पुष्पचूला को)
नाटक करते हुए (आषाढ़भूति को)
मस्तक पर जलते हुए अंगारे सहते हुए (गजसुकुमाल मुनि को)
खोपड़ी का दर्द सहते हुए (मेतार्य मुनि को)
हाथी के हौदे पर बैठे हुए (मरूदेवी माता को)
विवाह में हस्तमिलाप करते हुए (गुणसागर को)
इरियावहि पाठ करते हुए (अतिमुक्तक को)
नृत्य करते हुए (इलायची कुमार को)
राजसिंहासन पर बैठते हुए (पृथ्वीचंद राजा को)

(शेष पृष्ठ 114 पर)

# बाग बाग हुआ बागरा

## शाश्वत धर्म

## 'महाशतकोत्सव' विशेषांक

# मंदिरजी की वर्षगांठ पर ध्वजारोहण विधि एवं महत्व

(श्री जसराज देवडा धोका)

जैन मंदिरों में भी भगवान की प्रतिष्ठा के दिन प्रति वर्ष वर्षगांठ उपलक्ष में निम्न विधि एवं पूर्व भूमिका सम्पन्न कर ध्वजारोहण कराया जाता है।

1. सबसे पहले मंदिरजी की सफाई, धोना आदि होनी चाहिये।

2. उस दिन सिंहासन आदि को साफ कर स्नात्र पूजा पढ़ानी चाहिये।

3. मंदिरजी के दरवाजे आदि को स्वच्छ चमकीले रखने चाहिये।

4. शिखर के ऊपर ध्वजदंड-पाटली कलश आदि बराबर साफ रखना घुम्मट साफ कराना।

5. शिखर पर चढ़ने-ठहरने हेतु उचित व्यवस्था रखना।

6. भगवान के समक्ष समयसर पूजा पढ़ाना, भगवान की भव्य आंगी रचना, आरती करना, हो सके तो उस दिन श्री संघ का स्वामीवात्सल्य रखना या मिष्ठान की प्रभावना, अल्पाहार रखना चाहिये।

7. ध्वजा रोहण-शुभ मुहूर्त विधिवत में कराना चाहिये।

8. एक या उससे ज्यादा ध्वजा होने से पहले उन्हें मन्दिर में पट्टे पर रख कर स्वास्तिक करके उन पर कंकु केसर के छांटने करके चावल (अक्षत) से बधाना चाहिये।

9. ध्वजा को थाली में रख कर डंका बजाते हुए मंदिरजी की तीन प्रदक्षिणा करना चाहिये। सात धान (गेंहुँ, मूँग, चना, उडद, चौला, जव, जवार) के बाकले दसों - दिशाओं में उडाना चाहिये। ध्वजा को शिखर पर ले जाते समय लाभार्थी परिवार (साधु भगंवत हो सके तो) एवं विधी कारक को साथ में रखना-पुजारी अष्ट प्रकारी पूजा का सामान दूध पानी का कलश, अंग लूछणा, चंदन की कटोरी, पुष्प फूल का हार, धूप, दीप, बरख, अक्षत, फल नैवेद्य नाडा छडी, कंकु आदि की व्यवस्था अपने पास रखे।

10. शिखर को प्रथम पानी से साफ कर, दूध और पानी का ध्वजा दंड पर प्रक्षाल करना अगलूक्षणा कर केसर का तिलक कर कंकु छांट कर ध्वजा दंड़ और शिखर को नाडा छडी बांधना, बरख छापनाकर फूल हार चढ़ाना चाहिये।

11. ॐ पुण्याहं पुण्याहं प्रीयन्तां प्रीयन्तां बोलना और शुभ मुहूर्त में ध्वजा को दंड की पाटली में फिक्स कर फहराना। वातावरण को आनंदमय बना कर थाली डंका, ढोल नगाड़ा, शहनाई, बैन्ड आदि वार्जीत्र बजाना चाहिये उसके बाद वहाँ पर विद्यमान साधु साध्वी भगवंत के मुखारविंद से नवकार मंत्र उवसग्गहर, बड़ी शान्ति स्त्रोत सुन कर मांगलिक लेकर अक्षत से शिखर को वधाना, आरती मंगलदीप चेत्यवंदन करना चाहिये। कार्यक्रम समापन पर मंगल श्लोक बोल कर अविधि-आशातना के लिए मिच्छामि दुक्कड़म (क्षमा मांगना) कर लेना चाहिये।

## ऐतिहासिक महोत्सव की आँखों देखी

# उत्सव, उत्सव के बाद फिर उत्सव

(राहुल चौधरी)

राजस्थान की गौरवशाली ऐतिहासिक पुण्य भूमि में 'मारवाड़' की अपनी विशिष्ट छवि है। यहाँ की रंगीली छटा हर किसी को अपने रंग में रंग देती है एवं वाणी की मधुरता अपना बना लेती है। यहाँ के कण-कण में शौर्य, समर्पण, त्याग एवं निष्ठा की सुवास भरी है। उसी मारवाड़ क्षेत्र की धरा पर बसा 'बागरा' नगर अपनी श्रद्धा एवं अटूट निष्ठा के लिये प्रसिद्ध है। चांदी की इस नगरी का अलग ही इतिहास रहा है। इसी ऐतिहासिक नगरी में पूज्य राष्ट्रसंत, त्रिस्तुतिक संघ के प्रकाशमान सूर्य, भक्तों की अनन्त आस्था के केन्द्र आचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वर जी म.सा. एवं उनके विशाल साधु-साध्वी समुदाय की पावन सान्निध्यता में बागरा में महा-शतकोत्सव के रूप में एक और स्वर्णिम पृष्ठ जुड़ गया। ग्यारह दिवसीय कार्यक्रम में अनेक धार्मिक अनुष्ठान सम्पन्न हुए। पू. गुरुदेव का वरिष्ठ मुनिराज श्री नित्यानंद विजयजी म. एवं समस्त साधु-साध्वीजी भगवंत के साथ जोश एवं उत्साह से नगर प्रवेश कराया

गया उसके पश्चात तो जैसे एक के बाद एक उत्सव की झड़ी सी लग गयी। पू. गुरुदेव के 63 वें संयमोत्सव गुरु महिमा का गुणगान करते हुए महाशतक महोत्सव का आगाज किया गया। 33 वें पाटोत्सव पर चतुर्विध संघ एवं गुरु भक्तों के रूप में श्रद्धा का सैलाब उमड़ गया। प्रतिदिन पू. गुरुदेव एवं साधु भगवंतों की अमृतमयी वाणी का श्रवण कर बागरावासियों ने अपने जन्म-जन्मान्तर के कर्मों की निर्झरा की एवं नित्य भक्तामर, महापूजन, स्थापना आदि धार्मिक अनुष्ठानों से सम्पूर्ण बागरा नगरी पुण्य सरिता से पवित्र हो गई। इस सम्पूर्ण महामहोत्सव में बागरावासियों के चेहरों पर जो खुशी एवं उत्साह झलक रहा था वह

अवर्णनीय है. निरंतर गुरुसेवा में समर्पित रहते हुए गुरुदेव की प्रत्येक आज्ञा को शिरोधार्य कर पूरी सजगता के साथ मिलजुलकर इस महामहोत्सव को भव्यातिभव्य रूप दिया । यह बागरावासियों की अटूट श्रद्धा एवं गुरुभक्ति का अनुपम उदाहरण है । पूरे महा-महोत्सव में जैन बंधुओं के अलावा नगर के जैनेत्तर परिवारों ने भी बढ़-चढ़कर भाग लिया ।

प्रातः मंगल प्रभातियां, बैंड बाजों में मधुर स्तवनों की धुन, शहनाई एवं शंख की गूंज व काठियावाड़ी ढोल की थाप पर सम्पूर्ण नगर सुबह से लेकर रात्रि तक अनेक धार्मिक आयोजन एवं अनुष्ठानों से पट जाता। सभी लाभार्थी परिवारों को भी ससम्मान ठाठ-बाट से लाया जाता एवं विधिवत बहुमान किया जाता । पधारे हुए विशेष अतिथियों का सम्मान भी विशेष रूप से चांदी के सिक्कों आदि से किया जाता । प्रभु पार्श्वनाथ की सौवीं ध्वजारोहण होते ही बागरा ने तीर्थ रूप ले लिया । वह दृश्य भी अपने आप में अद्भुत एवं अलौकिक पल था । प्रतिदिन चांदी की प्रभावना ने जन-जन के हाथों में चांदी कर दी । यहाँ पधारे हुए प्रत्येक आगन्तुक ने इस ऐतिहासिक महोत्सव की भूरी-भूरी प्रशंसा की । यह महोत्सव त्रिस्तुतिक इतिहास ही नहीं जैन इतिहास में भी अमिट छाप छोड़ गया ।

## कौन कैसे केवली बना?

-मुनि मनितप्रभ सागरजी

| | |
|---|---|
| नदी पार करते हुए | (अर्णिकपुत्राचार्य को) |
| पात्र प्रमार्जन करने हुए | (वल्कलचीरि को) |
| घर में बैठे हुए | (कूर्मापुत्र को) |
| पारणा करते हुए | (तापसों को) |
| समवशरण देखते हुए | (तापसों को) |
| परमात्मा की वाणी सुनते हुए | (तापस को) |
| घाणी में पिलने का दर्द सहते हुए | (खंदक मुनि के पांच सौ शिष्यों को) |
| गुरू का मन दुखाने का पश्चाताप करते हुए | (मृगावती को) |
| शिष्य का केवलज्ञान देखते हुए | (चण्डरूद्राचार्य को) |
| वंदन के लिए आगे बढ़ते हुए | (बाहुबली को) |
| मछली चीरते हुए | (कसाई कर्मचारी को) |
| त्वचा चीरने का दर्द सहते हुए | (खदंक मुनि को) |
| मोदक ग्रहण करते हुए | (केसरिया मुनि को) |
| गुरु के डंडे से मार खाते हुए | (चण्डरूद्राचार्य को) |

(शेष पृष्ठ 285 पर)

# पूज्य आचार्य श्री का शानदार प्रवेश खिल उठे बागरावासियों के मन के बाग

**(दि. 10 फरवरी 2016, महासुद 2 बुधवार)**

## 'कुम-कुम पगलिये पड़ते जिधर होती है लीला लहर'

महाशतकोत्सव की तैयारियों ने पूर्णता प्राप्त कर ली । पूरी बागरा नगरी को मनमोहक एवं आकर्षक सज्जा से दुल्हन की तरह सजाया गया । बागरावासियों द्वारा वर्षों से संजोया गया स्वप्न अब युवा होकर लावण्यमय हो गया है । समस्त बागरावासियों की मनोकामना फलीभूत होकर नगर के गौरवशाली स्वर्णिम इतिहास में एक और स्वर्णिम पृष्ठ जोड़ने जा रही थी। ग्यारह दिवसीय महामहोत्सव को अपने प्रबल, प्रभावी सान्निध्यता से पावन करने एवं महामहोत्सव की शोभा को उच्च शिखर तक पहुँचाने के लिये तीर्थ उद्धारक, संयम दानेश्वरी वक्तृत्व वाचस्पति, जन-जन की आस्था के केन्द्र राष्ट्रसंत आचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा. व वरिष्ठ मुनिराज श्री नित्यानंद विजयजी म.सा. का साधु-साध्वी मंडल के साथ नगर में प्रवेश होने जा रहा था । पूज्य श्री के प्रवेश को लेकर समस्त भक्तों में उत्साह अपने चरम सीमा पर था । सभी भक्त पू. गुरुदेव के अभिनंदन के लिए बागरा नगर की चौपाटी पर स्थित श्री महांवीर स्वामीजी जिनालय पर उपस्थित हो रहे थे देखते ही देखते जनसमूह, जनसैलाब में परिवर्तित हो गया । पूज्य

गुरुदेव के प्रवेश करते ही सभी भक्तों में खुशी की लहर दौड़ गई । सामैया के लाभार्थी शा. प्रतापचंदजी समनाजी बीलोसा वोरा परिवार द्वारा भावपूर्वक सामैया की गई । पश्चात् नगर प्रवेश पर सर्वप्रथम गहुंली के लाभार्थी श्री नरेन्द्र कुमार हजारीमलजी गौत्र चौहान परिवार द्वारा सोने चांदी के सिक्कों एवं मोतियों के साथ गहुंली की गई। चारों ओर 'गुरुजी हमारो अन्तर्नाद हमने आपो आशीर्वाद' एवं 'राष्ट्रसंत की जय-जयकार' के नारों से पूरा वातावरण गुंजित हो रहा था। पूज्य श्री के साथ महावीर स्वामी जिनालय एवं पूज्य गुरुदेव श्रीमद् धनचंद्रसूरीश्वरजी म. गुरु मन्दिर के दर्शन कर विशाल जनसमूह का कारवां आगे बढ़ता हुआ श्री पार्श्वनाथ 24 जिनालय पहुंचा जहाँ सभी ने प्रभु पार्श्वनाथ के दर्शन किए । सभी भक्त झूमते हुए चल रहे थे । विशाल शोभायात्रा में सबसे आगे मदमस्त चाल से गजराज चल रहा था। अहमदनगर मारवाड़ के दिनकर बैण्ड, भक्ति गीतों पर सभी भक्तों को झूमने पर मजबूर कर रहे थे । सुसज्जित ऊंट, घुड़सवार हाथ में धर्म पताका लिये चल रहे थे । लाभार्थी परिवार बैलगाड़ियों में सवार थे। आदिवासी नर्तक विचित्र वेशभूषा में नृत्य करते हुए आगे बढ़ रहे थे । श्री मनमधुकर बैण्ड बदनावर गुरु भक्ति के गीतों से युवाओं को भक्ति में साराबोर कर रहा था तो श्री महावीर

साण्डेराव बैण्ड मारवाड़ी गीतों की मिठी-मिठी स्वर लहरियों पर सभी गुरुभक्त उत्साह में गोते लगाते हुए नृत्य करते हुए चल रहे थे । वहीं शंखवादक अपने शंखनाद से पवित्रता का संदेश दे रहे थे । महिलाएँ सिर पर कलश धारण किये चल रही थीं। समस्त साधु भगवंतों एवं साध्वीवृन्द का विशाल समुदाय पू. आचार्यश्री के नेतृत्व में जिनशासन एवं शोभायात्रा के गौरव को बढ़ा रहा था । लगभग एक किलोमीटर लम्बी शोभायात्रा में सम्पूर्ण चतुर्विध संघ के साथ सभी भक्त नाचते-झूमते हुए पूरे नगर में भ्रमण करते हुए पूर्णतः सुसज्जित भव्य वाराणसी नगरी के प्रांगण में पहुंचे जहाँ पूज्य आचार्य भगवंत द्वारा वासक्षेप देकर लाभार्थीश्री पुखराजजी चंदाजी गुज्जार गौत्र परिवार द्वारा राजमहल की प्रतिकृति स्वरूप बने विशाल भक्ति प्रवचन मण्डप श्री वाराणसी नगरी का उद्घाटन किया गया । तत्पश्चात् समीप ही बने भव्यातिभव्य भोजन मण्डप, श्री भरतपुर नगरी का उद्घाटन पू. गुरुदेव से वासक्षेप प्राप्त कर लाभार्थी शा. पुखराजजी सौभाग्यमलजी लाम्ब गौत्र चौहान परिवार द्वारा किया गया । उद्घाटन के पश्चात समस्त जनसैलाब श्री वाराणसी में पहुंचा जो धर्मसभा में परिणित हो गया । जनसमुदाय की अपार उपस्थिति से यहाँ निर्मित विशालकाय पांडाल भी छोटा प्रतीत हो रहा था। विशाल धर्मसभा में संगीतकार श्री दीपक करनपुरिया ने अपने गीतों की सुरावलियों से सभी भक्तों को मंत्र-मुग्ध कर दिया । वहीं संचालन कर रहे श्री विनोदजी आचार्य ने अपनी वाणी से गुरुदेव की महिमा का बखान किया एवं पू.गुरुदेव के पुनित कार्यों एवं महिमाओं से सबको अवगत कराया । तत्पश्चात् बागरा के रत्नश्री नरेन्द्रजी पोरवाल ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया जिसे सुनकर ऐसा प्रतीत हो रहा था मानों सरस्वती स्वयं उनकी जिव्हा पर विराजित हो । श्री नरेन्द्रजी द्वारा विशिष्ट शैली में गुरुदेव के गुणों एवं बागरा के प्रति गुरुदेव के प्रेमभाव एवं बागरा के इतिहास को विस्तार

से बताया गया ।

(श्री नरेन्द्रजी द्वारा दिया गया विस्तृत उद्‍बोधन इसी अंक में प्रकाशित है ।)

बागरा श्रीसंघ के सदस्यों द्वारा भी अपने उद्‍गार व्यक्त किए गए । तदुपरांत पू. गुरुदेव ने अपने उद्‍गार व्यक्त किए । पू. गुरुदेव ने अपने सम्बोधन में नगर की सौन्दर्यता व सजावट की चर्चा करते हुए कहा, ऐसा लगता है इसकी रचना स्वयं इंद्रमहाराजा ने की हो सम्पूर्ण बागरा नगर इंद्रपुरी नगरी के समान लग रहा है । आपश्री ने फरमाया कि यह नगर मेरे लिये नया नहीं है इस नगर से मेरा करीब 70 वर्ष पुराना रिश्ता है । यह मेरा अपना गांव है। यहाँ मैं दीक्षा पूर्व संवत् 1903 में मेरे आराध्य गुरुदेव श्री यतीन्द्र सूरीश्वरजी के पास ज्ञानार्जन के लिए आया था । यह मेरे गुरुदेव का चाहिता नगर है। मेरे संसारी से सन्यासी बनने के बीच का महत्वपूर्ण समय बागरा में ही व्यतीत हुआ है । मेरा यहाँ की चार पीढ़ियों से परिचय है। यहाँ के लोग धर्ममयी एवं गुरु के प्रति हमेशा समर्पित रहते हैं । अन्त में पूज्य गुरुदेव ने अपनी अमृतमयवाणी से सबको मंगलाचरण श्रवण कराया। आचार्य भगवंत एवं सभी साधु-साध्वीजी म.सा. श्री राजेन्द्र आराधना भवन जाते समय श्री आदिनाथ हेमेन्द्रसूरि स्मृति मंदिर के दर्शनार्थ पधारे एवं सभी भक्तों के साथ सामुहिक दर्शन वंदन किया ।

**प.पू. गुरुदेव श्रीमद् जयंतसेन सूरीश्वरजी म. सा., महातीर्थ श्री पालीताणा से करीबन 550 कि.मी. का उग्र विहार कर सिर्फ 17 दिनों में बागरा नगर पहुँचे, यह दर्शाता है गुरुदेव को अपने गुरु की कर्मभूमि से कितना गहरा लगाव, अपनत्व है। इस सम्पूर्ण विहार में श्री नरेन्द्रकुमारजी हजारीमलजी, श्री विजयकुमारजी भूरमलजी, श्री दिनेशकुमारजी पुखराजजी, श्री दिलीपकुमारजी शेषमलजी का विशेष योगदान यात्रा प्रबन्धक के रूप में रहा ।**

# भव्य प्रवेश पर श्री नरेन्द्र पोरवाल का उद्बोधन तथा स्वागत भाषण

घणा दारा वोती मोमारे आया ।
(बहुत दिन के बाद ननिहाल पधारे)

सर्वप्रथम अरिहन्तों को नमन, जिनेश्वर प्रभु को वंदन, वीतराग देव का स्मरण ।

'अन्यथा शरणं नास्ति–त्वमेव शरणं मम् ।
तस्मात् कारुण्य भावेन, रक्ष–रक्ष जिनेश्वर ।।'

तत्पश्चात् भारतीय ऋषि परंपरा के, विश्व के जीवित–जागृत–ज्वलंत संत श्रृंखला के सबसे तेजस्वी–ओजस्वी–यशस्वी–मनस्वी–वर्चस्वी–सर्वस्वी एवं इस ब्रह्मांड के इस कायनात के सबसे बड़े तपस्वी, आध्यात्मिक प्रकाश पुंज, अभिधान राजेन्द्र कोष के निर्माता , आपके, हमारे ही नहीं सारे विश्व के पूजनीय –दर्शनीय–वंदनीय दादा गुरुदेव राजेन्द्रसूरिश्वरजी म.सा. को नमोस्तु नमोस्तु –

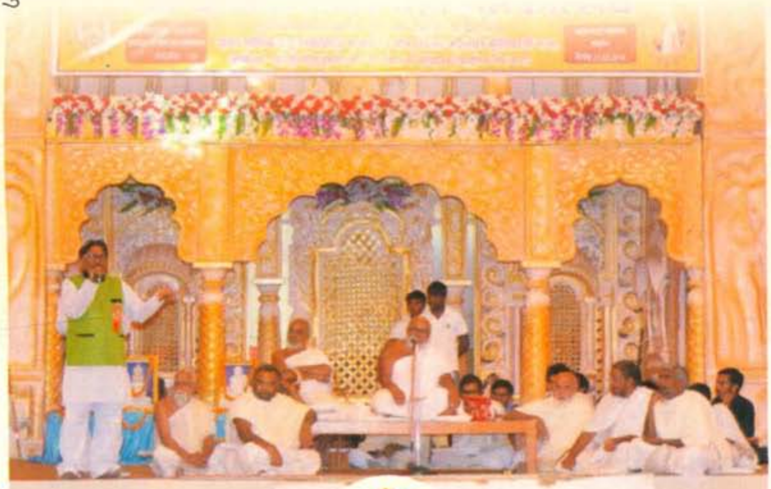

'विश्ववंदनीय योगी जिनकी श्रेष्ठतम थी साधना
पूज्यवर नित्य की नवकार की आराधना
सत्यवक्ता-साहित्यसेवी परम पावन नाम है ।
ऐसे गुरुवर को श्री बागरा जैन संघ का प्रणाम है ।'

फिर आते हैं बागरा नगर के पावन उपकारी चर्चा चक्रवर्ती आचार्य भगवंत श्री धनचन्द्र सूरीश्वरजी म.सा., जिस चिन्तामणी पार्श्वनाथ चैत्यालय की हम शताब्दी मना रहे हैं उसकी प्रतिष्ठा श्री धनचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. की शुभ निश्रा में 100 वर्ष पूर्व सम्पन्न हुई । धनचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. का निर्वाण बागरा में ही हुआ और उससे बागरा पावन हुआ ।

अब मैं वर्तमान में आता हूँ- व्यक्ति क्रान्ति के अनरत सूरज, सृजन एवं चिंतन के अद्वितीय हस्ताक्षर, नीति शास्त्र की चलती-फिरती विश्वविद्यालय, साहित्य जगत के आदित्य अलौकिक विभामय, महाचेतना सम्पन्न, जगतवल्लभ, धर्मधुरन्धर, त्रिकालवर्ती, त्रिकालधारी, त्रिकालदर्शी गच्छाधिपति आचार्य प्रभु जयन्त सेन सूरीश्वरजी म.सा. -

'जिनकी आँखों में अनुकंपा का अंजन है
स्वभाव में संस्कारों का चंदन है
हृदय में स्नेह-प्रेम का स्पंदन है
मस्तष्क में नित नये ज्ञान का सृजन है ।
ऐसे गुरुवर को बागरा का भावपूर्ण वंदन है ।'

आप आये तो सभी को हर्ष है अपरंपार क्योंकि बरसों का बागरा श्री संघ का सपना हुआ साकार । आप पधारे तो ऐसा लगा -

शबरी के आंगन में राम आये, पांव-पांव चल तीर्थधाम आये ।
सूखे हुए बागरा को हरा भरा करने, शताब्दी की बंसी लेकर घनश्याम आये ।।

ये तो सब है हमारे अनुभूती की अभिव्यक्ति हमारे भावों की प्रकटता, हमारी प्रसन्नता , हमारी हर्षता, वैसे मेरी योग्यता नहीं है फिर भी आपसे एक सवाल करता हूँ ।

आपको बागरा आकर कैसा लगा? क्या ऐसा नहीं लगा कि 'घणा दारा वोती मोमारे आया' क्योंकि हमारा बागरा आपके जीवन निर्माता गुरुदेव

यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. का गांव है। उन्होंने अपने जीवनकाल के सात-सात चातुर्मास बागरा में किये। बागरा के प्रति यतीन्द्रसूरीश्वरजी का स्नेह-अपनत्व-ममत्व किसी से छिपा नहीं था। बागरा यतीन्द्र सूरीश्वरजी का है तो, हुआ ना आपका ननिहाल।

बागरा और यतीन्द्रसूरीश्वरजी के बीच विशेष रिश्ते थे।
यतीन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. बागरा के लिए इंसान नहीं फरिश्ते थे।

200 से ज्यादा गुरु मन्दिर, 3000 से ज्यादा प्रतिमाओं की अंजनशलाका 200 से ज्यादा दीक्षा, 44 वर्ष से सतत-निरंतर नवकारमंत्र आराधना जिससे लाखों लोग पवित्र हुए, पावन हुए, 2 लाख कि.मी. की पैदल यात्रा कर पूरे हिन्दुस्तान के धज्जी-धज्जी धुनकर रोये-रोये, कण-कण, अणु-अणु, बूटे-बूटे में गुरुदेव राजेन्द्र के नाम को रोपित करने वाले गुरुदेव के बारे में क्या कहूँ ?

आपके बारे में कुछ कहूँ मेरे शब्दों में इतना जोर नहीं।
ढूँढ कर ला़ओ दुनिया में मेरे गुरुदेव जैसा और नहीं ॥

उसको नहीं देखा हमने कभी, पर उसकी जरूरत क्या होगी, जयन्तसूरी तेरी सूरत से अलग भगवान की सूरत क्या होगी। तुझको खुदा कहूँ या खुदा को खुदा कहूँ, दोनों की सूरत एक सी है, किसको खुदा कहूँ ?

आचार्यश्री के बारे में बोलने के लिए न मेरे पास शब्दों का अभाव है न भावों का अभाव है, अभाव है समय का इसलिए समय की मर्यादा ध्यान में रखते हुए और यह ध्यान में रखते हुए कि आप मुझे नहीं पूज्यश्री को सुनने आये हैं अन्त में इतना ही कहता हूँ -

वक्त का हाथ थाम लेता हूँ बादलों का सलाम लेता हूँ।
मौत भी रुक जाती है दो पल, जब मैं जयन्त गुरु का नाम लेता हूँ ॥

# गुरुदेव का सान्निध्य :

# वाराणसी व भरतपुर नगरी का उद्घाटन

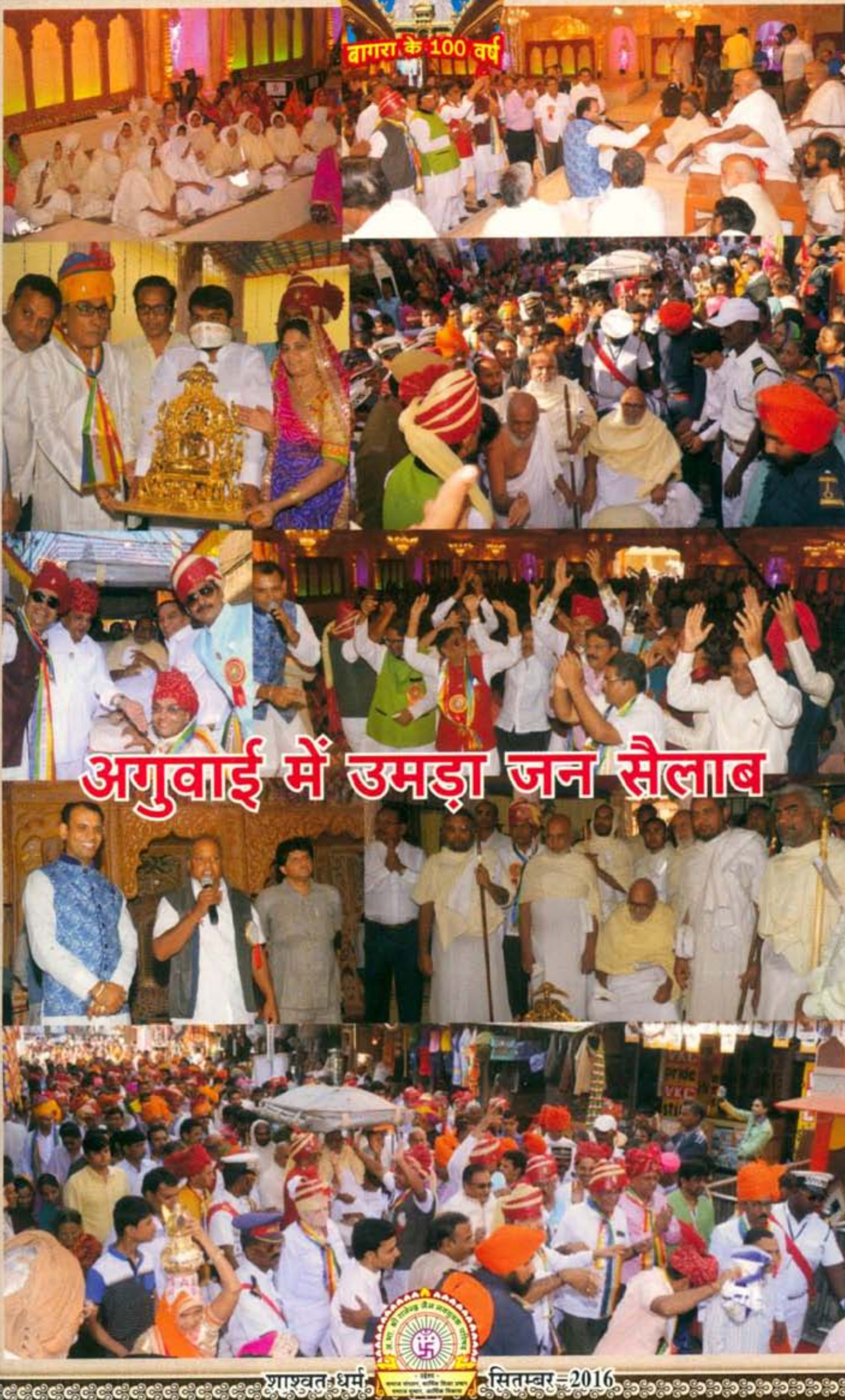
बागरा के 100 वर्ष
अगुवाई में उमड़ा जन सैलाब

# संयमोत्सव पर बह चली गुरु-गुणानुवाद की भक्तिमय धारा पूरे उत्साह से हुआ महामहोत्सव का आगाज

(दि. 11 फरवरी 2016, महासुद 3, गुरुवार)

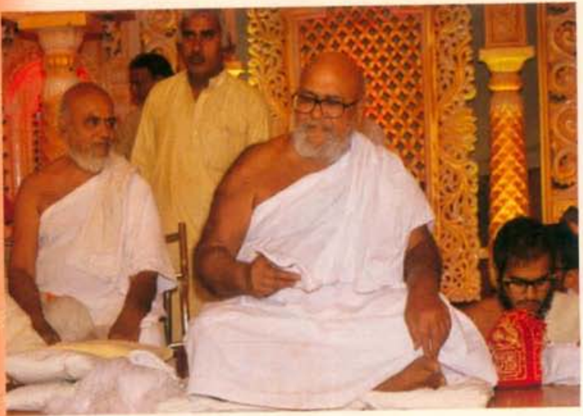

बागरावासी दिन-रात एक किए हुए थे। 18 महिनों से जिस उत्सव को भव्य बनाने के लिए पूरी लगन से बेजोड़ परिश्रम एवं एकता से लगे हुए थे आज उस महामहोत्सव का शंखनाद होने जा रहा था। बागरा नगर के सभी प्रवासी बंधु भी अपनी मातृभूमि पर इस

पूज्य गच्छाधिपति, संघ एकता के शिल्पी, संघ अनुशास्ता आचार्य श्रीमद् विजयजयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. व विशाल साधु-साध्वी भगवंतों के प्रवेश के बाद उनकी पावन सान्निध्यता प्राप्त करके बागरावासी स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रहे थे। अपने आराध्य को अपने बीच पाकर सभी भक्तों के चेहरों से मुस्कान जाने का नाम ही नहीं ले रही थी। सभी गुरुभक्तों का उत्साह कई गुना बढ़ गया था। जिस प्रसंग की आस में ऐतिहासिक महोत्सव को सफल बनाने के लिये अपनी-अपनी क्षमता एवं पूर्ण निष्ठा से तत्पर थे और सोने पे सुहागा गुरुदेव के 63 वें संयमोत्सव का अनुपम आराधना, अनुमोदना का अवसर भी बागरा जैन संघ को मिला। इसी दिन आराध्य गुरुदेव श्री जयंतसेन सूरीश्वरजी म. सुश्रावक पूनमचन्द से मुनि जयंत विजय म.सा. के रूप में अवतरित हुए थे।

कठोर संयम पालन के साथ वीतराग प्रभु की देशना और गुरुदेव श्री

राजेन्द्रसूरीश्वरजी म. के क्रियोद्धार की महत्ता को जन-जन तक पहुँचाते हुए वे 62 वर्ष पूर्ण कर 63 वें वर्ष में प्रवेश करने जा रहे हैं। सचमुच यह बागरावासियों की अटूट श्रद्धा, अपने गुरुदेव के प्रति समर्पण, निष्ठा एवं निःस्वार्थ भक्ति भावना का ही परिणाम है, जो यह मंगल अवसर इन्हें प्राप्त हुआ।

प्रातः काल जैसे-जैसे बागरा के आभा मण्डल में सूर्य ने अपनी लालिमा बिखेरना प्रारंभ किया वैसे-वैसे समस्त बागरावासी भी श्री भरतपुर नगरी के विशाल भक्ति मण्डप में एकत्रित होने लगे। देखते ही देखते पूरा पाण्डाल भक्तों से भर गया। पू. राष्ट्रसंत आचार्य देवेश 11 दिवसीय कार्यक्रम के प्रेरणा स्त्रोत एवं निश्रा प्रदाता, गच्छाधिपति श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा., वरिष्ठ मुनिराज श्री नित्यानंद विजयजी म.सा. एवं समस्त साधु-साध्वी भगवंतों के साथ पधारते हैं। जिन शासन के राजा पधार रहे हैं के स्वरनाद से पूरा प्रांगण दिव्यमान हो जाता है। सभी भक्तों द्वारा सामूहिक गुरुवन्दन किया जाता है। तत्पश्चात पू. गुरुदेव के मुखारविन्द से मांगलिक श्रवण कर 63 वें संयमोत्सव के उपलक्ष्य में भावपूर्वक गुरु गुणानुवाद प्रारंभ किया जाता है एवं प्रखर मुनिभगवंतों द्वारा अपने प्रवचन से जन समूह को उपदेशित किया। जिसमें मुनि प्रवर श्री वीररत्नविजयजी म. द्वारा सर्वप्रथम बागरा नगर में गत संध्या को श्री नरेशकुमारजी के आकस्मिक निधन पर संवेदना प्रकट करते हुए उपस्थित जन समूह ने तीन

नवकार गिनकर श्रद्धांजली दी। पूज्य श्री ने जन्म-मरण के अटल सिद्धांत को समझाते हुए कहा मृत्यु हम सभी को निश्चित है, मानव जीवन पाना ही सब कुछ नहीं है मगर इस मानव जन्म को पाकर हम कितना पुण्य जोड़ते हैं, वह प्रमुख है । जीवन निर्वाह करते हुए हमारे द्वारा किये गये सद्कार्य ही हमारे इस भव एवं परभव के सुख का कारण बनते हैं अतः सिर्फ सांसारिक उपलब्धियों को पाकर संतोष करने के बजाय आध्यात्मिक उपलब्धियों को पाने की ओर दिशा बदलो एवं अपने जीवन को धर्म कार्यों से उज्ज्वल बनाओं।

मुनि भगवंत् डॉ. श्री सिद्धरत्न विजयजी ने 'गुरुजी हमारो अंतर्नाद हमने आपो आशीर्वाद' वाक्य की सार्थकता से अवगत कराते हुए कहा-जब तक हम अपने अर्तमन से किसी को वन्दन नहीं करते, तब तक हमें उनका पूर्ण आत्मीय आशीर्वाद नहीं मिलता । वन्दन करने का अर्थ है, उनके द्वारा जो ज्ञान की गंगा बहाई जा रही है, उसे अपने आचार-विचार में धारणकर कार्यान्वित करना उनके द्वारा बताये गये सद्मार्ग पर चलकर आत्मकल्याण करना तभी आप सच्चा आशीर्वाद पा सकते हैं । आपश्री ने कहा 'वन्दन करता आपणा बन्धन टूटे' अर्थात् भावपूर्वक वन्दन करने में इतनी शक्ति है कि हम भव-भव के कर्म बन्धनों से भी मुक्त हो सकते हैं ।

मुनि भगवंत् श्री विद्वद्रत्न विजयजी ने अपने प्रवचन में बताया-यह बागरा नगर में मेरे गुरुदेव श्री जयंतसेन सूरीश्वरजी के ज्ञान ग्रहण की प्राथमिक पठन की भूमि है, यहीं पर श्रीमद् यतीन्द्र सूरीश्वरजी म. से पू. गुरुदेव के ज्ञानार्जन का बीजारोपण हुआ था और संयोग की बात है कि मेरे भी ज्ञान का बीजारोपण इसी भूमि पर वर्तमानाचार्य श्रीमद् जयंतसेनसूरीश्वरजी यानि की पू. गुरुदेव श्री की ही निश्रा में हुआ था । इस प्रकार इस 'बागरा नगर' की पावन धरा ने ज्ञानार्जन की मुख्य भूमिका प्रदान की है ।

मुनि भगवंत् श्री चारित्ररत्न विजयजी ने संयमोत्सव के उपलक्ष्य में बताया कि आराध्य गुरु में अटल श्रद्धा होनी चाहिए । बिना श्रद्धा के आपकी भावना जागृत नहीं हो सकती और बिना समर्पण भावना के आप सार्थक आशीर्वाद के योग्य नहीं बन सकते । यह परम सत्य है, भगवान को पाने के लिए भी गुरु ही सूत्रधार हैं वे ही जीवन के सही मार्ग प्रदाता हैं अतः गुरुदेव की शरण को अटल श्रद्धा से अंगीकार करो। आप श्री ने फरमाया बागरा नगर का जैन शासन के इतिहास में बड़ा महत्व है यह वही नगरी है जहां से श्री उदयजी नामक सुश्रावक गुजरात

अवसर मुख्य अतिथि के रूप में जालोर के पूर्व विधायक श्री योगेश्वरजी गर्ग और आहोर के विधायक श्री शंकरसिंहजी राजपुरोहित उपस्थित थे। जिन्होंने पू. गुरुदेव से आशीर्वाद लेकर समारोह का अवलोकन किया एवं प्रसन्नतापूर्वक संतोष प्रकट किया।

में धनोपार्जन के लिए गए थे और वहां अपनी प्रतिभा से गुजरात के महामंत्री बने थे। आप वहीं उदयन मंत्रीश्वर हैं, जिनका जिनशासन की जयवन्ता में बहुत बड़ा योगदान है । संयोग से मेरे आराध्य गुरुदेव भी गुजरात से बागरा आकर जिनशासन को जयवन्त कर रहे हैं।

श्री नरेन्द्रजी पोरवाल द्वारा गुरु गुणगान करते हुए गुरुदेव के जीवन को कथा के रूप में विस्तृत रूप से बताया गया। आपने बताया कि किस प्रकार अपनी सरलता एवं दिव्य प्रतिभा से पूज्य राष्ट्रसंत अपने-अपने गुरुदेव श्री यतीन्द्र सूरीश्वरजी के प्रिय शिष्य बने एवं आगे चलकर जिनशासन व त्रिस्तुतिक संघ के सूर्य बनके उभरे। श्री नरेन्द्रजी पोरवाल ने भी गुरु गुणगान किया। (श्री नरेन्द्रजी द्वारा संयमोत्सव पर दिए गए उद्बोधन इसी अंक में विस्तृत रूप से मुद्रित है।) पू. गुरुदेव ने मांगलिक श्रवण करवाते हुए सबको आशीर्वचन प्रदान किए। (आचार्य श्री द्वारा दिए गए आशीर्वचन इसी अंक में प्रकाशित हैं।) इस पावन

## स्थापना हुई मंगलकारी

पू. राष्ट्रसंत के संयमोत्सव के साथ महामहोत्सव का शुभारंभ विभिन्न महामंगलकारी स्थापनाओं के साथ उत्साहपूर्वक किया गया। सर्वप्रथम परमात्मा के चरणों में वन्दन करते हुए विजय मुहूर्त में पूज्य गच्छाधिपति, राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. एवं समस्त साधु-साध्वी भगवंत की पावन निश्रा में विधिकारक श्री त्रिलोकजी कांकरिया एवं श्री सत्यविजयजी हरण द्वारा मंत्रोच्चार से सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के प्रतीक कलश की स्थापना की गई। कलश को शुद्ध जल से भरकर लाभार्थी शा. डाहाजी नथाजी अम्बा गौत्र चौहान (जोशी) परिवार की महिलाओं ने प्रभु की प्रदक्षिणा कर वेदिका पर मंत्रोच्चार के साथ कुंभ स्थापना की गई। उसके बाद सम्पूर्ण कार्यक्रम अखण्ड रूप से निर्विघ्न सम्पन्न हो

और अखण्ड ज्योत अपने प्रकाश से सदा संघ व समाज में अखण्डता बनाए रखे इस भावना से लाभार्थी शा. देवाचंद नवाजी लाम्ब गौत्र चौहान परिवार के सदस्यों द्वारा विधिकारक श्री सत्यविजयजी हरण व श्री त्रिलोकजी कांकरिया के निर्देशन में पूज्य साधु भगवंतों की निश्रा एवं मंत्रोच्चार के साथ धर्म एवं आस्था की ज्योत जलाकर दीपक को उठाकर वेदिका पर स्थापित किया गया । तत्पश्चात् मंत्रोच्चार के साथ ज्वारारोपण के लाभार्थी शा. नथमलजी छतराजी लाम्ब गौत्र ढाल परमार के परिवारजनों द्वारा भावपूर्वक ज्वारारोपण की विधि सम्पन्न कराई गई । परिवार की महिलाओं ने ज्वारों से भरे मिट्टी के बर्तनों को उठाकर प्रभु की प्रदक्षिणा कर उन्हें वेदिका पर स्थापित किया । इसी क्रम में लाभार्थी शा. वेजराजजी जेठमलजी अम्बा गौत्र परमार परिवार की महिलाओं द्वारा विधिकारकों के निर्देशन में कलशयात्रा विधान में महिलाओं द्वारा गाजते-बाजते हुए शुद्ध जल के कलश अपने सिर पर धारण कर कलश यात्रा निकाली गई जिसमें सर्वप्रथम शुद्ध जल के कुएँ से कलशों को भरा गया एवं विधि-विधान से पूजा कर कलशों को जिनालय में लाया गया जहाँ लाए गए कलशों के शुद्ध जल का उपयोग प्रभु के अभिषेक एवं अन्य मंगल कार्यों में किया गया । सभी विधानों के साथ ही क्रिया मण्डप में लाभार्थी शा. ज्वरचंदजी भीमाजी लाम्ब गौत्र चौहान परिवार द्वारा भक्तिभाव से श्री भक्तामर महापूजन किया गया । विधिकारकों एवं मुनिभगवंतों के मंत्रोच्चार एवं श्री मनमधुकर ग्रुप द्वारा सुमधुर संगीत सुरावलियों से भावपूर्वक पूजा पढ़ाई गई ।

दिन भर मंगल विधानों की सम्पन्नता के पश्चात रात्रि में श्री राजेन्द्र व दीपक करनपुरिया की टीम द्वारा भक्ति संध्या का जमघट लगाया गया । महामंगलकारी नवकार मंत्र के साथ भक्ति की शुरूआत की गई । भाई श्री दीपक ने 'चलो बेना बागरा में शताब्दी महोत्सव में जइए', 'तेरे दर्शन को मैं आया मेरे पारसनाथ', 'बागरा का नाथ है हमारा तुम्हारा -2' आदि भक्ति गीतों की सरिता बहाई । वहीं बाल कलाकार अंकित व शुभम् ने भक्ति गीतों पर नृत्य की नयनाभिराम प्रस्तुति देकर समा बांध दिया ।

# संयमोत्सव पर आचार्य भगवंत का भावपूर्ण उद्बोधन

आज सारा त्रिस्तुतिक समाज मेरा 63 वां दीक्षोत्सव मना रहा है। समाज-साहित्य और धर्म की सेवा करने में इतना व्यस्त रहा हूँ कि मुझे स्मरण ही नहीं कि किस तरह 63 वर्ष का लंबा समय व्यतीत हो गया।

पिछले दो तीन वर्षों से शारीरिक अस्वस्थता के बावजूद मेरी कोशिश यही रहती है कि त्रिस्तुतिक समाज धर्म के क्षेत्र में अग्रणी हो और इसके लिये मैंने अपना तन-मन समाज को समर्पित कर दिया है। मुझे याद है जब वि.स. 2004 में गुरुदेव यतीन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. का थराद में वर्षावास था। चेतनाओं के जिस तल और ऊँचाइयों से वे बोलते तो ऐसा लगता कि अरिहन्तों के साथ, तीर्थंकरों के साथ उनका सीधा एकस्य है, मैं उनके प्रवचनों से इतना प्रभावित हुआ कि बालसुलभ हरकतें, खेलों से लगाव परिवार से संबंध सब छूट गया और मन में सिर्फ एक ही अभिलाषा रही कि मुझे गुरुचरणों में जाना है, मुझे ज्ञान प्राप्त करना है, मुझे धर्म का सही अर्थ समझना है। जब वि.स. 2009 में गुरुदेव का चातुर्मास आपके नगर बागरा में था तो मैं थराद से बागरा आ गया। इस तरह बागरा मेरे संयम जीवन का महत्वपूर्ण अंग बन गया क्योंकि संसारी से सन्यासी बनने के बीच का महत्वपूर्ण समय मेरा बागरा में व्यतीत हुआ। मैंने बागरा में धार्मिक साहित्य का अध्ययन किया फिर गुरुदेव ने मुझे कुन्दनमलजी डांगी के यहाँ मेवाड़ भेज दिया। भांडवपुर प्रतिष्ठा के समय मैं वापस गुरुदेव के पास आ गया। तब मेरी उम्र 16 वर्ष थी। शायद गुरुदेव को लगा कि अब ये दीक्षा के योग्य है। मेरे

दीक्षा का मुहूर्त गुरुदेव ने स्वयं निकाला वि.स. 2010 माहसुद 4 रविवार, मेरे परिवार वालों को आमंत्रित किया गया एवं दीक्षा स्थल निश्चित हुआ सियाणा नगर। पाँच दिन के पूजा एवं वरघोड़े का लाभ भी श्री सियाणा जैन संघ ने लिया। प्रथम एवं अंतिम दिन का वरघोड़ा एवं वस्त्रादि वहोराने का लाभ लिया सियाणा निवासी संघवी सरमेल खुमाजी परिवार ने। जब गुरुदेव ने मुझे ओघा प्रदान किया एवं मेरा नाम रखा जयंतविजय तब मुझे ऐसा अभास हुआ कि मैं द्विज हो गया, अर्थात मेरा दुबारा जन्म हो गया। सिर्फ मेरा नाम ही नहीं बदला मेरा जीवन, मेरे कृत्य सभी बदल गये। मैं पारदर्शी हो गया, सारी अशुद्धियां अपने आप छूट गईं।

प्रथम वर्षावास आहोर नगर में सम्पन्न हुआ, तब मैंने 'पियुष प्रभा' नामक एक छोटी सी पुस्तिका लिखी। गुरुदेव ने उस पुस्तिका के प्रूफ स्वयं देखे और मेरी भूरी-भूरी प्रशंसा की। मैंने कहा -

तुम मेरे घनसावन, तुम मनभावन, तुमसा कौन जगत में पवित्र पावन
तुम वृन्दावन तुम भगवान, सारे जग को आधार तुम्हारा
मेरा तो कुछ नहीं जगत में, ज्ञान मेरा वरदान तुम्हारा।

आगे जाकर गुरुदेव ने मुझे-शाश्वत धर्म और परिषद का उत्तरदायित्व सौंपा जिसको मैंने अपना प्रथम कर्त्तव्य एवं गुरुआज्ञा समझकर आज तक निभा रहा हूँ। मैं जो कुछ भी हूँ अपने गुरुदेव यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के आशीर्वाद एवं कृपा की वजह से हूँ। आपके गाँव बागरा नगर के सुश्रावक एवं परम गुरुभक्त श्री नरेन्द्रकुमार रायचंदजी जिसे हम नरेन्द्र पोरवाल के नाम से जानते हैं को उनकी शासन एवं साहित्य के प्रति सेवा भाव तथा समर्पण के लिये 'समाज गौरव' के पदवी से अलंकृत करता हूँ। पालीताणा से बागरा तक के विहार में बागरा के श्रावकों ने जो उत्तम व्यवस्था की उनकी भी मैं सराहना करता हूँ। मेरे इस 63 वे संयमोत्सव पर एक ही संदेश देना चाहता हूँ कि ज्यादा से ज्यादा नवयुवक धर्म से जुड़ें, सामाजिक वैमनस्य एवं व्यक्तिगत जीवन के कषायों के प्राबल्य को धार्मिक सौहार्द्र से कम करने का प्रयत्न करें। मेरा सम्पूर्ण जीवन धर्म और समाज के लिये है। त्रिस्तुतिक समाज का कल्याण ही मेरा ध्येय है। आपको जागृत करना मेरा कर्त्तव्य है। जब तक शरीर में प्राण है जब तक धर्म एवं समाज की श्रेष्ठता के लिए कार्य करता रहूँगा।

आचार्य भगवंत के इस भावनात्मक उद्बोधन के पश्चात खचाखच भरे धर्मसभा में 10 मिनट तक तालियाँ एवं जय-जय-गुरुदेव के नारे लगते रहे।

श्री नरेन्द्र कुमार का उद्‌बोधन

# हे यतीन्द्रसूरि ! आप इस युग के कृष्ण हैं, मैं इस युग का पार्थ-पूनमचंद

आज जैन - धर्म के श्रृंगार, हमारी आस्था-निष्ठा के आधार, जन-जन का विश्वास, प्राणों के मधुमास, विश्वशान्ती के दीप-क्षीरसागर के सीप, मानवीय संवेदना के समाधान-हर दिल को दिलासा देने वाले करुणाधाम, वाकविभूषण-सिद्धांत दिवाकर, सत्य साक्षात्कारी योगीश्वर, अखण्ड कैवल्य ज्योति, गच्छाधिपति राष्ट्रसंत आचार्य भगवंत का 63 वां संयमोत्सव है। आज हमारे जीवन का सबसे शुभ-दिन है और यह प्रवज्योत्सव मनाने का सौभाग्य हमारे बागरा संघ को मिला-यह हमारे भाग्य के परकाष्ठा की चरम सीमा है। वि.स. 2010 माह सुद 4 रविवार को आचार्यश्री ने दीक्षा ली तब किसे मालूम था कि भविष्य में यह दिन सम्पूर्ण त्रिस्तुतिक समाज के लिए एक उत्सव, एक पर्व, एक त्यौहार, एक समारोह बन जायेगा।

आज मैं आपको कोई लम्बा-चौड़ा भाषण नहीं सुनाऊँगा, आज मैं आपको एक छोटी-सी कहानी सुनाता हूँ, एक कथा सुनाता हूँ। अब कथा है तो कथा का नायक भी होना अनिवार्य है। हमारे इस कथा का नायक है- 11 वर्षीय बालक, नाम पूनमचंद। अब पूनमचंद नाम क्यों है ? इसके पीछे भी एक कथा है, कहते हैं उनके जन्म के पूर्व उनके माताश्री पार्वतीदेवी को सपने में पूर्ण चन्द्र दिखाई दिया इसलिये पुत्र का नाम रखा पूनमचंद। हमारे कथानायक का जन्म वि.स. 1993 मगसर कृष्णा 13 (दिनांक 11 दिसंबर 1936) को थराद के नजदीक पेपराल नामक छोटे से गांव में हुआ। हमारी कहानी की सुरूआत होती है वि.सं. 2004-2005 से, तब व्याख्यान-वाचस्पति - पीतांबर विजेता, जिनशासन के सबसे सक्षम सामर्थ्यवान अनुशासनशास्त्रा आचार्य देवेश विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. का जुड़वा चातुर्मास त्रिस्तुतिक समाज की राजधानी थराद में चल रहा था। पूनमचंद हररोज गुरुदेव के प्रवचन सुनने आते थे, वे सिर्फ सुनते ही नहीं थे बल्कि गुरुदेव के हर शब्द को आत्मसात करने का यत्न करते थे। उस समय बालकों के लिये विद्याभ्यास के वर्ग स्वयं गुरुदेव के अवलोकन में चलते थे। एक दिन गुरुदेव ने देखा कि बालक पूनमचंद कुछ लिख रहे हैं - 'पूरण पंडित --जगत मंडित- पाप खंडित गुरुवरम्' गुरुदेव ने पूनमचंद को ध्यान से देखा-तेजस्वी चेहरा, ओजस्वी नयन, उन्नत ललाट, गुरुदेव को कुछ आभास हुआ, कुछ एहसास हुआ। गुरुदेव यतीन्द्रसूरीजी भविष्यदृष्टा भी थे, भविष्य वक्ता भी थे, वे आने वाले कल को जान जाते हैं।

गुरुदेव ने पूनमचंद के पिताश्री स्वरूपचंद धरू को बुलाकर कहा-'यह पुत्र भविष्य में आपके कुल का नाम उज्ज्वल करेगा। यदि आप इसे धर्म के प्रति समर्पित कर देते हैं तो यह जिनशासन की प्रभावी प्रभावना करेगा। परिवार वाले आश्चर्यचकित हो गये। भाई के विवाह के दिन धर्मशाला में जाकर सामायिक करने वाला पूनमचंद बोला-गुरु के मुख से

निकला हर वचन वरदान है, गुरुदेव के शरणों में ही मेरा कल्याण है । फिर आया वि.सं. 2009 पूनमचंद अपने घरवालों की अनुमति लेकर गुरुदेव के चातुर्मास में आ गये । गुरुदेव का वह ऐतिहासिक चातुर्मास हमारे नगर बागरा में था । आते ही पूनमचंद ने गुरुदेव के चरणों को पकड़ कर कहा -

आप इस युग के कृष्ण हैं, मैं इस युग का पार्थ ।
समझाओ गुरुदेव मुझे जीवन का यथार्त, धर्म का यथार्त ।

गुरुदेव ने बालक के वाणी में एक ओज, एक संकल्प देखा, मनोबल में दृढ़ता देखी तो शास्त्रों के अध्ययन के लिये श्रीमान् कुन्दनमलजी डांगी के पास मेवाड़ भेज दिया, वो कुन्दनमलजी जिन्होंने हमारे दादा गुरुदेव की आरती लिखी-कुन्दन वंदन करीये ।

फिर आया वो ऐतिहासिक दिन, वि.स. 2010 माह सुद 4 को गुरुदेव यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. ने पूनमचंद के दीक्षा का शुभ मुहूर्त निश्चित किया । बागरा के नजदीक सियाणा नगर में, जहाँ दादा गुरुदेव राजेन्द्र सूरिजी म.सा. ने 'अभिधान-राजेन्द्र कोष' का प्रारंभ किया था, अष्टानिका महोत्सव के साथ पूनमचंद की प्रवज्या का सामारोह अत्यंत धूमधाम से सम्पन्न हुआ । गुरुदेव ने पूनंमचंद को नया नाम दिया- जयन्त विजय। यह नाम गुण सम्पन्न है । जयंत नामक एक पर्वत है, पर्वत पर विजय करने वाले अर्थात भवरूपी पर्वत को जीतकर पार करने वाले जयन्त विजय । आज इस नाम की सार्थकता सत्यता सारी दुनिया देख रही है । अपनी ही तैयारी बनाती है आदमी को महान-महनीय, सुविधा के टुकड़े पर जीने वाला नया इतिहास नहीं बना सकता । जयन्त विजयजी मुनिराज ने नया इतिहास बनाया ।

खुद के ज्ञान पर भरोसा और गुरुदेव पर था विश्वास ।
जयन्तविजयजी ने बनाया एक नया इतिहास ।।

जयन्तविजयजी होने का अर्थ है हजारों मनकों में अलग चमकने वाला हीरा और वो भी कोहिनूर हीरा, कोहिनूर जहाँ भी गया चमका - आचार्यश्री जहाँ भी गये जगमगाये । पुरुषार्थ के पराक्रम की परकाष्ठा की चरम सीमा हैं वे, एक वाक्य में क्षमता-सामर्थ्य-प्रतिभा के परिपूर्णता के उच्चांक का एवरेस्ट हैं वे, वे संवेदना हैं, भावना हैं, एहसास हैं, जीवन में फूलों के खुशबुओं का वास हैं । वे जहाँ झुकते हैं वहाँ मंदिर बन जाते हैं, जहाँ रूकते हैं, वहाँ तीर्थ बन जाते हैं, वे जो लिखते हैं वह सूत्र, वे जो कहते हैं वह मंत्र । अंत में इतना ही कहूँगा कि मेरा ज्ञान सीमित है और उनका व्यक्तित्व असीमित ।

कहाँ से लाऊँ शब्द चयन कर, कहाँ से भाव जुटाऊँ ?
कैसे सृजन करूँ काव्य का, कैसे गुरुदेव तेरे गुण गाऊँ ?
ये इस युग का सौभाग्य है कि गुरुदेव इस युग में जन्मे।
और यह हमारा सौभाग्य है कि हम गुरुदेव के युग में जन्में ।।

# हुई पूजाएं, धर्म अनुष्ठानों की बारिश, भक्तों के मन हुए पुलकित

# लाभार्थियों का हुआ अनुमोदन

# वाह-वाह के साथ दी सभी ने बधाई

## द्वितीय दिवस

# देवताओं का किया आव्हान

**(दि. 12 फरवरी 2016, महासुद 5, शुक्रवार)**

बागरा की पावन, पुण्यमय भूमि पर महाशतकोत्सव में परम भक्तिभाव एवं निष्ठापूर्वक मंगल विधानों एवं भक्ति का क्रम प्रारंभ हो चुका है । महामहोत्सव के द्वितीय दिवस पूज्य राष्ट्रसंत, संघ शिरोमणि आचार्य देवेश श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. की मंगलकारी निश्रा एवं विशाल साधु भगवंत एवं साध्वीवृन्द के सान्निध्य में प्रभु भक्ति एवं पुण्यार्जन के विधिविधानों से भक्त पुण्योदय के इस महान यज्ञ में अपनी आहुती देने निरंतर पधार रहे थे । प्रातः मुनिश्री निपुणरत्नविजयजी म.सा. के सान्निध्य में भक्तामर पाठ किया गया । तत्पश्चात् शुभ मुहूर्त में श्री मंदिरजी में पूज्य गुरुदेवश्री की निश्रा में लाभार्थी शा. धनरूपचंदजी भेराजी खांटेड संघवी परिवार द्वारा श्री नवग्रह पाटला की स्थापना भावपूर्वक की गई । विधिकारकों द्वारा मंत्रोच्चार के साथ सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु, केतु, नवग्रहों का आह्वान कर विधि- विधान पूर्वक स्थापना करवाई गई । इसके पश्चात दसों-दिशाओं का आह्वान किया गया एवं दसों-दिशाओं के अधिपतियों का मंत्रोच्चार के साथ आह्वान कर लाभार्थी श्री चतराजी मोतीजी धार परमार गौत्र परिवार के सदस्यों द्वारा श्रद्धाभाव से पूजन किया गया । दशदिग्पाल पाटले का पूजन कर अष्टप्रकारी पूजा पूर्ण की। इसके बाद लाभार्थी शा.

चेलमलजी तोलाजी खांटेड संघवी परिवार के परिवारजनों द्वारा श्री अष्टमंगल पाटला पूजन का भावपूर्वक पूज्य मुनिभगवंतों द्वारा मंत्रोच्चार एवं वासक्षेप देकर पूर्ण किया गया।

दोपहर में मंदिर में विधिकारक श्री सत्यविजयजी हरण श्री त्रिलोकजी कांकरिया एवं श्री प्रशन्तचंदजी ने विधि-विधानपूर्वक मंत्रोच्चार के साथ लाभार्थी शांतिलालजी केशाजी अम्बा गौत्र चौहान (श्रोणी) परिवार द्वारा श्री कल्याण मंदिर महापूजन सम्पन्न किया। प्रभु भक्ति के मधुर स्तवनों से पूरा प्रांगण पवित्र हो गया। सभी भक्तों ने श्रद्धा पूर्वक बड़ी संख्या में इस महापूजन में भाग लिया। रात्रि भक्ति में संगीतकारों द्वारा सर्व अनिष्ट निवारक श्री नवकार मंत्र के पावन मंगलाचरण से भक्ति की शुरूआत की गई। आज विशेष रूप से आए भाई राजु मालपुरा ने अपने भक्ति गीतों से सभी भक्तों को भक्ति में भावविभोर हो झूमने पर मजबूर कर दिया। 'तूने खूब दिया दादा तेरा बहुत बड़ा उपकार', 'दीवाना तेरा आया दादा तेरी नगरी में' जैसे भक्ति गीतों की सुरावलियों से जनमानस को भक्ति से आडोलित कर दिया।

# पूजा पाठ में तल्लीन भक्त परिवार

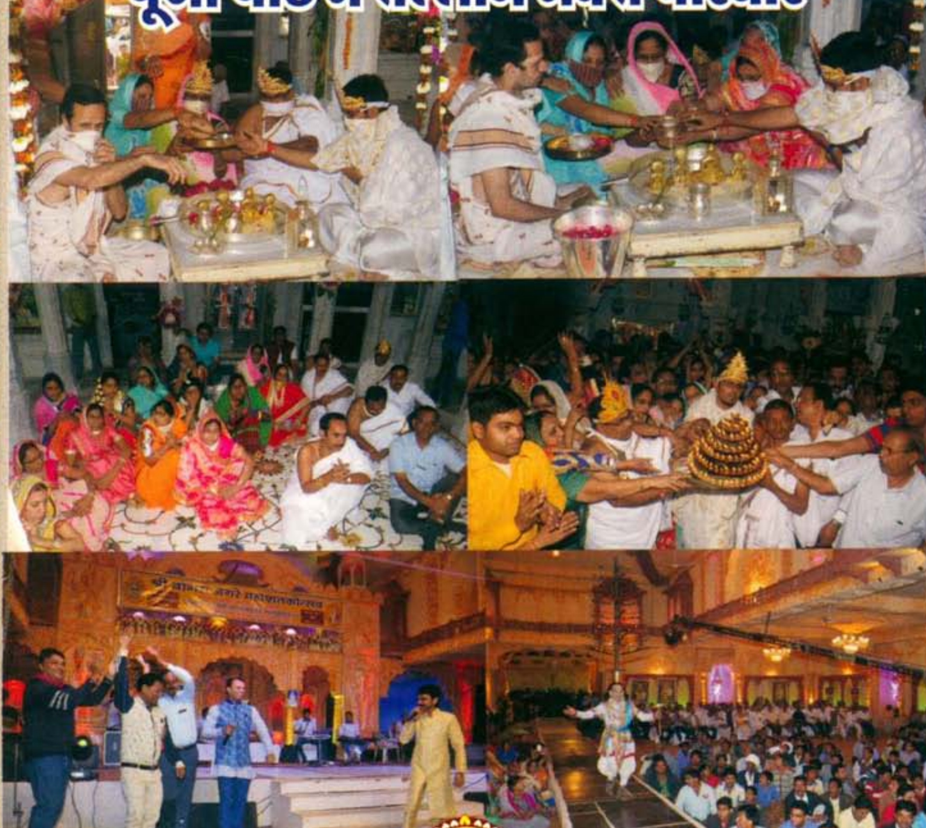

बागरा के 100 वर्ष

# परिवार हुए धन्य, धन का सद्व्यय कर

# हमारा अभिवादन लाभार्थी परिवारों को

तृतीय दिवस

# मुनि भगवंतों की वाणी से सराबोर हुए बागरावासी

(दि. 13 फरवरी 2016, महासुद 6, शनिवार)

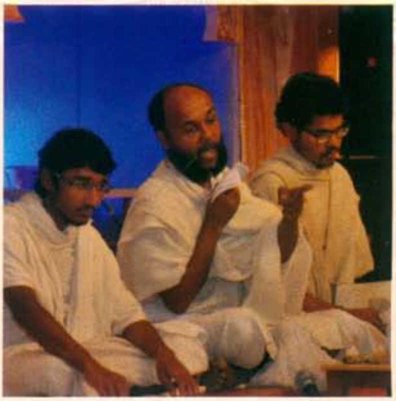

बागरा मंडल श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ प्रभु के जिनालय के महाशतकोत्सव में धर्मक्रियाओं का क्रम गति ले चुका है । पूज्य गच्छाधिपति, युग प्रभावक जन-जन की आस्था एवं विश्वास के केन्द्र श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के प्रभावी सान्निध्य में महा-महोत्सव के तृतीय दिवस में श्री श्रावस्ती नगरी के विशाल पांडाल में मुनिराज श्री निपुणरत्नविजयजी ने प्रवचन सभा को उपदेशित करते हुए फरमाया कि सर्वत्र 'चमत्कार को नमस्कार' करने की ही बात कही जाती है परन्तु मेरे भगवंत और पूज्य गुरुदेव कहते हैं कि 'नमस्कार से ही चमत्कार सम्भव है' नमस्कार का अर्थ है समर्पण । जीवन में गुरु का बड़ा ही महत्व है। जीवन के प्रत्येक पड़ाव पर गुरु किसी न किसी रूप में हमारा पथ प्रदर्शन करते हैं । जब हम बाल्यकाल में होते हैं तो हमारी माँ गुरु की भूमिका निभाती है यहीं से हमारे शिक्षा का बीजारोपण होता है । इसके बाद स्कूल-कॉलेज में पहुंचने पर वहां भी शिक्षा के लिए शिक्षक अर्थात् गुरु ही मार्गदर्शन करते हैं। उसके बाद बारी आती है जीवन को सार्थक बनाने के लिए मार्गदर्शन की तब हमारे सद्गुरु ही हमारा मार्ग प्रशस्त करते हैं। अतः हमें एक बार नहीं, सौ बार सोचकर निर्णय करना चाहिए कि मैं जिस गुरुदेव को अपने आराध्य के रूप में स्वीकार करूँ, जिनके माध्यम से मुझे वीतराग प्रभु की वाणी का ज्ञान मिले जिस पर मैं उसकी ओर अग्रसर होऊँ । हमें हमेशा अन्तःकरण से समर्पण का भाव रखना चाहिए, बिना समर्पण के कोई उपलब्धि नहीं मिलती । पूज्य गुरुदेव आत्मकल्याण के लिये जो मार्ग बताये उस पर आगे ही बढ़ते रहना है ।

आपश्री ने बताया कि सभी समस्याओं का समाधान यही है कि 'तुम उलझना छोड़ दो, इधर-उधर भटकना छोड़ दो' सिर्फ एक ही दृढ़ निर्णय हो कि गुरुदेव द्वारा उपदेशित जिनवाणी के अलावा मुझे और किसी भी मार्ग में उलझना या भटकना नहीं है। मुनिश्री ने जानकार और समझदार में फर्क बताते हुए कहा कि ज्ञान को जानने वाला 'जानकार' है किन्तु जो सत्य स्वरूप को जानकर उसे जीवन में कार्यान्वित करता है वह 'समझदार' है। अंत में आपने फरमाया कि शताब्दी महोत्सव में प्रतिदिन प्रवचन व धार्मिक कार्यों में कुछ न कुछ त्याग का अभिग्रह जरूर लें तभी यहाँ आने का मकसद सार्थक होगा।

बालमुनि श्री प्रसिद्धरत्नविजयजी म.सा. ने जिन्होंने सिर्फ चार वर्ष पूर्व ही संयम जीवन अंगीकार किया है प्रवचन सभा को संबोधित करते हुए बहुत ही परिपक्व व ज्ञानमयी वाणी से दशवैकल्पिक सूत्र में परिभाषित चार कषायों का संक्षिप्त वर्णन किया और कहा कि इनको छोड़े बिना मुक्ति का मार्ग सम्भव नहीं है। इन चार कषायों में 'क्रोध-मान-माया और लोभ' है जिनमें क्रोध से प्रेम का नाश होता है, मान से विनय का, माया से मित्र का और लोभ से तो सर्वनाश निश्चित है। ये चारों ही कषाय हमारे शत्रु हैं जो हमें इस संसार में घेरे रखते हैं, इनका त्याग किये बिना गुरुदेव उपदेशित मार्ग पाना असम्भव है। आपने फरमाया अगर अपने आराध्य से कुछ मांगती है तो 1. चित्त की प्रसन्नता, 2. हृदय की विशालता एवं 3. वचन की मधुरता ये तीन गुण मांगो जिन्हें हमारे परमात्मा तीर्थंकरों ने भी धारण किये थे। उन पर कितने ही उपसर्ग हुए, उन्हें कई प्रकार से असहनीय कष्ट दिए गए, कानों में खीले ठोके गए, पैरों में खीर पकाई गई, दैत्य रूप धारणकर डराया, धमकाया गया मगर वे कभी विचलित नहीं हुए। चित्त की एकाग्रता में रहकर विशाल हृदय से सभी को क्षमा कर उनका भी उद्धार किया। मैंने किसी पूर्व जन्म में इन्हें दुःख दिया होगा, यह नाशवान है, इनका उद्देश्य मुझे प्रताड़ित करना नहीं, मुझे इनसे कोई वैर नहीं आदि

भावों से क्षमा मांगते हैं व क्षमा प्रदान करते हुए 'मिच्छामि दुक्कड़म' के भाव से सभी का कल्याण किया।

ऐसी ही अनुभूति हमारे अन्दर भी हो ऐसा प्रयास करें तभी आत्मकल्याण सम्भव है।

इसी क्रम में मंगलवारी वेला में श्री पार्श्वनाथ जिनालय में विधिकारक श्री सत्यविजयजी हरण, श्री त्रिलोक कांकरिया एवं प्रसन्नचंदजी ने विधि-विधान से मुनि भगवंतों की निश्रा एवं निर्देशन में मंत्रोच्चार के साथ सिद्धचक्र पाटला पूजन प्रारंभ किया। श्री सिद्धचक्र पाटला पूजन के लाभार्थी शा. फतेहचंदजी गुलाबचंद लुणिया परिवार के सदस्यों द्वारा भावपूर्वक जल, चंदन, पुष्प, धूप, दीप, अक्षत, नैवेद्य एवं फल अर्पण कर अष्टप्रकारी पूजा विधान पूर्ण करके श्री सिद्धचक्र पाटला की स्थापना विधि पूर्ण की गई।

इसके बाद विधिकारकों ने मंत्रोच्चार द्वारा बीस स्थानक पाटला पूजन कराया। लाभार्थी शा. मंछाजी नरसिंगजी अम्बा गौत्र धार परमार परिवार के कुटुम्बजनों ने आत्मभाव से वीस स्थानक पाटला पूजन विधान पूर्ण किया।

तत्काल बाद श्री नंद्यावर्त पाटला पूजन की क्रिया विधि प्रारंभ की गई। लाभार्थी शा. कपूरचंदजी लखमाजी बावलेचा चौहान परिवार द्वारा नद्यावर्त पाटला पूजन पर अष्टप्रकारी पूजन का विधान विधि पूर्वक सम्पन्न कराया। पूज्य मुनिगणों द्वारा वासक्षेप देकर सभी मंगल विधान पूर्ण किये गये। समस्त स्मृति प्रतिकों को पीले, लाल एवं सफेद वस्त्रों से लपेटकर रखा गया।

दिन में विजय मुहूर्त में सुमधुर संगीत की सुरावलियों की धुन के साथ विधिकारकों के मंत्रोच्चार एवं निर्देशन में श्री गौतम स्वामी महापूजन का भव्य आयोजन सम्पन्न किया गया। लाभार्थी शा. बाबुलालजी मिश्रीमलजी गोल गौत्र परिवार द्वारा भावपूर्वक महापूजन किया गया। 'राजकाल सुभक्ति करले गीत सुनावे गावे लो', 'पंखीड़ा रे उड़ी न जाजे पालीताणा रे' भक्ति गीतों की धुन पर झूमते हुए भक्तिभाव से पूजन पढ़ाई गई।

रात्रि भक्ति श्री पंचपरमेष्ठि नवकार महामंत्र से प्रारंभ की गई। रंगारंग भक्ति के प्रख्यात गायक देवेश जैन ने अपने भक्ति गीतों से भक्तों को आनंदित कर दिया। भाई देवेश ने 'ऊँचा अम्बर थी आवों नी प्रभुजी दर्शन करवाने तरसे आखड़ी', 'जब कोई नहीं आता मेरे दादा आते है' 'मेरे सिर पर रख दो दादा अपने ये दोनों हाथ' जैसे गीतों की प्रस्तुति देकर भक्तों को भक्ति में डुबो दिया। वहीं भक्ति में आए जैन जादूगर ने अपने जादू से सबको मंत्रमुग्ध कर दिया। अपनी जादुई कला से अनेक प्रस्तुतियाँ देकर खूब तालियां बटोरी।

# विभिन्न स्थापनाओं की क्रिया विधि

# सम्पन्न करते लाभार्थी परिवार

सद्व्यय में किया उपयोग
द्रव्य का जिनने उनको दिया सम्मान

# लाभार्थी परिवारों के सम्मान की बहार

## चतुर्थ दिवस

# गुरु संयम अनुमोदनार्थ उमड़े भक्त दिखा अटूट श्रद्धा का मनोहारी दृश्य

**(दि. 14 फरवरी 2016, महासुद 7, रविवार)**

बागरावासी परम गुरुभक्ति का परिचय देते हुए गुरुभक्ति से ओतप्रोत श्री श्रावस्ती नगरी के भक्तिमण्डप में एकत्रित हुए । पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवंत समस्त साधु-साध्वी भगवंतों के साथ पधारते हैं । गुरुदेव की जय-जयकार के नारों से गुंजन होने लगता है । पूज्य गुरुदेव पाट पर विराजमान होकर धर्मसभा को गौरवान्वित करते हैं । सभी गुरुभक्तों द्वारा सामूहिक गुरुवन्दन कर कार्यक्रम की शुरूआत की जाती है । आज की महासभा का कार्यक्रम पूज्य आचार्य भगवंत के 63 वें संयमोत्सव की अनुमोदनार्थ समर्पित था। इस अवसर पर संगीतकार श्री राजेन्द्रजी करनपुरिया ने गुरुभक्ति के गीतों की सरगम छेड़ी गुरुदेव के प्रति भाव व्यक्त करते हुए सुन्दर गीत के माध्यम से गुरुदेव को आत्मा का प्रधान डॉक्टर बताते हुए भावपूर्ण अनुमोदना समर्पित की । आपने कहा गुरुदेव आप ऐसे प्रतिभाशाली डॉक्टर

बागरा नगर में नित्य पूज्य गुरुदेव एवं साधु भगवंतों की ज्ञानमयी अमृत वाणी की फुहार, नगर की माटी में भक्ति से ओतप्रोत भीनी-भीनी खुशबू, मन मयूर को आनंदित कर देती है । जहाँ देखो उत्सव का माहौल दिखाई देता है । एकादशान्हिका महामहोत्सव में प्रभु श्री पार्श्वनाथ की कृपा भक्तों पर बरस रही है । महाशतकोत्सव को ज्ञानरूपि प्रकाश से प्रकाशित कर पूज्य राष्ट्रसंत, वर्तमानाचार्य गुरुदेव श्री जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा. अपनी ओजस्विता से सम्पूर्ण महोत्सव को देदीप्यमान कर रहे हैं । महाशतकोत्सव के चतुर्थ दिवस प्रातः सभी

हैं, जो आत्मा को लगे रोगों अर्थात् दुर्गुणों का इलाज करते हैं, जो व्यक्ति इनकी दवाई को नियमित समय के साथ भाव से लेता है, वह शीघ्र ही स्वस्थ हो जाता है, अर्थात् आत्मकल्याण के मार्ग का अनुगामी बन जाता है । संचालक श्री विनोद आचार्य ने अपनी बुलंद आवाज में एवं श्री दीपक करनपुरिया ने भक्ति गीतों की सरगम के साथ-साथ,अपनी-अपनी कला के माध्यम से गुरुदेव के संयमोत्सव का आराध्यमयी गुणगान गीतों और दोहों से किया ।

इस अवसर पर अनेक गुरुभक्तों ने अपने आराध्य गुरुदेव के आराध्यमयी जीवन की वन्दना करते हुए अपने मन के उद्गार प्रकट किए । श्री नरेन्द्र भाई पोरवाल ने पूज्य गुरुदेव के सम्पूर्ण जीवन का परिचय श्रद्धानवत होकर अपनी सरस्वती स्वरूप वाणी से किया जिसमें पूज्य आचार्यश्री के यशस्वी जीवन की गाथा सुनाई एवं बीच-बीच में दोहे और कविताओं के माध्यम से भी अलंकृत किया । आपने बताया कि किस प्रकार थराद के पास एक छोटे से गांव पेपराल में जन्मे पूनमचन्द्र आज सम्पूर्ण जैन आकाश में सूर्य के समान अपने ज्ञान एवं तप की ऊर्जा एवं रोशनी से सम्पूर्ण जैन जगत को प्रकाशित कर रहे हैं । श्री पुखराजजी ने जो गुरुदेव के बालसखा हैं, अपने बाल्यकाल की बातों का विस्मरण किया, कई प्रसंगों का वर्णन कर बाल्यकाल से ही गुरुदेव की जिनशासन के एवं अपने आराध्य गुरुदेव के प्रति समर्पण भावना का बखान किया। श्री अमृतलालजी ने गुरुदेव के उपकारों का विनय वन्दनीय भाव से नमन किया । श्री सुखराजजी ने अपनी भावना व्यक्त करते हुए गुरुदेव के प्रति श्रद्धा भाव व्यक्त किया आपने बताया कि पूज्य गुरुदेव असंभव को भी संभव कर देते हैं । समाज एवं संघ के कई वरिष्ठजनों ने भी अपनी-अपनी भावना व्यक्त कर गुरुदेव

के संयम जीवन की अनुमोदना की।

पूज्य चिंतामणि गुरुदेव ने अपने प्रवचन में सभी बागरावासियों को आशीर्वाद देते हुए अपने पूर्व के समय का स्मरण बागरा की स्मृतियों को याद किया। पूज्यश्री ने फरमाया आज से करीब 65 वर्ष पूर्व मैं प्रथम बार बागरा पहुंचा और शाम के प्रतिक्रमण में जो श्रावकों की उपस्थिति देखी उस आत्मीय आनन्द को मैंने मेरे आराध्य श्री यतीन्द्रसूरीश्वरजी गुरुदेव के सामने रखा । तब गुरुदेव ने बताया कि पूनमचन्द, यह बागरा धर्ममयी नगरी है, यहाँ के निवासी धर्म आराधना में सदैव मग्न रहते हैं । आपश्री ने बताया इसी वजह से जितना लगाव गुरुदेव को बागरा नगर से था, उससे कहीं श्रद्धा अधिक यहाँ के ग्रामवासियों की पू. गुरुदेव के प्रति थी । बागरा मेरे आराध्य गुरु का धर्मप्रिय नगर है अतः स्वाभाविक है मेरा भी इस नगर से वैसा ही अनुराग है । मेरी आध्यात्मिक शिक्षा का यह प्रथम नगर है, इसी नगर से मैंने प्रथम 'सिद्धाचल तीर्थ' की यात्रा की थी । जो मात्र 17 दिनों में पूर्ण की थी ।

मुनि श्री निपुणरत्नविजयजी ने फरमाया कि गुरुदेव जब 17 वर्ष की उम्र के थे तब 17 दिनों में बागरा से सिद्धाचल पहुंचे थे और आज 80 वर्ष की उम्र में भी मात्र 17 दिनों में ही सिद्धाचल से बागरा पधारे हैं यह गुरुदेव का बागरा के प्रति आत्मिय भाव एवं प्रीत को दर्शाता है । उस समय पूज्य गुरुदेव के साथ मात्र दो व्यक्ति थे परन्तु आज विशाल श्रमण-श्रमणियों का समुदाय एवं असंख्य गुरुभक्त साथ हैं । आपके साथ त्रिस्तुतिक समाज ही नहीं, सम्पूर्ण विश्व का जन-जन जुड़ा हुआ है । आपकी निरंतर 63 वर्ष के कठोर चारित्र पालन और धर्म आराधना, अनुशासन एवं संघ व समाज के प्रति समर्पण भाव से ही इस महान उपलब्धि का गौरव प्राप्त हुआ है । जिससे आज सम्पूर्ण जगत में त्रिस्तुतिक संघ की पताका फहरा रही है ।

गुरु भक्तों से खचाखच भरे इस पाण्डाल में प्रवचन और पू. गुरुदेव के गुणानुवाद के दौरान जय गुरुदेव, जय गुरुदेव, गुरुजी हमारो अंतर्नाद-हमने आपो आशीर्वाद के भावमयी जयकारों से बार-बार सभा मण्डप गूंज उठा । भक्तों में जो उत्साह, उमंग एवं गुरुदेव के प्रति जो आस्था की भावना देखने को मिली वह भी अविस्मरणीय थी ।

इस गरिमामयी अनुमोदना के अवसर पर आज की सभा का मुख्य आकर्षण 'श्री नरेन्द्रकुमारजी पोरवाल' थे जिन्हें गुरुदेव के श्रीमुख से त्रिस्तुतिक समाज की ओर से 'समाज गौरव' से विभूषित किया गया । यह सम्पूर्ण शास्त्रोक्त है, गुणीजन की महिमा होनी चाहिए, जिससे समाज में जागृति आये, जिन्हें सम्मान मिलता है उन्हें सम्मान पद व प्रतिष्ठा से कोई विशेष लगाव नहीं होता है वे तो आत्म एवं परकल्याण की भावना से समाजसेवा को अपना कर्तव्य समझकर निरंतर कर्मठ रहते हैं । आज समस्त बागरावासियों को खुशी है कि

उनके नगरवासी, सखा, मित्र, धर्मभाई को यह उचित सम्मान मिला।

इसी अवसर पर श्री जैन संघ जालोर, श्री जैन संघ उज्जैन एवं 68 जिनालय मोदरा के ट्रस्टीगण गुरुदेव को वंदन करने पधारे एवं उनके सम्मुख अपनी-अपनी मनोइच्छा प्रकट की। बागरा श्रीसंघ द्वारा सभी मेहमानों का हार्दिक स्वागत किया गया।

दोपहर में श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनालय के क्रियामण्डप में लाभार्थी शा. मगराजजी नरसिंगजी गौत्र श्री श्री वंश परमार परिवार द्वारा श्री राजेन्द्रसूरि गुरुपद महापूजन भक्तिभाव से किया गया।

विधिकारक श्री सत्यविजयजी, त्रिलोकजी कांकरिया एवं प्रसन्नचंदजी ने मंत्रोच्चार एवं विविध क्रियाओं से महापूजन सम्पन्न कराया। श्री मनमधुकर ग्रुप के भाई राजु एवं साथी कलाकारों ने 'गुरु ज्ञान गुणया तरया', 'सत्कर्म का झंडा जिनमत में फहराया राजेन्द्र सूरीश्वर ने' 'चिंतामणि धन पायो... महा महोत्सव आयो' जैसे भक्ति स्तवनों सुमधुर झनकार के साथ भाव पूर्वक पूजा पढ़ाई गई।

रात्रि भक्ति में 'मंत्र नमोकार हमें प्राण से प्यारा' की प्रस्तुति एवं महामंत्र नवकार के भक्तिमय मंगलाचरण से भक्ति संध्या का आगाज किया गया। आज की रात्रि भक्ति में विशेष रूप से उज्जैन से नाटक मंडल द्वारा मनमोहक नाटक की प्रस्तुति दी गई। कलाकारों ने नाटक के माध्यम से धर्म का भक्तिमय तरीके से संदेश दिया। जिसका सभी भक्तों पर बहुत ही अच्छा प्रभाव पड़ा सभी ने नाटक की खूब अनुमोदना की।

श्री राजेन्द्रसूरि गुरूपद महापूजन

प्रस्तुति देते हुए उज्जैन के कलाकार

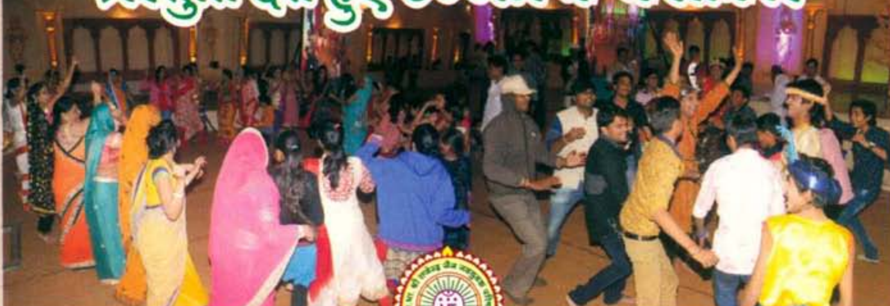

# हम है समर्पित गुरू के चरणों में

# गुरु चरणों के पास, अपरिमित बना उल्लास

## पंचम दिवस

# संगीत की स्वर लहरियों के साथ हुआ प्रभु के पंचकल्याणक का आगाज

**(दि. 15 फरवरी 2016, महासुद 8, सोमवार)**

बागरा नगर में शतकोत्सव शनैः शनैः परवान पर चढ़ता जा रहा था एक-एक कर दिन गुजर रहे थे प्रत्येक दिन के साथ बागरावासियों का उत्साह भी परवान चढ़ता जा रहा था । आज बागरा नगर में एक अनोखा ऐतिहासिक पृष्ठ जुड़ने जा रहा था । महाशतकोत्सव के इस अद्भुत, अलौकिक महामहोत्सव में जैन जगत में पहली बार नौ इंची श्री पार्श्वनाथ प्रभु की पंचधातु का अंजनशलाका

महोत्सव का आगाज होने जा रहा था । आज सम्पूर्ण वातावरण में एवं वायु में सुगंध फैल रही थी । जिस क्षण के लिये देवता भी तरसते हैं वह क्षण आज बागरा नगर में प्रभु के पंचकल्याणक की शुरूआत के साथ आ गया । पंच कल्याणकों में सर्वप्रथम कल्याणक च्वयन कल्याणक और वो भी युग प्रभावक, तीर्थप्रेरक, सुविशाल गच्छाधिपति राष्ट्रसंत श्रीमद् विजयजयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. एवं विशाल साधु-साध्वीवृंद की निश्रा में उनके शुभ कर-कमलों से सम्पन्न होने जा रहा था ।

चारों ओर बैंड-बाजों, शहनाई, शंख, ढोल आदि से वातावरण प्रभु भक्ति के गीतों में तल्लीन है, आज सूर्य की किरणें नई ऊर्जा का संचार करते हुए बागरा की धरती पर स्वर्णिम प्रकाश बिखेरने को लालायित हो रही है ।

पू. राष्ट्रसंत साहेब अपने साधु-साध्वी मंडल के साथ शहनाई व ढोल की थाप के साथ मंदिरजी में पधारते हैं । सभी उपस्थित भक्त गुरुदेव को वंदन करते हैं । पू. गुरुदेव च्यवन कल्याणक की क्रिया प्रारंभ करते हैं। सर्वप्रथम पंचधातु की मूर्ति पर वासक्षेप करते हैं । तत्पश्चात् मूर्ति को माँ वामा देवी की कुक्षी के प्रतीक स्वरूप एक

पात्र में दूध में रखा जाता है तथा उसे पीले वस्त्र से, विधिकारकों द्वारा लपेट कर पवित्र मंत्रोच्चार करके प्रभु का च्यवत माता की कुक्षी में कराया जाता है।

प्रभु के च्यवन की खुशी से चारों ओर खुशी की लहर दौड़ जाती है। उपस्थित सभी भक्त नाचते-गाते हुए प्रभु भक्ति में लीन होकर झूमने लगते हैं एवं प्रभु के च्यवन की खुशी मनाते हैं। च्यवन कल्याणक के पश्चात सामूहिक भक्तामर स्त्रोत पाठ किया जाता है।

इसके पश्चात वाराणसी नगरी के भव्य पांडाल में भी प्रभु का च्यवन कल्याणक उत्सव मनाया जाता है। 'जिन शासन के राजा पधार रहे' के नारों से पूरा पांडाल गुंजायमान होता है। पू. गुरुदेव अपने समस्त साधु मण्डल के साथ पाट पर विराजते हैं। सभी भक्त सामूहिक गुरुवंदन करते हैं। वाराणसी नगरी के विशाल पांडाल में महाराजा अश्वसेन का भव्य दरबार सजा है। च्यवन कल्याणक महोत्सव की कड़ी को आगे बड़ाते हुए पूरे राजसी ठाठ-बाट के साथ महाराजा अश्वसेन, महारानी वामा देवी व अपने समस्त राजदरबारियों के साथ प्रवेश करते हैं। सभी अपने-अपने आसन पर विराजित होते हैं। आकर्षक नृत्य की प्रस्तुति होती है। प्रभु के माता-पिता बनने का लाभ लेने वाले लाभार्थी गुरुदेव को वंदन करते हैं। राजा अश्वसेन की भूमिका निभाते रहे शा. हंसराज चन्दनमलजी गुरुदेव को प्रणाम करते हुए विनती करते हैं कि गुरुदेव ! प्रभु श्री पार्श्वनाथ का पंच कल्याणक प्रारंभ होने जा रहा है। आपकी कृपा से हमें यह स्वर्णिम सौभाग्य मिला है। मेरी प्रभु से यही वन्दना है कि आपके पिता की भूमिका निभाते हुए हमारे शरीर का रोम-रोम पुलकित हो रहा है। हे प्रभु हमारे पापों का नाश कर जीवन को पवित्र बनाएँ।

भगवान की माता वामा देवी की भूमिका निभा रहीं श्रीमती संगीता देवी हंसराज पू. गुरुदेव एवं साध्वीवृंद को वन्दन कर प्रभु को नमन करते हुए कहती हैं कि हे प्रभु मेरा परम सौभाग्य है कि मुझे आपकी माता बनने का मंगलकारी यश प्राप्त हुआ है। हे प्रभु इस संसार में रहते हुए हमारे जीवन में हुए पापकर्म आदि को मिटाकर हमें भी पवित्र बना दो जिससे

राशि, बारहवें स्वप्न में देव विमान, तेरहवें स्वप्न में क्षीर समुद्र एवं चौदहवें स्वप्न में निर्धुंम अग्नि शिखा ऐसे चौदह महास्वप्न देखती हैं। जिनका बहुत ही सुन्दर एवं मनमोहक अभिनय बालिकाओं द्वारा हाथ में प्रतीक चिन्ह लेकर नृत्य करते हुए किया जाता है ।

हमारा भी कल्याण हो जाए । यही मंगल कामना है । इसके बाद परदा गिरता है ।

परदा उठता है वाराणसी नगरी में महाराजा अवश्वसेन के राजमहल में महारानी वामादेवी अपने शयनकक्ष में सुख शय्या पर विश्राम कर रही हैं । तभी माता वामा देवी 14 महास्वप्न देखती हैं । जिसमें सबसे पहले स्वप्न में प्रभु की माता अपने मुख मंडल से गजराज को मस्तानी चाल से आते हुए देखती हैं । एक प्यारी नन्हीं कन्या नृत्य करती हुई झूमते हुए हाथ में गजराज की प्रतिकृति लेकर माता वामा देवी की प्रदक्षिणा करते पहले स्वप्न का सुन्दर प्रदर्शन करती है । दूसरे स्वप्न में वृषभ, तीसरे स्वप्न में गर्जना करते हुए केसरी सिंह, चौथे स्वप्न में रुपवंती, चार हाथ वाली लक्ष्मीदेवी पांचवें स्वप्न में फूलमाला, छठें स्वप्न में पूर्ण चंद्रमा, सातवें स्वप्न में सूर्य, आठवें स्वप्न में धर्म ध्वजा, नौंवे स्वप्न में पूर्ण कलश, दसवें स्वप्न में पद्म सरोवर, ग्यारवें स्वप्न में रत्नों की

सातवें स्वप्न का अभिनय करने वाली बालिका का परिचय देते हुए संगीतकार ने बताया कि उसके द्वारा ढाई हजार गाथा कंठस्थ कर ली गई एवं पंच प्रतिक्रमण भी पूरा याद कर लिया गया है । समाज की ऐसी यशस्वी एवं धर्म क्रिया में संलग्न बेटी की हम अनुमोदना करते हैं । इस पर बालिका द्वारा सुन्दर पंक्तियाँ प्रस्तुत कि गईं

'ज्ञान व्यक्ति का पंख होता है– 2, ज्ञान व्यक्ति का विश्राम होता है ज्ञान को प्राप्त करने वाला महान होता है, ज्ञान के इस उद्यान में जो ज्ञान की सुगंध से वंचित रह जाए उसका जीवन मात्र धूल होता है ।'

च्यवन कल्याणक महोत्सव में भा.ज.पा. के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री ओमजी माथुर, पूर्व सांसद श्री पुष्प जैन एवं भाजपा के प्रदेश युवा मोर्चा के श्री नरेशजी ओझा एवं चिरंजीलालजी दवे ने विशेष अतिथि के रूप में शिरकत की । सभी पधारे अतिथियों का मंच पर हार, श्रीफल,

तिलक एवं चांदी के सिक्के से लाभार्थी परिवार एवं श्री संघ द्वारा बहुमान किया गया।

अपने उद्‌बोधन में श्री माथुरजी ने गुरुदेव एवं सभी साधु-साध्वियों को वंदन करते हुए कहा कि, मैं संयोगवश मारवाड़ आया हुआ था । मैं इसी क्षेत्र में जन्मा हूँ । मेरा बागरा आने का मन कम था परन्तु जब मुझे ज्ञात हुआ कि इस महोत्सव को निश्रा पू. श्री जयंतेसन सूरीश्वरजी म.सा. प्रदान कर रहे हैं तो मुझसे रहा न गया एवं मैं गुरुदेव के दर्शन की भावना से चला आया । पूरे मारवाड़ में बागरा में ही ऐसा मंदिर है जो अपनी शताब्दी पूर्ण कर तीर्थ बनने जा रहा है । यहाँ के प्रवासी बंधु भी इस धरती के प्रति हमेशा समर्पित रहते हैं जब भी कोई विपदा आती है तो उन क्षणों में वे दिल खोलकर सहायता करते हैं । हम जैसे राजनेताओं से देश नहीं चलता । पू. गुरुदेव जैसे संतों से ही समाज व देश को नई दिशा प्राप्त होती है । ऐसे तपस्वी पुरुष ही युवाओं को राजनीति, धर्म, संस्कृति हर जगह सच्चे मन से कार्य करने की प्रेरणा देते हैं ।

पाली के पूर्व सांसद एवं महावीर इंटरनेशनल संस्था के चेयरमेन श्री पुष्पजी जैन ने गुरु भगवंतों को वंदन करते हुए कहा कि गुरुदेव का मेरे सर पर बहुत आशीर्वाद है। मैं गुरुदेव की उपस्थिति की बात सुनकर श्री माथुर के साथ चला आया । एक बार दिल्ली प्रवास के दौरान गुरुदेव ने इच्छा व्यक्त की थी कि मुझे देश को चलाने वाली सांसद देखना है । तब पू. गुरुदेव ने सांसद का दौरा किया था एवं राष्ट्रपति को गुरुदेवश्री ने राजेन्द्रसूरिजी द्वारा रचित ग्रंथ भेंट किया था। जो हमारे लिये गौरव की बात है क्योंकि वह ग्रंथ वर्षों तक राष्ट्रपति ग्रंथालय में संग्रहित रहेगा । हम सभी गुरुभगवंतों को मानते हैं पर उनकी बात का चिंतन नहीं करते हैं । मैं गुरुदेव के दिखाए मार्ग पर चल रहा हूँ गुरुदेव का आशीर्वाद हमेशा सब पर बना रहे । सभी पधारे हुए मुख्य अतिथियों ने पू. गुरुदेव से आशीर्वाद लेकर श्रीसंघ के सदस्यों के साथ पूरे महामहोत्सव व प्रभु श्री पार्श्वनाथ के मंदिर का अवलोकन किया। सभी ने इस महामहोत्सव व सुंदर व्यवस्था की

को ज्ञानार्जन के लिए शिविर में भेजकर जिनशासन का भविष्य और मजबूत करें साथ ही परिवार में आत्मकल्याण के प्रति भाव को जागृत करें।

पुनः च्यवन कल्याणक का क्रम प्रारंभ होता है। वाराणसी नगरी में भगवान के माता की कुक्षी में च्यवन होने पर इन्द्र का सिंहासन चलायमान होता है। जिससे इन्द्र क्रोधित होते हैं तब इन्द्राणी, इंद्र से अपने अवधिज्ञान का प्रयोग कर वास्तविकता का पता लगाने का निवेदन करती है। इन्द्र अपने अवधिज्ञान से जान जाते हैं कि तीनों लोकों के नाथ का च्यवन होने के कारण मेरा सिंहासन चलायमान हुआ है। तब वह पश्चाताप कर प्रभु से क्षमायाचना करते हैं। इधर वाराणसी नगरी में माता वामा देवी चौदह स्वप्नों को देख जागृत अवस्था में आती हैं। उनके मन में आनन्द हिलौरे खा रहा है वे देखे गए स्वप्नों के बारे में जानने को व्याकुल हो उठती हैं एवं दिव्य स्वप्नों की बात महाराजा

भूरी-भूरी प्रशंसा की। इसी क्रम में मालवा प्रांत में चातुर्मास विनंति लेकर श्री सुरेशजी तांतेड़, श्री सुशीलजी गिरीया, श्री सुशीलजी छाजेड़ एवं मालवा प्रांत के वरिष्ठजन आदि कई जन पूज्य आचार्य भगवंत से भावभरी विनती हेतु पधारे एवं गुरुदेव से विनंती की, कि आज बागरा नगर में स्वप्न महोत्सव चल रहा है गुरुदेव से प्रार्थना है कि वे हमारा भी स्वप्न पूर्ण करे अगला चातुर्मास म.प्र. में करने की कृपा करें। मालवा प्रांत से आए वरिष्ठजनों का लाभार्थियों एवं श्रीसंघ द्वारा बहुमान किया गया। पूज्य गुरुदेव ने फरमाया कि आगे जो शाश्वत ओली आ रही है, वह भीनमाल नगर के 72 जिनालय में होगी, सभी धर्मानुरागी वहाँ आकर अवश्य ही ओली तप करने की भावना रखें। आचार्य भगवंत ने कहा, ओलीजी के पश्चात 7 दिनों का बच्चों और युवाओं के लिए ज्ञान शिविर का आयोजन भी वहीं 72 जिनालय में ही रखा गया है, अतः अपनी भावी पीढ़ी

को बताने का निर्णय कर महाराज के पास जाकर हर्ष से स्वप्नों का वर्णन करती हैं । महाराज, महारानी की बात सुनकर उन्हें महामंत्र नवकार का जाप करने का निवेदन करते हैं । राजदरबार में पहुंचकर महाराज राजदरबार की कार्यवाही प्रारंभ करते हैं एवं प्रजा का हालचाल पूछते हैं तब सभी मंत्रीगण बताते है कि प्रजा बड़े ही आनंद से रह रही है चारों ओर खुशहाली का वातावरण है । तब महाराज महामंत्री को महारानी द्वारा देखे गए स्वप्नों के बारे में अवगत कराते हैं एवं राज ज्योतिष को बुलाने का आदेश देकर महारानी संग प्रभु दर्शन को जाते हैं ।

दोपहर में मंदिरजी के क्रिया मण्डप में लाभार्थी श्री शा. सौभागमलजी पूनमचंदजी लाम्ब गौत्र चौहान परिवार द्वारा श्री नमिऊंण महापूजन का भव्य आयोजन किया जिसमें मन मधुकर ग्रुप नागदा जं. एवं उनके साथी कलाकारों द्वारा 'तेरे दरबार में दादा खुशी मिलती है', 'दर्शन करते हृदय की कलियां खिलती है', 'पलक-पलक बिछाएंगे जिस दिन प्यारे दादा पधारेंगे' जैसे गीतों की स्वर लहरियों के साथ पूजा सम्पन्न करवाई । मंत्रोच्चार श्री सत्यविजयजी हरण एवं श्री त्रिलोकजी कांकरिया द्वारा किया गया। पूजा में शुभ निश्रा श्री चारित्र रत्नविजयजी म.सा. ने प्रदान की एवं मंत्रोच्चार किया । साध्वीश्री मुक्तिनिधीश्रीजी, तपानिधीश्रीजी, सिद्धलताश्रीजी, भक्तिरसाश्रीजी, विद्यालताश्रीजी ने भी निश्रा प्रदान की । मुनि साधु भगवंतों को अध्यापन कराने वाले भाई पं. श्री धरणेन्द्रजी ने बताया कि पूरे विश्व में सभी तीर्थंकरों में से श्री पार्श्वनाथ की गाथा गाने एवं सबसे अधिक मंदिर होने व सभी देवों में सर्वाधिक महिमा होने का कारण यह है कि उन्होंने अपने देव भव में 500 कल्याणकों की आराधना की थी । अन्त में 108 दीपक द्वारा प्रभु की आरती उतारी गई । सभी भक्तों ने नाचते हुए चंवर झुलाते हुए झूमकर भक्ति नृत्य किया । इस पुण्य अवसर पर पूरे मंदिर प्रांगण में महिला व पुरुष भक्तों की अपार संख्या उपस्थित थी।

सर्वसिद्धि कारक महामंत्र श्री नवकार महामंत्र के उच्चारण के साथ भव्य भक्ति संध्या का जमघट लगाया गया मुंबई से

आए श्री अभयजी तांतेड़ जिन्होंने अब तक कई विश्व प्रसिद्ध जैन गीतों को गाकर अपनी अलग पहचान बनाई है द्वारा 'शताब्दी उत्सव आया, गाओ झूमो नाचो...', 'बहता जीवन गुरुवर का गंगा सी धारा है, ऐसे जयंत गुरुवर सबका सहारा है', 'लेले नाम प्रभु का प्यारा, खुल जाए कर्म-कर्म का ताला' जैसे जोशीले भक्ति गीतों की सरगम छेड़कर भक्तिमय माहौल कर दिया।

इसी बीच आज की भक्ति एवं प्रभु आंगी के लाभार्थी परिवार का बहुमान किया गया।

मुंबई से आए श्री तरुण मोदी ने 'श्री जयंतसूरि का अजब-गजब का ठाठ है, वाह-वाह क्या बात है', प्रसिद्ध मारवाड़ी गीत 'झुलो रे झुलो थे तो वामा रा जाया' एवं बागरा में पधारे अतिथियों को समर्पित मालवा का प्रसिद्ध गीत 'रंग लागो रे, माने रंग लागो-माने जाणो है बागरा धाम' गीतों की प्रस्तुतियाँ दी। भक्ति गीतों में मगन होकर उपस्थित भक्त एवं ट्रस्ट मण्डल के सदस्य थिरक उठे।

बड़ौदा के डांस ग्रुप द्वारा शानदार भक्ति नृत्य की प्रस्तुति दी गई। अंत में 'चलो बुलावा आया है दादा ने बुलाया है', 'जब से तेरी मेरी मुलाकात हो गई', 'चिंतामणि धन पायो मैंने' आदि भक्ति गीतों की कर्णप्रिय प्रस्तुति दी एवं 'पापों के नाश को धर्म के प्रकाश को महावीर की सेना चली' गीत द्वारा भक्तों में जोश भर दिया।

# गुरूदेव के सान्निध्य में जन्म कल्याणक प्रारंभ

# सम्मान किया श्रीसंघ ने उदार गुरुभक्तों का

# बागरा में बही बहुमान की धारा

## षष्टम दिवस

# प्रियंवदा सखी ने दी प्रभु जन्म की बधाई : भक्ति में झूम उठे बागराजन

**(दि. 16 फरवरी 2016, महासुद 9, मंगलवार)**

बागरा नगर के जिनालय महाशताब्दी महोत्सव का षष्ठम एवं प्रभु श्री पार्श्वनाथ के पंच कल्याणक का दूसरा दिन । पक्षियों का मधुर कलरव, वायु में महोत्सव की सुगंध फैल रही है, प्रभु के सुन्दर स्तवनों से पूरा वातावरण पुलकित हो रहा है । आज बागरा नगर में एक दिव्यमान, अनंत सूर्यों का प्रकाश अपने अन्दर निहित किये, ब्राह्मण के समस्त जीवों के पालनहार, सृष्टि नायक प्रभु श्री पार्श्वनाथ भगवान का जन्म कल्याणक बागरा की पवित्र धरती पर होने जा रहा है । बागरावासियों का मन अपने देवाधिदेव का जन्मोत्सव मनाने के लिये लालायित हो रहा है । बागरा नगरी के प्रभु पार्श्वनाथ के तेज के आगे सूर्य का तेज भी फीका पड़ रहा था । सूर्य भी प्रभु के दर्शन करने एवं अपनी किरणों से प्रभु का प्रक्षाल करने को आतुर हो रहा था ।

प्रातः काल की पावन पवित्र वेला में पू. राष्ट्रसंत गच्छाधिपति श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा., वरिष्ठ मुनिराज श्री नित्यानंद विजय म.सा. एवं मुनि मंडल व साध्वी मंडल सहित गाजे-बाजे के साथ श्री पार्श्वनाथ मंदिर में पधारते हैं । गुरुदेव को सभी भक्त सामूहिक गुरुवंदन करते हैं पश्चात गुरुदेव के मंगलाचरण के बाद जन्मकल्याण विधान की क्रिया प्रारंभ होती है । मुनि श्री प्रशमसेन विजयजी म. द्वारा 'आज मने मल्या छे पार्श्वनाथ' सुन्दर स्तवन गाते हुए प्रभु की भाव भरी वंदना की गई । पूज्य गुरुदेव द्वारा वासक्षेप किया जाता है । विभिन्न हस्तमुद्राओं के साथ

पूज्य श्री मंत्रोच्चार करते हैं । सभी को सावधान किया जाता है । पीले वस्त्र से लपटे हुए कोठी आवरित पात्र से प्रभु प्रतिमा को निकालकर प्रभु जन्म कल्याणक की क्रिया विधि की जाती है। उपस्थित प्रभु के माता-पिता, इन्द्र-इद्राणी व सभी भक्त झूमने लगते हैं । विधिकारकों द्वारा मंत्रोच्चार

एवं शंखनाद किया जाता है । प्रभु की जय-जयकार से पूरा मंदिर प्रांगण गूंज उठता है । 'झीनो-झीनो उड़े रे गुलाल', 'राजकुमार जन्में है सब हरषाए', ' छाई बहार, छाई बहार, दुनिया का नाथ जाया राजकुमार' जैसे गीतों पर झूम-झूम कर भक्ति नृत्य करते हैं ।

जन्मकल्याणक विधान के बाद सामूहिक भक्तामर पाठ किया गया । मुनि श्री निपुणरत्नविजयजी म.सा. ने मंत्रोच्चार एवं स्तवन का पाठ किया ।

समस्त नगरवासी नवकारसी का लाभ लेकर वाराणसी नगरी के भव्य मण्डप में आने को आतुर हो रहे थे । क्या जैन क्या अजैन? बागरा नगर के प्रत्येक नगरवासी के मन में अपार आनन्द हिलौरे खा रहा था। आज प्रभु के जन्म कल्याणक का मंचन वाराणसी नगरी में देखने के लिये नगर एवं आसपास के लोग, त्रिभुवन के नाथ जिनके दर्शन मात्र से कई जन्मों के कर्म बन्ध मिट जाते हैं ऐसे प्रभु पार्श्वनाथ जन्मोत्सव के पावन-पुनित प्रसंग को कैसे जाने दे सकते हैं? धीरे-धीरे पूरा पांडाल भक्तों से भरता जाता है । पूज्य राष्ट्रसंत, प्रतिष्ठा शिरोमणि श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. मुनिमण्डल के साथ वाराणसी नगरी में पधारते हैं । शहनाई की मधुर ध्वनि, ढोल की गूंज एवं बैण्ड-बाजों के साथ पूज्य श्री का आगमन होता है । चारों ओर राष्ट्रसंत की जय-जयकार के नारे लगने लगते हैं । पूज्य गुरुदेव मुनिमंडल सह पाट पर विराजते हैं । साध्वी भगवन्त भी पाट पर विराजती हैं। समस्त भक्त सामूहिक गुरूवंदन करते हैं । पू. गुरुदेव की मांगलिक के बाद पंच परमेष्ठि श्री नवकार महामंत्र से पंच कल्याणक विधान की शुरूआत होती है। महाभारत के टाइटल सांग की धुन पर पंचकल्याणक के गीत से आरंभ किया जाता है । वाराणसी नगरी में महाराजा अश्वसेन के दरबार का

दृश्य, छड़ीदार द्वारा सबको सावधान किया जाता है। प्रजापालक, धर्म चक्रवर्ती शासन सम्राट महाराजा अश्वसेन की जय-जयकार से गगनमंडल गूंज उठता है। राजसी ठाठ-बाट एवं पूर्ण वैभवता के साथ वाराणसी नरेश का अपने समस्त राजदरबारियों के साथ राजदरबार में प्रवेश होता है। महाराज राजसभा की कार्यवाही प्रारंभ करते हुए सभी राजदरबारियों से राज्य के हालचाल पूछते हैं तब महामंत्रीजी बताते हैं कि राज्य में प्रजा सुख-शांति से जीवन व्यतीत कर रही है। राज्य व देश-विदेश के कलाकारों एवं साहित्यकारों का आगमन हो रहा है जिनका सम्मान किया जा रहा है। सेनापति जी बताते हैं कि सम्पूर्ण राज्य में सुरक्षा व्यवस्था सुचारू रूप से चल रही है। पड़ोसी राज्यों से भी मैत्रीपूर्ण व्यवहार है और सूर्य जैसे प्रतापी राजा के राज्य पर कोई कैसे अपनी कुदृष्टी रखने का साहस कर सकता है ? नगरसेठजी बताते हैं कि राज्य में व्यापार-व्यवसाय बहुत अच्छे से चल रहा है। राज्य में प्रजाजनों के पास धन-धान्य के साथ-साथ संस्कार भी कूट-कूट कर भरे हैं। कोषाध्यक्षजी बताते हैं कि राज्य के सभी भंडार पूरी तरह भरे पड़े हैं। राजकीय कोष में अपार वृद्धि हो रही है। हीरे, मोती, सोना, चांदी, माणिक आदि रत्नों से भंडार भरे पड़े हैं।

प्रजाजनों का हाल पूछकर महाराज महामंत्रीजी को स्वप्न पाठकजी को राजदरबार में बुलाने का आदेश देते हैं। महाराज का आदेश प्राप्त कर राज ज्योतिष

अपने शिष्यों के साथ पधारते हैं। 'राज सभा में आज पंडितजी पधारे हैं' के मधुर गीत के साथ पंडितजी पधारते हैं एवं अपने ज्ञान से सभी स्वप्नों का अर्थ बताते हुए कहते हैं कि 'महाराज आज से ठीक 9 मास एवं 7 दिन पूर्ण होने पर आपके यहाँ सूर्य के समान तेजस्वी, महिमावंत पुत्र का जन्म होगा। जो चक्रवर्ती होगा एवं अपनी यशकीर्ति तीनों लोकों में फैलाएगा। राजज्योतिष द्वारा स्वप्नों का अर्थ सुनकर महाराजा अश्वसेन का हृदय पुलकित हो उठता है एवं प्रसन्न होकर वे पंडितजी को अपार धन सम्पदा भेंट देते हैं। (पर्दा गिरता है।)

इसी क्रम में घर-घर 100 ग्राम चांदी के सिक्के वितरित करने वाले लाभार्थी परिवार द्वारा गुरुदेव से आशीर्वाद लिया एवं गुरुपूजन किया गया।

पुनः पर्दा उठता है, मंच पर 56 दिग्कुमारियों द्वारा प्रभु के जन्म कल्याणक

का दृश्य जिसमें सबसे पहले अधोलोक से 8 दिग्कुमारियां हाथ में मोर पींछी लेकर सवर्तक वायु की रचना करते हुए एवं प्रभु की भक्ति से हमारा जीवन भी स्वच्छ बने ऐसी भावना से नृत्य करते हुए आती हैं। उर्ध्वलोक से आठ दिग्कुमारियां इत्रदानी लेकर प्रभु भक्ति में झुमते हुए सम्पूर्ण वातावरण को सुगन्धित करते हुए आती हैं। दक्षिण दिशा से आठ दिग्कुमारियां जल कलश लेकर प्रभु का अभिषेक करने आती हैं। पूर्व दिशा से आठ दिग्कुमारियां हाथ में दर्पण लिये, आठ दिग्कुमारियां, उत्तर दिशा से हाथ में चंवर डुलाते हुए, पश्चिम दिशा से आठ दिग्कुमारियां रत्नजड़ित पंखे लेकर, चार दिग्कुमारियां रोचक गिरी से अंधकार को मिटाते हुए हाथ में दीपक लेकर एवं चार दिग्कुमारियां हाथों में रक्षा पोटली लेकर नृत्य करते हुए आती हैं। सभी नन्हीं बालिकाओं द्वारा आकर्षक प्रस्तुति दी जाती है। 56 दिग्कुमारियों एवं 14 स्वप्न परियों की शानदार प्रस्तुति के पीछे अहमदाबाद की विमलाबेन एवं खुशबू बेन की जबरदस्त मेहनत थी। जिन्होंने राजदरबार के समस्त पात्रों को सफल रूप से तैयार किया। विधिकारक श्री सत्यविजयजी हरण एवं श्री त्रिलोकजी कांकरिया द्वारा पू. गुरुदेव के मंत्रोच्चार के साथ रक्षापोटली एवं शुचिकर्म विधान किया जाता है। इंद्र के दरबार का दृश्य जहाँ नृत्यांगनाएँ नृत्य कर रही हैं। पू. आचार्य श्री द्वारा इंद्राणी महोत्सव का मंत्रोच्चार किया जाता है। इंद्राणी को प्रभु जन्म का पता चलते ही वह प्रभु को तिलक कर वापस इन्द्रलोक में चली जाती हैं। तभी इंद्रदेव का आसन चलायमान होता है जिससे इन्द्र क्रोधित होते हैं तब इंद्राणी विनयपूर्वक देवराज से अपने अवधिज्ञान का प्रयोग करने का निवेदन करती हैं। इन्द्र महाराजा अपने अवधिज्ञान का प्रयोग कर देखते हैं कि पृथ्वीलोक में वाराणसी नगरी में महाराजा अश्वसेन के यहाँ प्रभु का जन्म हुआ है एवं पश्चाताप कर भगवान से

क्षमायाचना करते हैं । इंद्राणी जी द्वारा तीर्थंकर प्रभु का जन्म कल्याणक मनाने का आग्रह किया जाता है तब इन्द्र महाराज हरिणगमेषी देव को सम्पूर्ण स्वर्गलोक व देवलोक में प्रभु का जन्मकल्याणक मनाने की सूचना देने की आज्ञा देते हैं । हरिणगमेषी देव सुघोष घंटनाद कर सूचना देते हैं कि प्रभु का जन्मकल्याणक मनाने के लिये सभी देवों, इंद्रों-इन्द्राणियों आदि को पृथ्वीलोक चलना है । सभी देव, इंद्रादि माता वामा देवी को सतसप्तवन द्वारा नमन कर उन्हें अवसर्पिणी निद्रा में सुलाकर प्रभु श्री पार्श्वनाथ को 64 इन्द्रों व देवताओं के साथ मेरू शिखर पे ले जाते हैं । (वाराणसी नगरी के बाहर बनी मेरू शिखर की भव्य प्रतिकृति पर 64 इन्द्रों आदि द्वारा भगवान का अभिषेक किया जाता है ।)

पूज्य आचार्य गुरुदेव फरमाते हैं कि बागरा धरती पर अनेक महान आत्माएँ हुई हैं। यहाँ वक्ता, लेखक, चित्रकार, चिंतक आदि विभूतियों ने जन्म लिया है । इन्दरमलजी भगवान जैसे वक्ता, चित्रकार एवं काव्यकार हुए जिन्होंने अपने हाथ से बनाए गए गुरुदेव के चित्रों से बागरा का नाम रोशन किया । जहाँ शंकरजी जैसे अनन्य भक्त एवं गुरु यतिन्द्र सूरिश्वरजी म.सा. के प्रति पूर्ण समर्पित भाव रखने वाले फूलचन्दजी भी हुए हैं । बागरा की धरती पर साधना एवं भक्ति के अनेक कार्यक्रम हुए हैं। आचार्य श्री हेमेन्द्रसूरिश्वरजी म.सा. जिनके साथ मैं बचपन में रहा, गृहस्थी एवं दीक्षोपरांत भी जिनके साथ ऐसी पुण्यवान आत्मा बागरा में हुई है आप बड़े पुण्यशाली हैं जो ऐसी बागरा की धरती पर आपका जन्म हुआ है । आप ऐसी ही आराधना निरंतर करते रहें जिससे बागरा चांदी के पाट से नहीं सोने के पाट से भर जाए । ऐसे नगर में शताब्दी महोत्सव मनाकर आपने अपने पूर्वजों की महिमा को और बढ़ा दिया है । आपकी यह भावना आपको जीवन में उत्तरोत्तर आगे बढ़ाएगी । आज इंद्र महोत्सव चल रहा है पूरे नगर में अपार उत्साह का माहौल है । तो सोचिये जिस समय चौसठ इंद्रों आदि ने आकर अभिषेक किया होगा तब क्या स्थिति रही होगी? देवाधिदेव तीर्थंकर प्रभु जब

जन्म लेते हैं तो नरक में रहने वाले जीवों को भी शांति मिलती है । ऐसे प्रभु की जब हम आराधना एवं दर्शन करते हैं तो हमें लगता है कि हम बहुत भाग्यशाली हैं जो हमें ऐसे परमात्मा के शासन में आराधना करने का लाभ मिला ।

'ओ म्हारों धन्य भयो आज अवतार मलया मने परमात्मा' की सुर लहरियों से पूरा पांडाल भक्तिमय है । मेरू शिखर पर प्रभु का अभिषेक कर इन्द्र-इन्द्राणी आदि प्रभु को माता के शयन कक्ष में जहाँ से ले गए थे वहीं पर सुलाकर इन्द्र द्वारा माता वामादेवी की निद्रा का हरणकर वापस इंद्रलोक में चले जाते हैं ।

महाराजा अश्वसेन के राजदरबार का दृश्य जहाँ महाराजा राजदरबारियों के साथ बड़े ही व्याकुल दिखाई दे रहे हैं । द्वारपाल द्वारा प्रियंवदा सखी के आने की सूचना दी जाती है । महाराज और अधिक व्याकुल हो उठते हैं कि प्रियंवदा क्या समाचार लाई होगी । मन में प्रसन्नता तो है परन्तु साथ में चिंतित भी हैं। प्रियंवदा नाचती, झूमती हुई, नृत्य करते हुए राजदरबार में आती है एवं महाराज को प्रणाम करती है । महाराज उससे समाचार बताने का आग्रह करते हैं तब प्रियंवदा महाराजा की व्याकुलता को देखकर कहती है कि 'मैं आपको आज ऐसा समाचार सुनाने आई हूँ जिसे सुनकर आप क्या पूरा राजदरबार खुशी से झूम उठेगा । महाराजा जल्दी समाचार सुनाने को कहते हैं तब प्रियंवदा उनकी उत्सुकता देखकर ईनाम की मांग करती हैं । महाराजा उसे सात पीढ़ियों तक खत्म न हो इतना ईनाम देने की घोषणा करते है । तब नाचते हुए प्रियंवदा सखी महाराजा को बधाई देते हुए कहती है कि आज मध्यरात्रि में महारानी वामा देवी ने सूर्य के समान ओजस्वी, 32 लक्षणों से युक्त पुत्र को जन्म दिया हैं । यह सुनकर सभी राजदरबारी झूम उठते है । उपस्थित जन भी झूम उठते हैं । पूरी वाराणसी नगरी में हर्ष की लहर फैल जाती है । महिलाओं द्वारा थाली डंका बजाया जाता है। सभी भक्त अपार उत्साह से प्रभु जन्म की खुशी मनाते हैं ।

प्रियंवदा सखी को अपार धन सम्पदा एवं उपहार देकर विदा किया जाता है । प्रियंवदा कहती है 'हे नगरवासियों महाराज ने मुझे प्रभु जन्म पर अपार धन दिया है । आप भी प्रभु जन्म की खुशी से वंचित क्यों रहें ऐसा कहकर सारा धन प्रजाजनों में बांट देती है।

दोपहर में क्रियामण्डप में लाभार्थी परिवार द्वारा श्री सिद्धचक्र पूजा विधान विधिकारक श्री त्रिलोकजी कांकरिया आदि द्वारा मंत्रोच्चार के साथ पूर्ण किया गया । जिसमें भगवान को घी, सागर का जल आदि सामग्री चढ़ाई जाती है । इस पूजा में हर प्रकार की व्याधि दूर करने की ताकत है। मुनिराजश्री चारित्ररत्नविजयजी म.सा. ने निश्रा प्रदान कर मंत्रोच्चार किया ।

मन मधुकर ग्रुप नागदा जं. के राजुभाई एवं कैलाशभाई द्वारा 'झीनो-झीनो उड़े रे गुलाल हालो रे मंदरिया में', 'तू मने भगवान एक वरदान आपी दे', 'चितांमणि पार्श्वनाथ दुनिया रो जिवणो' ऐसे सुन्दर भक्ति स्तवन गाकर मधुकर संगीत के साथ पूजा सम्पन्न कराई गई।

आज परम गुरुभक्त श्री जे. के. संघवीजी पूज्य गुरुदेव से आशीर्वाद लेने पधारे जिनका श्रीसंघ द्वारा बहुमान किया गया।

## रात्रि भक्ति

# करुणामयी गीतों से शीतल पांडे ने बताई माँ की महिमा

महामंगलकारी श्री नवकार मंत्र की धुन से रात्रि भक्ति प्रारंभ की गई। भाई सुभाषजी पोरवाल द्वारा 'हर जन्म में दादा तेरा साथ चाहिए' गीत की प्रस्तुति दी गई। गांव की बालिकाओं द्वारा 'वितरागी-वितरागी मन माया थारी लागी' भक्ति गीत पर सुन्दर नृत्य प्रस्तुति दी गई। आज रात्रि भक्ति में बीजापुर में अपनी आवाज के जादू से सबको भावविभोर करने वाले दिल्ली से आए श्री नीलम पाण्डे ने गुरुमंत्र के साथ भक्ति सरिता बहाई। 'मैं तो अपने दादा ने रिझावण आया हा', 'भक्तों की महफिल को मेरे दादा ही सजाते हैं', 'इतनी कृपा दादा तू बनाये रखना', 'दादा भक्ति में आते वही जो गुरु के दिवाने हैं', गीतों को गाकर सभी भक्तों को भक्ति से साराबोर कर दिया। अन्त में 'घर की माँ को छोड़ मंदिर में जो करते उस माँ का ध्यान बदकिस्मत है वो इंसान', 'तेरी तुलना किससे करूँ माँ तुमसा और न कोई' जैसे माँ को समर्पित करुण गीतों को गाकर पूरा माहौल करुणामय कर दिया।

# प्रियंवदा ने दी प्रभु जन्म की बधाई मनाया उत्सव

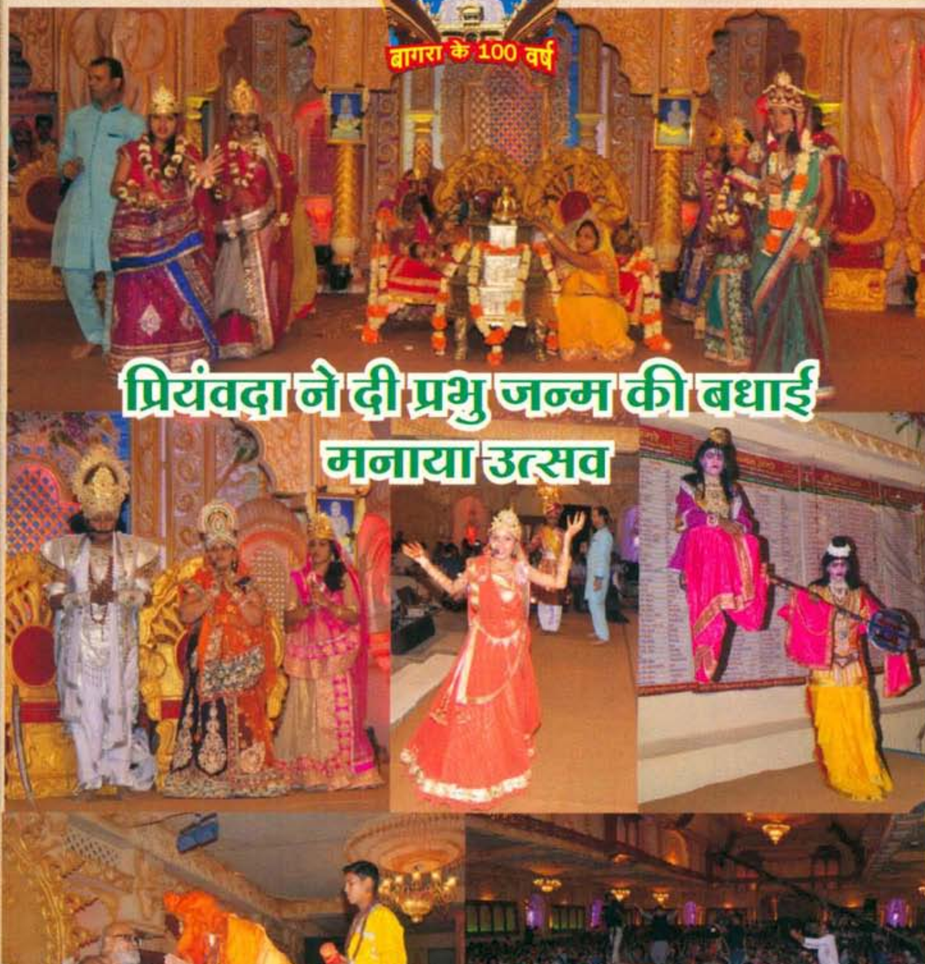

# ओ गुरूराज आप ही करो उद्धार

बागरा के 100 वर्ष
बहुमान की पावन बेला

सप्तम दिवस

# प्रभु के नामकरण में उमड़े भक्त, त्रिभुवन नाथ गए पाठशाला

(दि. 17 फरवरी 2016, महासुद 10, बुधवार)

महाशतकोत्सव का उत्साह एवं आनंद सभी भक्तों में दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा था। आज प्रातः सभी भक्त शुभ वेला में मंदिर में भगवान पार्श्वनाथ प्रभु के दर्शन कर आराधना भवन में उपस्थित हुए। पू. गुरुदेव श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरिजी म.सा. एवं समस्त साधु भगवंतों की निश्रा में मुनिराज श्री निपुणरत्नविजयजी म.सा. ने भक्तामर पाठ कराया। मुनिश्री ने बताया कि भक्तामर स्त्रोत का पाठ बहुत ही प्रभावी होता है। अगर किसी को भयंकर पेट दर्द हो तो पांचवी गाथा भावपूर्वक पाठ करने से वह शांत हो जाता है। भक्तामर का पाठ हमें कंठस्थ होना चाहिए ताकि इसके पाठ से हम किसी भी समय किसी भी मुसीबत से बाहर निकल सकते हैं। परमात्मा हमें अपार सुख देने के लिए तैयार है बस उनकी निष्ठा पूर्वक भक्ति की आवश्यकता है। जब भी तीर्थंकर भगवंतों को केवलज्ञान होता है तब देशना देते समय वे 'नमो तित्थस्य' कहकर जिनशासन को वंदन करते हैं वे ऐसी भावना भाते हैं कि पूर्व भव में इसी जिनशासन ने मुझे निर्मल बनाया। आगे मुनिश्री बताते हैं कि किसी भी धर्म में यह नहीं कहा गया है कि तुम स्वयं परमात्मा बन सकते हो परन्तु जिन धर्म में आप स्वयं भी परमात्मा बन सकते हैं। तीर्थंकर की भक्ति का प्रभाव ही ऐसा है कि जो कोई भावपूर्वक उनकी भक्ति करता है तो उसे अपने जैसा बना देती हैं।

वाराणसी नगरी में नवकार महामंत्र के मंगलाचरण से पंचकल्याणक महोत्सव प्रारंभ किया जाता है। पूरे राजसी

ठाठ-बाट के साथ महाराजा अश्वसेन अपने समस्त राजदरबारियों के साथ पधारते हैं । पूज्य गुरुभगवंत के पधारते ही राष्ट्रसंत की जय-जयकार से पूरा पांडाल गुंजायमान हो जाता है । सभी भक्तों द्वारा सामूहिक गुरुवंदन किया जाता है । पूज्यश्री द्वारा मांगलिक श्रवण करवाकर संगीतकार श्री राजेन्द्र व दीपक करनपुरिया द्वारा पंचकल्याणक के क्रम को सुमधुर संगीत के साथ आगे बढ़ाया जाता है। महाराजा अश्वसेन के राजदरबार का दृश्य। समस्त वाराणसी नगरी में प्रभु जन्म की खुशी से चारों ओर हर्ष का वातावरण । प्रभु जन्म की खबर सुनकर नगर की पनिहारन महाराजा को बधाई देने आती है और कहती है कि हजारों वर्षों से नगर के नदी, तालाब आदि जो सूखे पड़े थे वो अचानक अमृत समान जल से भर गए हैं । गांव की मालन आती है और कहती है कि बहुत समय से हमारे बाग-बगीचे सूख गए थे परन्तु कुंवर के जन्म के प्रभाव से सभी बाग-बगीचे खिल उठे । कर्नाटक से मुत्थुस्वामी प्रभु जन्म की बधाई देने आते हैं एवं कन्नड भाषा में बधाई देते हैं । नगर के किसान 'मेरे देश की धरती' गीत की मधुर धुन के साथ झूमते हुए आते हैं एवं प्रभु को जन्म बधाई देते हुए कहते हैं कि प्रभु जन्म के प्रभाव से वर्षों से सूखे खेत-खलिहान, बंजर जमीन सभी हरे-भरे हो गए । वाराणसी नगरी के आसपास के डाकू अपने सरदार गब्बरसिंह के साथ सभी बुरे कार्य त्यागकर प्रभु जन्म की बधाई देते हुए नेक कार्य करने का संकल्प लेते हैं ।

प्रभु जन्म के 12 दिवस पूर्ण होने पर तीर्थंकर प्रभु के नामकरण हेतु प्रभु की भुआजी को आमंत्रित किया जाता है । भुआजी शाही वैभव के साथ ठाठ-बाट से प्रभु का नामकरण करने पधारती हैं एवं प्रभु के लिये सोने के आभूषण, विभिन्न प्रकार के खिलौने, माता एवं परिवार के लिये वस्त्र आदि

भेंट स्वरूप लाती हैं । तत्पश्चात राज ज्योतिष को आमंत्रित किया जाता है । राजज्योतिष के पधारने पर उन्हें ससम्मान आसन प्रदान कर नामकरण की रस्म प्रारंभ की जाती है । प्रभु की भुआ उनके शरीर की सुन्दरता का गुणगान कर बलैया लेती हुई झूला झुलाती हैं । 'सोना रो पालनो सुन्दर पालनो', 'झूलो-झूलो रे थे तो वामा जी रा जाया' गीतों की कर्णप्रिय ध्वनियों के साथ नामकरण संस्कार चलता है । राज ज्योतिष बताते हैं कि जब से प्रभु का माँ की कुक्षी में च्यवन हुआ तब से महाराज का यश पारस गति से बढ़ रहा है अतः इनका नाम पार्श्वनाथ रखा जाए । पू. आचार्यश्री के द्वारा मंत्रोच्चार कर नामकरण की क्रिया-विधि सम्पन्न कराई जाती है । 'ओली-झोली, पीपल पान, भुआ ने नाम राख्यो पार्श्वनाथ' की ध्वनि के साथ प्रभु का नामकरण सम्पन्न होता है।

पश्चात्'भणवा चाल्या भणवा रे पार्श्व कुंवर आज भणवा चाल्या रे' की मधुर स्वर लहरियों के साथ प्रभु के पाठशाला गमन का प्रसंग प्रारंभ होता है । गाजे-बाजे के साथ प्रभु को पाठशाला भेजा जाता है । इंद्र का सिंहासन कम्पायमान होता है परन्तु इस बार इंद्र क्रोध नहीं करते हैं । बल्कि करुणा से भर जाते हैं कि तीनों लोकों के नाथ एक साधारण ब्राह्मण से ज्ञान प्राप्त करेंगे । तब इंद्र ब्राह्मण का वेश धारण कर पाठशाला में पधारते हैं एवं प्रभु को वन्दन कर उनसे प्रश्न करते हैं कि क्या शरीर व आत्मा अलग हैं? तब प्रभु सहजता से उत्तर देते है 'अन्य जीवों अन्य शरीरानां' अर्थात् शरीर व आत्मा भिन्न है । मरने पर शरीर पंचतत्व में मिल जाता है परन्तु आत्मा अमर है । इन्द्र कहते हैं कि जिस प्रकार चन्द्रमा की शीतलता का प्रमाण मांगना एवं अमरूद को मीठा करने के लिये मिश्री में डालना उचित नहीं वैसे ही सर्व शास्त्रों के ज्ञान के ज्ञाता प्रभु को सामान्य पण्डित के यहाँ पढ़ने भेजना उचित नहीं । इन्द्र अध्यापक से निवेदन कर उन्हें बताते हैं कि ये कोई साधारण मानव नहीं ये तो तीनों लोकों के नाथ तीर्थंकर परमात्मा हैं। तब पंडितजी प्रभु की वास्तविकता को जान उन्हें वन्दन करते हैं । इस अवसर पर नगर के सभी नन्हें बच्चों का मंच पर पाठशाला गमन संस्कार कराया जाता है एवं स्कूल बेग एवं अध्ययन सामग्री

वितरित की जाती है।

जैसे-जैसे प्रभु बढ़ते हैं उम्र के साथ-साथ उनकी कीर्ति भी बढ़कर चारों दिशाओं में फैलती जाती है । प्रभु की कीर्ति सुन कुशस्थला नगर के महाराजा अपनी पुत्री प्रभावती का रिश्ता लेकर महाराज अश्वसेन से निवेदन करने आते हैं । राज ज्योतिष द्वारा कुण्डली मिलान की जाती है एवं चर्चा कर दोनों महाराजाओं द्वारा तिलक लगाकर सगाई की रस्म पूरी की जाती है ।

प्रभु के लग्न की पत्रिका श्रीसंघ द्वारा पू. आचार्यश्री एवं समस्त साधु-साध्वी भगवंतों को भेंट कर उन्हें प्रभु के लग्न में पधारने का आमंत्रण दिया जाता है ।

दोपहर में विधिकारकों के मंत्रोच्चार के साथ क्रियामण्डप में श्री 108 पार्श्वनाथ महापूजन किया गया । मन मधुकर ग्रुप द्वारा 'बजने लगी शहनाई शताब्दी के नाम की', 'दर्शन करते हृदय कमल की कलियाँ खिलती है' भक्ति गीतों की मधुर स्वर लहरियों के साथ महापूजन का पाठ किया गया । विजयवाड़ा की बहन खूशबू द्वारा 'तुमको नमन करूं बार-बार ओ मेरे वीर प्रभु' आदि भक्ति गीत गाकर प्रभु भक्ति की गई। महापूजन में निश्रा मुनि श्री चारित्ररत्नविजयजी म.सा. एवं साध्वी श्री अनंतदृष्टाश्री जी. म.सा. आदि ठाणा ने प्रदान की ।

## रात्रि भक्ति

# शहीदी की घटनाओं ने दिलों को झकझोर दिया

रात्रि भक्ति में कोलापुर की विश्व प्रसिद्ध संस्था 'स्वरनिनाद' के 'जागो हिन्दुस्तानी ग्रुप' के कलाकारों ने सभी श्रोताओं को देश भक्ति के रंग में रंग दिया । महामंत्र नवकार से कार्यक्रम की शुरूआत की गई । सभी के लिये मंगल कामना करते हुए 'इतनी शक्ति हमें देना दाता' गीत की प्रस्तुति के साथ संचालन करते हुए देश की गुलामी के दो सौ साल का इतिहास एवं किस प्रकार हमें हजारों देश भक्तों के त्याग व बलिदान से आजादी मिली इसका बहुत अनूठे एवं प्रभावी अंदाज में देश भक्ति के गीतों के साथ वर्णन किया गया । मंच के माध्यम से बताया गया कि 5000 वर्ष पूर्व भारत सबसे बड़ा एवं सम्पन्न देश था यहां प्राणी मात्र की सुख शांति के लिये प्रार्थना होती थी । हमारे पास सबसे बड़ा शस्त्र 'प्रेम' शस्त्र है जो हमें हमारी संस्कृति से मिला है । इसी शक्ति के माध्यम से 121 वर्ष पूर्व स्वामी विवेकानंदजी ने शिकागो के विश्व धर्म सम्मेलन में विश्व के सम्मुख देश की अलग ही छवि दिखाई । भारतीय संस्कृति पूरे विश्व को परिवार मानने का संस्कार देती है। शहीदों के प्रसंगों को याद करते हुए बताया गया किस प्रकार हमें 6 लाख शहीदों की शहीदी के बाद आजादी मिली । विदेशी संस्कृति द्राक्ष (अंगूर) की संस्कृति है परन्तु भारत की संस्कृति 'रुद्राक्ष' संस्कृति है जिसमें त्याग, वैराग्य आदि है। 'जलियावाला बाग हत्याकाण्ड' मंगल पाण्डे, महात्मा गांधी, शिरिष कुमार, उधमसिंह आदि शहीद वीरों की देशभक्ति के प्रसंगों को सजीवता से प्रस्तुत किया गया। प्रत्येक प्रसंग के साथ 'है प्रीत जहाँ की रीत सदा' मेरा रंग दे वसंती चौला', 'साथी हाथ बढ़ाना', 'संदेशे आते हैं हमें तड़पाते है 'जैसे गीतों के माध्यम से पूरा माहौल देशभक्ति मय हो गया । इसी दौरान आजादी के पश्चात मनाई गई खुशी, देश व समाज को समर्पित फिल्मों की याद दिलाते हुए गीतों की प्रस्तुति दी । ' ऐ मेरे वतन के लोगों जरा आँख में भर लो पानी' गीत की प्रस्तुति पर सभी श्रोताओं की आखें नम हो गईं ।

बागरा के 100 वर्ष
आओ ! नाचे झूमें, गाएं,
जिनभक्ति में सरोबार हो जाएं

# देव गुरु के चरणों में समर्पित

# उत्साहित भक्तों के परिवार

# अभिनन्दन की बेला आई

# सबके मन में खुशियाँ छाई

# गुलाल सने क्षणों ने किया जीवन हमारा सार्थक

अष्टम दिवस

# प्रभु का विवाह : कन्यादान में बरसा सोना

(दि. 18 फरवरी 2016, महासुद 11, गुरुवार)

प्रातः मंगलगीतों की सुमधुर ध्वनियाँ, पू. आचार्य श्री की निश्रा में प्रतिदिन प्रतिक्रमण, चैत्यवंदन आदि धार्मिक क्रिया-कलापों से बागरा नगर में पवित्रता की सुवास अपने चरम सीमा पर है । चारों ओर प्रभु भक्ति एवं धार्मिक अनुष्ठानों के चलते बागरा नगर के कण-कण में महा शतकोत्सव की सुगंध घुल गयी।

प्रातः काल ब्रह्म मुहूर्त में पूज्य गच्छाधिपति, संघ नायक श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरिश्वरजी म.सा. की निश्रा में समस्त मुनिमण्डल द्वारा सामूहिक गुरुवंदन, चैत्यवंदन आदि नित्य क्रिया कर पूज्य गुरुदेव प्रभु श्री पार्श्वनाथ प्रभु के दर्शन-वंदन कर नगर में भक्तों के घर पगलिये करने पधारे ।

इसी क्रम में प्रतिदिन भक्तों की अपार संख्या की उपस्थिति को देखते हुए आज भक्तामर पाठ का आयोजन श्री वाराणसी नगरी के विशाल पांडाल में किया गया जिसमें बड़ी संख्या में भक्तों ने भक्तामर पाठ किया । मुनिराज श्री निपुणरत्न विजयजी म.सा. ने भक्तामर पाठ करवाया । तत्पश्चात मुनिराजश्री ने एक सुन्दर प्रसंग का वर्णन करते हुए बताया कि हमारे जीवन में जितना समय धर्म-आराधना में लगता है वही हमारी वास्तविक आयु है अन्यथा तो हम अपने जीवन के कई साल व्यर्थ ही सांसारिक माया में लिप्त होकर बिता देते हैं । धर्म क्रिया में व्यय की गई लक्ष्मी ही वास्तविक लक्ष्मी है । जीवन में पुण्य किये बिना हम कोई सुख नहीं भोग सकते । साधु-संतों के दर्शन से हमारे चारित्र कर्मणीय बंध का श्रय होता है अतः हमें नित्य गुरु-भगवंतों के दर्शन अवश्य करना चाहिए । वाराणसी नगरी में पूज्य आचार्य भगवंत के वरिष्ठ मुनिप्रवरश्री नित्यानंद विजयजी सहमुनिमण्डल पधारे

को तिलक कर उन्हें ससम्मान राजमहल में लाती है । सभी एक-दूसरे के गले मिलते हैं । प्रभु के मामा बनने के लाभार्थी पू. गुरुदेव को नमन कर अपने भाव प्रकट करते हैं कि हमें प्रभु का मामेरा करने का अहोभाग्य मिला है । यह हमारा पुण्योदय ही है कि पूज्य आचार्य श्री एवं मुनिभगवंतों की पावन निश्रा में यह मंगलमय पुण्यार्जन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ ।

आपश्री ने जनसमूह में मंगलाचरण पाठ किया । पश्चात आपकी निश्रा में संगीतकार द्वारा आशीर्वाद लेकर 'जिनशासन की कहानी सदियों से भी पुरानी' गीत एवं शंखनाद के साथ पंचकल्याणक महोत्सव की शुरूआत की जाती है । राजमहल में प्रभु के विवाह की तैयारियों का दृश्य । महारानी वामादेवी अपने भाई को शादी के निमंत्रण हेतु पत्र में 'वीराओ अणगे अवसर में वेगा आवजो' लिखकर भेजती है । प्रभु की शादी की तैयारियाँ पूर्ण होती है । मामा परिवार अपने समस्त संबंधियों के साथ ढोल-नगाड़ों एवं गाजे-बाजे के साथ नाचते-झूमते हुए राजकीय वैभवता के साथ मामेरा लेकर आते हैं । 'हरके-हरके आवे देखो पूरा या मामेरा रो ठाठ रे ।' 'आया प्रभुजी का मामा लाया केसरिया जापा' के गीतों की स्वर लहरियों के साथ महारानी द्वारा मामेरा बधाया जाता है । महारानी वामा देवी अपने भाई

मामा परिवार द्वारा प्रभु को मुकुट, कुण्डल, सोने-चांदी के आभूषण, मेवा, मिठाई एवं समस्त परिवार के लिये पूजन वस्त्र आदि भेंटकर मामेरे की रस्म पूरी की जाती है । इसी बीच प्रभु के मित्र भी नाचते एवं झूमते हुए प्रभु की शादी में सम्मिलित होने आते हैं । समस्त राजदरबारी, नगरवासी, मित्र एवं संबंधियों के संग ठाठ-बांट से प्रभु की बारात लेकर कुशस्थला

जा' गीत के साथ भाव पूर्वक विदाई दी जाती है।

पुनः वाराणसी नगरी के राजदरबार का दृश्य जहाँ प्रभु के राज्याभिषेक के लिये पूरे नगर में घोषणा करवाकर नगर को दुल्हन की तरह सजाया जाता है। पू. आचार्य श्री के मंत्रोच्चार के साथ हर्षोल्लास से प्रभु का राज्याभिषेक किया जाता है। प्रभु की बहन यह प्रार्थना करती है एवं भावना करती है कि भैय्या, आप राजसिंहासन पर बैठकर प्राणी मात्र पर दया भाव रखें एवं सभी जीवों का कल्याण करें एवं आपकी यश कीर्ति चारों दिशाओं में फैले।

तत्पश्चात नवलोकांतिक देवों द्वारा प्रभु से दीक्षा ग्रहण करने की विनती की जाती है। तब प्रभु अपने परिवारजनों से दीक्षा की आज्ञा लेते हैं। प्रभु की माता दीक्षा की बात

नगरी पहुँचते हैं। जहाँ बारात को बधाया जाता है एवं प्रभु की सासु जी पोरखा करती है।

विधिकारक श्री सत्यविजयजी हरण द्वारा सभी को सावधान किया जाता है। गुरुदेव के मंत्रोच्चार के साथ पहला फेरा मोहमाया को निवारते हुए, दूसरा फेरा अभयदान प्रदायक, तीसरा फेरा भव-बंध तोड़ने एवं चौथे फेरे सबको पुनः सावधान कर वर पक्ष आगे होकर कन्यादान का फेरा पूरा करते हैं। तत्पश्चात उपस्थित भक्तों एवं महिलाओं द्वारा दिल खोलकर सोना, आभूषण आदि दानकर कन्यादान की रस्म पूरी की जाती है। उसके बाद 'बाबुल की दुआएँ लेती

सुनकर करुण स्वर में कहती हैं कि 'बेटा जिस पथ पर तू जा रहा है वह बहुत ही कठिन है । कहाँ राजदरबार का वैभव, हर समय हर प्रकार की सुविधा और कहां जंगलों में असहनीय कष्ट। तब प्रभु बड़े सरल भाव से माता को समझाते हैं कि संयम पथ तो हमें संसार के मोह-माया रूपि बंधनों से दूर कर परम सुख प्रदान करने वाला है । पिता कहते हैं कि हे मेरे कुल दीपक क्या तुम्हें राजमहल के सुख-की सुविधाओं में सुख अनुभूति नहीं होती जो तुम कांटों से भरे पथ पर चलने को तैयार हो गये हो ? तब प्रभु अपने पिता से कहते हैं कि पिताश्री आप बंधनों को छोड़कर मुझे दीक्षा पथ पर प्रशस्त होने का आशीर्वाद प्रदान करें । बहन कहती है कि आपके बिना यह वाराणसी नगरी सूनी हो जाएगी । माता-पिता एवं राज्य की प्रजा को कौन संभालेगा? कुल महत्तरा आदि बड़े ही मार्मिकता पूर्वक प्रभु से दीक्षा न लेने की विनंती करते हैं परन्तु प्रभु के अडिग निर्णय एवं सरलता पूर्वक अमृत वचनों को सुनकर सभी दीक्षा की अनुमति प्रदान कर देते हैं एवं भावना करते हैं कि आपका संयम जीवन प्राणी मात्र के लिये कल्याणकारी हो। 'जा संयम पथ पर दीक्षार्थी थारो पथ सदा उजवान बने ' के करुण स्वर से पूरी वाराणसी नगरी के जन नम आंखों से दीक्षा प्रसंग सम्पन्न करते हैं । आज रेवतड़ा ग्राम से अधिकतम संख्या में गुरुभक्त पधारे, जिनशासन की जयवन्ता के साथ गुरुवन्दना की ।

इस अवसर पर राजस्थान के पशुपालन एवं देवस्थान मंत्री श्री ओटारामजी देवासीजी, पूर्व विधानसभा उपाध्यक्ष श्रीमती तारा भण्डारी एवं भाजपा जिलाध्यक्ष श्री लुम्बारामजी चौधरी मुख्य अतिथि के रूप में पधारे एवं पूज्य राष्ट्रसंत साहेब से आशीर्वाद लिया ।

श्रीमती तारादेवी ने पंच परमेष्ठि देवों एवं सभी पू. गुरु भगवंतों को नमन करते हुए अपने उद्‌बोधन में कहा कि भगवान के लग्न में सरकार की ओर से भी साक्षी हो रही है यह हमारा एवं सभी उपस्थित भक्तों का परम सौभाग्य है कि हमें यह मंगलकारी अवसर प्राप्त हुआ । गुरुदेव की भी सब भक्तों पर बहुत कृपा है । श्री ओटारामजी ने

अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा कि संतों की तो माया ही निराली है अगर संत न होते तो यह संसार वीरान हो जाता ऐसे संतों की पावन निश्रा में प्रभु की शादी के प्रसंग में सम्मिलित होने का मुझे परम सौभाग्य मिला है। जिस प्रकार जैन संघ द्वारा प्रत्येक जगह जीवदया एवं गौरक्षा के लिये अनेक सराहनीय कार्य किये जा रहे हैं उसी प्रकार सरकार भी आपकी सहायता से गौ रक्षा के लिए कठोर कदम उटाएगी इस हेतु पूरे देश में पहली बार राजस्थान सरकार द्वारा गौपालन विभाग बनाया गया है। आप और हम मिलकर गौ हत्या को रोकने एवं गायों की रक्षा के लिये सब साथ में बेड़ा उठाकर गौ रक्षा का संकल्प लें।

श्रीसंघ के सदस्यों एवं लाभार्थियों द्वारा माला, श्रीफल एवं चांदी के सिक्कों से बहुमान किया गया।

दिन में विजय मुहूर्त में पूज्य गच्छाधिपति आचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में वासक्षेप देकर प्रदत्त शुभ मुहूर्त में आराधना भवन में चढ़ावों की जाजम बिछाई गई। जिस पर शताब्दी महामहोत्सव एवं श्री पार्श्वनाथ प्रभु एवं अन्य 24 देहरियों की ध्वजा के चढ़ावे बोले गये सर्वप्रथम मुनीम जी को माला एवं साफा बांधकर उनका स्वागत कर व 'मारी जाजम मा धन बरसाओजी गौतम स्वामी आओ' स्तवन गाकर एवं नवकार मंत्र के जाप के साथ चढ़ावों की बोलियां प्रारंभ की गई।

जिसमें सभी लक्ष्मी पुत्रों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया एवं ऐतिहासिक चढ़ावे बोले गये। एक तरफ इधर चढ़ावों की बोलियां चल रही थीं तो दूसरी तरफ मन मधुकर ग्रुप नागदा जं. एवं विधिकारकों के मंत्रोच्चार के साथ सुमधुर स्वरलहरियों के साथ बस स्टेण्ड स्थित श्री महावीर जिनालय में लाभार्थी परिवार द्वारा श्री महावीर पंच कल्याणक पूजन विधान भाव पूर्वक सम्पन्न कराया गया।

प्रभु के क्रमशः च्यवन, जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान एवं मोक्ष कल्याणक विधान 'वीर वचन सुनी करके अमृत रस बरसे', 'तेरे पाँच हुए कल्याणक प्रभु एक मेरा कल्याण कर दे' ' मैं तो पाया-पाया कल्याणकजी' गीतों की सुरावलियों के साथ सम्पन्न हुए। अष्ट द्रव्यादि से प्रभु का अभिषेक किया गया।

## रात्रि भक्ति

# संगीत की सुरावलियों के साथ विपिन भाई ने बताया परिवार का महत्व

रात्रि भक्ति में भाई कमल द्वारा 'अरे रे नवकार जपो प्रेम से सब ही भजो' साथ 'इस दुनिया में पारस जैसा कोई नजर नहीं आता' गीतों के भक्ति पुष्प अर्पित कर भक्ति संध्या की शुरूआत की गई। बैंगलोर से आए विश्व प्रसिद्ध जैन स्तवन संगीतकार श्री विपिन भाई पोरवाल ने भाव पूर्वक महामंत्र नवकार का गुणगान एवं शंखेश्वर पार्श्वनाथ तीर्थ की महिमा बताते हुए 'चिंतामणि मारी चिंता चूर शंखेश्वर दादा सबकी चिंता चूर', 'एक बार प्रेम से जय जिनेन्द्र बोलिये' अपनी आत्मा को परमात्मा से तोलिये' की स्वर लहरियों से भक्ति का जमघट लगाया । सुन्दर भजन के माध्यम से 'जीवन में हमें क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए उन बातों से अवगत कराया । इसी बीच बागरा की बालिकाओं द्वारा 'दीवड़ला जगमगाता दादा का मंदरिये' भक्ति गीत पर मनमोहक प्रस्तुति दी गई । इसके पश्चात विपिन भाई ने 'तकदीर वाले हैं जो माँ की करे भक्ति, भगवान मिल जाते पर माँ नहीं मिलती' गीत के माध्यम से माँ की महिमा गाकर भक्ति का समा बांध दिया । 'पिता हमें ले जाते हर संकट पार' 'जिनको हो बेटियाँ वो ये कहते परियों के देश में वो तो रहते हैं', 'जो दुख में और संकट में साथ नहीं छोड़े अपना, उसी को कहते हैं जो मुँह कभी ना मोड़े' जैसे गीतों के साथ बेटियों एवं परिवार के प्रत्येक सदस्य का महत्व बताते हुए सबको भाव-विभोर कर दिया । कई परिवारों के साथ पूरा मंच खचाखच भर गया । अन्त में गरबा रास में सभी भक्तों ने झूमते हुए गरबा नृत्य किया।

बागरा के 100 वर्ष
आई बागरा में बहार,
उछली गौरव की धार

# आभार है बहुमान के लिये,

# गौरव के सम्मान के लिये

# बहुमान हुआ, धन का सद्व्यय करने पर जिनभक्तों का

## नवम दिवस

# प्रभु के भव्य वरघोड़े में थिरक उठे नगरवासी : पूज्य आचार्यश्री ने कराया दीक्षा कल्याणक विधान

(दि. 19 फरवरी 2016, महासुद 12, शुक्रवार)

बागरा नगर के जनमानस में महाशतकोत्सव से आनंद एवं उत्साह का संचार द्रुत गति से बढ़ता ही जा रहा है । शहनाइयों की मधुर ध्वनि एवं शंखनाद की गूंज से नित मंगलकारी प्रातःकाल में जब आँखे खुलती हैं तो चारों ओर भक्ति स्तवन एवं पूज्य गुरुदेव व साधु भगवंतों की अमृतमय वाणी मन को पवित्र कर देती है ।

प्रातः काल की पावन मंगलकारी वेला में पूज्य आचार्य श्रीमद् जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा., वरिष्ठ मुनिराज नित्यानंद विजयजी म. एवं साधु भगवंतों के साथ नगर में भक्तों के यहाँ पगलिये करने पधारे । जहाँ भक्त बड़ी आतुरता से पूज्य श्री को वन्दन करने हेतु लालायित हैं। पूज्य गुरुदेव के पधारते ही 'राष्ट्रसंत की जय-जयकार की गूंज के साथ भक्तों ने वन्दन कर पग प्रक्षालन एवं गहुंली कर गुरु पूजन किया । पूज्य श्री ने वासक्षेप प्रदान कर आशीर्वाद दिया ।

प्रतिदिन अनुसार प्रातः शुभ वेला में श्री वाराणसी नगरी में भक्तामर पाठ किया गया । पश्चात मुनिराज श्री निपुणरत्न विजयजी म. ने प्रतिदिन नियम लेने के

महत्व एवं इसके शुभ प्रभावों के बारे में बताया कि यदि हममें श्रद्धा हो तो छोटा सा नियम भी बहुत प्रभावशाली हो जाता है। नियम के प्रभाव से बड़ी से बड़ी विपदा भी टल जाती है ।

भक्तामर के पश्चात प्रभु भक्त नाश्ता नवकारसी करके पुनः वाराणसी नगरी के प्रांगण में पहुंच रहे थे । आज प्रातः काल से ही बागरावासियों के मन में भगवान प्रभु पार्श्वनाथ के वर्षीदान के वरघोड़े का अपार उत्साह छलक रहा था । देखते ही देखते अपार जन सैलाब श्री वाराणसी नगरी के सामने के प्रांगण में एकत्र हो गया जहाँ से वरघोड़ा प्रारंभ किया जाना था । चारों ओर भक्ति गीतों के स्वर, ढोल नगाड़ों की आवाज सभी बैंडबाजे, हाथी, घोड़े, रथ आदि अपने-अपने स्थान पर सुसज्जित होकर खड़े थे । वरघोड़ा प्रारंभ होता है सबसे आगे गजराज अपनी मस्तानी चाल से यात्रा की शोभा बढ़ाते हुए चल रहा था । राजस्थान की शान कहे जाने वाले सुसज्जित ऊंट उनके पश्चात ऊँट गाड़ी जिस विशाल नगाड़े की थाप की गूंज से पूरा गगन गुंजायमान हो रहा था। शंखवादक अपनी शंख ध्वनि से पूरे वातावरण को पवित्रता का आभास कराते हुए चल रहे थे । घोड़े, जिन पर सैनिक की वेशभूषा में सवार व्यक्ति हाथ में भाले लेकर एवं समाजजन हाथ में ध्वजा लिये चल रहे थे । तत्पश्चात आदिवासी नृत्य के कलाकार अपनी विचित्र वेशभूषा एवं नृत्य से सबको आकर्षित करते हुए चल रहे थे । शहनाइयों की मधुर ध्वनि एवं ढोल की थाप पर भक्तों की टुकड़ी झूमती हुई आगे बढ़ रही थी । भगवान के रथ में प्रभु के माता-पिता बनने के लाभार्थी प्रभु पार्श्वनाथ की मूर्ति हाथ में लेकर चल रहे थे । दूसरे रथ में राजपुरोहित , महामंत्री एवं राजदरबारी सवार थे एवं तीसरी बग्गी में इंद्र-इंद्राणीजी अपनी वैभवता के साथ चल रहे थे । उसके पश्चात काठियावाड़ी ढोल की गूंज पर युवा आनन्द से साराबोर होकर थिरक रहे तो साण्डेराव के महावीर बैण्ड 'मनडो लाग्यो रे भक्ति में चालो वन्दन करवाने', 'झीनो-झीनो उड़े रे

गुलाल बागरा नगरी में' जैसे मारवाड़ी गीतों से भक्तों को प्रभु भक्ति में साराबोर करते हुए चल रहा था। मधुकर बैण्ड द्वारा 'आज मेरे गुरुजी आए हैं', 'बागरा नगरी में मंगल अवसर आयो', 'रंग बरसे बागरा नगरी में' भक्ति गीतों के साथ भक्तों को झूमने पर मजबूर कर रहा था। वरिष्ठ मुनिराज श्री नित्यानंद विजयजी म.सा. एवं समस्त साधु भगवंतों के साथ समाजजन श्वेत वस्त्र पहने, सिर पर पचरंगी, केसरिया मारवाड़ी पगड़ी पहने एवं गले में लाल, केसरिया दुपट्टा डाले 'जिनवरजी है महान- जिन शासन की है ये शान' एवं राष्ट्रसंत की जय-जयकार के नारे लगाते हुए भक्ति में झूमते हुए चल रहे थे। उसके पश्चात काठियावाडी डांस मण्डली ढोल की थाप पर नृत्य प्रदर्शन करते हुए चल रहे थे। विशाल संख्या में साध्वी वृन्द जिनके साथ महिलाएँ मंगल गीत गाते एवं गरबा नृत्य करते हुए चल रहीं थीं। जगह-जगह तोप द्वारा पुष्प वृष्टि की गई। मुम्बई भाई जीतु द्वारा तुरंत पूरे मार्ग में रंगोली बनाकर मार्ग को सुसज्जित किया गया। भक्तों द्वारा जगह-जगह गहुंली की गई। जिस प्रकार प्राचीन समय में किसी महाराजा की शोभायात्रा पूरे शान से निकलती थी उसी प्रकार प्रभु के वरघोड़े की शोभायात्रा जिनशासन की वैभवता का बखान कर रही थी। नगर के सभी जन उत्साह पूर्वक एक टकी लगाकर सम्पूर्ण शोभायात्रा को निहार रहे थे। लगभग एक किलोमीटर लम्बी शोभायात्रा पूरे बागरा नगर में बेकसी चौराहा एवं श्री पार्श्वनाथ मंदिर होते हुए पुनः वाराणसी नगरी के प्रांगण में पहुंचकर धर्मसभा में परिवर्तित हो गई। जहाँ पूज्य गच्छाधिपति राष्ट्रसंत साहेब द्वारा मांगलिक श्रवण कराकर आशीर्वचन प्रदान किये गये। अध्यक्ष श्री मोहनजी ने बताया कि भगवान पार्श्वनाथ प्रभु के मंदिर के 100 वीं ध्वजारोहण के उपलक्ष्य में श्राविकाओं द्वारा भगवान

के लिये सुन्दर सोने के हार बनवाये गये हैं। जिनको प्रतिष्ठा दिवस पर प्रभु को पहनाने के लिये पूज्य श्री के कर -कमलों से ड्रा द्वारा नाम निकालकर पुण्यशाली बहनों के नाम की घोषणा की गई ।

इस अवसर पर भरतपुर तीर्थ के ट्रस्ट मण्डल अध्यक्ष श्री बाबूलालजी के नेतृत्व में ट्रस्ट मंडल चौमासे की विनती लेकर पधारे एवं चातुर्मास हेतु प्रार्थना की।

संसदीय सचिव श्री लादूरामजी विश्नोई ने जावाल-चैन्नई के श्री पारसजी ज़ैन के साथ महोत्सव में शिरकत की एवं पूज्य गुरुदेव से आशीर्वाद प्राप्त किया महामहोत्सव की अलौकिक छटा के दर्शन -भ्रमण कर आनन्द की अनुभूति की ।

आज बागरा नगर के महाशतकोत्सव के महानायक परमात्मा श्री पार्श्वनाथ भगवान के पांच कल्याणकों में से चौथे कल्याणक महोत्सव की प्रस्तुति में श्री कनकपुरियाजी ने पंचकल्याणक की शुरूआत की। वाराणसी नगरी के राजमहल में वयोवृद्ध कुलमाता करुणभाव में कहती हैं-मैं मृत्यु किनारे पर बैठी तेरे विरह की वेदना कैसे सहन करूंगी । परन्तु हे वत्स तेरा निर्णय शुभ है लौकिक ऐश्वर्य को ठोकर मारकर चरम ऐश्वर्य को पाने का जो तूने दृढ़ संकल्प किया है उसका हम स्वागत करते हैं तेरा मंगल प्रयाण सारे विश्व के लिये कल्याणकारी होगा । तेरी विजय हो । बहन करुण रस में बड़े भाव से प्रभु से कहती है कि जबसे आपका राजतिलक हुआ है तब से सभी जन मुझे महाराजा की बहन कहकर पुकारते थे तो मैं अपने आपको गौरवान्वित महसूस करती थी । ओ मारा वाला वीरा आपके वियोग को हम कैसे सहन करेंगे । रक्षाबंधन पर मैं किसकी कलाई पर राखी बाधूंगी । अगर आपका निश्चय अटल है तो मैं आपके मार्ग में बाधा नहीं बनूंगी । परन्तु आप हमें भूल ना जाना । दीक्षा कल्याणक के सजीव करुणामयी मंचन को देख उपस्थित श्रद्धालुओं की आखों से अश्रुधारा बहने लगी । पूज्य दीक्षा

दानेश्वरी श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म. सा. के वरद हस्तों से प्रभु का दीक्षा विधि विधान मंत्रोच्चार के साथ सम्पन्न हुआ । श्री राजेन्द्रजी करनपुरिया एवं दीपकजी ने 'जा संयम पंथे दीक्षार्थी थारो पंथ सदा उजमाल बने', 'संयम नो रंग मने लाग्यो, मारी मावड़ली' जैसे वैराग्यमयी गीतों से पूरे' पाण्डाल को वैराग्यमयी भावना से ओतप्रोत कर दिया । मुनिराज श्री निपुणरत्नविजयजी म.सा. ने अपने प्रवचन में फरमाया कि आज शताब्दी महोत्सव का दूसरा अंतिम दिवस है हम सबने प्रभु का प्रत्येक कल्याणक बड़े भावपूर्वक मनाया परन्तु इनसे हमने क्या सीखा? तीर्थंकर भगवान भी जिनशासन को नमन करते हैं ऐसे कल्याणकारी शासन को हमें भी कुछ अर्पण करना चाहिए । पहले राजाओं व रानियों के कक्ष भी अलग-अलग हुआ करते थे । महलों में काम करने वालों को भी कुटुम्बी कहा जाता था इन सब चीजों से हमें अपनेपन की भावना सीखनी चाहिए।

मुनिश्री ने कहा कि जीवन को सार्थक बनाने के लिये कम से कम तीन बातें अवश्य ही स्वीकार करें । प्रथम 'सम्पत्ति' से संबंधित अपनी शक्ति अनुसार दान-धर्म के कार्य अवश्य करें। दूसरा - 'सम्मति' अर्थात् सहमति, किसी भी सुकृत, धर्म प्रभावना के कार्यों को अपनी ओर से सदैव सहमति प्रदान करें । तीसरी जो विरले लोग ही देते हैं वह है 'संकति' अर्थात् अपनी संतान को जिन शासन को अर्पण करना । अगर आप या आपके परिवार से संबंधित कोई भी पुण्यात्मा संयम पथ पर जाना चाहे तो कभी नकारें नहीं हमेशा उसे उत्साहित करें। पंचमकाल में जो इंसान साधु बने वो महान है ।

आज अ.भा. त्रिस्तुतिक संघ के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री शांतिलालजी रामानी व अ.भा.श्री नवयुवक परिषद के महामंत्री श्री अशोकजी श्रीश्रीमाल भी महामहोत्सव में हिस्सा बनने पधारे एवं पू. आचार्यश्री से आशीर्वाद प्राप्त किया ।

दोपहर में वाराणसी नगरी के भव्य पांडाल में गांव सांझी एवं मेहन्दी

वितरण कार्यक्रम में महिलाओं द्वारा मंगल गीत गाए एवं मेहन्दी वितरित की गई । इस अवसर पर पूरा पांडाल खचाखच भरा हुआ था बागरावासियों की श्रद्धापूर्वक उपस्थिति के आगे भव्य पांडाल भी छोटा पड़ गया । इसी दौरान श्री पार्श्वनाथ जिनालय विजय मुहूर्त में बड़े भक्ति भाव से श्री मनमधुकर ग्रुप द्वारा संगीत की सुरावलियों के साथ मुनिश्री चारित्ररत्नविजयजी म. एवं मुनि श्री निपुणरत्नविजयजी म. के पावन सान्निध्य में लाभार्थी परिवार द्वारा अठारह अभिषेक पूजन किया गया । विधिकारक श्री सत्यविजयजी एवं त्रिलोकजी द्वारा मंत्रोच्चार के साथ स्वर्ण जल , प्रथम अष्टवर्ग, द्वितीय अष्टवर्ग, सद् औषधि, पुण्य औषधि, श्री चंदन, कपूर जल, पंचामृत, तीर्थ जल (108 कुओं का पानी) आदि औषधियों से प्रभु का अभिषेक किया गया । 'पारस प्यारा है जीवन आधारा है', 'केसरिया-केसरिया आज हमारों रंग केसरिया', 'पारस प्यारा तारण हारा' आदि भक्ति गीतों पर झूमते हुए श्रद्धाभाव से पूजन विधान किया गया।

रात्रि भक्ति में नवकार महामंत्र से भक्ति प्रारंभ की गई । अहमदाबाद के संगीतकार त्रिलोकजी मोदी एवं मुंबई की प्लेबेक सिंगर कलाकार ने भक्ति गीतों से वातावरण को ध्वनियों से भर दिया । रेहना लेहरी ने अपनी कोकिल आवाज में 'तेरे दरबार में दादा खुशी मिलती है', 'दुनिया में सहारा क्या लेना तेरा एक सहारा काफी है', 'सबसे प्यारा सबसे न्यारा बागरा का धाम है', 'दुःख में क्यूं घबराए क्यूं जीवन व्यर्थ गवाएँ', 'वीर मेरे पथ रखियो सदा महावीर जी' जैसे मस्ती भरे गीतों की फनकार से उपस्थित जन समुदाय को भक्ति से तृप्त कर दिया । भाई त्रिलोक मोदी ने 'मोहनखेड़ा वाले का जग में डंका बाजे', 'मंडप बड़ा सुहाना बागरा नगर में आना' आदि भक्ति गीतों की स्वर लहरियों से भक्ति का समा बांध दिया । साथ ही आए कलाकार भाई राजु रावल द्वारा लगातार दस मिनट तक गोल-गोल घूमकर तलवारों द्वारा साहसिक कला का प्रदर्शन किया गया । 'दादा थारे मंदरिया में मोरणिया बोले' जैसे भक्ति गीतों पर नृत्य करते हुए अपनी अद्‌भुत कला से कपड़े से मोर, कबूतर, खरगोश आदि जीवों की कलाकृति बनाकर सबको

श्रीफल आदि से बहुमान किया गया । श्री रिणवाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि आज महाशतकोत्सव के इस पावन प्रसंग पर सभी भक्तों के मन की मुरादें पूर्ण होगी। भगवान हमेशा भक्त पर स्नेह बरसाते है संकट के समय वह अपने भक्त को अकेला नहीं छोड़ते बल्कि अपने हाथों में उठाकर चलते हैं । जिसे भी भगवान की भक्ति का रंग लग जाता है वह भव-भव के जन्मों से पार हो जाता है । सकल श्रीसंघ ने मुझे इस महोत्सव में आमंत्रित किया इसका मैं बहुत-बहुत आभारी हूँ । मेरा सौभाग्य है कि मैं इस भव्य महोत्सव में सम्मिलित हुआ । तत्पश्चात सभी अतिथियों ने पू. आचार्यश्री से भेंट की एवं गुरुदेव से आशीर्वाद लिया ।

आश्चर्य चकित कर दिया ।

इसी बीच महामहोत्सव व भक्ति संध्या में भाग लेने जालोर क्षेत्र की विधायक श्रीमती अमृता मेघवाल, रानीवाड़ा क्षेत्र के विधायक श्री नारायणसिंहजी, राजस्थान वन विभाग मंत्री श्री राजकुमारजी रिणवा, भीनमाल, नगरपालिका के चैयरमेन श्री सावलरामजी देवासी अतिथि के रूप में पधारे संचालक श्री विनोदजी आचार्य द्वारा अतिथियों का परिचय कराया गया एवं श्रीसंघ द्वारा चांदी के सिक्कों, माला,

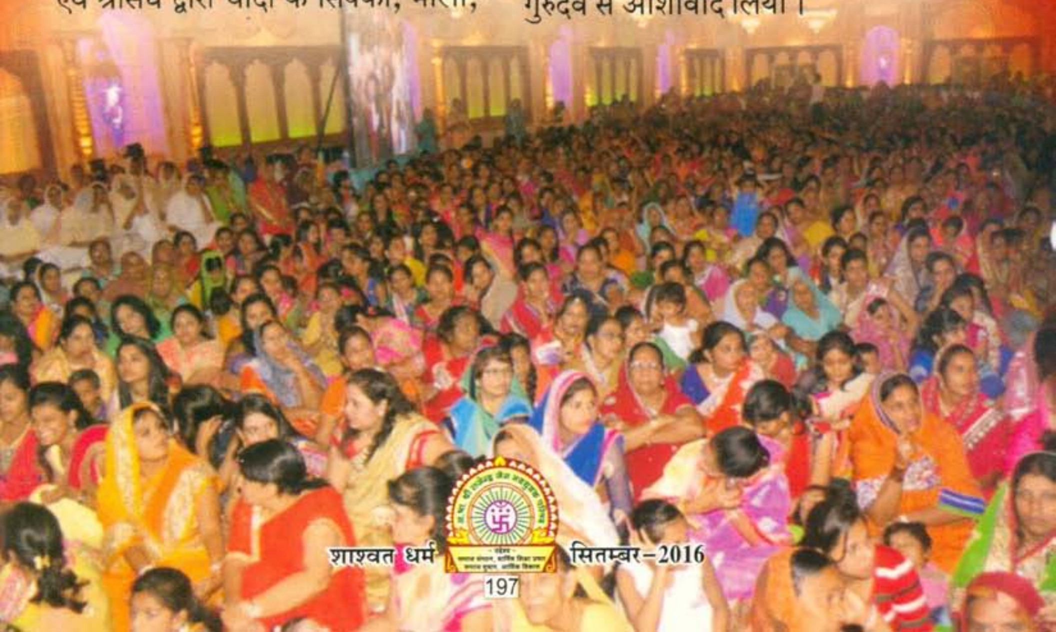

बागरा के 100 वर्ष
गुरुदेव का आशीर्वाद,
भक्ति का
फलदायी आयाम

# धन्य हो लाभार्थी परिवारगण

# बागरा के 100 वर्ष

## भाव पतियों का बहुमान, परिवारों का बढा मान

# हम समर्पित हैं देव-गुरु-धर्म की

# प्रभावना में श्रीसंघ ने किया सम्मान

## दशम दिवस

# प्रभु पार्श्वनाथ की सौंवी ध्वजा फहराते ही बागरानगर के सभी भक्त झूम उठे ।

(दि. 20 फरवरी महासुद 13, शनिवार)

आज बागरा नगर का आभा मण्डल दिव्य तेज से प्रकाशमान हो रहा है । प्रातः काल की पावन बेला में 'प्रभु पारस दरस बिन जियो तरसे दरस करूं तो मारो हय्या हरषे', 'बागरा मण्डन नाथ निरंजन पारस मेरा रे' जैसे सुमधुर गीतों की स्वरलहरियों के साथ सूर्य की स्वर्णिम रश्मियां बागरा के कण को सुवासित कर रही है ।

मध्य रात्रि में शासन सम्राट आचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरिश्वर म.सा. द्वारा मंत्रोच्चार के साथ प्रभु पार्श्वनाथकी पंचधातु की प्रतिमा का अंजन विधान किया गया पश्चात पू. गुरुदेव द्वारा देशना प्रदान की गई ।

प्रातः काल की शुभ वेला में वाराणसी नगरी में मुनिराजश्री निपुणरत्न विजयजी म.सा. ने भक्तामर पाठ कराकर फरमाया कि भगवान जब केवल ज्ञान प्राप्त कर इस धरा पर विचरण करते हैं तो उनके चरण धरा पर स्पर्श नहीं होते वे नवलोकांतित देवों द्वारा रचित कमल पुष्प पर चलते हैं । अंजन विधान तो केवल मात्र एक विधान है । भगवान को जब केवलज्ञान होता है तो इतनी ऊर्जा प्रकट होती है कि यदि प्रभु अपना एक कदम भी धरा पर रखें तो एक योजन का गढ्ढा हो जाता है इसलिए करोड़ों देवता प्रभु के लिए स्वर्णकमलों की रचना करते हैं । आज पंचकल्याणक पूर्ण होने पर सभी अपने-अपने गंतव्य को जाने की

तैयारी में हैं परन्तु अपने साथ दस दिनों की अच्छे भावों की माटी लेकर जाओ । हमें आत्मा का हमेशा चिंतन करते रहना चाहिए।

श्री पार्श्वनाथ मंदिर के प्रांगण में शनैःशनैः जन सैलाब बढ़ता ही जा रहा था। सभी भक्तों में अपार उत्साह हिलौरे खा रहा था । आज बागरावासियों का वर्षों पुराना सपना साकार रूप लेने जा रहा था । वर्षों से जिस घड़ी का प्रतिक्षण सबको बेचैनी से इंतजार था वह घड़ी आ ही गई । आज पू. गच्छाधिपति, संघ नायक आचार्य श्रीमद् विजयजयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में हजारों भक्तों की मनोकामना वास्तविकता में परिणित होने जा रही थी । बागरा नगर की पुण्य धरा तीर्थ बनने जा रही थी । बागरा मंडन भगवान श्री पार्श्वनाथ की सौवीं ध्वजारोहण के साथ ही यह नगर तीर्थ रूप में परिणित होने जा रहा था । प्रातः काल से ही बच्चे, वयस्क, वृद्ध सभी श्री पार्श्वनाथ प्रभु मंदिर के सौवें ध्वजारोहण के अद्भुत, अलौकिक, उत्सव को देखने के लिये निरन्तर मंदिर प्रांगण के समक्ष इकट्ठा हो रहे थे । आसपास के गांवों एवं नगर के जैन-जैनेत्तर भाई-बंधु भी इस अनुपम ऐतिहासिक महोत्सव के साक्षी बनने के लिये बड़ी आतुरता से चले आ रहे थे । सारा मंदिर विविध प्रकार के पुष्पों से सजाया गया जिनकी सुगंध पूरे वातावरण को सुगंधित कर रही थी । इस स्वर्णिम पल को देखने के लिए प्रायः सभी के चेहरों पर हर्षोल्लास छलक रहा था । बैण्ड-बाजे, ढोल-शहनाई अपनी मधुर धुनों से चारों ओर भक्तिमय वातावरण बना रहे थे । मंदिर प्रांगण में 'ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय' 'ॐ नमो भगवते अर्हते परमेश्वराय', 'ॐ पुण्याहं- पुण्याहं' जैसे मंत्रों से पूरा गगन मंडल गुंजित हो रहा था । सुरक्षा एवं सुचारू व्यवस्था की दृष्टि से केवल पासधारियों को ही प्रवेश की अनुमति दी गई ताकि ध्वजारोहण का कार्यक्रम निर्विघ्न सम्पन्न हो सके । प्रभु पार्श्वनाथ मंदिर की मुख्य ध्वजा के लाभार्थी परिवार एवं अन्य 23 देवकुलिकाओं एवं दादा गुरुदेव राजेन्द्र सूरीश्वरजी म. की देहरियों की ध्वजा के लाभार्थी परिवार अपने-अपने नियत स्थान पर संपूर्ण तैयारी के साथ खड़े थे । महोत्सव में दर्शनार्थ पधारे भक्त भी अनुपम पल को निहारने के लिये अपने आप को स्थिर कर शालीनता से खड़े थे । चारों ओर प्रभु के जयकारे लग रहे थे । इसी बीच पूज्य

गुरुदेव आचार्य जयंतसेनसूरीश्वरजी म., वरिष्ठ मुनिराज श्री नित्यानंदविजयजी म.सा. एवं समस्त मुनि भगवंतों एवं साध्वीवृन्द के साथ मंदिर में प्रवेश करते हैं । जैसे ही पूज्य गुरुदेव ने मंदिर में प्रवेश किया है सारा मंदिर परिसर जयकारों से गुंजायमान हो गया । सभी को सावधान किया जाता है । सारा मंदिर परिसर ॐ पुण्याहं - पुण्याहं, प्रियत्ताम-प्रियत्ताम के मंत्रों से गुंजायमान हो उठा । पू. आचार्यश्री समस्त मुनिमण्डल के साथ प्रभु के समक्ष हाथ जोड़ते हुए क्रियामण्डप में बैठते है । पू. गुरुदेव सभी उपस्थित भक्तों को सम्बोधित करते हुए फरमाते है कि आज बागरा नगर पवित्र धरती पर बागरा तीर्थ रूप लेने जा रहा है हमारे पूर्वजों द्वारा बागरा में इस भव्य जिनालय का निर्माण कर आचार्यश्री धनचंद्र सूरीश्वरजी म.सा. की सान्निध्यता में प्रतिष्ठा करवाई थी । प्रतिष्ठोपरांत बागरा नगर की यशकीर्ति निरंतर बढ़ी एवं आज भी बढ़ रही है । बागरावासियों द्वारा मंदिर के शताब्दी उत्सव को महाशतकोत्सव के रूप में ऐतिहासिक महामहोत्सव का आयोजन कर इसे अविस्मरणीय बना दिया यह सभी भक्तों की भक्ति भावना एवं श्रद्धा का प्रत्यक्ष प्रतीक रूप है । आज तेरस के शुभ दिन भगवान की पताका फहराने का शुभ मुहूर्त है । हम गौरवान्वित हैं कि पूर्वजों की यशगाथा को शताब्दी उत्सव मनाकर याद कर रहे है । 100 वर्षों में तीन पीढ़ियाँ बीत जाती हैं । आज पांचवी पीढ़ी यह उत्सव देख रही है । भगवान की महिमा अपार है । अशादि श्रावक ने भगवान तीर्थंकर प्रभु श्री पार्श्वनाथ की प्रतिमा भरवाई और जीवनभर भावपूर्वक पूजा कर उसे स्वर्गलोक ले गया, यह प्रतिमा पाताल में भी पूजी गई एवं वह मूर्ति पृथ्वी लोक आई। आज प्रत्येक मंदिर में प्रभु पार्श्वनाथ की प्रतिमा निश्चित रूप से रहती है वे पुरुषादानी थे । आज हमारा परम सौभाग्य है कि चारों दिशाओं में यशकीर्ति फैलाने वाली पताका का ध्वाजारोहण करने का हमें यह शुभ अवसर प्राप्त हुआ ।

पूज्य गुरुदेव द्वारा विभिन्न हस्त मुद्रा के साथ मंत्रोच्चार प्रारंभ किया गया । पू. आचार्य श्री बार-बार घड़ी में देखकर समय का अवलोकन कर रहे थे । जैसे ही घड़ी में 9.30 बजे पू. गुरुदेव ने 'ॐ स्वाहा' के मंत्रोच्चार से ध्वजारोहण का संकेत दिया घंटे, घड़ियाल एवं थाली डंके की झनकार से सभी को सूचित किया गया । सभी मुनिभगवंतों के निर्देशन में लाभार्थी परिवारों द्वारा ध्वजारोहण सम्पन्न

किया गया।

मुनिश्री प्रशमसेन विजयजी द्वारा 'चिंतामणि पारस नाथ चरणों में वन्दन है, प्रभु देव दयाल जो बागरा मण्डन है' स्तवन दोहराया गया। पूरे मंदिर प्रांगण में खुशी की लहर दौड़ गयी। ध्वजारोहण होते ही पूरे मंदिर व बागरा नगर में लगातार चार राऊण्ड लगाकर हेलीकाप्टर से पुष्प वर्षा की गई। 'आज मारा मंदरिया मां मोतीड़े मेह वरस्यो रे' जैसे भक्ति गीतों से पूरा प्रांगण गूंज उठा सभी श्रद्धालुजनों ने अपार उत्साह एवं खुशी से नाचते-झूमते हुए एक-दूसरे को बधाई दी एवं पू. गुरुदेव के कर-कमलों से ध्वजा के प्रशस्ति-पत्र का अनावरण किया गया। जीरावला पार्श्वनाथ श्रीसंघ द्वारा पू. गुरुदेव से जीरावला तीर्थ पर प्रतिष्ठा में सान्निध्यता प्रदान करने हेतु विनती की गई। पूज्य गुरुदेव ने अपने आशीर्वचन से उन्हें आश्वस्त किया।

मुनिराजश्री विद्वदरत्न विजयजी म.सा. ने अपनी भावना व्यक्त करते हुए कहा कि सौ वर्ष पूर्व प्रतिष्ठोत्सव की ध्वजारोहण का दृश्य तो हमने नहीं देखा था पर आज इस शताब्दी महामहोत्सव में अपार उत्साह एवं उमंग को देखकर ऐसा लगता है कि वह क्षण पुनः आ गया हो।

## अपार हर्षोल्लास से मनाया राष्ट्रसंत का पाटोत्सव

(मुनि भगवंतों की अमृतवाणी से गुरु गुणानुवाद श्रवण कर भक्तों ने किया पुण्यार्जन)

पूज्य गुरुदेव ध्वजारोहण सम्पन्न कर फले चुन्दड़ी के लाभार्थी परिवार के घर पगलिये करते हुए वाराणसी नगरी में पधारे जहां पूज्य आचार्यश्री के 33 वें पाटोत्सव के पुनीत दिवस के उपलक्ष्य में सम्पूर्ण साधु-साध्वीजी भगवंत गुणानुवाद हेतु विराजमान थे। पूज्य श्री के आते ही राष्ट्रसंत की जय-जयकार से पूरा पांडाल गुंजायमान हो गया। अपार जनसमूह से भरे इस विशाल प्रवचन मण्डप में पैर रखने की भी जगह नहीं थी। प्रांगण में बाहर लगी एल.ई.डी. स्क्रीन पर भी सैकड़ों की संख्या में भक्तगण पूज्य श्री के 33 वें आचार्य पाटोत्सव के पावन उत्सव को निहार रहे थे। संगीतकार श्री दीपक करनपुरिया 'जयंतसेन गुरु पायो मैंने' जैसे गीतों की भक्ति सरिता बहा रहे थे। अरिहंत चैनल की प्रसिद्ध कलाकार

श्री मंजुलाबेन ने 'पूनम को चांद देख्यो सपना में माता रत्नकुक्षी बनी पार्वती माता', 'बागरा नगरे गुरुजी पधारिया सूरज ऊग्यो सोना रो' गुरुभक्ति के गीत गाकर उपस्थित जनसमूह को आनंदित कर दिया। सभी भक्तों द्वारा सामूहिक गुरुवंदन किया गया। महोत्सव में भाग लेने अनन्य गुरु भक्त, समाज गौरव, राजस्थान के गृहमंत्री श्री गुलाबजी कटारिया, आहोर विधायक श्री शंकरसिंहजी, आहोर महिला मोर्चा जिलाध्यक्ष श्रीमती मंजूबेन सौलंकी, पारसजी जैन के साथ पधारे जिनका श्रीसंघ द्वारा माला, चांदी के सिक्कों आदि से बहुमान किया गया।

गुरु गुणानुवाद में सर्वप्रथम मुनिराजश्री जयरत्नविजयजी ने गुरुदेव को वंदन करते हुए कहा कि पू. गुरुदेव भगवान सुधर्मा स्वामी की पाट परम्परा के भास्कर हैं, सभी की भावना है कि आचार्यश्री के गुणों का गुणगान करें परन्तु गुरुदेव के गुणों का बखान करना किसी के बस की बात नहीं। आज जीवन तीव्रगति से बीत रहा है। 33 साल भाण्डवाई से बागरा तक कैसे बीत गया पता ही नहीं चला। आज आचार्य श्री स्वास्थ्य की दृष्टि से भले ही थोड़े कमजोर हैं परन्तु कोई पूछे कि सबसे युवा कौन हैं तो उत्तर में सदैव पूज्य गुरुदेव का ही नाम आएगा। पूज्य गुरुदेव ने दादा गुरुदेव की परम्परा को अपने सामर्थ्य से इतना विराट व व्यापक बना दिया है कि जिसका मूल्यांकन करना असंभव है। हम सभी के लिये पूज्य गुरुदेव आप ही परमात्मा हैं। हमारा भी यह दायित्व है जब कभी भी गुरुदेव के स्वास्थ्य, विहार एवं सामाजिक संगठन की बात हो तो चतुर्विध संघ एवं सकल श्रीसंघ गुरुदेव की आज्ञा का पालन करें और गुरुदेव के स्वास्थ्य के प्रति सजग रहें।

साध्वीजी श्री अमृतरसाश्रीजी ने गुरु गुणों का बखान करते हुए कहा कि यदि पू. गुरुदेव के गुणों का वर्णन करें तो विशाल ग्रंथ बन जाएगा, जिस प्रकार तारों को गिनना असंभव है, पृथ्वी की लम्बाई-चौड़ाई मापना संभव नहीं उसी प्रकार पू. गुरुदेव के गुणों का वर्णन करना संभव नहीं। गुरुदेव आप गच्छ के पारसमणि

अंतर्गत विशेष कार्य होने चाहिए एवं समाज के कमजोर भाइयों को एक मुश्त रकम देकर सम्मानित करें जिससे उनके सशक्त बनने से समाज एवं धर्म दोनों का हित हो । दया धर्म का मूल है इस बात को कभी न भूलें।

मुनिश्री विद्वरत्नविजयजी म. ने कहा कि गुरुदेव दीपक के समान हैं यदि दीपक को देखकर हमारे जीवन में अंधकार दूर नहीं होता है तो यह हमारे अंतर्मन की कमी है । पूज्य गुरुदेव के रोम-रोम में साधार्मिक भक्ति भरी हुई है समाज एवं गच्छ की उत्थान की भावना से ओतप्रोत रहते हुए अपने स्वास्थ्य एवं शरीर की चिंता किए बिना निरंतर शासन प्रभावना के कार्य किये हैं । गुरुदेव के चरणों में जो कोई रोता हुआ आता है वह वापस हंसता हुआ ही जाता है । ऐसे गुरुवर के गुणों का गुणगान करने का साहस किसी में भी नहीं है

हैं । साध्वीजी द्वारा बड़ी ही मार्मिक कविता के द्वारा गुरुदेव के गुणों का गुणगान किया आपने कहा कि गुरुदेव आपके जैसे तो हम नहीं बन सकते परन्तु आपका अंश मात्र भी हमें प्राप्त हो गया तो हमारा जीवन धन्य हो जाएगा । आप ज्ञान की त्रिवेणी हैं, दुश्मन को भी दोस्त बना लें आप में ऐसी वात्सल्यता है । आप हमेशा दीर्घायु एवं शतायु हों ।

वयी वृद्ध मुनिप्रवर श्री वीररत्न विजयजी म. ने गुरुदेव के 63 वर्षों के संयम जीवन का परिचय दिया एवं साधार्मिक भक्ति पर विशेष जोर देते हुए कहा कि हमें सदैव हमारी दृष्टि विशाल रखनी चाहिए समाज के सम्पन्न गुरुभक्तों के मन में अपने अलावा साधार्मिक भाइयों के प्रति भी सहानुभूति की भावना होनी चाहिए । क्योंकि सच्चे दिल से साधार्मिक भक्ति करने से तीर्थंकर नाम का बंध हो जाता है । साधार्मिक भक्ति के

गुरु के गुणों का गुणगान करना अर्थात् सूर्य को दीपक दिखाना है।

मुनिराजश्री निपुणरत्नविजयजी म. ने गुरु गुणानुवाद में अपने भाव प्रकट करते हुए कहा कि गुरुदेव जब पाट पर विराजमान हुए थे तब तो मेरा जन्म भी नहीं हुआ था। हम लोग छोटा सा कार्य भी कर कहते हैं कि यह मैंने किया एवं अपना प्रभाव बताते हैं परन्तु पूज्य गुरुदेव इतनी बड़ी उम्र में भी कहते हैं कि मैंने कुछ नहीं किया यह सब तो गुरुदेव की कृपा है।

दुनिया में बहुत से लोग इतिहास पढ़ते हैं, बहुत से लिखते हैं एवं बहुत से लोग सुनते हैं परन्तु जयंतसेन गुरु तो इतिहास बनाते हैं। पूज्य गुरुदेव ने कितने ही इतिहास बनाए एवं उनका पुनरागमन किया है। ऐसा कहा जाता है कि बागरा में चांदी के पाट रखे जाते थे परन्तु आज पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में बागरावासियों के हाथों में चांदी करके नया इतिहास रच दिया। गुरुदेव ने 3 हजार से भी ज्यादा जिनबिम्बों की प्राण – प्रतिष्ठा करवाई है। सैंकड़ों साहित्य एवं हजारों गीतों का सृजन किया है। आपश्री ने दादा गुरुदेव श्री राजेन्द्र सूरीश्वरजी म. की महिमा चारों दिशाओं में फैलाने का अथक प्रयास किया है।

राजस्थान के गृहमंत्री श्री गुलाबजी कटारिया ने गुरुदेव को नमन करते हुए कहा कि जब तक हमारे कोई पुण्य उदय नहीं होते तब तक हमें संतों के दर्शन नहीं होते हैं। हमारा जैन समाज बड़ा ही पुण्यशाली है जिसे महान साधु-संतों का सान्निध्य मिलता है जो गांव-गांव व नगर में जाकर लोगों के जीवन में अज्ञानता के अंधकार को दूर कर ज्ञान से प्रकाशित करते हैं। यह हमारा दायित्व है कि पूज्य गुरुभगवंतों के विहार के दौरान उनके स्वास्थ्य व सुरक्षा के प्रति सजग रहें। पूज्य गुरुदेव असंभव को भी संभव कर देते हैं।

आपने कहा कि यह देव, गुरु एवं पूज्य गुरुदेव जैसे संतों का ही आशीर्वाद है कि मेरे 38 वर्षों के राजनैतिक जीवन में आज तक एक भी दाग नहीं है कोई भी मेरे ऊपर ऊंगली नहीं उठा सकता। मैं गुरुदेव से यही प्रार्थना करता हूँ कि जीवन पर्यन्त निष्कलंक रहते हुए निस्वार्थ भाव से समाज की सेवा करता रहूँ एवं एक अच्छे श्रावक के नाते जैन होने का ऋण चुका सकूँ।

# पू. गुरुदेव के आशीर्वचनों की सरिता से कृतार्थ हुए गुरुभक्त

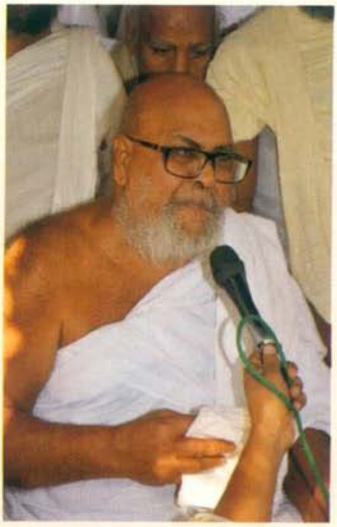

पूज्य आचार्य भगवंत, युग प्रभावक, संघ एकता शिल्पी, गच्छाधिपति श्री जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. ने अपने मुखारविन्द से सभी भक्तों को मांगलिक श्रवण करवाकर अपने आशीर्वचन में फरमाया कि आज 33 वें पाटोत्सव के उपलक्ष्य में सम्पूर्ण चातुर्विध संघ हुआ है एवं सभी भक्तों में अपार उत्साह झलक रहा है। सभी ने अपने-अपने विचार रखे परन्तु मैं कुछ भी नहीं हूँ आज मैं जो कुछ भी हूँ यह सब गुरु की कृपा है। गुरुदेव ही मुझे शक्ति प्रदान करते हैं। आप सभी भक्त संघ, शासन और गच्छ के प्रति हमेशा समर्पित भाव रखें एवं सभी साधु-साध्वी भी संघ के प्रति समर्पित रहें। दुनिया में कई तरह के लोग आएंगे और कई तरह की बातें करेंगे पर हमें अपने गुरुदेव के प्रति समर्पित रहकर धर्म, शासन एवं गच्छ की सेवा में तन,मन एवं धन को लगाते हुए शासन के उत्थान में समर्पित भाव से निरंतर निष्ठावान रहते हुए गुरुदेव के बताये हुए मार्ग का अनुसरण करना है। आज जितना उत्साह, उमंग बागरा संघ में है उसे देखते हुए यह निश्चित है कि आने वाले दिनों में और अधिक बढ़ेगा। मेरी यही भावना है कि बागरा संघ को गुरु के वचनों पर समर्पित होने का और अधिक बल मिले एवं इसी प्रकार शासन प्रभावना के कार्यक्रम करते रहें यही शुभाशीर्वाद है।

इसी क्रम में जयंतसेन म्युजियम ट्रस्ट मण्डल के नेतृत्व में श्री चिरागजी द्वारा गुरु गुणगान करते हुए पू. गुरुदेव के सम्मुख विनति की कि म्युजियम तीर्थ से राज राजेन्द्र तीर्थ मण्डल का भाव भरा निवेदन है कि आपका अगला चातुर्मास मोहनखेड़ा तीर्थ में हो। विजयवाड़ा श्रीसंघ द्वारा भी पू. गुरुदेव से चातुर्मास विनंति की गई। चातुर्मास विनंति के क्रम में सियाणा श्रीसंघ द्वारा भी भावभरी विनंती की गई।

# पूज्य श्री की सान्निध्यता एवं वरिष्ठजनों के करकमलों से हुआ विभिन्न कृतियों का विमोचन

पूज्य आचार्य भगवंत के पाटोत्सव के क्रम में विभिन्न धार्मिक पुस्तकों एवं सीडी का विमोचन किया गया जिसमें सर्वप्रथम पूज्य गुरुदेव के 63 वर्षों के प्रवचनों के संकलन का 684 पेज के ग्रंथ 'जयंतसेन

प्रवचनमाला भाग-1' का विमोचन गृहमंत्री श्री गुलाबजी कटारिया द्वारा किया गया।

आचार्यश्री द्वारा उत्तराध्ययन सूत्र के आधार पर भगवान महावीर की देशना पर आधारित सीडी 'प्रभु वीर प्रकाशी देशना' का विमोचन सूर्य प्रकाशजी भंडारी द्वारा, पू. आचार्य श्री द्वारा रचित गुजराती पुस्तक 'प्रियुश प्रभा' का विमोचन नवयुवक परिषद अध्यक्ष श्री रमेश भाई धरू एवं हरिशजी संघवी द्वारा, मुनिश्री प्रशमसेन विजयजी द्वारा रचित 'मिले हैं हमें जयंतसेन गुरु' जिसमें पूज्य गुरुदेव की महिमा के गीतों का संग्रह किया गया है का विमोचन श्री बाबुलालजी कटारिया, श्री मिलापजी

चौधरी एवं श्री नरेन्द्रजी पोरवाल द्वारा, श्री प्रदीपजी ढालावत द्वारा रचित भजनों की सीडी 'भक्तों के मानों भगवान हैं' के तृतीय प्रकाशन का विमोचन अ.भा. श्री सौ धर्म वृहत्तपोगच्छीय जैन श्वेताम्बर त्रिस्तुतिक संघ के राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री शांतिलालजी रामानी, परिषद पाठ्यक्रम भाग 1 से 5 तक के हिन्दी संस्करण का विमोचन बागरा ट्रस्ट मण्डल अध्यक्ष श्री मोहनजी एवं श्री हरिशजी संघवी द्वारा किया गया। पूज्य आचार्य भगवंत को कांबली वोहराने एवं गुरुपद पूजन का अलभ्य लाभ जोधपुर निवासी श्री सूर्य प्रकाशजी भंडारी (मुन्नाभाई) चैन्नई वालों ने लिया।

# श्री नरेन्द्र कुमारजी पोरवाल को समाज गौरव अलंकरण

प.पू. गच्छाधिपति साहित्य मनीषी राष्ट्रसंत आचार्य म.सा. ने श्री नरेन्द्रकुमार रायचंदजी पोरवाल, बागरा की श्रीसंघ, समाज के प्रति समर्पण सेवा भावना को देखते हुए महाशतकोत्सव के पावन अवसर पर 'समाज गौरव' अलंकरण से गौरवान्वित कर आशीर्वाद प्रदान किया । आपको सरस्वती माँ का वरदान प्राप्त है आप कलम के धनी हैं, शब्दों के शिल्पी हैं आपकी गुरुभक्ति अनुमोदनीय है आपके द्वारा अनेक सारगर्भित लेखों का लेखन किया गया है । इस अवसर पर श्री सौधर्म वृहत्तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ, बागरा द्वारा श्री नरेन्द्रजी पोरवाल की भावभरी अनुमोदना की गई । श्रीसंघ सदस्यों एवं श्री गुलाबजी कटारिया द्वारा श्री पोरवाल को प्रशस्ति पत्र भेंट किया गया । प्रशस्ति पत्र का वाचन मंच संचालक श्री गोपाल आचार्य ने किया ।

इसी क्रम में संगीतकार श्री राजेन्द्रजी करनपुरिया दीपकजी करनपुरिया द्वारा गुरु भक्ति गीतों एवं कविता के सुमधुर पाठ से पूरे प्रागंण को भक्तिमय किया गया ।

जिस प्रकार प्राचीन समय में राजा-महाराजाओं के राज्याभिषेक या अन्य मांगलिक उत्सवों पर पूरे नगर की प्रजा को आमंत्रित किया जाता था उसी प्रकार श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ के 100 वें ध्वजारोहण एवं पूज्य गुरुदेव के 33 वें मंगलकारी पाटोत्सव के उपलक्ष्य में सम्पूर्ण बागरा नगर को आमंत्रित किया गया । महाशतकोत्सव के इस शुभ अवसर 36 कौम का स्वामिवात्सल्य 'स्वरुचि भोजन' आयोजित किया गया । सभी के लिए विशाल पांडाल बनाये गये जिसमें नगर के प्रत्येक वर्ग के लोगों ने शिरकत की एवं स्वामीवात्सल्य का लाभ लिया ।

इस पावन अवसर पर बागरा नगरवासियों की सेवा के लिये शा. देवीचंदजी केशरीमलजी परिवार

बागरा की ओर से एक एम्बुलेंस भेंट की गई जिसका अनावरण पूज्य गुरुदेव द्वारा वासक्षेप डालकर किया गया।

दिन में श्री वाराणसी नगरी के मण्डप में सामूहिक सामायिक का आयोजन किया गया जिसमें श्रद्धालुओं एवं बड़ी संख्या में महिलाओं ने लाभ लिया।

दोपहर में विजय मूहूर्त में क्रियामण्डप में विधिकारक श्री त्रिलोकजी कांकरिया एवं सत्यविजयजी हरण द्वारा 'ॐ रिद्धी-सिद्धी कल्याणं' जैसे मंत्रोच्चार के साथ श्री 108 वृहद शान्ति स्नात्र महापूजन किया गया। श्री मनमधुकर ग्रुप के राजु भाई एवं कैलाश भाई द्वारा 'म्हारे दादा रे दरबारे ढोल बाजे रे', 'केसरिया-केसरिया आज हमारो रंग केसरिया', 'भाई म्हारा आज सोना रो सुख उगी ग्यो' भक्ति गीतों की स्वर सरिता के साथ संगीतमय वातावरण में पूजा पढ़ाई गई।

रात्रि भक्ति में भाई कमल द्वारा 'नवकार मंत्र है प्यारा इसने लाखों को तारा' गीत के पावन मंगलाचरण से भक्ति की रंगारंग शुरूआत की गई। सरस्वती वन्दना एवं 'ऐरी सखी मंगल गावो री' गीतों से भक्ति का जमघट लगाया गया। भाई योगेश ने 'बागरा नगर का नाथ है हमारा तुम्हारा', 'भजन कर ले रे चामड़ा की पुतली भजन कर ले' जैसे भक्तिमय गीतों की सुन्दर प्रस्तुतियाँ दी। आप की रात्रि भक्ति में अपने सुरों की सरिता से भाई दिलीपजी बाफना ने सबको भक्ति से साराबोर कर दिया एवं जैन जगत में अनगिनत भजनों की रचना कर अपनी विशिष्ट पहचान बनाने वाले प्रसिद्ध भजन लेखक श्री प्रदीपजी ढालावत भी विशेष रूप से पधारे जिनका श्रीसंघ द्वारा चांदी के सिक्कों आदि से बहुमान किया गया। दिलीपजी ने अपने सुमधुर आवाज में 'ओ मेरी अखियाँ तरसे तेरे दीदार के लिये, मैं बरसों तरसा तेरे दीदार के लिये', 'मारवाड़ी गीत 'वीरा रे मत दीजो मावडी ने दोष कर्मों की रेखा न्यारी - न्यारी', 'न ओसवाल मुझे कहना न पोरवाल मुझे कहना', 'क्या चढ़ाऊं भगवन भावों का डेरा है', 'ओ म्हारा नैम जी तोरण तीरथ क्यों मोड़ेया' जैसे भक्ति गीतों से भक्तों को प्रभु भक्ति में झूमने पर मजबूर कर दिया। साहिनी बहन द्वारा 'मिठो ने वालो लागे गुरु नाम थारो जयंतसेन जी हो' स्तवन की भावभरी प्रस्तुति दी गई। बागरा के भाई सुभाषजी द्वारा 'छाएँ काली घटाएँ तो क्या प्रभु की छतरी के नीचे हूँ मैं' गीत प्रस्तुत किया गया। गून्टूर की नन्ही बालिका पूजा ने 'माँ' पर सुन्दर कविता का पाठ कर सभी को भाव-विभोर कर दिया। अन्त में बाई दिलीपजी द्वारा 'जब मुँह खोलूं तो आए प्रभुजी तेरा नाम' गीत की भाव भरी प्रस्तुति दी गई।

# समाज-गौरव बनने के पश्चात नरेन्द्र पोरवाल का जवाब

ना मेरी योग्यता है ना मेरी पात्रता, ना मेरी औकात ना मेरी हैसीयत, अगर कुछ है तो सिर्फ और सिर्फ गुरुकृपा है । प्रसन्न इसलिये नहीं हूँ कि 'समाज गौरव' बना, हर्षता इस बात की है कि वो मेरे आराध्य मेरे जीवन निर्माता गुरुदेव के श्रीमुख से प्रदान हुआ ।

औरों को जो भी मिलता है वो उनके मुकद्दर से मिलता है,
मगर मुझे तो मुकद्दर भी आपके दर से मिलता है ।

मैं शब्द आप अर्थ, आपके बिना मैं व्यर्थ । दूसरे साधु संत लोगों का भविष्य बताते हैं, मेरे गुरुदेव लोगों का भविष्य बताते नहीं, बनाते हैं, संवारते हैं, सजाते हैं ।

'यही है जिंदगी अपनी, यही है बंदगी अपनी ।
जयन्त गुरु का नाम आया तो झुक गई गरदन अपनी ।।

बागरा के 100 वर्ष
धर्मानुष्ठानों में संलग्न
धर्म प्रेमियों की झलकी

## धर्मभक्तों के समूह

## लाभार्थियों के रूप में

# धर्मानुष्ठानों में लाभ लेने की

# खुशियां चरम शिखर पर

# अमर ध्वजारोहण की शानदार ढंग से तैयारियां

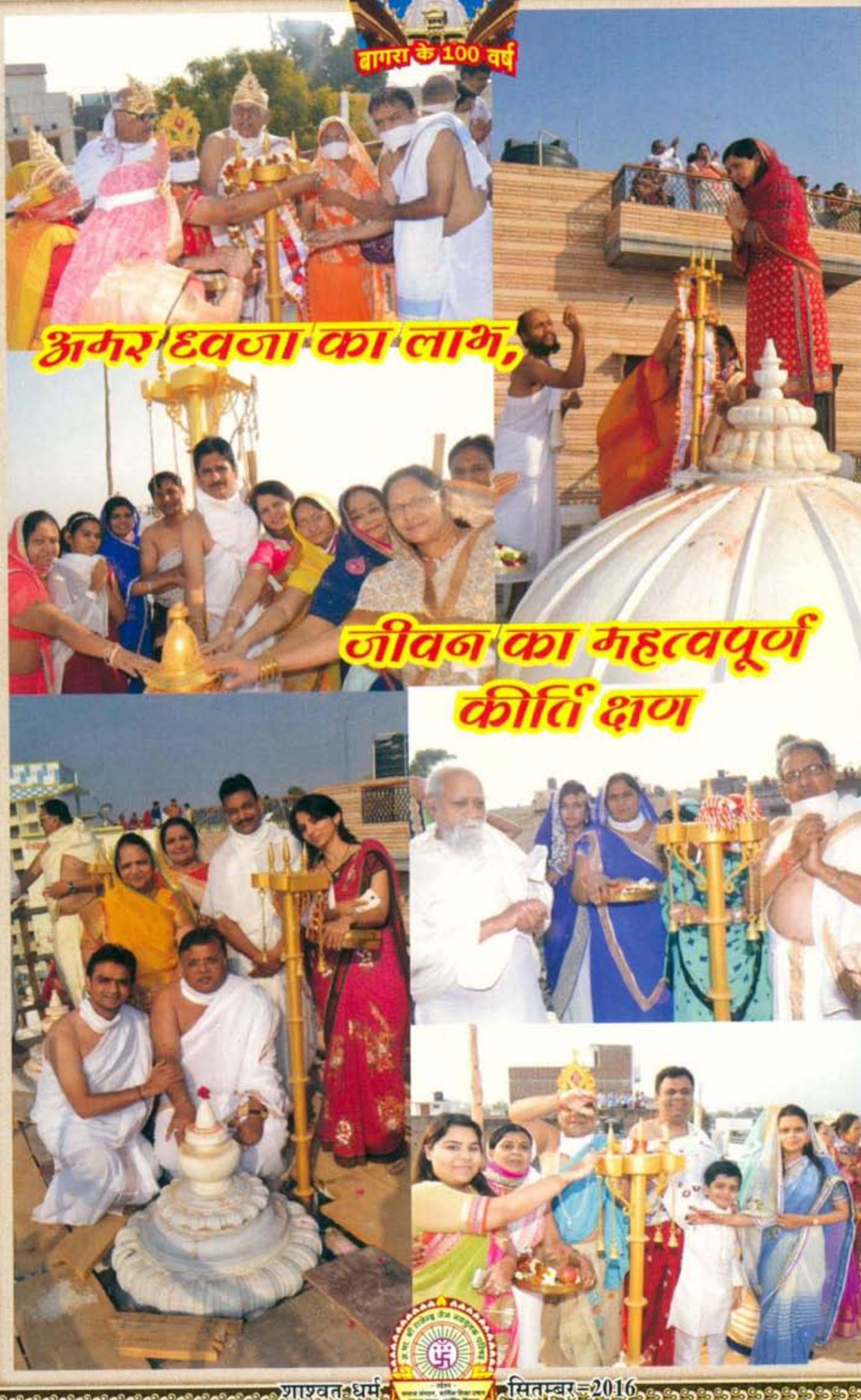

# अमर ध्वजा का लाभ, जीवन का महत्वपूर्ण कीर्ति क्षण

# अमर ध्वजा के आरोहण के लाभार्थी : धन्य हुआ पूरा परिवार

अमर ध्वजा हर्षोल्लास,
उत्साह से गगन में फहरी

श्री जयंतसेन म्युजियम सहित मोहनखेडा तीर्थ का पट्ट

## बागरा महिला मण्डल

एकादश दिवस

# जयकारों की गूंज के साथ हुआ बागरा तीर्थ का भव्य द्वारोद्घाटन

(दि. 21 फरवरी 2016, महासुद 14, रविवार)

'वामा नंदन विश्वना वंदन, बागरा नगर में छवि मनुहारी ।
परमानंद भैरव हूँ पाम्यो, सूरि राजेन्द्र जितारी ।।'

प्रभु पार्श्वनाथ की सौवीं ध्वजारोहण होते ही बागरा तीर्थ भूमि बन गया। जिस बागरा नगर में प्रभु पार्श्वनाथ की प्रतिमा की अंजनशलाका पूज्य दादा गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म. के वरद हस्तों से एवं प्रतिष्ठा आचार्य श्री धनचन्द्रसूरीश्वर व श्री मोहनविजयजी म.सा. जैसे धर्मचक्रवर्ती आचार्यों के प्रभावी सान्निध्यता में हुई हो वह नगर तो अपने आप में तीर्थ ही होता है । कहते हैं जो मंदिर अपने सौ वर्ष पूर्ण कर लेता है वह अपने आप में तीर्थ रूप ले लेता है बागरा के प्रभु पार्श्वनाथ जिनालय ने भी अपने सौ वर्ष पूर्ण करने पर पूज्य प्रतिष्ठा शिरोमणि, तीर्थ उद्धारक श्री जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के सान्निध्यता में बागरावासियों द्वारा ऐतिहासिक महाशतकोत्सव मनाकर प्रमाणिक रूप से इसे तीर्थ रूप देकर बागरा के इतिहास में एक और सुनहरा पृष्ठ जोड़ दिया ।

प्रातः काल की पावन पुनित वेला में काठियावाड़ी ढोल की गूंज एवं शहनाई व शंखवादकों की मधुर ध्वनि के साथ प.पू. आचार्यदेव गच्छाधिपति श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. एवं समस्त मुनिमण्डल व साध्वीवृंद की सान्निध्यता में सैकड़ों भक्त द्वारोद्घाटन के

लाभार्थी परिवार के निवास पर पहुंचे । वहाँ से गाजते-बाजते हुए चातुर्विध संघ के साथ राष्ट्रसंत की जय-जयकार करते हुए सभी भक्त श्री पार्श्वनाथ जिनालय जो अब तीर्थ रूप ले चुका है के प्रागंण में पहुंचे । सभी भक्त प्रभु के दर्शन को

लालायित थे एवं मन में उमंग एवं उत्साह लिए प्रभु की जयकार कर रहे थे । पूरा प्रांगण दर्शनार्थियों से लबालब था । 'ॐ पुण्याहं-पुण्याहं' की ध्वनि से पूरा गगन मंडल गुंजित हो रहा था । सभी को सावधान किया जाता है । सर्वप्रथम आचार्यश्री ने मंत्रोच्चार के साथ जिनालय के मुख्य द्वार पर वासक्षेप किया तत्पश्चात लाभार्थी परिवार द्वारा रजत ताले को खोला गया । अन्दर पहुंचकर क्रमशः अन्य दो दरवाजों को भी मंत्रोच्चार एवं गुरुदेव द्वारा वासक्षेपित कर लाभार्थी परिवार द्वारा खोला गया । सभी ने प्रभु पार्श्वनाथ के मनोहारी दर्शन किए ।

दर्शनवंदन के पश्चात् आचार्यश्री ने चातुर्विध संघ के साथ सभी भक्तों को काऊसग्ग पाठ एवं सामूहिक चैत्यवंदन कराया । मुनिराज श्री प्रशमसेन द्वारा 'चिंतामणि पारसनाथ चरणों में वंदन है, देवों के देव दयाल बागरा मंडल है।' स्तवन का पाठ किया गया । तत्पश्चात् दादा गुरुदेव श्रीमद् राजेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. के मंदिर का भव्य द्वारोद्घाटन किया गया । दादा गुरुदेव एवं प्रभु के जयकारों से पूरा मंदिर प्रांगण गूंज उठा सभी भक्त भक्तिरंग में रंगकर झूमने लगे ।

द्वारोद्घाटन के पश्चात मंदिर प्रांगण में ही मुनिराजश्री निपुणरत्नविजयजी म.सा. द्वारा सभी को भक्तामर पाठ कराया गया ।

आज वाराणसी नगरी के भव्य भक्ति पांडाल में मुनिराज श्री निपुणरत्नविजयजी म.सा. ने अपने प्रवचन में कहा आज महाशतकोत्सव का पूर्णाहुति दिवस है कुछ भक्त कल अमर ध्वजा रोहण के बाद यहाँ से प्रयाण कर गये एवं कुछ आज यहां से अपने देसावर के लिए प्रयाण करेंगे । मुनिश्री ने कहा कि शताब्दी महोत्सव में आप लोगों का आना सिर्फ परस्पर मिलना या गांव में उपस्थिति देना ही नहीं होना चाहिए । प्रतिदिन आपको जिनवाणी का श्रवण कराया गया यह आप पर निर्भर

करता है कि आपने उसे अपने जीवन में कितना उतारा । पंचेंद्रीय पाना दुर्लभ है और उससे से भी दुर्लभ है हमारी पांचों इंद्रियां सुचारू रूप से कार्यान्वित होकर वीतरागमयी वाणी का अनुसरण करें हमें आत्मोन्नति के मार्ग पर ले जाए । अगर हम इस महोत्सव में गुरुभगवंतों द्वारा दिये गए उपदेशों का चिंतन कर अपने जीवन को धर्म साधना में अग्रसर करते हैं तो ही हमारा यहां आना सफल माना जाएगा अन्यथा तो यहाँ आकर सिर्फ टाईम पास और टाईम वेस्ट ही किया । एक बार जब शुभ भाव उत्पन्न हो तो वह हमेशा रहना चाहिए। माता-पिता, गुरु एवं प्रभु को कभी भी नहीं भूलना चाहिए इनके चरणों में रहकर सेवा करने वाला कभी संसार के जाल में नहीं फंसता अतः आप से यही अनुरोध है कि जब भी समय का योग मिले तो प्रभु एवं गुरु भगवन्तों की निश्रा में अवश्य ही जाएं।

दिन में विजय मुहूर्त में क्रिया मण्डप में विधिकारकों द्वारा मंत्रोच्चार के साथ श्री सत्तरभेदी पूजा पढ़ाई गई । मन मधुकर ग्रुप द्वारा संगीत स्वर लहरियों से मधुर स्तवनों के साथ भाव पूर्वक पूजा पढ़ाई गई ।

दिन में जालोर उपखण्ड अधिकारी श्री हरफुल पंकजजी, आकोली की सरपंच महोदया श्रीमती मीनादेवी रेगर एवं डॉ. श्री खिमराजजी पधारे एवं गुरुदेव से आशीर्वाद लिया ।

रात्रि में महामंगलकारी श्री नवकार महामंत्र से भक्ति संध्या की शुरुआत की गई । भाई कमल ने 'दरबार तेरा दादा हम सबका सहारा है' भक्ति गीत से भक्ति का जमघट लगाया । बागरा के श्री पारसजी भाटी ने 'बहुत याद करते हैं महावीर को हम' एवं राजस्थानी गीत 'माया रो मणयो भजनवा री डोरी' की भावभीनी प्रस्तुति दी। भाई योगेश ने 'भाई मारा रंग तो मिल जावे गुणा री जोड़ी ना मिले' मारवाड़ी गीत गाकर वातावरण भक्तिमय कर दिया । विजयवाड़ा की बहन खूशबू ने 'मेरे दादा मेरे वीर प्रभु तुमको नमन करूं बार-बार', 'चार दिनों का मिलन प्रभु से लम्बी जुदाई', 'मनवा तू जाग जरा है नहीं तुझसे दूजा और बड़ा' भक्ति गीतों की सरिता से सबको भक्ति से साराबोर कर दिया । सभी ने बहन द्वारा दी गई प्रस्तुति पर खूब अनुमोदना की । संगीतकार श्री दीपकजी करनपुरिया ने 'थारे शरणे आयो छूं स्वीकार ले, हमें लेजा प्रभु थारा धाम मा' गीत एवं अन्त में 'छूम-छूम, छन-छन बाजे मारा प्रभु नी बधाई' के बधाई गीत से सबको शुभकामनाएँ देते हुए बिदाई दी ।

# द्वारोद्घाटन की ओर : जय जयकार का भोर

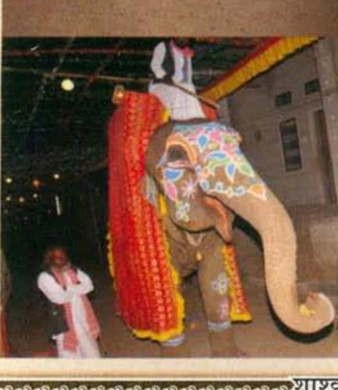

# धन्य लाभार्थी परिवारों को बधाइयों का दौर

समाजसेवी श्री पारसजी जैन का
श्री बागरा संघ की ओर से
बहुत-बहुत धन्यवाद, अभिनन्दन,
विशिष्ट सम्मानीय व्यक्तियों
को बागरा नगर लाने के लिये।

बागरा ट्रस्ट मण्डल-2015-16
बागरा नगर को धार्मिक एवं
आधुनिक नगरी ओर प्रयत्नरत्

महोत्सव के चढ़ावों की जाजम
को घर लेकर आने पर उत्सव
मनाते हुए बागरा के वरिष्ठगण।

श्रीबाबूलालजी
सांकलचंदजी
पिछले 60 वर्षों
से गुरुदेव के
अखण्ड गुरुभक्त,
श्रद्धावान, गुरुदेव
के चरण कमल
पखारते हुए।

सम्मान पत्र के साथ
श्री नरेन्द्रजी पोरवाल एवं उनकी
धर्मपत्नि श्रीमती ललितादेवी

# ऐतिहासिक महा-महोत्सव की नयनारम्य झलकियाँ

❋ पूज्य गच्छाधिपति श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. एवं समस्त साधु-भगवंतों के ऐतिहासिक नगर प्रवेश में उमड़ा भक्तों का सैलाब दिखा गुरुभक्ति का अनुपम नजारा ।

❋ पूज्य आचार्यश्री एवं मुनि भगवंतों के नित्य प्रवचनों का श्रवण कर लिया सभी भक्तों ने धर्मज्ञान का अनुपम लाभ ।

❋ श्री वाराणसी नगरी के प्रांगण में सुसज्जित मेरू पर्वत की प्रतिकृति का निर्माण किया जिस पर प्रभु का अभिषेक किया गया।

❋ पूरे नगर को इंद्रपुरी की तरह सजाया गया एवं विशाल प्रवेश द्वार बनाए गए ।

❋ मंदिर की आकर्षक विद्युत सज्जा की गई एवं प्रतिदिन ताजा फूलों की सुगंध से मंदिर महक ऊठता ।

❋ भरतपुर नगरी की दाईं ओर सुन्दर समिति कक्ष का निर्माण किया गया जहाँ सभी सदस्यों द्वारा महोत्सव संबंधी विचार-विमर्श किया जाता।

❋ पूरे नगर में माइक लगाये जिनमें भक्ति स्तवनों की गूंज सुनाई देती एवं तत्काल सूचना हेतु नियंत्रण कक्ष में सूचनाओं की घोषणा की जाती है ।

❋ मंदिरजी में काले कपड़े के निषेध के सख्त निर्देश थे । धार्मिक अनुष्ठानों में काले कपड़े पहनना पूर्णतः वर्जित किया गया ।

❋ जिस प्रकार किसी पर्व विशेष पर पूरे नगर में साज - सज्जा की जाती है । उसी प्रकार समस्त बागरावासियों ने मंदिर के अलावा अपने घरों का रंगरोगन व आकर्षक विद्युत सज्जा की एवं पूरे बागरा नगर की गली-गली को सजाया ।

❋ 'जैनम् जयति शासनम्' से अंकित पचरंगी पताकाओं से भी गली-गली को सजाया गया ।

❋ प्रतिदिन रात्रि भक्ति में पांच लक्की ड्रॉ खोले जाते एवं भाग्यशालियों को उचित बहुमान कर सम्मानित किया जाता ।

❋ वाराणसी नगरी के बाईं ओर सुन्दर बहुमान कक्ष का निर्माण किया गया जहाँ विभिन्न लाभार्थियों का प्रतिदिन बहुमान किया जाता एवं वाराणसी नगरी के सामने ही व्यवस्थापक कक्ष को भी बनाया गया वहाँ से मालाएँ आदि सामग्री प्राप्त की जाती है एवं आवश्यक सूचनाओं की घोषणा की जाती ।

❋ सम्पूर्ण महोत्सव में सी.सी.टी.वी. कैमरों से निगरानी रखी गई इसके लिए व्यवस्थापक कक्ष के समीप एक पृथक कक्ष में बड़ी एल.सी.डी. पर समस्त कार्यक्रम स्थल की निगरानी रखी जाती है।

❋ सुरक्षा की दृष्टी से व्यवस्था हेतु श्री स्वास्तिक सिक्यूरिटी चैन्नई एवं प्रकाश ग्रुप, पंजाब के जवान तटस्थता से तैनात किए गए

इसके अलावा राजकीय पुलिस के जवान भी लगाए गए।

* श्री वीरेन्द्र भाई कच्छी के नेतृत्व में वीके इवेन्ट के सदस्यों द्वारा सुन्दर व्यवस्था की गई।

* मधुकर शिलालेख, इंदौर द्वारा बागरा शताब्दी महोत्सव का प्रशस्ति-पत्र तैयार किया गया।

* प्रतिदिन लाभार्थी परिवारों को बैंड-बाजों, शहनाई एवं ढोल की गूंज एवं बड़ी शान से बहुमान कक्ष तक लाया जाता एवं अंत में चैन्नई के जवानों द्वारा सलामी दी जाती।

* श्री मधुकर बैण्ड बदनावर, श्री महावीर बैण्ड साण्डेराव, दिनकर बैण्ड साण्डेराव। नासिक के ढोल एवं दिनकर बैण्ड हिम्मतनगर द्वारा मधुर ध्वनि की गूंज से बागरा में प्रतिदिन भक्ति की सुवास फैल जाती।

* प्रतिदिन जिनबिम्बों एवं दादा गुरुदेव की भव्य सुन्दर आंगी की रचना एवं ध्वजारोहण दिवस पर विशेष आंगी की नयनरम्य अंगरचना एवं दीपक रोशनी द्वारा पूरे मंदिर प्रांगण को श्री अलकेशभाई, पिण्डवाला वाले द्वारा सजाया गया।

* ध्वजारोहण के शुभ दिन जेड गो एयर अहमदाबाद द्वारा हेलीकाप्टर से लाभार्थी परिवारों द्वारा लगातार चार फेरे लगाकर मंदिरजी एवं समस्त बागरा नगर पर पुष्पवर्षा की गई।

* वाराणसी नगरी के बाहर तोप द्वारा पुष्पवृष्टि कर अतिथियों का स्वागत एवं श्री भरतपुर नगरी के प्रवेश द्वार पर नगाड़ों की गूंज से परिसर गूंज उठता।

* खेरवा के भाई फिरोजखान द्वारा प्रत्येक प्रसंग पर इत्र से सम्पूर्ण प्रांगण एवं वातावरण को सुगंधित किया गया।

* समस्त कार्यक्रमों में जैन बंधुओं के समान जैनेत्तर बंधुओं की बड़ी संख्या उपस्थित रहती थी ऐसा प्रतीत हो रहा था यह महा-महोत्सव विशेष जैन संघ का न होकर सर्व धर्मीय होकर समस्त बागरा नगर का ही उत्सव बन गया हो।

बागरा शतकोत्सव में आने हेतु आसपास के नगरों के श्रद्धालुओं हेतु प्रतिदिन चार बसें चलाई गई।

* नगरवासियों की सुविधा हेतु 15 ऑटो की व्यवस्था की गई जो उन्हें प्रतिदिन अपने निवास स्थान तक छोड़ने एवं लेने जाते।

* उड़ीसा के शंखवादकों द्वारा पवित्र ध्वनि की गूंज के साथ हैरतअंगेज कला का प्रदर्शन किया जाता।

* सभी के लिये रात्रि भोजन निषिद्ध था। प्रतिदिन सूर्यास्त के पूर्व ही भोजनशाला बंद कर दी जाती भोजनशाला में चाहे जैन हो या जैनेत्तर किसी को भी रात्रि भोजन की आज्ञा नहीं थी।

* सभी भक्तों के भोजन के पश्चात प्रतिदिन बचा हुआ भोजन गरीबों को व पांजरापोल में बांट दिया जाता।

* प्रतिदिन कम से कम 4 मिठाई, 5 सब्जी एवं अन्य पकवान सहित 15-20 तरह के रसवान पकवान बनाये जाते।

* वृद्ध स्वधर्मी बंधु या ऐसे बंधु जो किसी कारणवश (शोक आदि अन्य कारण) से भोजनशाला तक नहीं आते उनके यहाँ प्रतिदिन पार्सल पहुंचाये जाते जिसमें नित्य 300 से 400 पार्सल भेजे जाते थे।

* पूरे महामहोत्सव की प्रत्येक गतिविधियों को तत्काल सोश्यल मीडिया जैसे वाट्सअप्, फेसबुक एवं इंटरनेट के माध्यम से जन-जन तक पहुंचाया गया।

* सम्पूर्ण महोत्सव के प्रत्येक अनुपम पल को संजोने का कार्य जालोर के शिव स्टूडियो की टीम द्वारा किया गया। जिसमें पांच विडियो कैमरे, 8 फोटो कैमरे, दो हेलीकेम, क्रेन एवं लाईव सिस्टम लगाया गया।

* पाटोत्सव दिवस पर बड़ी नवकारसी के अंतर्गत विशेष रूप से पूरे नगर की समस्त सम्प्रदायों की जनता को आमंत्रित किया गया एवं पृथक-पृथक विशाल पांडाल का निर्माण कर आए हुए सभी भक्तों को भोजन कराया गया।

* प्रतिदिन भोजन के पश्चात श्री भरतपुर नगरी के बाहर सौंप, पान मसाला, आंवला, गुलकंद ऐसे 10-15 तरह के माऊथ फ्रेशनर का स्टॉल लगाया जाता।

* वाराणसी नगरी के पांडाल में पूज्य आचार्य भगवंतों की विशिष्ट पाट परम्परा को दर्शाते हुए सुन्दर चित्र एवं प्रांगण को प्रेरक विचारों से सजे फ्लेक्स से सजाया गया।

* बच्चों के मनोरंजन हेतु विशेष रूप से मिकी माऊस, छोटा भीम, शूटिंग आदि कई मनोरंजनक कृतियां प्रांगण में लगाई गई।

* रात्रि में समस्त प्रांगण की आकर्षक विद्युत सज्जा प्रागंण की सुन्दरता को दुगना कर देती एवं सुन्दर झांकियों को निहारने के लिए गांव के सम्पूर्ण जैन-जैनेत्तर बंधुओं का तांता लगा रहता।

* प्रसिद्ध रंगोली कलाकार श्री जीतुभाई द्वारा प्रतिदिन मनमोहक रंगोली बनाई जाती।

* मंदिरजी में प्रतिदिन पूजा-विधान एवं महापूजन, मधुर ध्वनियों से श्री मन मधुकर म्युजिकल पार्टी नागदा जंक्शन द्वारा भावपूर्वक कराया गया।

* मंत्रोच्चार के साथ विशुद्ध विधि-विधान विधिकारक सुश्रावक श्री सत्यविजयजी हरण, श्री त्रिलोकजी कांकरिया एवं श्री प्रसन्नपालजी के निर्देशन में किए गए।

* टेंट रोशनी एवं सम्पूर्ण गाँव की सजावट, मंदिर, धर्मशाला की नयनरम्य सजावट, भव्य मंडप एवं प्रभु के पंचकल्याणक महोत्सव के स्टेज की सुन्दर व्यवस्था श्री थानमलजी प्रजापत, बागरावाले द्वारा की गई।

* श्री महाप्रभु दीपनारायण केटर्स के श्री धनजीभाई, अहमदाबाद द्वारा विविध स्वादिष्ट भोजन बनाकर अतिथियों को परोसा गया।

* श्री जीवनभाई, डीसा वाले द्वारा सुरम्य

शहनाई से प्रातः मधुर राग छेड़ी गई।

❋ डीसा नृत्य मंडल द्वारा भव्य प्रभु नृत्य प्रस्तुत कर सुन्दर नित्य भक्ति भावना प्रस्तुति की गई।

❋ महिलाओं द्वारा मेहन्दी कार्यक्रम एवं महिला कलाकारों द्वारा गांव सांझी में प्रभु भक्ति का अनुपम कार्यक्रम किया गया। शताब्दी महोत्सव के दौरान रंग-बिरंगे सुगन्धित फूलों से मंदिरजी की सुन्दर सजावट मयूर फूल डेकोरेशन-भीनमाल द्वारा की गई।

❋ समस्त शताब्दी महोत्सव में संगीत ध्वनियों, गुरुभगवंत एवं वक्ताओं की वाणी को साउण्ड सिस्टम के माध्यम से जन-जन तक पहुंचाने का कार्य सैयद साउण्ड, पाली द्वारा किया गया।

❋ दि. 28 फरवरी 2016 को जैन भक्ति प्रसिद्ध चैनल पारस टी.वी. पर महोत्सव की हाइलाईट्स का विशेष प्रसारण किया गया।

❋ पधारे हुए आगन्तुकों एवं साधु भगवंतों की सेवा में श्री बागरा जैन नवयुवक मण्डल एवं बालिका- महिला मंडल सजगता से तत्पर रहे।

❋ श्री बागरा युवा मंच (sbym) द्वारा एस.एम.एस. की सुंदर सुविधा की गई।

❋ सम्पूर्ण समारोह का सफल आयोजन हुआ, आशा से कहीं अधिक सफलता, खुशनुमा और आध्यात्मिक माहौल था।

हो भी क्यों नहीं, हमारा सम्पूर्ण ट्रस्टमण्डल पिछले 18 महीनों से प्लानिंग में था, और विगत 6 महीनों से उस प्लानिंग को कार्यक्रम देने में सतत् कार्यरत था, हर एक पल इस समारोह को सुंदरतम् आधुनिक सुविधायुक्त बनाने में व्यस्त रहा, इसी होमवर्क की वजह से आज हम शान से कह सकते हैं, ऐसा सफल कार्यक्रम न भूतों ना भविष्यति। आज तक इतना सुंदर और अनुशासित 11 दिवसीय कार्यक्रम अभी तक नहीं हुआ है। बहुत-बहुत अनुमोदना, अभिनंदन।

❋ समारोह की सफलता का श्रेय किसी को है, तो वह बागरा नगर की जनता को है। समभाव और सौहार्द भाव लिए 4 हजार की जैन आबादी वाला(सम्पूर्ण त्रिस्तुस्तिक जैन समुदाय) यह बागरा नगर की विशेषता रही है किसी भी ग्रामवासी को कोई कार्य पसन्द आये या नहीं आये, उसके लिए कभी भी ज्यादा खींचातानी नहीं करते हैं, कई दूसरे ग्रामों में छोटी-छोटी बातों के लिए अक्सर लड़ते-झगड़ते देखा गया है, मगर यह बागरा नगर हमेशा ही समभाव में रहता है, और सोचता है ट्रस्टमण्डल कार्य कर रहा है तो 'आपे टोंग वसमा क्यों उभी करो' इस समभाव और सरलता के लिए बागरा नगरवासी पूरे भारतवर्ष में जाने जाते हैं, यही वह खूबी वाली बात है कि यहां सगाई, सगपण और विवाह से सम्बन्धित कोई जमदेवद दुविधा नहीं होती। बहुत-बहुत अनुमोदना, अभिनंदन सम्पूर्ण नगरवासियों का।

❋ विराजमान आचार्य भगवंत पूज्यश्री जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. सह मुनिजनों ने

बहुत ही आध्यत्मिक तरीके से विधि-विधान के कार्यक्रमों को कराया, भक्तामर, पूजा, प्रवचन में श्रावक-श्राविकाओं की पूर्ण उपस्थिति थी, विशाल विनीता नगरी में कहीं भी पैर रखने तक की जगह नहीं होती थी, इसकी एक मात्र वजह गुरुदेव की बागरा नगर से प्रीत और नगरवासियों की उनके प्रति श्रद्धाभाव। सभी गुरुभगवंतों को सादर वन्दन करते हैं।

* संगीत की दुनिया के बेताज बादशाह श्री राजेन्द्रजी और दीपकजी करनपुरियाजी ने 11 दिनों तक जो संगीतमयी माहौल बनाया, अपने बेनर तले नित नए कलाकारों को बुलाकर सम्पूर्ण जैन समाज ही नहीं सभी समुदाय का जिस तरह मनोरंजन किया है, खचाखच्च भरे मण्डप के अलावा बाहर भी लोगों का जमावड़ा होता था।

* श्री विनोदजी आचार्य जो स्टेज मैनेजमेंट शायरियों, दोहों और बुलन्द आवाज के धनी हैं ने अपनी बुलंद आवाज में मंच संचालन किया।

* बागरा नगर के श्री अशोकजी और विमलेशजी ने माइक अनाउंसमेंट कार्य पूरे 12 दिनों तक सुबह 5 बजे से लेकर रात 11 बजे तक समर्पण भाव से संभाला।

* सुशासन और सफलतम मैनेजमेंट के लिए कई प्रकार की कमेटियाँ बनाई गई, मंगलगृह, भोजन व्यवस्था, जयणा, प्रभावना वितरण आदि सभी ने दिल से योगदान दिया।

* बागरा के ही श्री थानमलजी ने अतिसुन्दरता से सम्पूर्ण बागरा नगरी को सजाया, पूरे गाँव को रोशनी से जगमगा दिया, भरतपुर और वाराणसी नगरी को इन्द्र महाराजा की स्वर्गनगरी समाज रूप दिया। बागरा नगर के ही श्री रमेशभाई ने मिनरल वॉटर की घर-घर हर रोज सप्लाई में कोई कमी नहीं रखी।

* श्री वीरेन्द्रभाई कच्छी इवेंट संचालक द्वारा मैनेजमेंट और सबसे महत्वपूर्ण भोजन विभाग का कार्य भी धन्ना मन्सा संतोषप्रद और सराहनीय रहा।

पत्रिकाओं, पत्रिका, नव-ज्योति, दैनिकभास्कर, जागरूक टाइम्स का भी अभिनंदन करते हैं, जिन्होंने सम्पूर्ण आयोजन को अपने पेपर में जगह दी और रोजाना ही प्रेषित किया।

* अभी और भी कई ऐसे विभाग और कर्मठ कार्यकर्ता हैं, जहाँ हमारी नजर पहुँच नहीं पायी है, इतने विशाल आयोजन में कई महत्वपूर्ण आदरणीय भी हैं, जिनके समर्पण के बिना-अभूतपूर्व सफल आयोजन असम्भव था, हम उनका हार्दिक - हार्दिक अभिनंदन करते हैं।

* जिन-गुरु अमृत-वाणी, बागरा -चैन्नई के श्री अमृतलालजी जैन द्वारा सोश्यल मीडिया के माध्यम से इस पूरे आयोजन को देश के 400 से ज्यादा गांवों, नगरों में ही नहीं अपने प्लेटफॉर्म के माध्यम से पूरे विश्व में पहुंचाकर, अपनी जन्म भूमि के प्रति स्नेह का परिचय दिया है।

## विशिष्टताएँ

* प्रातः भक्तामर, पूज्य गुरुदेव के प्रवचन एवं दोपहर की महापूजा तीनों समय चांदी के सिक्कों की प्रभावना वितरित की जाती।

* महोत्सव में पधारने वाले विशेष एवं विशेषातीत अतिथियों का 25 ग्राम, 50 ग्राम एवं 100 ग्राम के चांदी के सिक्कों द्वारा अभिनंदन किया जाता।

* बागरा नगर के जैन समाज के 800 परिवारों में प्रति परिवार 100 ग्राम चांदी का सिक्का महाशतकोत्सव के प्रतीक स्वरूप भेंट किया गया।

* श्री मोहनखेड़ा तीर्थ का प्रथम पट्ट यहाँ बनाया गया जिसमें श्री जयन्तसेन म्युजियम को भी अंकित किया गया।

* महामहोत्सव के दौरान पूज्य आचार्य के पाटोत्सव पर श्री नरेन्द्रजी पोरवाल को 'समाज रत्न' की उपाधि से अलंकृत किया गया।

* मुनिराज श्री तारकरत्नविजय म.सा. का दीक्षा मूहूर्त पूज्य गुरुदेव द्वारा बागरा की ही भागली प्याऊ पर दिया गया था।

* जनरेटर द्वारा प्रत्येक घर में ट्यूबलाईट एवं महोत्सव समिति की ओर से पानी की टंकी की व्यवस्था की गई।

* सम्पूर्ण महामहोत्सव की यादों को संजोने के लिए घर-घर सम्पूर्ण महोत्सव की सीडी एवं पेनड्राइव का वितरण किया गया।

शताब्दी महोत्सव निमित्त बागरा स्थित श्री राजेन्द्रसूरी उच्च माध्यमिक विद्यालय में 3500 वर्ग फीट का एक विशाल प्रार्थना हॉल बनाने का निश्चय हुआ जिसके भूमिपूजन में प.पू. आचार्य भगवंत द्वारा वासक्षेप किया गया।

* सभी मेहमानों को तीनों समय कुर्सी एवं सजाये हुए पाटों पर बैठाकर भोजन की व्यवस्था की गई।

* चांदी के सिक्कों के वितरण में 1400 से 2000 भक्तों की उपस्थिति रही।

* शताब्दी महोत्सव में वी.आई.पी. अतिथियों को बागरा लाने में जावाल निवासी श्री पारसजी जैन, चैन्नई एवं शा. अम्बालालजी मूलचंदजी का विशेष सहयोग एवं सहभाग रहा। जिनशासन के प्रति उनके समर्पण के लिये वे धन्यवाद के पात्र हैं।

* शताब्दी महोत्सव के सभी कार्यक्रमों की सफलता के पीछे सारे बागरा निवासियों का सहयोग, वडीलों का मार्गदर्शन, ट्रस्ट मंडल का जी तोड़ परिश्रम एवं सचिव श्री दिनेशकुमार पुखराजजी की पूर्व कार्य तैयारी, समय सूचकता एवं प्रतिबद्धता का योगदान रहा।

# महोत्सव की भागीदारी की प्रतिदिन कई राजनेताओं ने

* दिनांक 19 फरवरी 2016 को राजकुमारजी रिणवा (राजस्थान सरकार वनविभाग मंत्री) ने विशेष रूप से महाशतकोत्सव में आयोजित रात्रि भक्ति में शिरकत की व. पू. गुरुदेव श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म. के दर्शन, वंदन कर आशीर्वाद लिया । तत्पश्चात मुनिराजश्री नित्यानन्द विजयजी म.सा., मुनिराज श्री जयकीर्तिविजयजी म.सा., स्व. श्री विजयरत्नविजयजी म.सा. आदि के दर्शन वन्दन का लाभ लिया । मुनिराजश्री चारित्ररत्नविजयजी म. की उनसे धर्म पर चर्चा हुई । मुनिश्री ने मंत्रीजी से कहा कि राजस्थान के अन्दर पर्यावरण क्षेत्र में गुरुदेव के परमभक्त श्री किशोरजी खिमावत का सराहनीय योगदान रहा है और उनके योगदान को देखते हुए राजस्थान सरकार को उनकी स्मृतियों को स्थाई पहचान देना चाहिए । चूंकि आप वर्तमान में वन विभाग एवं पर्यावरण मंत्री हैं। इस पर मंत्रीजी ने बात को गंभीरता से लेते हुए जल्द ही राजस्थान सरकार द्वारा स्थाई रूप से प्रस्ताव पारित कर उनकी स्मृति को स्थाई रूप दिये जाने का समर्थन कर प्रस्ताव पारित करवाने की बात कही।

* सिरोही विधायक श्री ओटारामजी देवासी का मुनिश्री चारित्ररत्न विजयजी म. से वार्तालाप हुआ। जिसमें मुनिराजश्री ने ओटारामजी को अवगत कराया कि वर्तमान में राजस्थान के कुछ मण्डल जैन धर्म एवं जैन समाज पर मनघडंत दुष्प्रचार कर रहे हैं एवं वर्तमान में विहार के दौरान साधु-साध्वी भगवंतों को इन मण्डलों से परेशानी होती है । इसलिये इन मण्डलों पर अंकुश लगाने की ओर ध्यान देने की आवश्यकता है । श्री देवासीजी ने ठोस निर्णय लेने का विश्वास दिलाया ।

* जालोर विधायिका श्रीमती अमृता मेघवाल एवं रानीवाड़ा विधायक श्री नारायणजी देवल को मुनिश्री चारित्र रत्नविजयजी ने स्मरण कराया कि भारतवर्ष के प्रमुख जैन तीर्थों में अग्रणी स्थान रखने वाले स्वर्ण तीर्थ जालोर के विकास एवं जीर्णोद्धार में गच्छाधिपति आचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. का अविस्मरणीय योगदान है । राजस्थान सरकार का भी यह दायित्व बनता है कि इस तीर्थ के विकास में जागरूकता पूर्वक जनभागीदारी दे । उसमें विशेष रूप से आप इस क्षेत्र के

विधायक हो तो आपकी जिम्मेदारियाँ भी तीर्थ के प्रति विशेष होनी चाहिए। विधायकद्वय ने राजस्थान सरकार पुरातत्व विभाग की ओर से सहयोग प्रदान करने की भावना पर जोर दिया।

* सिरोही के महाराजा श्री रघुवीरसिंह पूज्य गच्छाधिपति श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के दर्शन वन्दन करने पधारे। पूज्य श्री से आशीर्वचन लेकर मुनिराजश्री चारित्र रत्नविजयजी म.सा. से धर्मचर्चा मुनिश्री त्रिस्तुतिक परम्परा के पूर्वाचार्यों एवं सिरोही राज्य के पूर्व महाराजाओं के जो आत्मीय संबंध थे उनसे अवगत कराया। जिसमें विशेष रूप से आचार्यश्री धनचंद्र सूरीश्वरजी म.सा. के वरदहस्तों से सिरोही जिले में हुए शासन प्रभावना के कार्यों से अवगत कराया। जिन्हें सुनकर श्री रघुवीरसिंहजी भाव-विभोर हो गए उन्होंने आत्मियतापूर्वक मुनिराज से कहा कि हमारे पूर्वजों एवं आपकी गुरु परम्परा के आत्मिय संबंधों को मैं जीवंत बनाये रखूंगा एवं वर्तमान गच्छाधिपति श्री जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के दर्शन वंदन का समय-समय पर लाभ लेकर अपने जीवन को धन्य बनाने का प्रयास करूंगा।

* राजस्थान सरकार के गृहमंत्री श्री गुलाबजी कटारिया ने पूज्य आचार्यश्री जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के पाटोत्सव पर 'भक्तों के मानो भगवान' सीडी का विमोचन किया। मुनिराजश्री चारित्र रत्नविजयजी म.सा. से चर्चा हुई। गृहमंत्री श्री कटारियाजी ने कहा कि अल्प समय में सीडी का तृतीय प्रकाशन होना इसकी लोकप्रियता सिद्ध करती है। मुनिश्री ने कहा कि राजस्थान के गृहमंत्री के पद हमारे समाज के व्यक्ति का पदस्थ होना गौरव की बात है। इस मंत्रालय का जैन समाज को सहयोग मिले एवं विशेष रूप से विहार करने वाले साधु भगवंतों के साथ होने वाली दुर्घटनाओं से बचने के लिए सुरक्षित विहार के लिये प्रशासन का सहयोग मिलना चाहिए एवं मार्ग पर विहार करने वाले साधु-साध्वी एवं पैदल चलने वालों के लिए सुविधा उपलब्ध कराना चाहिए। गृहमंत्रीजी ने प्रशासन से सहयोग देने का पूर्ण विश्वास दिलाया।

* अपने आराध्य श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ प्रभु के साथ आत्मिक भाव देव-गुरु-धर्म की वाणी से जुड़ने के लिए सभी 90 प्रतिशत नगरवासी स्वरूनगर पधारे। प्रभु की आराधना पूजा-भक्ति की, गुरुजनों द्वारा दिए आत्मकल्याणमयी वाणी का श्रवण किया, पिछले कई वर्षों से न मिले अपने स्वजनों, मित्रों से आमोद प्रमोद का लुफ्त उठाया और अपने-अपने निश्चित कार्य क्रमानुसार कर देसावर जाने लग गए हैं।

# जिन गुरु : अमृत वाणी परिचय

जैन एकता का परिचय देते हुए देश के 400 से अधिक शहर, विश्वस्तर पर कई देशों में करीब चार लाख से अधिक जिन-धर्मानुरागियों तक इंटरनेट के विविध माध्यमों से जिनत्व ज्ञानार्जन का प्रचार-प्रसार करने वाला यह ग्रुप, विश्व का एक मात्र प्लेटफॉर्म जहाँ लगभग सभी जैन समुदायों की गुरुवाणी का समावेश करने की ओर पर्यासरत है। 'जैन एकता' समय की सबसे बड़ी एवं प्रथम जरूरत, जिससे हमारी आने वाली पीढ़ी भ्रमित न हो।

'इस ग्रुप द्वारा' जय जिनेन्द्र। सुप्रभात। सुविचार रोजाना का त्याग मैसेज एवम् अल्प जैन सुविचार भेजे जाते हैं। जिनशासन का सरल भाषा में प्रसार-प्रचार जिन स्वाध्याय को विशेष प्राथमिकता, सम्पूर्ण वर्ष के सभी जैनोत्सवों का इतिहास के साथ जानकारी समय-समय पर गुजरते समय के साथ आयी हुई भ्रमिताओं की जानकारी देते हुए... सावधान करने की कोशिश। 'जयणा ए धम्मो' जयणा यानि जीवदया, जीवरक्षा अर्थात 'अहिंसा परमों धर्म' को विशेष महत्व संयम धारण, दान-धर्म-तप के पुण्यशालियों की अनुमोदना कर समाज को प्रोत्साहित करना। लेख (सुबह) एक बार ही पोस्ट होते हैं। सन् 2001 से रोजाना 200 से अधिक जैन मैसेज एसएमएस द्वारा भेजने वाले 2011 से व्हाट्सप की शुरूआत हुई। अभी श्री अमृतजी के 31 ग्रुप व अन्य 258 ग्रुप हैं। जिन्होंने श्री अमृतजी को ग्रुप में ज्वाइन किया है। जिनमें दिगंबर श्वेताम्बर,

तपागच्छ, तेरापंथ, स्थानकवासी, खरतरगच्छ आदि सम्मिलित हैं। फेसबुक (सभी के लिए ओपन है) पर रोज के सभी लेख पोस्ट होते हैं, Google एवं Blogger पर भी रोज का एक लेख अक्टूबर 2015 से पोस्ट हो रहा है जिसे विश्व में कहीं पर कोई भी देख सकते हैं। हम रहें न रहें- जिन-गुरु वाणी रहेगी सदा।

सात देशों में 'इंटरनेशनल जैन फाउण्डेशन' द्वारा 85000 से अधिक लोग ग्रुप द्वारा एवं जैन समाचार एप्स द्वारा 72300 से अधिक जिनधर्मानुरागी जुड़े हैं। बहनों, बेटियों के लिए अलग से ग्रुप हैं। **ग्रुप में सभी उम्र के सदस्य है।** 90 प्रतिशत जिन-गुरु वाणी के लेख एवं परस्पर आदान-प्रदान, स्वाध्याय, आराधना, अनुमोदना, 10 प्रतिशत, हेल्थ, घर-परिवार, देश-हित सुविचार शेयर करना, जिनशासन के सिद्धांत करण-करावण-अनुमोदन के अनुरूप है, जिसके द्वारा हर धर्मानुरागी अपने भाग का पुण्यबंध अवश्य प्राप्त करता है।

जून 2015 में द्वारा असिमित मैसेज

पोस्ट न करने की वार्निंग की वजह से हमने एक All India Admin's Group - Whatsapp Meedia पर बनाया है, इस समय ग्रुप में 214 एडमिंस हैं।

अगर आपके भी 5-10 जैन ग्रुप हैं, तो आप भी एडमिन ग्रुप में जुड़ सकते हैं। सभी एडमिंस अपने -अपने ग्रुपों में रोजाना 'जिन-गुरु वाणी' पोस्ट करते हैं, आप इस जैन ग्रुप को ज्वाइन करना चाहते हैं, तो कृपया निम्न डिटेल्स भेजें।

Name, S/o, D/o, W/o, City & Native Place, Amritlal S. Jain. Chennai (Tamilnadu), Whatsapp - 9884276661 पर भेजे आपके ग्रुप या परिवार द्वारा किये गये सभी पुनित कार्यों का विनीत भाव से अभिनंदन।

## गुरुभगवंत के 63 वें संयमोत्सव पर विनयी वंदन

वर्तमान शासनपति वीतराग स्वामी श्री महावीर प्रभु, प्रातः स्मरणीय दादा गुरुदेव श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी म. सा. की पाट परम्परा में विराजित, परम पूज्य सुविशाल गच्छाधिपति राष्ट्रसंत, युग प्रभावक श्री जयंतसेन सूरिश्वरजी म. सा. सह सकल श्रमण-श्रमणी वृंद-चरणों में अमृतलाल का सादर सहृदयी वन्दन। सुख साता की मंगल कामना।

गुरुदेव हम भूले नहीं हैं, उस समय 1955 से 1980 का स्वर्णिण युग, जब आपका बागरा नगर में विशेष आगमन रहता था, आप नगरवासियों के दिलों में जब भी छाए हुए थे और आज भी है। जन-जन के कल्याण के साथ आपका योगदान अभूतपूर्व रहा है। उस समय के कई श्रावकों से आपश्री के निकट सम्बन्ध थे। जिसका एकमात्र उद्देश्य जिनशासन की जयवन्ता को जगाकर आत्मकल्याणार्थ की प्रेरणा देना। उस समय कुछ युवा इस भौतिक चकाचौंध में भटक गए थे, उनको आपश्री ने प्रेरणा देकर सद्मार्ग पर लाया था। गुरुदेव। उनमें से मैं भी एक था। गुरुदेव ! आपके इस उपकार को मन ही मन याद करता रहता हूँ। सही समय पर मुझे आपकी निश्रा मिली और मेरे जीवन निर्माण में आपकी प्रेरणा, शुभ आशीष का योगदान अविस्मरणीय बना। जय गुरुदेव ।।

**श्रद्धा मेरी भाषा, निष्ठा मेरा नारा**
**गुरुदेव की शरण में, भव का मिले किनारा**
**चरणों का स्पर्श पाकर हो जाती माटी चंदन**
**पारस है। आप गुरुवर, मुझको बना दो कुंदन।'**

# सोने के सूरज के पवित्र ग्यारह दिन

(श्री अमृतलाल जैन, मीडिया प्रभारी, चैन्नई)

## दिनांक :10.02.2016

बागरानगर । यहाँ प्राचीन जिनालय श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ जो अपने समय का सुंदरतम् 24 जिनमंदिर है, जिसकी भव्यता देखते ही बनती है, के 100 वर्ष पूर्ण होने का महा-महोत्सव दिनांक 11 से 21 फरवरी 2016 तक मनाया जा रहा है, इसी प्रसंग में गुरुभगवंतों का नगर प्रवेश हुआ। विशाल जनसमूह के साथ शताब्दी जिनमंदिर श्री पार्श्वनाथ 24 जिनालय के दर्शन कर सम्पूर्ण गांव का भ्रमण करते हुए श्री भरतपुर नगरी और वाराणसी नगरी के प्रांगण में पहुंचे।

उद्‌घाटन के पश्चात् यह जनसमूह विशाल धर्मसभा में परिवर्तित हुआ। ग्रामवासियों की चिंतामणी पार्श्वप्रभु के प्रति श्रद्धा और गुरुदेव के प्रति भक्ति को देखने का यह अनुपम अवसर था। स्वयं गुरुदेव ने अपने सम्बोधन में यह बात कही, नगर के सजावट, सौन्दर्यता की चर्चा करते हुए कहा... लगता है इसकी रचना स्वयं इंद्रमहाराज ने की है।

श्री नरेन्द्रजी पोरवाल द्वारा दोहे, कविताएँ और पूर्व इतिहास से जुड़ी जानकारियाँ सुनकर बागरा के लोग स्वयं गौर्वान्वित महसूस करने लगे, यह सरस्वती रत्न हमारे बागरा को मिला है।

गुरुदेव श्री ने फरमाया यह नगर मेरे लिए नया नहीं है, इस नगर से मेरा करीब 70 वर्ष पुराना रिश्ता है, यहां दीक्षा पूर्व सम्वत् 1903 में मेरे आराध्य गुरुदेव श्री यतीन्द्र सूरिश्वरजी के पास ज्ञानार्जन के लिए आया था, यह मेरे गुरुदेव का चाहिता नगर है और मेरा यहाँ की चार पीढ़ियों से परिचय है। इसी दौरान श्री पोरवालजी ने कहा, गुरुदेव अपने 'ननिहाल' पधारे हैं, हमें इस सौभाग्य पर गर्व है।

## दिनांक :11.02.2016

शताब्दी के 11 दिवसीय कार्यक्रम आराधना के प्रेरणा स्तोत्र और निश्रा प्रदाता आचार्य भगवंत श्री जयंतसेन सूरीश्वरजी का 63 वां संयम (दीक्षा) दिवस भी है, संयोग से यह अनुपम आराधना, अनुमोदना का अवसर भी हमारे श्री बागरा जैन संघ को मिला है।

संयम दिवस पर चार मुनिभगवन्तों ने अपने प्रवचन से जनसमूह को उपदेशित किया। प्रवचन की शुरूआत में ही मुनिभगवंत श्री वीररत्न विजयजी ने सर्वप्रथम बागरा नगर में कल शाम श्री नरेशकुमारजी के आकस्मिक निधन पर सम्वेदना प्रकट करते हुए, उपस्थित जनसमूह ने तीन नवकार गिनकर श्रद्धांजली दी । मुनिश्री ने जीवन-मृत्यु के अटल सिद्धान्त को फिर समझाया।

मुनिभगवंत श्री डॉ. सिद्धरत्नविजयजी ने 'गुरुजी हमारो अंतर्नाद, हमने आपो आशीर्वाद' की सार्थकता से अवगत कराया और कहा...जब तक हम अंदर के मन से किसी को वन्दन नहीं करते, तब तक पूर्ण आत्मीय आशीर्वाद नहीं मिलता। मुनिभगवंतश्री विद्धरत्न विजयजी ने अपने प्रवचन में बताया... यह बागरा नगर मेरे गुरुदेव जयंतसेन सूरीश्वरजी के ज्ञान ग्रहण की प्राथमिक पठन की भूमि है। संयोग की बात है, मेरे ज्ञान का बीजारोपण भी इसी भूमि पर वर्तमानाचार्य श्रीमद् जयंतसेन सूरीश्वरजी की निश्रा में हुआ था।

मुनिभगवंत चारित्ररत्न विजयजी ने फरमाया कि आराध्य गुरु से अटल श्रद्धा होनी चाहिए। बिना श्रद्धा के आपकी भावना जागृत नहीं हो सकती।

आज हमारे मुख्य अतिथि के रूप में जालौर के

विधायक श्रीमान् जोगेश्वरजी गर्ग और आहोर के विधायक श्री शंकरसिंह राजपुरोहितजी पधारे। आपश्री ने गुरुदेव का आशीर्वाद लेकर समारोह का अवलोकन कर संतोष प्रकट किया।

## दिनांक :12.02.2016

आज श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ 24 जिनालय, महा-शताब्दी महोत्सव का द्वितीय दिवस है। निश्रा प्रदाता आचार्य भगवंत श्री जयंतसेनसूरीश्वरजी के अनुकम्पा पात्र मुनिप्रवर श्री निपुणरत्नविजयजी ने प्रवचन सभा को उपदेशित किया।

आपश्री ने बाल्यकाल में आज से करीब 15 वर्ष पूर्व अपने आराध्य गुरुदेव श्री जयंतसेन सूरीश्वरजी से संयम स्वीकार किया था, अल्प समय में ही अपनी ज्ञान अभिलाषा को प्रज्ज्वलित कर अमीदृष्टि शिष्यरत्न बन गए।

## दिनांक :13.02.2016

आज श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ 24 जिनालय, महाशताब्दी का तृतीय दिवस है। मुनिप्रवरश्री निपुणरत्नविजयजी ने प्रवचन सभा को उपदेशित करते हुए फरमाया सर्वत्र यही बात कही जाती है 'चमत्कार को नमस्कार' मगर मेरे भगवंत और गुरुदेव कहते हैं 'नमस्कार से ही चमत्कार सम्भव है।' नमस्कार अर्थात् समर्पण, उनके आदर्शों को, गुणों को जीवन में गुरु की महिमा सर्व विदित है, जन्म बाल्यकाल माँ गुरु का रुप है यहीं से शिक्षा का बीजारोपण होता है, फिर बारी आती है स्कूल-कॉलेज की, वहाँ भी शिक्षा के लिए गुरु ही मार्गदर्शक है। फिर बारी आयी, इस जीवन को सार्थक बनाने के लिए गुरु की जरुरत है, उन्हें एक बार नहीं, सौ बार सोचकर निर्णय करना कि मैं उन गुरुदेव को आराध्य के रुप में स्वीकार करूँ जिनके माध्यम से मुझे वीतराग प्रभु की वाणी का ज्ञान मिले, मैं उसकी ओर अग्रसर होऊं ! और स्वीकार करने के बाद अन्तःकरण से समर्पण का भाव रखना, बिना समर्पण के उपलब्धि नहीं होगी।

बाल मुनि श्री प्रसिद्धरत्न विजयजी म.सा. जिन्होंने सिर्फ 4 वर्ष पूर्व ही संयम अंगीकार किया है, आपने भी प्रवचन सभा को संबोधित करते हुए ज्ञानमयी वाणी से दशवैकालिक सूत्र में परिभाषित 4 कषायों का संक्षिप्त वर्णन किया और कहा इनको छोड़े बिना मुक्ति का मार्ग सम्भव नहीं। क्रोध से प्रेम का नाश होता है, मान से विनय का, माया से मित्र का और लोभ से तो सर्वनाश निश्चित है। ये चार ही हमारे कषाय शत्रु हैं जो हमें इस संसार से घेरे रखते हैं, इनका त्याग किये बिना गुरुदेव द्वारा उपदेशित मार्ग पाना सम्भव नहीं।

## दिनांक :14.02.2016

महामहोत्सव चतुर्थ दिवस गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जयंतसेन सूरीश्वरजी की शुभनिश्रा में आचार्य भगवंत के 63 वें संयमोत्सव की अनुमोदनार्थ महासभा का आयोजन हुआ। इस अवसर पर श्री राजेन्द्रजी करनपुरिया ने गुरुदेव को आत्मा का प्रधान डॉक्टर बताते हुए, सुंदर गीत से अनुमोदना समर्पित की।

इस अवसर पर श्री नरेन्द्रभाई पोरवाल, सुखराजजी, अमृतलालजी, श्री पुखराजजी आदि गुरुभक्तों ने भी अपने आराध्य गुरुदेव के आराध्यमयी जीवन की वन्दना की। श्री नरेंद्रभाई ने गुरुदेव के सम्पूर्ण जीवन का परिचय अपनी सरस्वती स्वरुप वाणी से किया, जिसके अंतर्गत आराध्य जीवन की बातें, दोहे और कविताएँ भी थीं। श्री पुखराजजी ने जो गुरुदेव के बालसखा है, उन यादों को विस्मरण किया। अमृतलाल ने गुरुदेव के उपकार का विनय वन्दनीय भाव से नमन किया।

चिंतामणी गुरुदेव ने अपने प्रवचन में सभी बागरावासियों को आशीर्वाद देते हुए, पूर्व के समय का स्मरण किया, आपश्री ने फरमाया...आज से करीब 65 वर्ष

पूर्व मैं प्रथम बार बागरा पहुंचा, और शाम के प्रतिक्रमण में जो श्रावकों की उपस्थिति देखी, उस आत्मीय आनन्द को मैंने मेरे आराध्य श्री यतीन्द्र सूरिश्वरजी गुरुदेव के सामने रखा। गुरुदेव ने बताया पूनमचन्द, यह बागरा धर्ममयी नगरी है, यहाँ के निवासी धर्म आराधना में मग्न रहते हैं। आपश्री ने बताया इसी वजह से जितना लगाव गुरुदेव को बागरा नगर पर था, उससे कहीं अधिक यहां के ग्रामवासियों की श्रद्धा गुरुदेव से थी। आपश्री ने बताया बागरा मेरे आराध्य गुरु का धर्मप्रिय नगर था, अतः स्वाभाविक है, मेरा भी इस नगर से वैसा ही अनुराग है। मेरी आध्यात्मिक शिक्षा का यह प्रथम नगर है, इसी नगर से मैंने प्रथम 'सिद्धाचल तीर्थ' की यात्रा की थी, जो मात्र 17 दिनों में पूर्ण की, मुनिप्रवर श्री निपुणरत्न विजयजी ने फरमाया, गुरुदेव 17 वर्ष की उम्र में 17 दिनों में यहां से सिद्धाचल पहुंचे थे और आज 80 वर्ष की उम्र में भी मात्र 17 दिनों में ही सिद्धाचल से बागरा पहुंचे हैं, यह गुरुदेव का इस नगर के प्रति प्रीत को दर्शाता है। उस समय गुरु अकेले थे मात्र दो व्यक्ति साथ थे और आज विशाल श्रमण-श्रमणियों का समुदाय साथ है।

प्रवचन और गुरु गुणानुवाद के दौरान जय गुरुदेव, जय गुरुदेव, गुरुजी हमारो अंतर्नाद- हमने आपो आशीर्वाद ! के भावमयी नारों से बार-बार सभा मण्डप गूंज उठा। जो उत्साह और उमंग, गुरुदेव के प्रति आस्था की भावना देखने को मिली, वह भी अविस्मरणीय थी।

आज की सभा का मुख्य आकर्षण थे-श्री नरेन्द्रकुमारजी पोरवाल जिन्हें गुरुदेव के श्रीमुख से त्रिस्तुतिक समाज की ओर से 'समाज गौरव अलंकरण' से विभूषित किया गया। समाज को खुशी है कि उनके नगरवासी, सखा, मित्र, धर्मभाई को यह सम्मान मिला है।

आज शताब्दी से सम्बन्धित कई कार्यक्रम हैं। दैनिक पूजा, प्रवचन, रात्रि भक्ति आदि में उपस्थिति दर्शाती है कि बागरा के नगरवासियों में 'शताब्दी' से कितना ज्यादा लगाव और आत्मीयता है।

## दिनांक :15.02.2016

आज श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ 24 जिनालय, महाशताब्दी का पंचम दिवस है। गच्छाधिपति आचार्य भगवंतश्री जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. की शुभनिश्रा में आज से इस शताब्दी आयोजन के महानायक, परमात्मा श्री पार्श्वनाथ भगवान् के पांचों कल्याणक का भव्य नाट्य और संगीत, गीतों के माध्यम से प्रस्तुति दी गई।

पूज्यश्री आचार्य भगवंत जयंतसेन सूरीश्वरजी ने बागरा नगर से हुई दीक्षाओं का जिक्र करते हुए कहा... इस धर्मनगरी ने पूज्य आचार्य हेमेन्द्रसूरीश्वरजी जैसे धर्मरत्न दिए हैं, जिन्होंने जिनशासन के नाम को रोशन किया है। आज मालवा से बड़ी संख्या में श्रीसंघ चातुर्मास की विनंती लेकर पधारे, गुरुदेव ने बड़े ही नम्र स्वभाव में कहा, भावना को उत्साहित रखो, समय और संयोग आने पर अवश्य ही आपकी मनोकामना पूर्ण होगी।

आज शताब्दी के सुअवसर पर भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्रीमान् ओमजी माथुर, पुष्पजी जैन साहेब और चिरंजीलालजी दवे इस विनीता नगरी में पधारे, आपश्री ने गुरुभगवंत से शुभ आशीर्वाद लिया। आज चौदह स्वप्नों के रंगारंग कार्यक्रम के दौरान बागरा नगर के छोटे-छोटे कलाकारों की खूब प्रशंसा हुई, उन्होंने सभी को मुग्ध कर दिया।

आज महा-शताब्दी महोत्सव का छट्ठा दिवस है। कार्यक्रम के प्रेरणा स्तोत्र एवं निश्रा प्रदाता गच्छाधिपति आचार्य भगवंतश्री जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. की शुभनिश्रा में प्रस्तुति हुई। परमात्मा श्री पार्श्वनाथ भगवान् के पाँच कल्याणकों में से दूसरे जन्म कल्याणक महोत्सव, भगवान् के जन्मोत्सव को देखने का हमें मौका नहीं मिला, लेकिन आज राज दरबार की सजावट, राजा

## दिनांक :16.02.2016

अश्वसेन का सजा धजा दरबार, दूसरी तरफ इन्द्र महाराजा के देवलोक की प्रस्तुति हुई.. जिससे लग रहा था, हम इस जन्मकाल में भी उस दृश्य का आत्मिक आनंद ले रहे हैं, उपस्थित हजारों की संख्या में विराजमान सकल समाज को मुँह तक फेरने की फुर्सत नहीं थी, सभी की निगाहें सिर्फ स्टेज पर ही लगी हुई थी।

विधिकारक, गुरुदेव जयंतसेन सूरीश्वरजी के परमत् कृपा पात्र, सुश्रावक जो नियमों का अंतर्मन से और कठोरता से पालन करते हैं ! आपश्री ने पूर्ण स्पष्ट शब्दों में प्रभु जन्म की विधि कराई, आप जिनमंदिर में रोज ही विधि-विधान करवा रहे हैं, शास्त्रों में लिखा है, अगर विधि विधान पूर्ण स्पष्ट शब्दों और शुद्धता से किया जाय तो उसका फल भी बहुगामी प्रगतिशील होता है।

आज गुरुदेव आचार्य भगवंत ने बागरा नगर के विषय में कहा, यह नगर आराधना, साधना और उपासना का केन्द्र रहा है। आज फिर नवकार सिद्ध स्व. आचार्य भगवंत हेमेन्द्र सूरिश्वरजी म.सा. का जिक्र करते हुए, यह ऐसे आराधकों की जन्म भूमि है।

## दिनांक :17.02.2016

आज महा-शताब्दी महोत्सव का सप्तम् दिवस है। निश्रा प्रदाता गच्छाधिपति आचार्य भगवंतश्री जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. की शुभनिश्रा में जन्म कल्याणक महोत्सव की प्रस्तुति हुई।

आज कार्यक्रम की शुरूआत आचार्य भगवंत के वरिष्ठ मुनिप्रवर श्री नित्यानंद विजयजी म.सा. के मङ्गलाचरण से आरम्भ हुआ।

बागरा नगर के कर्मठ कार्यकर्ता श्री अशोककुमारजी देशभक्त की वेशभूषा में थे और महाराजा को बधाई देते हुए, हम सभी के दिलों में बसे गीत 'मेरे देश की धरती सोना उगले' से पूरा वातावरण देश भक्तिमयी हो गया।

आज प्रभु का नामकरण विधि-विधान से आचार्य भगवंत ने स्वयं किया, प्रभु की भुआजी ने नाम रखा, तत्पश्चात् प्रभु की शिक्षा को नाट्य द्वारा पेश किया गया, राजकुमारी प्रभावती के साथ प्रभु की सगाई की घोषणा अति सुन्दर नाट्य से हुई।

## दिनांक :18.02.2016

महा-शताब्दी महोत्सव का आठवां दिवस है। आराधना के प्रेरणा निश्रा प्रदाता गच्छाधिपति आचार्य भगवंतश्री जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. की शुभनिश्रा में प्रभु पार्श्वनाथ के दीक्षा महोत्सव की प्रस्तुति हुई।

आज श्रीमद् आचार्य भगवंत के वरिष्ठ मुनिप्रवर श्री नित्यानन्द विजयजी सहमुनिमण्डल पधारे, आपश्री ने जनसमूह के समक्ष मङ्गलाचरण का पाठ किया। पश्चात् प्रभु पार्श्वकुमार का लगनोत्सव कार्यक्रम प्रारंभ हुआ।

कुछ ही समय राज्य करते -करते पार्श्वकुमार को वैराग्य भाव आ गया और यही भावना माता-पिता के समक्ष रख दी। आज गौरक्षा एवं देवस्थान विभाग राजस्थान के मंत्री श्री ओटारामजी, श्रीमती तारा भण्डारी, सिरोही भाजपा जिला अध्यक्ष और राष्ट्रपति द्वारा कई सामाजिक और राजनीति में मनोनीत जावाल-चैन्नई के श्री पारस जैन भी पधारे। आपश्री ने गुरुवंदन कर आशीर्वाद प्राप्त किया। श्री ओटारामजी ने हजारों की संख्या में उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित करते हुए, गौमाता की रक्षा से सम्बन्धित कई बातों से अवगत कराया। गौमाता की रक्षा और पालन से ही देश की उन्नति जुड़ी हुई है इस बात पर जन समूह द्वारा अपार हर्ष प्रकट करते हुए सभागार तालियों से गूंज उठा।

## दिनांक :19.02.2016

आज महाशतकोत्सव के नौवें दिन पू. आचार्यश्री की निश्रा में पार्श्वनाथ भगवान के चौथे कल्याणक महोत्सव की प्रस्तुति हुई।

कल ही प्रभुजी के अखण्ड वैराग्य से प्रभावित होकर माता-पिता ने संयम दीक्षा की अनुमति दे दी थी, आज उसी क्रम में आगे बढ़ते हुए 'वर्षीदान वरघोड़ा' कार्यक्रम हुआ, करीब एक कि.मी., विशाल, हाथी, घोड़े, रथों से सजा एवं हजारों की संख्या में जनसमूह था। हर श्रावक - श्राविका पार्श्वकुमार के संयम को अपनी आत्मा से जोड़ना चाहते थे, अनुमोदना करना चाहते थे, मेरे जीवन में भी ऐसा ही भाव आए, यह आशीष चाहते थे।

प्रभु की दीक्षा विधि-विधान परम् पूज्य आचार्य दीक्षा दानेश्वरी श्रीमद् जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. के वरद हस्ते सम्पूर्ण हुई।

पूज्य गुरुदेव ने फरमाया लेकिन पार्श्वकुमार की नकल करने वाले शायद इस खचाखच्च भरे मण्डप में एक भी नहीं हैं। श्री पार्श्वकुमार इतने वैभवशाली जीवन को त्याग कर आत्मकल्याण के लिए चल पड़े हैं, मुनिश्री निपुणरत्नविजयजी ने कहा-जीवन को सार्थक बनाने के लिए कम से कम तीन बातें अवश्य ही स्वीकार करें। प्रथम 'सम्पत्ति' से सम्बन्धित अपनी शक्ति अनुसार दान-धर्म के कार्य अवश्य ही करें। दूसरा है- 'सम्मति' अर्थात् सहमति, किसी भी सुकृत, धर्म प्रभावना के कार्य में अपनी ओर से सदैव सहमति प्रदान करें और तीसरी है- 'संयम-समर्पण' अगर आप या आपके परिवार से सम्बन्धित कोई भी पुण्यात्मा संयम के पथ पर जाना चाहे तो कभी भी नकारे नहीं, हमेशा उसे उत्साहित कर आज्ञा प्रदान करें।

आज श्री भरतपुर तीर्थ के ट्रस्ट मण्डल ने श्री बाबूलालजी के नेतृत्व में यहाँ पधारकर गुरुभगवन्त से अगले चौमासे की विनंती की। संसदीय सचिव श्री लादूरामजी विश्नोई और जावाल-चैन्नई के श्री पारसजी जैन ने पधारकर जन-जन के उत्साह को आगे बढ़ाया।

## दिनांक :20.02.2016

आज महाशतकोत्सव का दसवां दिवस है। आज बागरा नगर के श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ जिनालय ने तीर्थ का रूप धारण कर लिया है, सुब करीब 9.30 को शुभ मुहूर्त में नूतन ध्वजारोहण हुआ, साथ में 23 देवकुलिकाओं एवं गुरुदेव राजेन्द्र सूरीश्वरजी की देहरी का ध्वजारोहण हुआ। मुनिश्री चारित्ररत्नविजयजी एवं विधिकारकों ने भावमयी गीतों के साथ यह पुण्यमयी कार्यक्रम पूर्ण किये।

आज आचार्य भगवंतश्री जयंतसेन सूरीश्वरजी के 33 वें पाटोत्सव का शुभ दिवस है, गुरुदेव को संयम-दीक्षा के लिए 63 वर्ष पूर्ण हुए हैं और आचार्यपद के 33 वर्ष। इस पुनीत दिवस का गुणानुवाद करने के लिए सम्पूर्ण मुनिमण्डल साधु-साध्वीजी भगवंत वाराणसी नगरी में विराजमान थे।

गुरुवन्दना करने के बाद मुनिप्रवरश्री जयरत्नविजयजी ने गुरु महिमा का बखान करते हुए कहा... हमारे लिए आप भगवान् है, आप ही ने हमें शास्त्रों का ज्ञान करवाया, आप हमारे गच्छ के पारसमणी हैं। साध्वीजी श्री अमृतारसाश्रीजी ने गुरु गुणानुवाद में कहा... आप पारसमणी हैं और हम लोहा। मिले हैं हमें जयंत गुरुवर जिनकी कीर्ति पताका जैन समाज में ही नहीं, सम्पूर्ण देश में फहरा रही है। आप श्री ने बड़ी मार्मिक कविता के द्वारा गुरु गुणगान किया। वृद्ध मुनिप्रवरश्री वीररत्न विजयजी ने गुरु के 63 वर्षों के संयम जीवन का परिचय दिया, आपने साधर्मिक भक्ति पर विशेष जोर दिया।

आपने कहा दया धर्म का मूल है, इस बात को कभी

भी न भूलें। मुनिप्रवरश्री विद्वरत्नविजयजी ने कहा... गुरु रूपी दीपक से हमारा जीवन प्रकाशमयी बने। मुनिप्रवरश्री निपुणरत्नविजयजी ने गुरुदेव के 33 वें पाटोत्सव का गुणानुवाद करते हुए फरमाया, कुछ लोग इतिहास लिखते है, कुछ लोग उसे पढ़ते हैं, मगर मेरे गुरुदेव जयंत इतिहास बनाते हैं। गुरुदेव ने 3 हजार से ज्यादा जिनबिम्बों की प्राण-प्रतिष्ठा करवाई है। सैकड़ों साहित्य लिखे हैं, हजारों गीतों का सृजन किया है। वीतराग वाणी के अनेकों शास्त्र समाज को दिए हैं, गुरु राजेन्द्र की महिमा को सर्वत्र फैलाने में आपका अथक प्रयास रहा है।

आज हमारे राजस्थान के गृह मंत्री श्री गुलाबजी कटारिया पधारे, आपश्री का गुरुदेव से 30 वर्षों से भी पुराना सम्बन्ध है। आपश्री के शुभ हस्ते गुरु गुणानुवाद डी.वी.डी. का विमोचन हुआ। गुरुदेव द्वारा दिए गए प्रवचन के एक बड़े शास्त्र का भी विमोचन हुआ। अरिहंत चैनल की सुप्रसिद्ध कलाकार श्रीमती मंजुला बेन ने गुरुभक्ति में गीत गाकर उपस्थित जनसमूह को आनंदित कर दिया। आज यहां बागरा नगर में शताब्दी के शुभ अवसर पर 36 कौम का स्वामिवत्सल 'स्वरूचि भोजन' आयोजित किया गया। एक एम्बुलेन्स का भी अनावरण भी हुआ।

## दिनांक :21.02.2016

आज महाशतकोत्सव का अंतिम दिवस है। मुनिराजश्री निपुणरत्नविजयजी प्रवचन सभा में पधारे। शताब्दी का पूर्णाहुति दिवस तो आज है, मगर कल पार्श्वनाथ प्रभुजी की अमर ध्वजारोहण के बाद नगरवासियों का यहाँ से देसावर के लिए प्रयाण शुरू हो गया, आज की उपस्थिति भी यही बता रही है।

गुरुदेव ने फरमाया, मानव जीवन मिलना दुर्लभ है, उससे दुर्लभ है हमारी पांचों इन्द्रियाँ सुचारू रूप से कार्यान्वित हों, इतना मिल जाने पर भी दुर्लभ है, वे सभी देव-गुरु की वीतरागमयी वाणी का अनुसरण करें, आत्मोन्नति के मार्ग पर तुम्हें लेकर जाय, न कि संसार में भटकाने वाले अधोगति के मार्ग पर, जहां क्षण मात्र सुख की उपलब्धि में भी सारांश दुःख में ही पविवर्तित होता है।

आज रात्रि भक्ति में बागरा नगर के संगीतकारों को भी मौका मिला, बहन खुशबू कुमारी पुत्री स्व. जवेरचन्दजी ने जिस भव्यता कोकिल कंठ से गीतों को गाया है, बड़े से बड़े संगीतकार भी आश्चर्यचकित थे। बागरा नगर की 2 बहनों ने भी सुंदर भावमयी गीत प्रस्तुत किये। श्री सुभाषभाई ने 2 दिन पहले अपनी प्रस्तुति दी थी। सभी को बहुत-बहुत धन्यवाद, अभिनंदन।

परम् पूज्य गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जयंतसेन सूरीश्वरजी म. सा. द्वारा "जिन-गुरु : अमृत-वाणी" बागरा-चैन्नई के लेखक श्री अमृतलाल शांतिलालजी बागरा ग्रन्थ "जयंतसने-प्रवचन" प्रदान करते हुए। इस 684 पेज के ग्रन्थ में गुरुदेव के अब तक के सम्पूर्ण प्रवचन लिखित है।

गुरुदेव ने वास्क्षेप् से अभिमन्त्रित कर शुभ आशीर्वाद देते हुए शासन और ज्ञान की सेवा में लगे रहो, मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है।

# संयमोत्सव : एक समीक्षा

(श्री अशोक कुमार नांदेचा, नीमच)

**बागरा ग्राम नहीं शहर बन गया ।**
**'संयम दिवस' भव्य इतिहास बन गया ।।**

विश्व पूज्य प्रातः स्मरणीय गुरुदेव श्रीमद् राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के छःठे पट्टधर वर्तमान त्रिस्तुतिक श्रीसंघ गच्छाधिपति आचार्य भगवन् श्रीमद् जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. का 63 वां संयम महोत्सव 13-14 फरवरी 2016 को बागरा में देखने को मिला । परमात्मा चिन्तामणी पार्श्वप्रभुजी का भव्य मन्दिर, भव्य नगरी जहाँ गुरुवर श्रीमद् जयन्तसेनसूरिजी म.सा. का संयम दिवस महामहोत्सव के रूप में मनाया गया । सम्पूर्ण बागरा ग्राम वन्दनवारों से सजा हुआ, बागरावासी अपने गुरुवर का संयम महोत्सव बड़े उत्साह उमंग से मनाने में लीन थे । बागरा ग्राम-ग्राम न होकर मानों शहर बन गया विशाल जनमैदिनी से खचाखच भरे सभागृह में गुरुदेव अपने शिष्य मुनिमंडल, साध्वीजी मंडल के साथ पधारे । जयघोष से वाराणसी नगरी गुन्जायमान हो उठी ।

हे गुरुदेव प्रणाम आपके चरणों में, सारे तीरथ धाम आपके चरणों में की स्वर लहरी गीत की प्रस्तुति बड़ी मनमोहक लग रही थी । आचार्य भगवन् की दीक्षा से लेकर सूरिपद तक की जीवन यात्रा का वर्णन धरती फट जाय ऐसे जोरदार शब्दों में भक्तों ने की ।

आचार्य भगवन् के मुखाविन्द से बागरा की जुड़ी यादें सुन गुरुदेव ने फरमाया मैंने दीक्षा के मेरे गुरुदेव श्रीमद् यतीन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. से पहली शिक्षा ली किसी के साथ मनमुटाव नहीं रखना मैंने इस शिक्षा को लेकर कदम आगे बढ़ाए, बढ़ता गया, मेरी परमेष्ठी भक्ति देख मुझे पढ़ने के लिये निम्बाहेड़ा कुन्दनमलजी डांगी के पास पढ़ने भेज दिया । वहाँ मैं अभ्यास कर रहा था कि मुझे पता चला माण्डवपुर तीर्थ में पू. गुरुदेव भव्य अन्जनशलाका करने जा रहे हैं । मैंने भी वहाँ आने की विनती की लेकिन उन्होंने यह कहकर मना कर दिया कि तू कई अन्जनशलाका प्रतिष्ठाएँ करवाएगा । अतः तुझे नहीं आना है अभी वहीं अध्ययन कर दीक्षा के बाद जब मुनि अवस्था में बागरा पधारे तब की कई यादों को जयन्तसेन सूरि गुरुवर ने बताया, यहाँ के लोगों की श्रद्धा

भक्ति का स्मरण भी कराया । भरतपुर नगरी के संयम उत्सव के हम नीमचवासी भी प्रत्यक्षदर्शी थे । मालवा में चातुर्मासार्थ विनती हेतु प्रतिदिन संघ आ रहे थे और मंच पर विनंती की जा रही थी । अन्त में निपुणरत्नविजयजी म.सा. ने गुरुदेव के जीवनवृत पर प्रकाश डाला तथा शिक्षाप्रद व्याख्यान दिये ।

नीमच से बागरा भीनमाल के 46 घण्टे के सफर में हमने 13 यात्राएँ की आहोर के गोदी पार्श्व प्रभु के बावन जिनालय दर्शन कर दादा गुरुदेव के द्वारा कराई गई अन्जनशालाका प्रतिष्ठा स्मरण हो गई । बागरा संयम उत्सव, गुरुवाणी मांगलिक सुन हम धन्य हो गये । गुरुदेव ने हम सभी के सिर पर वासक्षेप डाला, नीमच की कुशलता पूछी श्री संघ के एक-एक बच्चे को धर्मलाभ कहा ।

पू. मुनिराज वीररत्नविजयजी म.सा. ने भी नीमच चातुर्मास से जुड़ी यादों का स्मरण कराया सभी को धर्मलाभ प्रदान किया । बागरा में आचार्य भगवन् के दर्शन वन्दन से हम सभी गद्‌गद् हो गये । पूरी यात्रा के दौरान बागरा में संयम महोत्सव ही हमारी चर्चा का विषय रहा । धन्य हैं बागरावासी उनकी गुरु समर्पण श्रद्धा को नमन, नवकार 68 तीर्थ स्थापना होने वाली बागरा भूमि को वन्दन ।

## जैन संस्कृति के आधार स्तंभ : तीर्थ स्थल

(एम. बादलचंद भंडारी-चेन्नई)

तीर्थ यात्रा महत्व अनादिकाल से माना जाता रहा है। कहा जाता है कि, जो संसार से तारे उसे तीर्थ कहते हैं। सामुदायिक यात्रा संघ भावना वृद्धि के प्रबल साधन हैं। स्थावर तीर्थ, जिन प्रतिमायें, जैन मन्दिर आदि तीर्थों के दर्शन सम्यक्त्व प्राप्ति के स्त्रोत माने जाते हैं। यह वास्तविकता है कि भावना भक्ति के माध्यम से हम निश्चित ही भगवान तक मोक्ष में पहुंच सकते हैं यही सरल और सीधा रास्ता है। तीर्थंकर भगवन्तों के जन्म, दीक्षा, विहार, केवल-ज्ञान और निर्वाण के स्थानों को तीर्थ कहा जाता है और ऐसे पवित्र स्थानों पर आत्मा के शुभ भावों की सहज ही वृद्धि होती है। यह सत्य अनुभव का ही विषय है। तीर्थ स्थानों पर पुद्‌गल, परमाणु और अलौकिक प्रकाश प्रदान करने वाले होते हैं। खेद है कि आजकल तीर्थ यात्रा पिकनिक का रूप लेती जा रही है। तीर्थ स्थानों पर भी जाने-अनजाने ऐसी आशातनाएं और पाप कर्म कर गुजरते हैं जिसका प्रायश्चित करना भी प्रायः असम्भव होता है। कहा जाता है कि पाप कर्म का प्रायश्चित तीर्थ स्थानों पर हो सकता है किन्तु तीर्थ स्थानों पर किए पाप कर्मों का प्रायश्चित करना बहुत ही कठिन होता है।

# विधान की परम्परा

(साध्वी डॉ. श्री सौम्यगुणा श्रीजी म.)

**भारतीय संस्कृति की विभिन्न परम्पराओं में विधि-विधान-** भारतीय संस्कृति की विभिन्न परम्पराओं में विधि-विधानों का उल्लेख मिलता है। यह संभव है कि किसी परम्परा में अपने मौलिक विधि-विधान कम हों और किसी परम्परा में अधिक हों, किन्तु सभी के अपने-अपने विधि-विधान हैं। जैसे, जंगल में रहने वाले आदिवासियों की अपनी सामाजिक परम्परा होती है, उनके भी धार्मिक रीति-रिवाज होते हैं। यहूदि, मुस्लिम, ख्रिस्ती, बौद्ध, सिक्ख आदि के अपने-अपने विधि-विधान हैं। यहूदियों में सुन्नत, करावकी, कोशर (धार्मिक रीति के अनुसार पवित्र माने जाने वाला बोराक) लेना, मस्तक पर टोपी पहनना, शुक्रवार को सूर्यास्त के बाद किसी प्रकार का कार्य नहीं करना, हिब्रू भाषा बोलना, सीनेगोग में जाकर प्रार्थना करना, संध्या काल के समय स्नानपूर्वक गृह आंगन में दीपक प्रगटाना आदि कई धार्मिक नियम एवं विधान हैं। इस्लाम धर्म में भी सुन्नत का रिवाज है। स्त्रियों को काला बुरखा पहनना, पाँच समय नमाज पढ़ना, टोपी पहनना, हज की यात्रा करना, काबा की प्रदक्षिणा करना आदि धार्मिक नियमों एवं विधियों का पालन करना आवश्यक माना गया है। ख्रिस्तियों में बालक को ख्रिस्ती धर्म की दीक्षा दी जाती है। वे लोग चर्च में प्रार्थना करते हैं। वहाँ ब्रेड एवं शराब का प्रसाद दिया जाता है। इसी प्रकार बपस्तिमा आदि उनके धार्मिक विधि-विधान हैं। पारसी धर्म में बालक को नौजोत अर्थात् पारसी धर्म की दीक्षा देते हैं और दीक्षा के समय चद्दर देते हैं।

बौद्ध धर्म में सामनेर दीक्षा (जैन परम्परा की छह मासिक सामायिक के समान प्रतिज्ञा ग्रहण), उपसंपदा (बड़ी दीक्षा के समान प्रतिज्ञा स्वीकार), उपोसथ (पौषध), प्रवारणा (पाक्षिक प्रतिक्रमण की भाँति आलोचना की क्रिया) एवं प्रायश्चित आदि के विधि-विधान प्रचलित हैं। इनमें सामनेर दीक्षा ग्रहण करने वाला साधक दीक्षा की अवधि पूर्ण होने के बाद चाहे तो पुनः गृहस्थ जीवन में जा सकता है। हिन्दु धर्म में षोड़श संस्कारों की परम्परा है। इसमें ब्राह्मण आदि उच्च वर्णों में जनेऊ धारण करना, विशेष अवसर पर यज्ञ, हवन करना-करवाना, वेदमन्त्रों का पाठ करना, सन्ध्या करना, नवग्रह की शान्तिहेतु शान्तिकर्म करना, पुष्टिकर्म करना, वृद्धावस्था में वानप्रस्थ या सन्यास ग्रहण करना इत्यादि कई प्रकार के विधि-विधान हैं। इनके अतिरिक्त मृतकादि के अवसर पर भिक्षुओं को दान देना, मन्दिर में मोमबत्ती या दीपक जलाना आदि विधान भी किये जाते हैं।

जैन परंपरा में विधि-विधान या अनुष्ठान का अर्थ क्रिया, आचरण या सम्यक् प्रवृत्ति से है। यह उल्लेख्य है कि मात्र क्रिया का कोई महत्त्व नहीं रहता। ज्ञान पूर्वक की गई प्रवृत्ति ही फलदायी होती है। शास्त्रवचन भी है- 'ज्ञानक्रियाभ्यां मोक्षः' अर्थात् ज्ञान और क्रिया दोनों से मोक्ष की प्राप्ति होती है।

# बहुप्रद बागरा

# शाश्वत धर्म

## 'महाशतकोत्सव' विशेषांक

# महाशतकोत्सव

## विविध लाभार्थी

शा. चेलमलजी-श्रीमती शांतीदेवी

### जाजम बिछाने के लाभार्थी

शा. देवीचन्द, हीराचन्द, लोकेश, प्रीतेश
मनीष, वैभव, गर्व, मोक्ष बेटा-पोता
शा. चेलमलजी तोलाजी खांटेड संघवी परिवार
फर्म : मेसर्स वर्धमान डिस्ट्रीब्यूटर्स - दावणगिरि (कर्नाटक)

शा. ओटमलजी-श्रीमती बदामीबाई

### प्रभुजी के मुनीमजी बनने के लाभार्थी

शा. ओटमल, सुरेशकुमार, हीराचन्द, अशोककुमार, राजेन्द्रकुमार, बंटी,
नीलेश, सचिन, सनी, रौनक, कायन बेटा-पोता-पड़पोता-लड़पोता
शा. जेरूपचन्दजी चेनाजी अम्बा गौत्र चौहान (त्रौणी) परिवार
फर्म : मेसर्स क्लब हाऊस- काकीनाड़ा (विशाखापटनम् - आ.प्र.)

शा. शांतिलालजी-श्रीमती मोहिनीदेवी

### तिलक द्वारा बहुमान के लाभार्थी

शा. शांतिलाल, अमृतलाल, दिनेशकुमार
नीरज, स्पर्श बेटा- पोता- पड़पोता
शा. चंदाजी मुलाजी गुज्जर गौत्र परिवार
फर्म : मेसर्स नेहा रियाल्टी- विजयपुर (कर्नाटक)

शा. सुखराजजी-श्रीमती सुन्दर बाई

### माला द्वारा बहुमान के लाभार्थी

शा. सुखराज, रीतेश, अमित, रिशी, राज
बेटा-पोता-पड़पोता
शा. प्रतापचन्दजी समनाजी बिलोसावोरा, गौत्र परिवार
फर्म : शा प्रतापचन्द नरेन्द्रकुमार पोरवाल- विजयपुर (कर्नाटक)

# श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवान पंचधातु की प्रतिमाजी भरवाने के लाभार्थी

स्व. शा शेषमलजी

स्व. विमलकुमार

स्व. श्रीमती शांतिबाई

शा. रमेशकुमार, ललितकुमार, स्व. विमलकुमार, अनिलकुमार, दिलीपकुमार, संजयकुमार, निरंजन, राहुल, रोहित, रिकेश, राजहंस, आशीष, राजरत्न, ऋषभ, अभिषेक, राजेन्द्र, आदर्श, सूरज, विहान बेटा-पोता-पड़पोता

**शा. शेषमलजी गुलाबचंदजी अग्निपरमार गोत्र परिवार**

:: प्रतिष्ठान ::

* मेसर्स निरंजन एन्टरप्राईजेस, हैदराबाद * मेसर्स चिंतामणि पार्श्वनाथ एन्टरप्राइजेस-हैदराबाद, विजयवाड़ा * मेसर्स चिंतामणि पार्श्वनाथ इनफ्रा प्राइवेट लिमिटेड, हैदराबाद- विजयवाड़ा * मेसर्स राहुल एन्टरप्राइजेस- हैदराबाद * मेसर्स आदर्श एन्टरप्राइजेस - हैदराबाद * मेसर्स आनंद मंगल एन्टरप्राइजेस- हैदराबाद * मेसर्स राजेन्द्र एन्टरप्राइजेस- एलूरू * मेसर्स वंदना एन्टरप्राइजेस- एलूरू * मेसर्स मधुकर एन्टरप्राइजेस - एलूरू * मेसर्स अरिहंत एन्टरप्राइझेस - एलूरू । * मेसर्स जैन एण्ड कंपनी- एलूरू

# भगवान के माता-पिता बनने के लाभार्थी

स्व. शा चंदनमलजी

स्व. शा. जेठमलजी

स्व. श्रीमती हुलीबाई

शा. कैलाशचंद, हंसराज, शीतलकुमार, अश्विनकुमार, श्लोक
बेटा-पोता-पड़पोता शा. चन्दनमलजी जेठमलजी (कामदार) लाम्ब गौत्र चौहान परिवार

:: प्रतिष्ठान ::

* मेसर्स शा. चन्दमल पोरवाल काकीनाड़ा, * मेसर्स रोमा फाईनेन्स एण्ड ज्वेलर्स काकीनाड़ा
* मेसर्स राजस्थान फाईनेन्स कॉर्पोरेशन काकीनाड़ा * मेसर्स रॉयल ज्वेलर्स काकीनाड़ा

शा. हरकचंदजी-श्रीमती शर्मिलादेवी

## श्रीफल द्वारा बहुमान के लाभार्थी

शा. हरकचंद, विजयकुमार, राजेन्द्रकुमार, आनन्दकुमार,
निकिनकुमार, हर्ष, राहुल, शालिन, बेटा-पोता-पड़पोता
शा. फूलचंदजी प्रतापजी अम्बा गौत्र चौहाण (त्रौणी) परिवार
फर्म : मेसर्स क्लब कलेक्शन - काकीनाड़ा (आ.प्र.)

शा. नरेशकुमारजी

## साफा - चुन्दड़ी द्वारा बहुमान के लाभार्थी

शा. नरेशकुमार बेटा, पोता
शा. हजारीमलजी खुमाजी
अम्बा गौत्र चौहान (त्रौणी) परिवार
फर्म : मेसर्स गोल्डन मार्केटिंग - विजयवाड़ा (आ.प्र.)

शा. सुमेरमलजी-श्रीमती बदामीबाई

## स्मृति चिन्ह द्वारा बहुमान के लाभार्थी

शा. सुमेरमल, सुरेन्द्रकुमार, पुखराज, राजेन्द्रकुमार, सम्पतकुमार
दीपक, प्रीतम, उज्जवल, आकाश, ऋषभ, तनिष्क, प्रियांश
बेटा-पोता-पड़पोता-लड़पोता शा. हजारीमलजी वन्नाजी भंडारी परिवार
फर्म : शा. हजारीमल छगनराज, कड़प्पा- सूरत (गुजरात)

शा. नरेन्द्रकुमारजी-श्रीमती ललितादेवी

## सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी

शा. नरेन्द्रकुमार, अरिहन्तकुमार
बेटा-पोता शा. रायचंदजी रतनचंदजी
लाम्ब गौत्र चौहान परिवार
फर्म : मेसर्स नरेन्द्र पोरवाल, चैन्नई

शा. नरेन्द्र कुमारजी-श्रीमती इंदुमती

## परमात्मा के सास-ससुरजी

शा. नरेन्द्रकुमार, अक्षय बेटा-पोता
शा. प्रतापचंदजी समनाजी बिलोसा
बोरा गौत्र परिवार
फर्म : शा. प्रतापचंद नरेन्द्रकुमार पोरवाल - विजयपुर (कर्नाटक)

शा. वसन्तीलालजी-श्रीमती जमुनादेवी

## परमात्मा के भुआ-भुओरोजी

शा. बसन्तीलालजी श्रीमती जमुनादेवी
शा. वसन्तीलाल, ईश्वरकुमार, सौरभ
बेटा-पोता-पड़पोता शा. देवीचंदजी कृष्णाजी
श्रीश्री वंश परमार गौत्र परिवार
फर्म : श्री शिव शक्ति ज्वेलर्स-नेल्लोर (आ.प्र.)

शा. पारसमलजी-श्रीमती मधुलताबेन

## परमात्मा के मामा-मामीजी

शा. पारसमलजी श्रीमती मधुलताबेन
शा. प्रवेश, राजेन्द्र, अक्षत, जैनम
बेटा-पौता शा. पारसमलजी फूलचंदजी (प्रेमाजी)
पंचाण गौत्र चौहान परिवार
फर्म : मेसर्स राजेन्द्र सिल्वर पैलेस- हैदराबाद

आरव

अरैना

## प्रियवंदा दासी

शा. मेलापचंद, सुशीलकुमार, अमितकुमार
आर्यन, आरव बेटा-पोता-पड़पोता
शा. हीराचंदजी चेनाजी गौत्र पंचोत्रा परमार परिवार
फर्म : मेसर्स अरिहन्त इन्टरप्राइज, चैन्नई

शा. दिनेश कुमारजी-श्रीमती शांतिलादेवी

## राजकन्या

शा. दिनेशकुमार, योगेश, मनीष, भावेश
बेटा-पोता शा. हिम्मतमलजी नवाजी
अम्बा गौत्र चौहान (त्रौणी) परिवार
फर्म : मेसर्स मोनिका ज्वेलर्स - नेल्लोर (आ.प्र.)

शा. केशरीमलजी-श्रीमती बदामीदेवी

## कुलमहत्तरा

शा. रमेशकुमार, ललितकुमार, अरविंदकुमार, दिलीपकुमार
मनोजकुमार, अमितकुमार, निखिल, अनीश, अक्षय, रितिक, अल्पेश
सुहान, नील बेटा-पोता-पड़पोता शा. वरदीचंदजी पुनमाजी मांडवला
गौत्र परिवार फर्म : शा. वरदीचंद दिलीपकुमार - पेद्दापुरम (आ.प्र.)

शा. सुखरामजी-श्रीमती मोहनीदेवी

## हरिणगमेषी देव

शा. हीराचंद, आशीषकुमार, आयुशकुमार
बेटा-पोता शा. सुखराजजी कपूरचन्दजी
(भोपाजी) पंचाण गौत्र चौहान परिवार
फर्म : जय जगदम्बा ज्वेलर्स-नरसापुर (आ.प्र.)

शा. फुलचंदजी-शा. रतनचंदजी

## नगर सेठ

दिनेशकुमार, नरेशकुमार, जितेशकुमार
साहिल बेटा-पोता शा. रतनचंदजी
फूलचंदजी लाम्ब गौत्र चौहान परिवार
फर्म : मेसर्स जैन ज्वेलरी मॉल काकीनाड़ा (आ.प्र.)

शा. योगेश कुमार-शा. मनीष कुमार

### प्रधानमंत्री

दिनेशकुमार, योगेश, मनीष, भावेश
बेटा-पोता शा. हिम्मतलालजी नवाजी
अम्बा गौत्र चौहान (त्रौत्री) परिवार
फर्म : मेसर्स युग कलेक्शनम् नेल्लोर (आ.प्र.)

शा. पुखराजजी-श्रीमती कांतिदेवी

### राज ज्योतिष (पंडितजी)

शा. पुखराज (रतनचंद), मिलाप, राजेश, अमन, किरण
रोनक, ऋषभ, यश, बेटा-पोता-पड़पौता
शा. शंकरलालजी मगाजी अम्बा गौत्र चौहान (त्रौणी) परिवार
फर्म : श्री बालाजी पोलीमर्स बेंगलोर

शा. नथमलजी-श्रीमती शांति देवी

### खजांची

शा. मिश्रीमल, चम्पालाल, सुरेशकुमार, कैलाशचन्द्र, जयन्तीलाल
मिलापचन्द बेटा-पोता शा. नथमलजी भगवानजी
काश्यप गौत्र चौहान परिवार
फर्म : शा नथमलजी भगवानजी, बागरा

शा. नथमलजी-श्रीमती लीलावती देवी

### सेनापति

शा. अमीचंद, शांतिलाल, किशोरकुमार
यशवंतकुमार, धीतीक बेटा-पोता-पड़पोता
शा. नथमलजी हेमाजी फोलामुथा परिवार
फर्म : मेसर्स यश ट्रेडर्स, चैन्नई

शा. हीराचंदजी-श्रीमती संतोषबाई

## भगवान के मित्र

शा. ओटमल, सुरेशकुमार, हीराचन्द
अशोककुमार, राजेन्द्रकुमार, बंटी, नीलेश, सचिन
सनी, रौनक, कायन बेटा-पोता - पड़पोता-लड़पोता
शा. जेरूपचन्दजी चेनाजी अम्बा गौत्र चौहान (त्रौणी) परिवार
फर्म : जैन ऑडियो वीडियो एण्ड इलेक्ट्रोनिक्स विशाखापट्टनम् - काकीनाडा

शा. हस्तीमलजी-श्रीमती रतिदेवी

## छड़ीदार -1

शा. किशोरीलाल, प्रकाशकुमार, मदनलाल, मिलापचन्द
दिनेशकुमार, अंकुश, प्रिन्स, अल्पेश, राकेश, अमित
केन्जल, राहुल, संदीप, नमन, बेटा-पोता-पड़पोता
शा. हस्तीमलजी शिवराजजी भंडारी परिवार
फर्म : मेसर्स राजेन्द्र सिल्क मिल्स, थिवंडी, मुम्बई

शा. पुखराजजी-श्रीमती उषादेवी

## छड़ीदार -2

शा. अरविंदकुमार, ललितकुमार, महावीरकुमार
सुरेश, मुकेश, आशीष, राहुल, अभिषेक
कुणाल, मनन, युवान बेटा-पोता-पड़पोता
शा. पुखराजजी खेताजी भंडारी परिवार
फर्म : मेसर्स राहुल साड़ीज मैसूर (कर्नाटक)

शा. प्रतापचंदजी-श्रीमती ऊजीभाई

## गुरुदेव के नगर प्रवेश के दिन सामैया के लाभार्थी

शा. सुखराज, रीतेश, अमित, रिशी, राज, बेटा-पोता-पड़पौता
शा. प्रतापचंदजी समनाजी
बीलोसा वोरा गौत्र परिवार
फर्म : शा. प्रतापचंद नरेन्द्रकुमार पोरवाल विजयपुर (कर्नाटक)

शा. पुकराजजी-श्रीमती लीलादेवी

## श्री वाराणसी नगरी (भक्ति-प्रवचन मण्डप) के लाभार्थी

उद्घाटन : दि. 10-2-2016 सुबह प्रवेश के बाद
शा. पुकराज, प्रवीणकुमार, रमेश, अश्विन,
मिथुन, राहुल, कल्पेश, कुणाल, ध्रुव
बेटा-पोता-पडपोता शा. चंदाजी मुलाजी गुज्जर गौत्र परिवार
फर्म : शा. पुकराज बाबुलाल पोरवाल विजयपुर (कर्नाटक)

शा. पुखराजजी-श्रीमति पोपटबाई

## श्री भरतपुर नगरी (भोजन मण्डप) के लाभार्थी

उद्घाटन : दि. 10-2-2016, सुबह प्रवेश के बाद
शा. पुखराज, दिनेशकुमार,
जितेन्द्रकुमार, रिषभ, आदेश बेटा-पोता-पड़पोता
शा. सौभागमलजी पूनमचन्दजी लाम्ब गौत्र चौहान परिवार
फर्म : सुमति ज्वेलर्स-चैन्नई

शा. नरेन्द्रकुमारजी-श्रीमती योगितादेवी

## गुरुदेव के नगर प्रवेश के दिन गहुली के लाभार्थी

शा. नरेन्द्रकुमार, अंकुशकुमार
बेटा-पोता
शा. हजारीमलजी चुन्नीलालजी
लाम्ब गौत्र चौहान परिवार
फर्म : मेसर्स शिव शक्ति ज्वेलर्स, नेल्लोर (आ.प्र.)

शा. अजीतकुमारजी-श्रीमती सुमित्रादेवी

## प्रभुजी की मेहन्दी वितरण के लाभार्थी

शा. विमलकुमार, अजितकुमार, आनंदकुमार,
कल्याणचन्द, निलेश, निलकेश, राहुल, नितिश
अभिनव, अलकेश, सौरभ, क्रिश, स्वयं,
दिव्यांश, मोक्षित, हितांश, प्रणव, हृदयांश, बेटा-पोता-पड़पोता
शा. नथमलजी खुमाजी पंचाण गौत्र चौहान परिवार
फर्म : मेसर्स जय राजेन्द्र ज्वेलर्स, सिकन्द्राबाद-नरसापुर

आर्यन कुमार-कुमारी रुशाली

## प्रभुजी की गाँव सांझी वितरण के लाभार्थी

शा. मेलापचंद, सुशीलकुमार, अमितकुमार, आर्यन,
आरव, बेटा-पोता-पड़पोता शा. हीराचंदजी चेनाजी
गौत्र पंचोत्रा परमार परिवार
फर्म : मेसर्स अरिहन्त इन्टरप्राइज-चैन्नई

शा. धनरूपचंदजी-शा. जवेरचंदजी

## श्री नवग्रह पाटला स्थापना (दि. 12-02-2016)

शा. जवेरचंद अंकुश बेटा-पोता
शा. धनरूपचंदजी भेराजी
खांटेड संघवी परिवार
फर्म : मेसर्स अम्बिका स्टेशनरी-कर्नूल (आ.प्र.)

शा. भुरमलजी-श्रीमती मोहीनीदेवी

## श्री दशदिग्पाल पाटला पूजन (दि. 12-02-2016)

शा. भूरमल, रमेशकुमार, स्व. अशोककुमार, सपनकुमार,
निखिल, स्नेहिल बेटा-पोता-पड़पोता
शा. चतराजी मोतीजी धार परमार गौत्र परिवार
फर्म : मेसर्स एशियन पॉलीमर्स-मुंबई

शा. देवीचंदजी-शा. हिराचंदजी

## श्री अष्टमंगल पाटला पूजन (दि. 12-02-2016)

शा. देवीचन्द, हीराचन्द, लोकेश, प्रीतेश, मनीष,
वैभव, गर्व, मोक्ष बेटा-पोता
शा. चेलमलजी तोलाजी खांटेड संघवी परिवार
फर्म : मेसर्स संघवी ब्रदर्स-नालतवाड़ा (कर्नाटक)

शा. शान्तिलालजी-श्रीमती विमलादेवी

## श्री कुम्भ स्थापना (दि. 11-02-2016)

शा. शान्तिलाल, जतनराज, दिलीपकुमार,
किशोरकुमार, आकाश, दर्शन, लक्की बेटा-पोता-पड़पोता
शा. डाहाजी नथाजी अम्बा गौत्र चौहान (त्रौणी) परिवार,
फर्म : शा. जवेरीलाल शान्तिलालजी बेंकर्स-नरसापुर (आ.प्र.)

शा. शांतिलालजी-श्रीमती शांतिदेवी

## श्री दीपक स्थापना (दि. 11-02-2016)

शा. शान्तिलाल, नरेन्द्रकुमार, अशोककुमार,
विमलकुमार, महावीरकुमार, राजेन्द्र, राकेश, सचिन, राजेश, प्रिन्स
बेटा-पोता-पड़पोता-लड़पोता
शा. देवीचंदजी नवाजी लाम्ब गौत्र चौहान परिवार
फर्म : मेसर्स जैन इलेक्ट्रिकल्स्-गुण्टूर (आ.प्र.)

शा. पारसमलजी-श्रीमती नयनादेवी

## श्री ज्वारारोपण (दि. 11-02-2016)

शा. पारसमल बेटा पोता
शा. नथमलजी छतराजी
अम्बा गौत्र ढाल परमार परिवार
फर्म : शा. नथमल पारसमल-सामलकोट (आ.प्र.)

शा. हस्तीमलजी-श्रीमती भंवरीदेवी

## श्री जलयात्रा विधान (दि. 11-02-2016)

शा. हस्तीमल, अरुणकुमार, अपीनकुमार, अरमान
बेटा-पोता शा. वेजराजजी जेठमलजी
अम्बा गौत्र परमार परिवार
फर्म : मेसर्स अरिहंत इलेक्ट्रोनिक्स, काकीनाड़ा (आ.प्र.)

शा. टामचंदजी-श्रीमती मिसरीबाई

## श्री सिद्धचक्र पाटला पूजन (दि. 13-02-2016)

शा. टामचंद, पारसमल, स्व. मीठालाल, स्व. कैलाशचंद,
भरतकुमार, अरिहंतकुमार, अंकुशकुमार, दीपक,
विपुल, सिद्धार्थ, प्रीत बेटा-पोता-पड़पोता-लड़पोता
शा. फतेहचंदजी गुलाबचंदजी लुणिया परिवार
फर्म : मेसर्स महावीर ग्लास कम्पनी-विजयवाड़ा (आ. प्र.)

शा. जवेरचंदजी-श्रीमती मोहिनीदेवी

## श्री नंदावर्त पाटला पूजन (दि. 13-02-2016)

शा. जवेरचंद, राजेन्द्र (राजू), प्रीत
बेटा-पोता-पड़पोता
शा. कपूरचंदजी लखमाजी बावलेचा चौहान परिवार
फर्म : शा. लखमाजी कपूरचंदजी-एलुरू (आ.प्र.)

शा. रूपचंदजी-श्रीमती वीजुबाई

## श्री वीस स्थानक पाटला पूजन (दि. 13-02-2016)

शा. रूपचंद, प्रवीणकुमार, संजयकुमार, रोमिलकुमार
बेटा-पोता-पड़पोता शा. मंछाजी नरसिंगजी
अम्बा गौत्र धार परमार परिवार
फर्म : मेसर्स प्रवीणकुमार पोरवाल-पीठापुरम (आ. प्र.)

शा. सुरेशकुमारजी-श्रीमती उषाबाई

## घर-घर-तोरण बाँधने के लाभार्थी

शा. सुरेशकुमार, विजयकुमार, जयदित्या
बेटा-पोता-पड़पोता
शा. मूलचंदजी खुमाजी अम्बा गौत्र
चौहान (त्रौणी) परिवार
फर्म : मेसर्स विजय इलेक्ट्रिकल, विजयवाड़ा (आ. प्र.)

शा. शीतलकुमारजी-श्रीमती दीपिकादेवी

## घर-घर चाँदी के सिक्के (100 ग्रा.) वितरण के लाभार्थी

शा. कैलाशचन्द, शीतलकुमार, श्लोक
बेटा-पोता-पडपोता शा. चन्दनमलजी जेठमलजी (कामदार)
लाम्ब गौत्र चौहान परिवार
फर्म : मेसर्स रोमा फाईनेन्स एण्ड ज्वेलर्स, काकीनाड़ा (आ. प्र.)

शा. सम्पतराजजी-श्रीमती पुष्पादेवी

## घर-घर सम्पूर्ण शताब्दी महोत्सव की सी.डी. एवं पेनड्राईव्ह वितरण के लाभार्थी

शा. सम्पतराज, राकेशकुमार, क्रिशकुमार
प्रियानकुमार बेटा-पोता-पडपोता
शा. हीराचन्दजी चेनाजी पंचोत्रा परमार गौत्र परिवार
फर्म : मेसर्स आर. सम्पतराज-मुम्बई

शा. चम्पालालजी-श्रीमती जयश्रीबाई

## प्रथम दिवस

(दि. 11 फरवरी 2016), महा सुद 3 गुरुवार

### सुबह का नाश्ता

शा. चम्पालाल, आशिषकुमार, बेटा-पोता
शा. नथमलजी मेधाजी लाम्ब गौत्र चौहान परिवार
फर्म : मेसर्स शा. नथमल चम्पालाल-मुम्बई

शा. हजारीमलजी-श्रीमती कमलादेवी

### सुबह की नवकारसी

शा. हजारीमल, सुरेन्द्रकुमार, विक्रमकुमार, राहुल
बेटा-पोता-पड़पोता शा. भगवानजी रोमाजी
अम्बा गौत्र चौहान (त्रौणी) परिवार
फर्म : मेसर्स अम्बिका एप्लायंसेस प्रा. लि. -हुबली

शा. जवेरचंदजी-श्रीमती पुष्पाबाई

## श्री भक्तामर महापूजन

शा. अरविंदकुमार, राकेशकुमार
बेटा-पोता शा. जवेरचंदजी भीमाजी
लाम्ब गौत्र चौहान परिवार
फर्म : शा. बाबुलाल जवेरचंद, विजयपुर (कर्नाटक)

शा. ललितकुमारजी-श्रीमती रंजनदेवी

## शाम की नवकारसी

शा. ललितकुमार, केतन, किरीट
बेटा-पोता
शा. नथमलजी अमीचन्दजी काश्यप गौत्र तूर परिवार
फर्म : मेसर्स ललितकुमार एण्ड सन्स्-मुम्बई

शा. भंवरलालजी-श्रीमती तारादेवी

## आँगी भक्ति-रोशनी

शा. भंवरलाल, पियुषकुमार, विहान
बेटा-पोता-पड़पोता शा. शिवलालजी हिमताजी
अम्बा गौत्र चौहान (त्रौंणी) परिवार
फर्म : शा भंवरलाल शिवलालजी-दावणगेरे (कर्नाटक)

शा. मेलापचंदजी-श्रीमती गीतादेवी

## द्वितीय दिवस

(दि. 12 फरवरी 2016), महासुद 5 शुक्रवार

## सुबह का नाश्ता

शा. मेपालचंद, दीपक, अक्षय, बेटा-पोता
शा. इन्दरमलजी ताराचन्दजी, गौत्र पंचौत्रा परमार परिवार
फर्म : मेसर्स-महालक्ष्मी इलेक्ट्रिकल्स-विशाखापट्टनम्

शा. बाबुलालजी-शा. गणेशमलजी

## सुबह की नवकारसी

शा. सचिनकुमार बेटा-पोता
शा. गणेशमलजी भीमाजी लाम्ब गौत्र चौहान परिवार
फर्म : मेसर्स बी.जे. ज्वेलर्स, विजयपुर (कर्नाटक)

शा. शांतिलालजी-शा. जवेरचंदजी

## श्री कल्याण मंदिर महापूजन

शा. दिनेशकुमार, स्व. जवेरचन्द, राहुलकुमार
बेटा-पोता शा. शांतिलालजी केशाजी
अम्बा गौत्र चौहान (त्रोणी) परिवार
फर्म : मेसर्स राहुल बेंकर्स-सामलकोट (आ.प्र.)

शा. पीरचंदजी-श्रीमती पातीदेवी

## शाम की नवकारसी

शा. संदीपकुमार, प्रदीपकुमार
हार्दिक, मानस बेटा-पोता
श्रीमती पवनीदेवी कांतिलालजी भण्डारी परिवार
फर्म : मेसर्स के.पी. एंटरप्राईजेस-गुण्टूर (आ.प्र.)

शा. हरकचंदजी-श्रीमती शांतिबाई

## आँगी भक्ति-रोशनी

शा. देवीचन्द, उत्तमचन्द, सुधीर, सुशील, श्रेयांश
बेटा-पोता-पडपोता शा. हरकचन्दजी भबुतमलजी
कश्यप गौत्र चौहान परिवार
फर्म : मेसर्स आदिनाथ ज्वेलरी, नेल्लोर-चैन्नई

शा. शंकरलालजी-श्रीमती होदीदेवी

## तृतीय दिवस

(दि. 13 फरवरी 2016), महासुद 6 शनिवार

### सुबह का नाश्ता

शा. अशोककुमार, कैलाशकुमार, पिन्टूकुमार, जैनम्
बेटा-पोता-पड़पोता शा. शंकरलालजी गोमाजी खांटेड संघवी परिवार
फर्म : मेसर्स-महालक्ष्मी मेचिंग सेन्टर-विजयवाड़ा (आ.प्र.)

शा. ओटमलजी-श्रीमती भाग्यवंतीदेवी

### सुबह की नवकारसी

शा. ओटमल, कांतिलाल, भवरलाल, मनोहर, सुभाष, कैलाश, दिलीप
हितेश, प्रीतम, मुकेश, तरुण, मुकुल, पुनीत, लक्की,
वसंत बेटा-पोता-पड़पोता-लड़पोता
शा. तोलाजी भेराजी खांटेड संघवी परिवार
फर्म : मेसर्स महावीर स्टेशनरी पॉईन्ट-वेलूर (तमिलनाडु)

शा. मिश्रीमलजी-श्रीमती बसीबाई

### श्री गौतमस्वामी महापूजन

शा. विशालकुमार, विजयकुमार, अरुणकुमार,
जश, दक्ष बेटा-पोता शा. बाबुलालजी मिश्रीमलजी
गोल गौत्र परिवार
फर्म : मेसर्स शा. वरदीचंद मिश्रीमल-गुडीवाडा (आ.प्र.)

शा. शंकरलालजी-श्रीमती होदीदेवी

### शाम की नवकारसी

शा. ललितकुमार, विक्रमकुमार, मुकेशकुमार, राकेशकुमार,
अंकुशकुमार, जील, संयम, कल्प, हीत बेटा-पोता-पड़पोता
शा. शंकरलालजी गोमाजी खांटेड संघवी परिवार
फर्म : मेसर्स लक्ष्मी विनायका साड़ी-विजयवाड़ा (आ.प्र.)

शा. फूलचंदजी-श्रीमती फालुदेवी

### आँगी भक्ति-रोशनी

शा. कैलाशचन्द, रितेशकुमार बेटा-पोता
शा. फूलचंदजी गोमाजी लाम्ब गौत्र चौहान परिवार
फर्म : शा. कैलाशचन्द प्रदीपकुमार-कडप्पा- (आ.प्र.)

शा. फूलचंदजी-श्रीमती वीजुबाई

## चतुर्थ दिवस

(दि. 14 फरवरी 2016), महासुद 7 रविवार

### सुबह का नाश्ता

शा. दिनेशकुमार, राजेन्द्रकुमार, अमितकुमार बेटा-पोता
शा. फूलचन्दजी केशाजी
अम्बा गौत्र चौहान (त्रौणी) परिवार
फर्म : मेसर्स श्री अम्बिका फेशन ज्वेल्स-नेल्लोर (आ. प्र.)

शा. विमलचंदजी-श्रीमती पुष्पाबाई

### सुबह की नवकारसी

शा. संघवी विमलचंद, हितेषकुमार, गौरवकुमार,
शौर्य बेटा-पोता-पड़पोता
शा. संघवी भुरमलजी पूनमचंदजी
अम्बा गौत्र चौहान (त्रौणी) परिवार
फर्म : शाह नरसिंगजी विमलचंद-मुंबई

शा. वीरचंदजी-श्रीमती फालुबाई

### श्री राजेन्द्रसूरि गुरुपद महापूजन

शा. वीरचंद, जयंतीलाल, सुरेशकुमार, गजेन्द्रकुमार, राजेशकुमार,
डॉ. दिलीपकुमार, डॉ. मनीषकुमार, रिषभ, रक्षांत बेटा-पोता-पड़पोता
शा. मगराजजी नरसिंगजी, गौत्र श्री श्री वंश परमार परिवार
फर्म : शा. धनराज रूपचंद, कड़प्पा-नेल्लोर-चैन्नई

शा. भूरमलजी-श्रीमती शांतिबाई

## शाम की नवकारसी

शा. संघवी शैलेषकुमार, अक्षित, आर्य बेटा-पोता
संघवी भूरमलजी पुनमचंदजी, अम्बा गौत्र चौहान (त्रौणी) परिवार
फर्म : मेसर्स स्टार एशिया-न्यूयार्क (यू.एस.ए.)

शा. अनिलकुमारजी-श्रीमती हेमलतादेवी

## आँगी भक्ति-रोशनी

शा. अनिलकुमार, आशिषकुमार
बेटा-पोता शा. प्रतापचन्दजी छतराजी
अम्बा गौत्र थार परमार परिवार
फर्म : मेसर्स : अनिल बैन्कर्स-सामलकोट (आ.प्र.)

शा. बाबुलालजी-श्रीमती शांतिदेवी

## पंचम दिवस

(दि. 15 फरवरी 2016), महासुद 8 सोमवार

## सुबह का नाश्ता

शा. बाबूलाल, अशोककुमार, ललितकुमार, राजीवकुमार (संदीप)
विजय, आशीष, राहुल बेटा-पोता-पड़पोता
शा. सांकलचंदजी देवराजजी अम्बा गौत्र चौहान (त्रौणी) परिवार
फर्म : मेसर्स शान्ति इलेक्ट्रिकल्स-विशाखापट्टनम (आ. प्र.)

शा. गणेशमलजी-श्रीमती सरोजदेवी

## सुबह की नवकारसी

शा. गणेशमल, अमीतकुमार, सुमीत कुमार, देवेन्द्रकुमार
शुभम, संकेत, सम्यक, बेटा-पोता-पड़पोता
शा. रायचंदजी रतनचंदजी लाम्ब गौत्र चौहान परिवार
फर्म : मेसर्स सुमित फायनेन्स-चैन्नई

शा. दिलीपकुमारजी-श्रीमती संगीतादेवी

## श्री नमिऊंण महापूजन

शा. बाबुलाल कैलाशकुमार, राजेन्द्रकुमार, दिलीपकुमार
दिनेश, संदीप, कार्तिक, सिद्धांत, रायान, दक्ष बेटा-पोता-पड़पोता-लड़पोता
सौभागमलजी पूनमचंदजी लाम्ब गौत्र, चौहान परिवार
फर्म : मेसर्स संगम गोल्ड-नेल्लोर (आ.प्र.)

शा. पारसमलजी-श्रीमती सुमित्रादेवी

## शाम की नवकारसी

शा. महेन्द्रकुमार, ललितकुमार बेटा-पोता
शा. ओटमलजी साकलचंदजी पंचाण गौत्र चौहान परिवार
फर्म : मेसर्स शंखेश्वर ज्वेलर्स-मुम्बई

शा. पारसमलजी-श्रीमती सुमित्रादेवी

## आँगी भक्ति-रोशनी

शा. पारसमल, लीलेशकुमार, ललितकुमार
बेटा-पोता शा. भबुतमलजी कपुरचंदजी
अम्बा गौत्र चौहान (त्रौणी) परिवार
फर्म : मेसर्स : अम्बिका गिफ्ट सेन्टर-विजयपुर (कर्नाटक)

शा. गणेशमलजी-श्रीमती विमलाबाई

## षष्ठम दिवस

(दि. 16 फरवरी 2016), महासुद 9 मंगलवार

### सुबह का नाश्ता

शा. गणेशमल, किरतेन्द्रकुमार, हसमुखकुमार, अनुषकुमार
बेटा-पोता-पड़पोता, शा. सांकलचंदजी हंसाजी लाम्ब गौत्र चौहान परिवार
फर्म : मेसर्स एन.सी. एण्टरप्राईज-मुम्बई

## सुबह की नवकारसी

शा. बाबुलाल, राजेन्द्रकुमार, भंवरलाल,
सुजीतकुमार, आलोक, आकाश
विशाल, कुनाल, यतीन, बेटा-पोता-पड़पोता
शा. तीकमचंदजी गेनाजी लाम्ब गौत्र चौहान परिवार
फर्म : मेसर्स श्री राज ज्वेलर्स-काकीनाड़ा (आ.प्र.)

शा. बाबुलालजी-श्रीमती बसन्तीबाई

## श्री सिद्धचक्र महापूजन

शा. विमलकुमार, अजितकुमार, आनंदकुमार, कल्याणचन्द,
निलेश, निलकेश, राहुल, नीतीश, अभिनव, अलकेश, सौरभ,
क्रिश, स्वयं, दिव्यांश, मोक्षित,हितांश, प्रणव, हृदयांश बेटा-पोता-पड़पोता
शा. नथमलजी खुमाजी पंचाण गौत्र चौहान परिवार
फर्म : मेसर्स जे.एम.ज्वेलर्स, राजमहेन्द्री-सिकन्दराबाद

शा. आनंदकुमारजी-श्रीमती संगीता

## शाम की नवकारसी

शा. भूरमल, कीर्तिकुमार, समरेश एवं पल्लव, बेटा-पोता-पड़पोता
शा. गोमराजजी लखमाजी गौत्र बावलेछा चौहान परिवार
फर्म : मेसर्स मॉडर्न इक्विपमेंट कंपनी-नवी मुम्बई

शा. गोमराजजी-श्रीमती देवीबाई

## आँगी भक्ति-रोशनी

शा. अशोककुमार बेटा-पोता
शा. रतनचन्दजी मंछाजी
पंचाण गौत्र चौहान परिवार
फर्म : मेसर्स शा. रतनचंद अशोककुमार-एलूरू (आ. प्र.)

शा. रतनचंदजी-श्रीमती पार्वतीदेवी

## सप्तम दिवस

(दि. 17 फरवरी 2016), महासुद 10 बुधवार

शा. हजारीमलजी-श्रीमती मोहिनीदेवी

### सुबह का नाश्ता

शा. हजारीमल, अतुलकुमार, विनीतकुमार, रोहन,
आयुष, आर्यन बेटा-पोता-पड़पोता
शा. फूलचंदजी छोगाजी अम्बा गौत्र चौहान (त्रौणी) परिवार
फर्म : मेसर्स स्वस्तिक प्लास्टलाईट प्रोडक्टस्-चेन्नई

शा. रायचंदजी-श्रीमती अमरतीदेवी

### सुबह की नवकारसी

शा. नरेन्द्रकुमार, अरिहन्तकुमार बेटा-पोता
शा. रायचंदजी, रतनचंदजी
लाम्ब गौत्र चौहान परिवार
फर्म : मेसर्स नरेन्द्र पोरवाल, चैन्नई

शा. मांगीलालजी-श्रीमती कमलादेवी

### श्री 108 पार्श्वनाथ महापूजन

शा. मांगीलाल, अरुणकुमार, दिपेश, विरल
बेटा-पोता-पड़पोता
शा. हीराचंदजी चेनाजी
पंचोत्रा परमार गौत्र परिवार
फर्म : मेसर्स शा. मॉंगीलाल पोरवाल-काकीनाड़ा (आ. प्र.)

शा. मीठालालजी-श्रीमती शान्तिबाई

### शाम की नवकारसी

शा. मीठालाल, विमलकुमार, आशीषकुमार,
आयुषकुमार, बेटा-पोता-पड़पोता
शा. वेजराजजी दलीचंदजी पंचाण गौत्र चौहान परिवार
फर्म : मेसर्स निरमान फाइनेन्स एण्ड इन्वेस्टमेन्ट कंपनी-चैन्नई

शा. संघवी घेवरचन्दजी-श्रीमती संघवीबाई

### आँगी-भक्ति-रोशनी

शा. संघवी घेवरचन्द, विनोदकुमार, प्रवीणकुमार बेटा-पोता-पड़पोता
शा. संघवी किशनलालजी फुसाजी खांटेड़ संघवी परिवार
फर्म : मेसर्स अरिहंत प्रीमियर डोर - विजयवाड़ा (आ. प्र.)

शा. जीतेन्द्रजी-श्रीमती प्रतिमा

## अष्टम दिवस

(दि. 18 फरवरी 2016), महासुद 11 गुरुवार

### सुबह का नाश्ता

शा. जीतेन्द्रकुमार, राजू बेटा-पोता
शा. प्रतापचंदजी समनाजी बीलोसा वोरा गौत्र परिवार
फर्म : मेसर्स प्रतापचंद नरेन्द्रकुमार पोरवाल, विजयपुर (कर्नाटक)

शा. हंजारीमलजी-श्रीमती कांतीबाई

### सुबह की नवकारसी

शा. नरेन्द्रकुमार, अंकुशकुमार बेटा-पोता
शा. हंजारीमलजी, चुन्नीलालजी लाम्ब गौत्र चौहान परिवार
फर्म : मेसर्स शिव शक्ति ज्वेलर्स, नेल्लोर (आ. प्र.)

शा. गणेशमलजी-श्रीमती हुलासीबाई

### श्री महावीरस्वामी पंचकल्याणक पूजा

शा. कैलाशचन्द, मनोहरलाल, जीवनलाल, सुशीलकुमार, अमितकुमार,
शिरिषकुमार, सुमित, अतीष, विवेक, निवेष, अर्पण, ईषान,
दीपक, अंश, विवान
बेटा-पोता-पड़पोता श्रीमती हुलासीबाई गणेशमलजी
अम्बा गौत्र चौहान (त्रौणी) परिवार
फर्म : मेसर्स जीवन बेंकर्स-नरसापुर (आ. प्र.)

शा. नवीनकुमारजी-श्रीमती श्यामलता

## शाम की नवकारसी

शा. नवीनकुमार, विनयकुमार, आकाशकुमार, बेटा-पोता-पड़पोता
शा.हंजारीमलजी लाम्ब गौत्र चौहान परिवार
फर्म : मेसर्स धनलक्ष्मी गोल्ड हाऊस-गुन्टूर (आ. प्र.)

शा. आनंदप्रकाशजी-श्रीमती नीतादेवी

## आँगी-भक्ति-रोशनी

शा. आनंदप्रकाश, जितेन्द्रकुमार, अंकितकुमार बेटा-पोता
शा. छगनलालजी ताराचन्दजी
काश्यप गौत्र चौहान परिवार
फर्म : शा. कांतीलाल आनंदप्रकाश-काकीनाड़ा (आ. प्र.)

शा. भूरमलजी-श्रीमती सुन्दरदेवी

## नवम दिवस

(दि. 19 फरवरी 2016), महासुद 12 शुक्रवार

## सुबह का नाश्ता

शा. भूरमल, डॉ. हेमन्तकुमार, रवीन्द्रकुमार
आदित्य, रचितकुमार बेटा-पोता-पड़पोता
शा. हंजारीमलजी छोगमलजी अम्बा गौत्र धार परमार परिवार
फर्म : मेसर्स ओम शान्ति गुरुदेव मेडिकल्स एण्ड लेबोरेटरीज्-जालोर (राज.)

शा. वगतावरमलजी-श्रीमती सुखीदेवी

## सुबह की नवकारसी

शा. चम्पालाल, अशोककुमार, राजेशकुमार, कुमारपाल
श्रीपाल, विशाल, चेतन, मयूर, योगेश बेटा-पोता
शा. वगतावरमलजी केवलचन्दजी भंडारी परिवार
फर्म : मेसर्स बी. एम. स्पाइस् कम्पनी (प्रा.) लिमिटेड-गुण्टूर (आ. प्र.)

शा. नथमलजी-श्रीमती मुल्कीबाई

## श्री अठारह अभिषेक पूजन

शा. विमलकुमार, अजितकुमार, आनंदकुमार, कल्याणचन्द, निलेश, निकलेश, राहुल, नीतीश, अभिनव, अलकेश, सौरभ, क्रिश, स्वयं दिव्यांश, मोक्षित, हितांश, प्रणव, हृदयांश बेटा-पोता-पड़पोता
शा. नथमलजी खुमाजी पंचाण गौत्र चौहान परिवार
फर्म : मेसर्स जय राजेन्द्र ज्वेलर्स, नरसापुर-सिकन्द्राबाद

शा. छगनलालजी-श्रीमती नीमाबाई

## शाम की नवकारसी

शा. शैलेषकुमार, मनीषकुमार, आकाश, अनीष, रोनीष, बेटा-पोता
शा. छगनलालजी लालचंदजी अम्बा गौत्र चौहान (त्रौणी) परिवार
फर्म : मेसर्स पोरवाल इण्टरप्राईजेस-सोलापुर (महा.)

शा. देशमलजी-श्रीमती विजोडीदेवी

## आँगी-भक्ति-रोशनी

शा. विजेशकुमार, महेन्द्रकुमार, देव, धीर, बेटा-पोता
शा. देशमलजी केवलचंदजी भंडारी परिवार
फर्म : मेसर्स भंडारी ब्रदर्स-गुण्टूर (आ. प्र.)

## दशम दिवस (दि. 20 फरवरी 2016), महासुद 13 शनिवार

आज मारा देशसरमां मोतीडे मेह वरस्यो रे

ॐ पुण्याहं....पुण्याहं.....
प्रियंताम्..... प्रियंताम् के भव्य नाद से पूज्य गच्छाधिपतिश्री, विशाल श्रमण-श्रमणी वृंद
श्री चतुर्विध संघ की विशाल जनमैदनी की उपस्थिति में
श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनालय पर शताब्दी ध्वजारोहण,
हेलीकॉप्टर द्वारा जिनालय पर पुष्पवृष्टि एवं धर्मसभा, विजय मुहूर्त श्री 108 शान्ति स्नात्र महापूजन

: अमर ध्वजा के लाभार्थी :

श्रीमान शा. कसनाजी जेठाजी माण्डवला गौत्र परिवार

शा. विमलकुमारजी-श्रीमती शशिकला

## शाही करबा

शा. विमलकुमार, अजितकुमार, आनंदकुमार, कल्याणचन्द, निलेश, निलकेश, राहुल, नीतीश, अभिनव, अलकेश, सौरभ, क्रिश, स्वयं, दिव्यांश, मोक्षित, हितांश, प्रणव, हृदयांश, बेटा-पोटा-पड़पोता
शा. नथमलजी खुमाजी पंचाण गौत्र चौहान परिवार
फर्म : मेसर्स जय राजेन्द्र ज्वेल पेलेस, नरसापुर-हैदराबाद

शा. मांगीलालजी-श्रीमती शांतिबाई

## श्री 108 बृहद् शान्ति स्नात्र महापूजन

मांगीलाल, अशोककुमार, ललितकुमार, प्रवीणकुमार, बिपिनकुमार, राकेश, रितेश, प्रीतम, शरत, ईशान, सुजल, जस्न बेटा-पोता-पड़पोता-लड़पोता
शा. भबूतमलजी हीराजी पंचाण गौत्र चौहान परिवार
फर्म : मेसर्स प्रवीण पोरवाल, कड़प्पा-विशाखपट्टनम्-सिकन्दराबाद

शा. पुखराजजी-श्रीमती सुबटीबाई

## आँगी-भक्ति-रोशनी

शा. पुखराज, चम्पालाल, किशोरकुमार, रंजीत, अनूप, अमर, रोनक, रोनीत बेटा-पोता-पड़पोता
शा. वरदीचन्दजी पुनमाजी माण्डवला गौत्र परिवार
फर्म : मेसर्स वरदीचन्द चम्पालाल, पेद्दापुरम (आ. प्र.)

**विधि-विधानों के प्रयोजन-** *जैन परम्परा में प्रायः अनुष्ठान और आत्मिक आराधनाएँ विधि-विधान युक्त ही सम्पन्न होती हैं चाहे वे विधि-विधान में हों या विस्तृत रूप में हों। ये विधि-विधान किन उद्देश्यों को लेकर किये जाते हैं? इस विषय पर गहराई से चिन्तन किया जाय तो निम्नोक्त बिन्दु परिलक्षित होते हैं -*

* *जैसे कि धार्मिक क्रियानुष्ठानों के द्वारा पाप प्रवृत्तियाँ कम होती हैं. धीरे-धीरे वे दुष्कर्म निरुद्ध हो जाते हैं और आत्मा-परमात्मा बन जाती है।*
* *धार्मिक क्रियाकलापों के माध्यम से मानव-जीवन का अमूल्य समय सार्थक बनता है. नये पाप कर्मों का संवर होता है और पुराने पापकर्म निर्जरित हो जाते हैं।*
* *इन शुभ आराधनाओं से मानसिक विकार दूर होते हैं। विषय-वासना, कषाय-कामना आदि के भाव मन्दतर होते चले जाते हैं और क्रमशः संसारी आत्मा मुक्तात्मा की दिशा में प्रयाण कर लेती है।*
* *इससे शरीर, मन और आत्मा तीनों ही निर्मल बनते हैं।*

# बड़ी नवकारशी के लाभार्थी

श्री संघ साधर्मिक भक्ति... श्री संघ का मुह मीठा करवाना...
मधुर लापसी बनाकर... हम कृतज्ञ हो गये...हम तो धन्य हो गये....
हम तो खुश हो गये.... क्योंकि श्री संघ में ही अरिहंत-सिद्ध-गणधर,
कई भव्य आत्माएं समाये हुये...

स्व. शा हिराचंदजी

स्व. श्रीमती जडावीबाई

शा. हीराचंदजी, श्रीमती जडावीबाई, शा. मांगीलाल, सम्पतराज, मेलापचंद
सुरेशकुमार, राकेशकुमार, अरुणकुमार, सुशीलकुमार, अमितकुमार, श्रेणीककुमार,
अभिषेककुमार, दीपेश, विरल, क्रिश, आर्यन, आरव, प्रियान तनिष बेटा-पोता-पड़पोता

**शा. हीराचंदजी चेनाजी गौत्र पंचोत्रा परमार परिवार**

मेसर्स अरिहन्त इन्टरप्राईज-चैन्नई

शा. मिश्रीमलजी-श्रीमती सुकीबाई

## एकादश दिवस

(दि. 21 फरवरी 2016), महासुद 14 रविवार

### द्वार उद्‌घाटन

शा. अशोककुमार, बाबुलाल, मेलापचंद, शांतीलाल,
दिनेशकुमार, जयेशकुमार, राहुलकुमार, जयनिश, खुश, मनीष,
लक्ष, पीयू बेटा-पोता, शा. मिश्रीमलजी ऊकाजी, भंडारी परिवार
फर्म : मेसर्स महावीर एण्ड महावीर (ए.एल.पी. ग्रुप), चैन्नई-बेंगलोर-अहमदाबाद

शा. सुरेशकुमारजी-श्रीमती विद्यादेवी

### सुबह का नाश्ता

शा. सुरेशकुमार श्रेणिककुमार, अभिषेककुमार, तनिषकुमार
बेटा-पोता-पड़पोता
शा. हीराचंदजी चेनाजी गौत्र पंचोत्रा परमार परिवार
फर्म : मेसर्स श्री राजेन्द्रा गोल्ड, मुंबई-विशाखपट्टनम्

शा. मूलचंदजी-श्रीमती चंद्रावतीदेवी

### सुबह की नवकारसी

शा. सुरेन्द्रकुमार, शैलेषकुमार, शुभम, शशांक, भाविक बेटा-पोता
शा. मूलचंदजी रूपाजी पंचाण गौत्र चौहान परिवार
फर्म : मेसर्स सुरेन्द्र पोरवाल, कडप्पा-सिकन्दराबाद

शा. मगराजजी-श्रीमती बबलीबाई

### श्री सत्तरभेदी पूजा

शा. मगराजजी श्रीमती बबलीबाई
शा. भूरमल, विकास, विशाल, अमित, सुमित,
आर्यन बेटा-पोता-पड़पोता
शा. मगराजजी मंछालालजी पंचोत्रा परमार गौत्र परिवार
फर्म : मेसर्स आशीष इलेक्ट्रोनिक्स, विजयवाडा-विशाखापट्टनम

शा. वीरचंदजी-श्रीमती जतनाबाई

### शाम की नवकारसी

शा. उत्तमचंद, राजेन्द्रकुमार, विकासकुमार, अनूपकुमार, अतुलकुमार
कल्पेश, धर्मेश, मिलिन, चीयर, अरमान, प्रथम बेटा-पोता-पड़पोता
शा. वीरचंदजी कपूरचंदजी अम्बा गौत्र परमार परिवार
फर्म : सेठ वीरचंद उत्तमचंद बैंकर्स-एलुरू (आ.प्र.)

शा. इंद्रमलजी-श्रीमती भूरीबाई

### आँगी-भक्ति-रोशनी

शा. इन्द्रमल, सुखराज, स्व. अम्बालाल, संपतराज,
राजेन्द्रकुमार, प्रकाशचन्द्र, देवेन्द्रकुमार, विमल, संजीव,
विकास, विशाल, प्रिन्स, रिंकेश,
राजेन्द्र पी., लक्ष बेटा-पोता-पड़पोता-लड़पोता
शा. खुमाजी जेठाजी माण्डवला गौत्र परिवार
फर्म : शा. इन्द्रमलजी खुमाजी-पेद्दापुरम (आ. प्र.)

# उत्सव भारतीय संस्कृति का परिचायक है

– (डॉ. अनोखीलाल कोठारी)

भारतीय संस्कृति में उत्सवों का विशेष महत्व है। उत्सव मानव जीवन में अच्छे संस्कारों का समावेश है। हमारे समाज में उत्सव खुशियों की सौगात के संवाहक माने जाते हैं। हर उत्सव हमें खुशियों की सौगात के साथ-साथ मर्यादित आचरण व संयमित जीवन की शिक्षा देता है। साथ ही यह उत्सव एक-दूसरे का सुख-दुःख जानने व बांटने और प्यार-मोहब्बत बढ़ाने का माध्यम होते हैं।

उत्सव ही मनुष्य के जीवन में आने वाली अनेक विपदाओं को झेलते हुए असामान्य परिस्थितियों में भी अनवरत संघर्ष करते हुए, नित नये उत्साह एवं ऊर्जा द्वारा जीवन के मार्ग पर निरन्तर साहस के साथ आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा प्रदान करते हैं । उत्सवों के अवसर पर ही दूर दराज के लोग अपने अन्य परिवारजनों के बीच आकर इष्ट मित्रों सहित आनन्द मनाते हैं। आपस में एक दूसरे को कहते सुनते हैं। इस प्रकार उनके मन की पीड़ा का बोझ हलका हो जाता है और जीवन में नई ऊर्जा का संचार होता है ।

उत्सव, जहां लोगों को आपसी प्यार सौहार्द एवं प्यार प्रदान करते हैं वहीं उनके बीच आयी कटुता एवं सम्बन्धों पर जमी धूल की पर्त को भी हटाने का कार्य करते हैं। इस प्रकार उत्सव जीवन को रसमय बना देते हैं।

# जय जिनेन्द्र के लाभार्थी

स्व. शा. शंकरलालजी

स्व. श्रीमती श्रृंगारीबाई

समाजरत्न, बागरारत्न शा. मोहनलाल
शीतल, शिरीन, चिंतन, नमन, काव्य बेटा-पोता-पड़पोता

**शा. शंकरलालजी मगाजी अंबा गौत्र चौहान (त्रौणी) परिवार**

# ध्वजा के चढ़ावों के लाभार्थी

| | | |
|---|---|---|
| 1. | श्री ऋषभदेवजी | शा. वकतावरमलजी केवलचंदजी भंडारी |
| 2. | श्री अजीतनाथजी | शा. बाबुलालजी प्रतापचन्दजी |
| 3. | श्री संभवनाथजी | शा. सुखराजजी प्रतापचन्दजी चमनाजी परिवार |
| 4. | श्री अभिनंदन स्वामीजी | शा. कांतिलालजी कशनाजी संघवी |
| 5. | श्री सुमिधिनाथजी | शा. बाबुलालजी भीमाजी |
| 6. | श्री पद्मप्रभु स्वामीजी | शा. नथमलजी खुमाजी |
| 7. | श्री सुपार्श्वनाथजी | शा. संघवी प्रकाशचंदजी छगनलालजी |
| 8. | श्री चंद्रप्रभुस्वामीजी | शा. रतनचन्दजी फूलचन्दजी |
| 9. | श्री सुविधिनाथजी | शा. बाबुलालजी नीकमचन्दजी |
| 10. | श्री शीतलनाथजी | शा. मांगीलालजी नथमलजी दलाजी |
| 11. | श्री श्रेयांसनाथजी | शा. भूरमलजी भबूतमलजी |
| 12. | श्री वासुपूज्य स्वामीजी | शा. उत्तमचन्दजी वीरचन्दजी |
| 13. | श्री विमलनाथजी | शा. जवाहरलालजी चुन्नीलालजी |
| 14. | श्री अनंतनाथजी | शा. पुखराज ताराचन्दजी |
| 15. | श्री धर्मनाथजी | शा. मिलापचन्दजी हीराचन्दजी |
| 16. | श्री शांतीनाथजी | शा. धानमलजी स्वरूपचंदजी |
| 17. | श्री कुंथुनाथजी | शा. आनंद प्रकाशजी छगनलालजी |
| 18. | श्री अरनाथजी | शा. सुरेशकुमारजी हीराचन्दजी |
| 19. | श्री मल्लिनाथजी | शा. प्रकाशचन्दजी हिम्मतमलजी |
| 20. | श्री मुनिसुव्रतस्वामी | शा. संघवी जयन्तीलालजी छगनलालजी |
| 21. | श्री नमिनाथजी | शा. ओटमलजी जयरूपचंदजी |
| 22. | श्री नेमिनाथजी | शा. रविन्द्रकुमारजी चुन्नीलालजी |
| 23. | श्री महावीर स्वामीजी | शा. नथमलजी खुमाजी |
| 24. | श्री गौतमस्वामीजी | शा. पारसमलजी फूलचन्दजी प्रेमाजी |
| 25. | श्री सरस्वती देवी | शा. मोहनलालजी रतनचंदजी |

# महाशतकोत्सव के स्वर्ण-स्तम्भ

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | शा. अंबालालजी मूलचंदजी | श्री श्री वंश परमार | सामलकोट |
| 2. | शा. भूरमलजी भबूतमलजी | पंचाण गौत्र चौहान | विजयपुर |
| 3. | शा. अंबालालजी नथमलजी | काश्यप-तुर | राजमहेन्द्री |
| 4. | शा. वस्तीमलजी वजींगजी | बालर | विजयवाड़ा |
| 5. | शा. चम्पालालजी हिम्मतमलजी | पंचाण गौत्र चौहान | राजमहेन्द्रजी |
| 6. | शा. सुखराजजी ताराचंदजी | लाम्ब गौत्र चौहान | कड़पा |
| 7. | शा. दिनेशकुमारजी सुखराजजी | लाम्ब गौत्र चौहान | कड़पा |
| 8. | शा. प्रकाशचन्दजी सुखराजजी | लाम्ब गौत्र चौहान | कड़पा |
| 9. | शा. प्रदीपकुमारजी सुखराजजी | लाम्ब गौत्र चौहान | कड़पा |
| 10. | शा. भरतकुमारजी सुखराजजी | लाम्ब गौत्र चौहान | कड़पा |
| 11. | शा. सुजीतकुमारजी सुखराजजी | लाम्ब गौत्र चौहान | कड़पा |
| 12. | शा. भवरलालजी जेरूपचन्दजी | पंचाण गौत्र चौहान | विशाखापटनम |
| 13. | शा. उत्तमचन्दजी ओटमलजी | अंबा गौत्र चौहान (त्रौणी) | चैन्नई |
| 14. | शा. अशोककुमारजी फूलचन्दजी | लाम्ब गौत्र चौहान | कड़पा |
| 15. | शा. हीराचन्दजी फूलचन्दजी | श्री श्री वंश परमार | हैदराबाद |
| 16. | शा. मदनलालजी वरदीचन्दजी | बीलोसा वोरा | विजयपुर |
| 17. | शा. जितेन्द्रकुमारजी पूनमचन्दजी | पंचाण गौत्र चौहान | राजमहेन्द्रजी |
| 18. | शा. भँवरलालजी पूनमचंदजी | खीवेसरा | विजयवाड़ा |
| 19. | शा. रविन्द्रकुमारजी चुन्नीलालजी | कश्यप चौहान | विजयपुर |
| 20. | शा. मांगीलालजी भीकमचन्दजी | लाम्ब गौत्र चौहान | मुमडीवरम् |
| 21. | शा. शांतीलालजी भीकमचन्दजी | लाम्ब गौत्र चौहान | भीमावरम् |
| 22. | शा. भँवरलालजी भीकमचन्दजी | लाम्ब गौत्र चौहान | राजमहेन्द्री |
| 23. | शा. जितेन्द्रकुमारजी जेठमलजी | अग्नि गौत्र परमार | मुंबई |
| 24. | शा. प्रकाशचन्दजी ताराचन्दजी | पंचाण गौत्र चौहान | ताड़पत्री |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 25. | शा. देवीचन्दजी जेठमलजी | अग्नि गौत्र परमार | एलुर |
| 26. | शा. भँवरलालजी जोमतराजजी | कांकरीया | कोयम्बतूर |
| 27. | शा. सरेमलजी शंकरलालजी | अंबा गौत्र चौहान (त्रौणी) | मुम्मडीवरम् |
| 28. | शा. संजयकुमारजी सरेमलजी | अंबा गौत्र चौहान (त्रौणी) | मुम्मडीवरम् |
| 29. | शा. चन्दनमलजी पेराजमलजी | अंबा गौत्र चौहान (त्रौणी) | चैन्नई |
| 30. | शा. बाबूलालजी सांकलचन्दजी (तीकमाजी) | गोल गौत्र परमार | एलुर |
| 31. | शा. राजेन्द्रकुमारजी पुखराजजी | अंबा गौत्र चौहान (त्रौणी) | काकीनाड़ा |
| 32. | शा. दिनेशकुमारजी जुहारमलजी | अंबा गौत्र चौहान (त्रौणी) | काकीनाड़ा |
| 33. | शा. कैलाशचन्दजी देवीचन्दजी | लाम्ब गौत्र चौहान | काकीनाड़ा |
| 34. | शा. जवेरचन्दजी खीमचन्दजी | अंबा गौत्र चौहान (त्रौणी) | राजमहेन्द्री |
| 35. | शा. अशोककुमारजी फूलचन्दजी (केसाजी) | अंबा गौत्र चौहान (त्रौणी) | नेल्लौर |
| 36. | शा. पुखराजजी पूनमचन्दजी | श्री श्री श्रीमाल अग्नि गौत्र | चैन्नई |
| 37. | शा. शांतीलालजी रूपाजी | कश्यप चौहान | विजयपुर |
| 38. | शा. मोहनलालजी मूलचन्दजी | कश्यप चौहान | विजयपुर |
| 39. | शा. अमृतलालजी शांतिलालजी | मांजवला चौहान | चैन्नई |
| 40. | शा. विजयराजजी हजारीमलजी | भंडारी | रानी बेन्नुर |
| 41. | शा. संपतराजजी सरूपचन्दजी | लाम्ब गौत्र चौहान | सामलकोट |
| 42. | संघवी संपतराजजी छगनलालजी | अंबा गौत्र चौहान (त्रौणी) | मुंबई |
| 43. | संघवी जयंतिलालजी छगनलालजी | अंबा गौत्र चौहान (त्रौणी) | मुंबई |
| 44. | संघवी प्रकाशचन्दजी छगनलालजी | अंबा गौत्र चौहान (त्रौणी) | मुंबई |
| 45. | संघवी अशोककुमारजी छगनलालजी | अंबा गौत्र चौहान (त्रौणी) | मुंबई |
| 46. | शा. भँवरलालजी इन्द्रमलजी | श्री श्री वंश परमार | चैन्नई |
| 47. | शा. प्रकाशचन्दजी हिम्मतमलजी | काश्यप चौहान | मुंबई |
| 48. | शा. श्रीपालचन्दजी इन्द्रमलजी | श्री श्री वंश परमार | चैन्नई |
| 49. | शा. बाबूलालजी रूपाजी | कश्यप चौहान | विजयपुर |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 50. | संघवी रमेशकुमारजी शंकरलालजी | खाटेड | विजयवाडा |
| 51. | शा. मनीषकुमारजी सुखराजजी | पंचाण गौत्र चौहान | नरसापुर |
| 52. | शा. छगनलालजी हस्तीमलजी | डीन्डोईसा परमार | मुम्बई |
| 53. | शा. छगनलालजी पूनमाजी | कांकरीया | गुंटूर |
| 54. | शा. ओटमलजी भगवानजी | कश्यप चौहान | काकीनाड़ा |
| 55. | शा. थानमलजी सरूपचन्दजी | गोल गौत्र | काकीनाड़ा |
| 56. | शा. तीकमचन्दजी गुलाबचन्दजी | अग्नि गौत्र परमार | मुंबई |
| 57. | शा. मदनलालजी वस्तीमलजी | अंबा गौत्र चौहान (त्रौणी) | कांकीनाड़ा |
| 58. | शा. पूनमचन्दजी गुलाबचन्दजी | अग्नि गौत्र परमार | मुंबई |
| 59. | शा. दिनेशकुमारजी शिवराजजी | अंबा गौत्र चौहान (त्रौणी) | गुंटूर |
| 60. | शा. बाबूलालजी शिवराजजी | अंबा गौत्र चौहान (त्रौणी) | गुंटूर |
| 61. | शा. अमरीशकुमारजी तीकमचन्दजी | अग्नि गौत्र परमार | मुम्बई |
| 62. | शा. बाबूलालजी पूनमचन्दजी | कांकरिया | गुंटूर |
| 63. | शा. रतनचन्दजी सरेमलजी | लाम्ब गौत्र चौहान | मुम्बई |
| 64. | शा. आनंदकुमारजी शांतिलालजी | कश्यप चौहान | मुम्बई |
| 65. | शा. कांतिलालजी केसरीमलजी | लाम्ब गौत्र चौहान | बागरा |
| 66. | शा. अंकितकुमारजी हीराचन्दजी | अंबा गौत्र चौहान (त्रौणी) | राजमहेन्द्री |
| 67. | शा. मांगीलालजी लखमीचन्दजी | भंडारी | मुम्बई |
| 68. | शा. चंपालालजी ओटमलजी | पंचाण गौत्र चौहान | नरसापुर |
| 69. | शा. दिनेशकुमारजी भबूतमलजी | साकरिया गौत्र | काकीनाड़ा |
| 70. | शा. सुखराजजी मियाचन्दजी | पंचोत्रा परमार | राजमहेन्द्री |
| 71. | शा. पुखराजजी नथमलजी | पंचाण गौत्र चौहान | नरसापुर |
| 72. | शा. कांतिलालजी देवीचन्दजी | लाम्ब गौत्र चौहान | गुंटूर |
| 73. | शा. प्रकाशचन्दजी वालचन्दजी | कुंडल गौत्र चौहान | पिठापुरम् |
| 74. | शा. भूरमलजी नथमलजी | पंचाण गौत्र चौहान | अहमदाबाद |
| 75. | शा. भीकमचन्दजी पूनमचन्दजी | अंबा गौत्र चौहान (त्रोणी) | विजयपुर |
| 76. | शा. रमेशकुमारजी जवानमलजी | लाम्ब गौत्र चौहान | विशाखपटनम् |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 77. | शा. मगनलालजी सांकलचन्दजी | श्री श्री श्रीमाल अग्नि गौत्र | चैन्नई |
| 78. | शा. दिलीपकुमारजी प्रतापचन्दजी | पंचाण गौत्र चौहान | विजयपुर |
| 79. | शा. अजीतकुमारजी शांतिलालजी | मांडवला चौहान | विजयपुर |
| 80. | शा. बाबूलालजी प्रतापचन्दजी | पंचाण गौत्र चौहान | विजयपुर |
| 81. | शा. संपतमलजी नवलमलजी | श्री श्री वंश परमार | चैन्नई |
| 82. | शा. राजेन्द्रकुमारजी रिखबचन्दजी | पंचाण गौत्र चौहान | विजयपुर |
| 83. | संघवी कांतिलालजी किशनाजी | खाटेड | अहमदाबाद |
| 84. | शा. धरणेन्द्रकुमारजी जवानमलजी (राजा) | लाम्ब गौत्र चौहान | विशाखापटनम् |
| 85. | शा. रतनचन्दजी फूलचन्दजी | अंबा गौत्र चौहान (त्रौणी) | एलूर |
| 86. | शा. प्रकाशकुमारजी बाबूलालजी | लाम्ब गौत्र चौहान | विशाखपटनम् |
| 87. | शा. पुखराजजी बाबूलालजी | लाम्ब गौत्र चौहान | अमलापुरम् |
| 88. | शा. प्रीतमकुमारजी बाबूलालजी | लाम्ब गौत्र चौहान | मुम्बई |
| 89. | शा. शांतिचन्द्रजी हंजारीमलजी | भंडारी | चैन्नई |
| 90. | शा. प्रसादकुमारजी मूलचन्दजी | पंचाण गौत्र चौहान | चैन्नई |
| 91. | शा. राजेन्द्रकुमारजी सरेमलजी | लाम्ब गौत्र चौहान | नरसापुर |
| 92. | शा. भँवरलालजी ताराचन्दजी | पंचोत्रा परमार | काकीनाड़ा |
| 93. | शा. शांतिलालजी इन्द्रमलजी | श्री श्री वंश परमार | चैन्नई |
| 94 | शा. हीराचन्दजी नवाजी | श्री श्री वंश परमार | पैदापुरम् |
| 95. | शा. पुखराजजी किसनाजी | अंबा परमार | गुंटूर |
| 96. | शा. संपतराजजी सांकलचन्दजी | लाम्ब गौत्र चौहान | नरसापुर |
| 97. | शा. मोहनलालजी सौभागमलजी | अग्नि गौत्र परमार | बेंगलुरु |
| 98. | शा. हस्तीमलजी पीरचन्दजी | भंडारी | गुंटूर |
| 99. | शा. भाँवरलालजी डाहाचन्दजी | श्री श्री वंश परमार | सामलकोट |
| 100. | शा. हीराचन्दजी फूलचन्दजी | अंबा गौत्र चौहान (त्रौणी) | विजयवाड़ा |
| 101. | श्रीमती शांतिबाई बाबूलालजी | पंचाण गौत्र चौहान | चैन्नई |
| 102. | शा.भँवरलालजी सोकलचन्दजी (हकमाजी) | लाम्ब गौत्र चौहान | विजयवाडा |
| 103. | शा. अरविन्दकुमारजी देवीचंदजी | लाम्ब गौत्र चौहान | विशाखपटनम् |

| | | |
|---|---|---|
| 104. शा. नीलेशकुमारजी देवीचन्दजी | लाम्ब गौत्र चौहान | विशाखपटनम् |
| 105. शा. राजेन्द्रकुमारजी रमेशचन्दजी | गोल गौत्र | विशाखपटनम् |
| 106. शा. प्रकाशचंदजी बसन्तीलालजी | मांडवला चौहान | काकीनाडा |
| 107. शा. कांतिलालजी जेठमलजी | भानसाका परमार | नेलुर |
| 108. शा. अभयकुमारजी वरदीचन्दजी | बीलोसा वोरा | विजयपुर |
| 109. शा. अम्बालालजी लालचन्दजी | अंबा गौत्र चौहान (त्रौणी) | सोलापुर |
| 110. शा. पन्नालालजी सरेमलजी | लाम्ब गौत्र चौहान | काकीनाडा |
| 111. शा. विपिनकुमारजी सुखराजजी | काश्यप चौहान | सालमकोट |
| 112. शा. मुकेशकुमारजी वस्तीमलजी | अंबा गौत्र चौहान (त्रौणी) | सालमकोट |
| 113. शा. श्रेणीककुमारजी समरथमलजी | नाग गौत्र चौहान | मुद्देवीहाल |
| 114. शा. अम्बालालजी भबूतमलजी | गोल गौत्र | पीठापुरम् |
| 115. शा. चंपालालजी भबूतमलजी | गोल गौत्र | काकीनाडा |
| 116. शा. भँवरलालजी भबूतमलजी | गोल गौत्र | काकीनाडा |
| 117. शा. शांतिलालजी भबूतमलजी | गोल गौत्र | पिठापुरम् |
| 118. शा. जयन्तीलालजी भबूतमलजी | गोल गौत्र | काकीनाडा |
| 119. शा. प्रवीणकुमारजी स्वरूपचन्दजी | फौलामुथा | चेन्नई |
| 120. शा. पारसमलजी फूलचन्दजी | अंबा गौत्र चौहान (त्रौणी) | काकीनाडा |
| 121. शा. रमेशकुमारजी वस्तीमलजी | अंबा गौत्र चौहान (त्रौणी) | काकीनाडा |
| 122. शा. मोहनलालजी प्रतापचन्दजी | पंचाण गौत्र चौहान | विजयवाडा |
| 123. शा. हीराचन्दजी कपूरचन्दजी | अंबा गौत्र चौहान (त्रौणी) | काकीनाडा |
| 124. शा. मांगीलालजी नथमलजी (दलाजी) | अंबा गौत्र चौहान(त्रौणी) | काकीनाडा |
| 125. शा. रतनचंदजी भगवानजी | श्री श्री वंश परमार | कडपा |
| 126. शा. देवीचंदजी पूनमचंदजी | अंबा गौत्र चौहान (त्रौणी) | विजयपुर |
| 127. शा. फूलचंदजी केसरीमलजी | अग्नि गौत्र परमार | विजयपुर |
| 128. शा. बाबुलालजी चंदाजी | गुजर गौत्र | विजयपुर |
| 129. शा. अजयकुमारजी मांगीलालजी | श्री श्री वंश परमार | विजयपुर |
| 130. शा. रमेशकुमारजी पुखराजजी | गुजर गौत्र | विजयपुर |

# महाशतकोत्सव के रजत-स्तम्भ

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1 | शा. जवाहरलालजी चुन्नीलालजी | श्री श्री वंश परमार | अष्टा |
| 2 | शा. पुखराजजी सांकलचन्दजी | अंबा गौत्र चौहान (त्रौणी) | काकीनाडा |
| 3 | शा. कांतिलालजी अचलाजी | अंबा परमार | राजमहेन्द्री |
| 4 | शा. सुमेरमलजी भबूतमलजी | भंडारी | चैन्नई |
| 5 | शा. सूरजमलजी अमीचन्दजी | पंचाण गौत्र चौहान | सामलकोट |
| 6 | शा. पारसमलजी जेठाजी | बालड | तेनाली |
| 7 | शा. पुखराजजी ताराचन्दजी | पंचाण गौत्र चौहान | राजमहेन्द्री |
| 8 | शा. भानमलजी पुखराजजी | श्री श्री श्रीमाल अग्नि गौत्र | चैन्नई |
| 9 | शा. माणिकचन्दजी चुन्नीलालजी | श्री श्रीवंश परमार | अष्टा |
| 10 | शा. बाबूलालजी सुखराजजी | भंडारी | चैन्नई |
| 11 | शा. खेमराजजी जेठमलजी | अग्नि गौत्र परमार | ऐलुरु |
| 12 | संघवी शा. सरेमलजी जुहारमलजी | कटारिया | बागरा |
| 13 | शा. कांतिलालजी मिश्रीमलजी | भंडारी | विजयवाड़ा |
| 14. | शा. अशोकजी मिश्रीमलजी (नरसींगजी) | भंडारी | बागरा |
| 15. | शा. सुखराजजी फौजमलजी | पंचाण गौत्र चौहान | विजयपुर |
| 16. | शा. नैनमलजी पूनमचन्दजी | कांकरीया | गुंटूर |
| 17. | शा. आदेशकुमारजी नैनमलजी | कांकरीया | गुंटूर |
| 18. | शा. संदीपकुमारजी नैनमलजी | कांकरीया | गुंटूर |
| 19. | शा. कैलाशचन्दजी शंकरलालजी | माण्डवला चौहान | विजयपुर |
| 20. | शा. विनोदकुमारजी शंकरलालजी | माण्डवाला चौहान | मुम्बई |
| 21. | शा. मांगीलालजी मिश्रीमलजी | भंडारी | मुम्बई |
| 22. | शा. मनोहरलालजी सरेमलजी | लाम्ब गौत्र चौहान | काकीनाडा |
| 23. | शा. राजेशकुमारजी ज्ञानमलजी | अंबा गौत्र चौहान (त्रौणी) | काकीनाडा |
| 24. | शा. कीर्ति कुमारजी मीठालालजी | श्री श्री वंश परमार | नरसापुर |
| 25. | शा. सरेमलजी वरदीचन्दजी | माण्डवला चौहान | मुम्बई |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 26. | शा. जयंतिलालजी नथमलजी | फोलामुथा | चैन्नई |
| 27. | शा. प्रकाशचन्दजी वेजराजजी | भंडारी | मैसूर |
| 28. | शा. कांतिलालजी हंजारीमलजी | काश्यप गौत्र चौहान | मुम्बई |
| 29. | श्रीमती शांतिबाई शेषमलजी | भंडारी | बेंगलुरु |
| 30. | शा. सौभागमलजी बैजराजजी | खिवेसरा | चैन्नई |
| 31. | शा. माँगीलालजी सौभागमलजी | खिवेसरा | चैन्नई |
| 32. | शा. कालूचन्दजी रूपाजी | भंडारी | चैन्नई |
| 33. | शा. जोमतराजजी मुलतानमलजी | भंडारी | चैन्नई |
| 34. | शा. रमेशकुमारजी ओटमलजी | अंबा गौत्र चौहान (त्रौणी) | चैन्नई |
| 35. | शा. बिपिनकुमारजी चन्दनमलजी | अंबा गौत्र चौहान (त्रौणी) | चैन्नई |
| 36. | शा. मिश्रीमलजी चुन्नीलालजी | लाम्ब गौत्र चौहान | काकीनाडा |
| 37. | शा. नरेन्द्रकुमारजी अंबालालजी | पंचाण गौत्र चौहान | काकीनाडा |
| 38. | शा. नवीनकुमारजी छगनलालजी | श्री श्री वंश परमार | राजमहेन्द्री |
| 39. | शा. शांतिलालजी फूलचन्दजी | काश्यप गौत्र चौहान | सामलकोट |
| 40. | शा. अंबालालजी चन्दनमलजी | सेठीया | बागरा |
| 41. | शा. भँवरलालजी सोकलचन्दजी तिकमाजी | गौल गौत्र परमार | एलुर |
| 42. | शा. कांतिलालजी भबूतमलजी (भोपाजी) | काश्यप गौत्र तुर | गुंटुर |
| 43. | श्रीमती लीलाबाई कांतीलालजी | गोल गौत्र | एलुर |
| 44. | शा. प्रीतमकुमारजी इन्दरमलजी | पंचोत्रा परमार | एलुर |
| 45. | शा. विनेशकुमारजी इन्दरमलजी | पंचोत्रा परमार | एलुर |
| 46. | शा. थानमलजी वरदीचन्दजी | लाम्ब गौत्र चौहान | एलुर |
| 47. | शा. मीठालालजी रतनचन्दजी | भंडारी | एलुर |
| 48. | शा. महावीरचन्दजी डाहाचन्दजी | श्री श्री वंश परमार | चैन्नई |
| 49. | श्रीमती चंपाबहन देवीचन्दजी | खिवेसरा | विशाखापटनम् |
| 50. | शा. मांगीलालजी वनेचन्दजी | गौल गौत्र | विशाखपटनम् |
| 51. | संघवी कीर्तिकुमारजी बाबुलालजी | खाटेड | विशाखपटनम् |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 52. | शा. प्रकाशचन्दजी हेमराजजी | पंचाण गौत्र चौहान | कड़पा |
| 53. | शा. प्रकाशचन्दजी भगवानजी | पंचाण गौत्र चौहान | गुंटुर |
| 54. | शा. मुकेशकुमारजी नथमलजी | पंचाण गौत्र चौहान | गुंटुर |
| 55. | शा. राजेन्द्रकुमारजी छोगमलजी | लाम्ब गौत्र चौहान | बेंगलुरु |
| 56. | शा. बाबुलालजी ताराचन्दजी | पंचाण गौत्र चौहान | गुंटुर |
| 57. | शा. सुरेशकुमारजी लालचन्दजी | अग्नि गौत्र परमार | विजयवाडा |
| 58. | शा. पुखराजजी ताराचंदजी (गेनाजी) | बावलेछा चौहान | मुम्बई |
| 59. | शा. संजयकुमारजी पुखराजजी | बावलेछा चौहान | मुम्बई |
| 60. | शा. किशोरकुमारजी शांतिलालजी | पंचाण गौत्र चौहान | मुम्बई |
| 61. | श्रीमती कमलाबाई देवीचन्दजी | भंडारी | एलुर |
| 62. | शा. राजेशकुमारजी खेमचन्दजी | अंबा गौत्र चौहान (त्रौणी | राजमहेन्द्री |
| 63. | शा. दिनेशकुमारजी अंबालालजी | श्री श्रीवंश परमार | काकीनाडा |
| 64. | शा. छगनलालजी सोकलचंदजी | अंबा गौत्र चौहान (त्रौणी) | विजयपुर |
| 65. | शा. प्रकाशचंदजी सौभागमलजी | लाम्ब गौत्र चौहान | सिकन्दराबाद |
| 66. | शा. वैजराजजी तीकमचंदजी | लाम्ब गौत्र चौहान | विजयपुर |

## कौन कैसे केवली बना

* 'जहाँ लोहा तहाँ लोहा' शब्द रटते हुए । (कपिल केवली को)
* अशरण भावना का चिंतन करते हुए। (अनाथी मुनि को)
* अनित्य भावना का चिंतन करते हुए। (भरत चक्रवर्ती को)
* संसार भावना का चिंतन करते हुए। (धन्ना अणगार को)
* एकत्व भावना का चिंतन करते हुए। (नमि राजर्षि को)
* अन्यत्व भावना का चिंतन करते हुए। (मृगापुत्र को)
* अशुचि भावना का चिंतन करते हुए। (सनत् कुमार को)
* आश्रव भावना का चिंतन करते हुए। (समुद्रपाल मुनि को)
* संवर भावना का चिंतन करते हुए। (हरिकेशी मुनि को)
* लोक भावना का चिंतन करते हुए । (शिव राजर्षि को)
* दुर्लभ बोधि भावना का चिंतन करते हुए। (ऋषभदेव के 99 पुत्रों को)
* निर्जरा भावना का चिंतन करते हुए। (अर्जुनमाली को)
* धर्म स्वाख्यात भावना का चिंतन करते हुए। (धर्मरूचि अणगार को)
* माँ-रूष तष शब्द रटते हुए । (माषतुष मुनि को)
* शरीर की चमड़ी उतरवाते हुए। (सुकोशल मुनि को)

# विशुद्ध धर्म के प्रचारक भगवान पार्श्वनाथ

*जैन धर्म के 23 वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ ने जिस धर्म का उपदेश दिया, वह न ब्राह्मण धर्म था, न क्षत्रिय धर्म, न वैश्य धर्म, न ही शूद्र धर्म। वह विशुद्ध धर्म था, जो किसी कुल, जाति या वर्ण की परिधि में सिमटा नहीं था। पार्श्वनाथ के जीवन और शिक्षाओं के बारे में बता रहे हैं।*

*- सुभद्र मुनि जी*

भगवान पार्श्वनाथ अज्ञान-अंधकार में क्रांति का बीज बन कर पृथ्वी पर आए, तब तापस परम्परा में वे क्रांति-ज्वाला की तरह ऐसे प्रकट हुए, जैसे वर्षों तप में लीन रहने के बाद सहसा ज्ञान का तीसरा नेत्र खुल जाता है। भगवान पार्श्वनाथ का जीवन एक तापस युग का अंत था तो दूसरे बोद्धिक साधक जीवन का प्रारम्भ। पार्श्वनाथ 23 वें जैन तीर्थंकर थे। इनका जन्म पौष कृष्ण दशमी तिथि को तीर्थंकर महावीर से 250 वर्ष पहले ईसा-पूर्व 9 वीं शताब्दी में हुआ था। पार्श्वनाथ का चिह्न सर्प अथवा नाग का था। व्रात्य क्षत्रियों की नाग जाति की ही शाखा उरंग वंश में इनका जन्म हुआ था। ये भी काश्यप गोत्र के क्षत्रिय थे। काशी देश की नगरी वाराणसी के नरेश अश्वसेन इनके पिता थे। इनकी माता का नाम वामा देवी था। बचपन से ही पार्श्वनाथ चिंतनशील और दयालु थे। पार्श्व युवा हुए। इनका क्षत्रियत्व शौर्यशाली था। सभी विद्याओं में ये प्रवीण थे। एक बार इनके मामा कुशस्थलपुर (कान्यकुब्ज) के नरेश प्रसेनजित पर कालयवन नाम के राजाने आक्रमण कर दिया। तब पार्श्व मामा की सहायता के लिए सेना लेकर वहां पहुंचे। युद्ध हुआ। आक्रामक को इन्होंने परास्त कर, उसे बंदी बना अपने शौर्य का परिचय दिया। पार्श्वनाथ के काल में भी अहिंसा का चित्र विविध क्रियाकलापों से विकृत हो चुका था। साधु-वर्ग भी अहिंसा के विवेक-पथ से भटक कर निर्विवेक हिंसक क्रियाकलापों में संलिप्त हो रहा था। पार्श्वनाथ ने इस अधिकार को दूर कर

अहिंसा का प्रकाश फैलाया । जन सम्मान के साथ-साथ पार्श्व के अंतर में एक नया अंकुर फूटा । उस समय में अनेक व्यक्ति थे, जो धर्म के नाम पर अधर्म का प्रचार कर रहे थे । धर्म तत्व से अनभिज्ञ जनता उनका अनुसरण कर रही थीं । उस समय पार्श्वनाथ ने केवल वाराणसी के जन वर्ग को ही नहीं, पूरे विश्व की जनता को सत्य का संदेश दिया । वे मानते थे कि पहले वे पूर्ण प्रकाश प्राप्त करेंगे, तब जनता को सत्य से परिचित कराएंगे । अन्य तीर्थंकरों की तरह पार्श्वनाथ का जीवन भी स्वच्छ अंतदृष्टि से प्रकाशित था । वैराग्य की इच्छा के वशीभूत पार्श्व एक दिन राज्य संपदा छोड़ कर साधना करने के लिए एकांत वन में चले गए । तीर्थंकर पार्श्वनाथ ने अपने उपासकों को विशुद्ध धर्म का उपदेश दिया । वह न ब्राह्मण धर्म था, न क्षत्रिय धर्म और न वैश्य, न शूद्र । किसी कुल, जाति या वर्ण की परिधि में सिमटा धर्म विश्व के लिए हितकारी नहीं हो सकता। धर्म वह है, जिसमें सभी का उदय हो। धर्म मनुष्य को वर्ग या समाज में नहीं बांटता। यह बिखरे हुए मनुष्य वर्ग को एकत्रित करता है । अहिंसा धर्म में ये सब दोष नहीं होते । अहिंसा सबके जीने का अधिकार है । तीर्थंकरों ने अपने दिव्य ज्ञान चक्षु से अहिंसा को पूरे ब्राह्मांड में व्याप्त देखा। तीर्थंकर पार्श्वनाथ ने भी इसे स्वीकृत किया । यही प्राचीन उद्घोष फिर से करते हुए पार्श्व जनता को संदेश देने लगे- 'सच्चे पाणा पियाउवा, सव्वे दुक्ख पडिकुला' । यानी सबको जीवन प्रिय है, दुख को कोई नहीं चाहता । तीर्थंकर पार्श्वनाथ भी उन धर्म-नायिकों में से ऐसे प्रभात थे, जो धर्म नीतियों का प्रकाश संसार में लेकर आए । लगभग 70 वर्ष तक उन्होंने जनता को आलोकित किया । 100 वर्ष की आयु में एक मास का अनशन करते हुए सम्मेद शिखर पर श्रावण शुक्ल अष्टमी को भगवान पार्श्व ने निर्माण प्राप्त किया ।

## अविस्मरणीय

* उत्कृष्ट तपस्वी पू.आ.श्री यशोभद्रसूरि म.सा. आजीवन 8 कवल का आहार किया था।
* पू.आ. बप्पभट्टीसूरि म.सा. ने 100 दिन तक प्रतिदिन 1000 गाथा कंठस्थ किया था।
* संयम ग्रहण करने के पश्चात् उस दिन से जीवन के अंत तक प्रतिदिन 500 साधु भगवंतों की सेवा-वैयावच्च करने वाले नंदिषेण मुनि थे।
* शासन की अद्भुत प्रभावना करने वाले वस्तुपाल महामंत्री के स्वर्गगमन पश्चात् शासन की रक्षा के लिए पू.आ.श्री वर्धमान सूरि म.सा. ने यावज्जीव आयंबिल तप किया था।
* प्रभुवीर की आठवीं पाट पर पू.आ.श्री सुहस्तिसूरि म. को 12 प्रधान जैसे शिष्यों में से पाँचवें एवं छट्ठे शिष्य पू.आ. सुस्थित सूरि म. एवं पू.आ. प्रतिबद्ध सूरि म.सा. उदयगिरि की पहाड़ी पर क्रोडों बार सूरिमंत्र का जाप किया अतः संघ ने 'कोटिक' गच्छ नाम घोषित किया।

# अभिधान राजेन्द्र कोष के रचयिता
# जैनाचार्य श्रीमद् विजयराजेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा.

(श्री उत्तम जैन डामराणी, हैदराबाद)

महिमा मण्डित बहुरत्ना वसुन्धरा से समलंकृत भारत भूमि की धन्य धरा भरतपुर नगर में विक्रम सं. 1883 की पौष सुद सप्तमी गुरुवार के शुभ दिन श्रेष्ठीवर्य श्री ऋषभदासजी पारेख की भार्या केसरबाई की कुक्षी में एक ऐसे दिव्य नक्षत्र का उदय हुआ, जिसने जिन-शासन की उन महान् विभूतियों में स्थान प्राप्त किया जिन्होंने अपने तप, त्याग और संयम द्वारा राजा, महाराजा, बादशाह और नवाबों को प्रभावित कर जन-उपयोगी कार्य कराने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी।

सैंकड़ों राज्यों में बटे भारत के राजस्थान, गुजरात, मारवाड, मेवाड़, मालवा आदि कई राज्यों-प्रान्तों के ठाकुर नवाबों को राजेन्द्रसूरिजी ने, इस प्रमुख जैनाचार्यों ने पाद विहार द्वारा भारतीय संस्कृति को अजर-अमर बनाने, अपने तपोबल का शंखनाद करते हुए जन चेतना जगाने का महोत्तम उदाहरण प्रस्तुत करते हुए भारतीय जीवन - पद्धति का बहुमान कराया।

श्रीमद् ने अपने बचपन काल में रत्नराज नाम से शिक्षा शुरू करते हुए, अपनी बुद्धिचातुर्य और परख करने की कला से बहुत जल्द की अग्रज माणेकचंद के साथ द्रव्योपार्जन करने की अनुमती प्राप्त कर कलकत्ता, बंगाल होते हुए सिंहल द्विप (श्रीलंका) पहुंचे। जहाँ आप 'रत्नपरीक्षक' के रूप में प्रख्यात हुएं। माता पिता की बिमारी की खबर मिलते ही आप तत्काल अपने घर पधारे और देहावसान तक उनकी भक्तिपूर्वक सेवा करते रहे। आपकी सुषुप्त वैराग्य वृत्ति उस वक्त निखर आई / प्रवज्ज्वलित हुई जब वि. सं. 1945-46 में प्रमोदसूरिजी के प्रवचनों का श्रवण किया ओर अपने अग्रज से सम्मति प्राप्त कर हेम विजयजी के कर कमलों द्वारा उदयपुर में अपनी शिखा पर वासक्षेप प्राप्त करते हुए दीक्षित बने।

विं.सं.1949 में उज्जैन चातुर्मास में खत्तरगच्छिय यति श्री सागरचंद्रजी के सान्निध्य में न्याय, कोश, काव्य, अलंकार इत्यादि का विशेष अभ्यास करते हुए व्याकरण पर अपना प्रभुत्व स्थापित किया। आपके आत्मोत्कर्ष क्षेत्र में तपे हुए मणी के समान सहस्त्र सूर्य-किरण के कीर्तिस्तम्भ से भारतीय दर्शन को प्रोद्‌भाषित करते हुए देखे और विनयादि, विशिष्ठ विशेषताओं के कारण आहोर नगर में श्रीसंघ की सम्मति से प्रमोदसूरिजी ने समारोह पूर्वक सूरिमंत्र देते हुए आपको राजेन्द्रसूरि के नाम से घोषित किया और श्रीसंघ ने भक्तिपूर्वक महोत्सव मनाया। उस वक्त चारों दिशाओं मे एक ही नाम की गूंज राजेन्द्रसूरि के नाम से ध्वनित होती रही। वह वि. सं. 1969 का दिन स्वयं अमर हो गया। आपने गच्छ सुधार निमित्त यति समाज में फैले अन्धविश्वास,

जर्जर और विकृत परंपरा, रूढियों और शिथिलता का निर्मलीकरण कराने हेतु नौसूत्री सुधार योजना प्रस्तुत की, जिसे स्वीकृत कराकर आप सुधारवादी नायक के रूप में स्थापित हुए। आपने संसार वर्धक समस्त उपाधियों का त्याग कर सदाचारी, पंचमहाव्रतधारी जैसे सर्वोत्कृष्ट पद को प्राप्त करने "संपूर्ण क्रियोध्दार" द्वारा सच्चे साधु का अधिग्रहण प्राप्त किया।

सूरि पदवी के पश्चात् आपका पहला चातुर्मास वि.सं. 1969 का खाचरौद नगर में हुआ, इस चातुर्मास की खास विशेषता रही 'सिद्धांत का पुरोद्धार' आत्म शुद्धि हेतु अभिग्रहण परंपरा आपको बहुत की प्रिय थी, अत: आपने अभिग्रह लेने की शुरुआत की, इस अभिग्रह के अंतर्गत आप कभी तीन-चार तो कभी आठ-आठ उपवास, कभी खडे-खडे तो कभी बिना पानी के, इस प्रकार इन अभिग्रहों को उपाश्रयों से लेकर, मोंगी-तुंगी पहाड़ चामुण्डवन जैसे भयावह जंगलों तक ले गये।

इन भयावह जंगलों में आपने अपनी काया को तपाते हुए, अपने मनोबल की स्वयं परीक्षा लेते रहे, वहां रात को शिकारियों, चीतों, भालुओं का भी आक्रमण हुआ मगर आप अडिग रहे।

जानवर आपके पास बैठने लगे, इस ध्यान योग से आपको भूत-भविष्य स्पष्ट दिखाई देने लगा और आपको भूत-भविष्य की घटनाएँ बताने की अपूर्व शक्तियाँ प्राप्त हुई। इस प्रकार साधना से संचित अमूल्य आध्यात्मिक शक्ति का उपयोग चमत्कारों हेतु नहीं किया, आपने इन शक्तियों को प्राप्त करके जिनवाणी पर श्रद्धा रखने का विशेष जोर दिया। जिन शासन में चमत्कारों को कोई स्थान नहीं, ऐसी ब्रह्म घोषणा कर डोरे, धागे, ताविज द्वारा जन मानस को लूला करने वालों को जबरदस्त फटकार लगाई। आपने अपने संयम स्वरुप श्रमण जीवन में कई पाठशालाएँ, सैकडों जीर्ण बने मंदिरों का जिर्णोद्धार करते हुए "मोहन खेडा" जैसे नये तीर्थ की स्थापना की, तो जालोर दुर्ग के मंदिरों में पडे शास्त्रों को हटवाकर, तालनपुर, कोरटाजी जैसे कई तीर्थों का पुनरोद्धार भी किया। आपने अपने जीवन काल में सैकड़ों मंदिरों की प्राण प्रतिष्ठा कराई तो आहोर में एक साथ 951 जिन बिम्बों की अपने कर कमलों द्वारा अंजन शलाकाएँ भी की। यह ऐसा मौका था जब न वाहन थे न रेलगाडियाँ, तो भी इस अजीब प्रसंग को, अपने नयनों से देखने करीबन 50 हजार श्रावक-श्राविकाएँ वहाँ उपस्थित हुए और प्रसंग को ऐसा अजर/अमर बना दिया कि" न भूतो-न भविष्यति" आज तक ऐसा प्रसंग देखने/सुनने को नहीं आया। साहित्य की धुन आपको ऐसी सवार थी कि आपने अपने संयम जीवन में छोटे - बडे कुल 64 ग्रन्थ लिखे। आपकी सबसे बडी, विलक्षण व अनोखी रचना थी "अभिधान राजेन्द्र कोष"।

भारतीय एवं पाश्चात्य जगत के विद्वानों ने अध्ययन, मनन कर स्वयं को कृत-कृत्य करते हुए मुक्त मन से प्रशंसा की और इसे विश्व कोष की उपमा दी, इसे सारे विश्व में समान रूप से सम्मान प्राप्त हुआ। लगभग दस हजार पन्नों में रेखांकित इस सप्तकोषी कोष में 60 हजार शब्दों पर 450 लाख श्लोक संस्कृत-प्राकृत भाषा में सम्पूर्ण अर्थ के साथ रचे गये। उस समय, जब श्रीमद् की वय 60 वर्ष थी तब से शुरु हुआ यह कोष 80 वर्ष की आयु पर्यन्त लगातार अपनी यात्रा की

ओर अग्रसर रहा, इस कोष ने आपको 'विश्वपूज्य' की उपाधि से अलंकृत करवाया, यद्यपि आप निर्मोही, अनासक्त योगी थे, न तो आपको किसी उपाधि, पदवी की आकांक्षा और न यशोपताका फहराने की लालसा, यह तो जनता जनार्दन की आपके प्रति अगाध श्रद्धा, प्रीति और भक्ति का एक मात्र नमूना था।

ऐसे विश्वपूज्य गुरुदेव श्रीमद् राजेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. का जन्मस्वर्गारोहण पौष सुदी सप्तमी के शुभदिन कोटि-वंदन करते हुए दिव्य आशीष की कामना करते हैं कि जिनवाणी को श्रद्धापूर्वक हम अपने जीवन में उतारते हुए उस राह पर चलने की हमें शक्ति प्रदान करावे।

## सूरि राजेन्द्र जग में बेमिसाल ...!

– (श्री उत्तमचन्द डामराणी)

।। कोइ कमी नहीं है तू दर-ऐ-भरतपुर जा कर देख ।।
देंगे तुझे भी दर्शन जयषभ केशरी मंदिर जा कर देख,
अगर 'ऐश' आजमाना है तो आज आजमा कर देख,
पल भर में भर देंगे गुरुदेव झोली, तू झोली फैला कर देख ।।
वो है जग में बेमिसाल मोहन खेड़ा के महाराजा हैं कमाल,
तुझे क्या बतलाऊ सखी, वो कितने हैं। दीनदयाल,
जो सच्चे मन से द्वार गुरुवर के जाता है,
वो मुँह मांगा वरदान जग उपकारी से पाता है।
फिर आये ना खाली हाथ सखी, हो जाए वो मालामाल,
सूरि राजेन्द्र रखते है पल-पल खबर अपने चहेतो की !
दुख-रोग हरते हैं इक पल में अपने सभी भक्तों की,
करे पूरे सभी सवाल सखी, बस मन से तू भरम निकाल।
हर कमी पूरी करें गुरुवर अपने प्यारों की,
लम्बी है उत्तम कहानी इस विरल विभूति के उपकारों की।
देते हैं हर मुसीबत टाल सखी, इस मुख से कहा जाएगा सारा हाल
तुझे क्या बतलाऊं सखी, वो कितने है दीनदयाल !!

# शाश्वत धर्म के संरक्षक

- शा. ओटमल वेलाजी कांकरिया-सुरा निवासी।
- शा. ताराचंद फुटरमल फौजमल, भानाजी वेदमुथा-आहोर निवासी।
- कटारिया संघवी भवरलाल, उगमचंद, वीरेन्द्र कुमार, राजेन्द्रकुमार, आशीष, गौरव पुत्र पौत्र-तोलाजी, धाणसा निवासी (फर्म-मेन्स एवेन्यु-बाई मिलन, बैंगलौर)
- शा. तिलोकचंद, नरसिंगमल, पुखराज, परखचंद, सांवलचंद, पुत्र, पौत्र प्रतापचंदजी सूरत निवासी।
- संघवी मिश्रीमल, हस्तीमल, समरथमल, हीरालाल, शांतिलाल, दिलीपकुमार जैन, पुत्र-पौत्र कन्नाजी कटारिया-जाखल नि.
- नैनावा श्री जैन श्वेताम्बर सकल संघ, गुरूभक्तगण-नैनावा।
- श्री समकितगच्छीय जैन श्वे. संघ-धानेरा।
- स्व. मायाचंद धुलाजी की स्मृति में धर्मपत्नी धापुबाई, सुपुत्र कुशलराज, भ्राता निहालचंद एवं श्रीमती जड़ावबेन कातरेला बोहरा-आहोर निवासी।
- मेहता तेजराज, जयन्तीलाल, राजेन्द्रकुमार, अरविंदकुमार, पुत्र पौत्र रायचंदजी जसराजजी भूती निवासी।
- मोरखिया चंदुलाल, बाबूलाल, रसिकलाल, महेशकुमार, परेशकुमार अल्पेशकुमार, रूपेश कुमार, पुत्र-पौत्र स्व. मौरखिया नानचंद मूलचंद थाई-थराद निवासी।
- स्व. मुणोत रिखबचंदजी की स्मृति में धर्मपत्नी ढेलीबाई सुपुत्र बाबूलाल, सुमेरमल, अशोक कुमार, रमणिया निवासी।
- स्व. रामाणी शेषमलजी की स्मृति में मांगीलाल, फुटरमल, शांतिलाल, किशोरकुमार पुत्र-पौत्र खुशालजी रामाणी, गुडा बालोतान (फर्म-सूर्यलोक ज्वेलर्स, नैल्लोर)
- श्री राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, चैन्नई।
- शा. मोहनलाल, पारसमल, सुरेश कुमार, किशोर कुमार, कमलेश कुमार, अरविन्द कुमार पुत्र, पौत्र साकलचंद जेरूपजी भैंसवाडा नि. फर्म-गोल्डन ज्वेलर्स, नेल्लोर।
- स्व. सुगीबाई धर्मपत्नी अचलजी की स्मृति में पुत्र-कांतिलाल, प्रपोत्र-रमेशकुमार बागरा निवासी।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ चौराऊ।
- श्री श्वेताम्बर जैन संघ, सियाणा।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ, थराद।
- दोशी सोमतमल, गुमानमल, सुखराज सांवलजी हस्ते-गुमानमल सांवलजी चेरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई।
- सुशीला बहन की स्मृति में भीमराज, हिमांश कुमार, श्रेणिक कुमार पुत्र पौत्र बेचरदासजी छाजेड़, नैनावा निवासी हाल मु. सांचोर, राज.
- श्री गोडी पार्श्वनाथ जैन देरासर पेढ़ी, सोनारी, सेरी थराद, प्रतिष्ठा प्रसंगे गुरूभक्तों द्वारा।
- स्व. जेठमलजी खुमाजी की स्मृति में, चंदनमल, कैलाशचंद हंसराज, शीतलकुमार, अश्विन कुमार परिवार, बागरा निवासी (राजस्थान फायनेन्स कॉरपोरेशन काकीनाडा)
- श्री विमलनाथ जैन दोशी दहेरासर, थराद।
- श्री सौधर्म बृहत्तपागच्छ जैन संघ, आनन्द (गुजरात)
- श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक श्री संघ थलवाड (राजस्थान)
- श्री सौधर्म बृहत्तपोगच्छीय जैन संघ जावरा (म.प.)
- श्री सौधर्म बृहत्पोगच्छीय जैन संघ वासणा (गुजरात)
- श्री महाविदेह तीर्थधाम नवागाम, सूरत (गुजरात)
- आहोर निवासी संघवी जुगराज, कांतिलाल, महेन्द्र, सुरेन्द्र, दिलीप, धीरज, संदीप, राज, जैनम पुत्र पौत्र शा. कुन्दनलालजी भुताजी श्रीमाल वर्धमान गोत्रिय परिवार-थाणे (महा.)
- श्री जैन श्वेताम्बर संघ-सामलकोट।
- श्री जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, सूर्यरावपेटा-काकीनाडा (आन्ध्र प्रदेश)
- श्री सिमंधर राजेन्द्र जैन श्वे. मंदिर, मामुलपेट, बेंगलोर।
- श्री मुनिसुव्रत - राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर मंदिर, (एवेन्यु रोड बैंगलोर)

- श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- शा. अनराजजी छोगालालजी बुरड, सांचोरा वाला, फर्म-सोनू स्टील, सिकन्दराबाद, आ.प्र.
- शा. उत्तम, रमेश, हरीश, खुशालचंदजी, गेबाजी डामराणी, मैंगलवा वाला, फर्म पाक्षाल पावर किंग इलेक्ट्रीकल, हैदाराबाद (आ.प्र.)
- श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरिजी जैन ट्रस्ट, गुंटूर
- कोशिलाव निवासी शा. भूनतमलजी, मगराजजी ललवाणी फर्म-पारस एजेन्सीज, हैदराबाद
- बागरा निवासी शा. शेषमलजी, गुलाबचंदजी फर्म जैन एण्ड कं., एलुर
- शा. अम्बालाल, दलीचन्द, बाबूलाल, शांतिलाल, प्रकाशचंद, नैनमल, उत्तमचंद, रमेशकुमार पुत्र पौत्र चमनाजी बुगामवाला-सुरापुर (कर्नाटका)
- शा. शांतिलालजी देवीचंदजी भंडारी, फर्म-स्वस्तिक ट्रेडिंग कं., हैदराबाद (आ.प्र.)
- स्व. कबदी हेमराजजी पूनमचंदजी की स्मृति में पुत्र नरेन्द्रकुमार दिलीपकुमार, पौत्र विनोद, अमीत, जसवंत, लोकेश और हरेश सायला निवासी, फर्म प्लायवुड सेन्टर, विजयवाड़ा
- मातुश्री सजनबाई स्व. श्री राजमलजी वीरचंदजी सेक्रेटरी पुत्र-पौत्र-प्रपौत्र शाह दिलीपकुमार, सचिनकुमार, सर्वेषकुमार, हार्दिक कुमार, रोशनकुमार, समस्त सेक्रेटरी परिवार कुक्षी (म.प्र.) फर्म- पक्षाल प्रोडक्ट, मूनलाईट रिचार्जेबल टॉर्च के निर्माता।
- जैन संघ - लाखणी
- भीनमाल निवासी श्री शोभालालजी भागचंदजी धोकड़ के पुत्र राजेन्द्रकुमार, पौत्र विक्रम, अभिषेक, परेश द्वारा, फर्म गौतम वस्त्र भंडार, गणेश चौक, भीनमाल जालोर (राज.)
- धाणसा निवासी संघवी स्व. सुखराजजी पिताजी की स्मृति में धर्मपत्नि-शांतिदेवी, पुत्र-सुमेरमल, अशोककुमार श्रीपाल, संजय, आकाश, अमृत
- कटारिया परिवार, फर्म शा. सुखराज पिताजी, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- सौधर्मवृहद तपोगच्छीय जैन श्वे. त्रि. श्री जैन संघ दाधाल
- आहोर निवासी संघवी मोहनलाल, तेजराज, प्रवीणकुमार, यतीन्द्र, राजेन्द्र, आशीष पुत्र-पौत्र वक्तावरमलजी हीराचन्दजी कुहाड़ परिवार आहोर नि. फर्म-राजेन्द्र पेपर्स, बैंगलौर
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. दरजमलजी, स्व. उकचन्दजी, स्व. हस्तीमलजी, स्व. तगराजजी की स्मृति में : हिराणी परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. शा. भारतमलजी भगाजी एवं धर्मपत्नी पातीबाई, पुत्र-मांगीलाल, गणपतराज, रमेशकुमार, कैलाशकुमार एवं समस्त संघवी वेदमुथा परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी संघवी पारसमल, नेमीचन्द, जितेन्द्र, संजय, रितेश, वेदमुथा परिवार
- थराद निवासी थरू फूलचंद, पानाचंद परिवार द्वारा आचार्यश्री जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. के चातुर्मास निमित्त
- स्व. मुनिराज श्री हरिशचंद्रविजयजी म.सा. की पुण्य स्मृति में आहोर नि. मुकेशकुमार गौतम गुलेच्छा, पुत्र पौत्र मोहनलालजी हिम्मतलालजी
  फर्म-अरविन्द टेक्सटाईल, राजमुद्री
- रेवतड़ा निवासी संघवी सोकलचंद, कानराज, अशोककुमार, अरविन्दकुमार, चन्द्रकान्त, अखिलकुमार पुत्र-पौत्र शा. इन्द्रमलजी भगाजी परिवार
  फर्म:शा. इन्द्रमलजी सुखराजजी, बैंगलोर
- उज्जैन निवासी शा. श्री चांदमलजी, नवीनकुमार, मुकेशकुमार, अंकितकुमार पुत्र-पौत्र श्री सेवारामजी बाफणा परिवार
- यतीन्द्र भवन जैन धर्मशाला-पालिताणा
- स्व. मातुश्री अमीयाबाई एवं स्व. भाई ओटमलजी की स्मृति में पुत्रवधु प्रसन्नदेवी पुत्र हेमराज पौत्र रोहित, मितेश चत्तरगोत्रा हस्तीमलजी धनाजी परिवार चौराऊ निवासी फर्म-पद्मावती मार्केटिंग-बेंगलौर (कर्नाटक)
- श्री सौधर्म वृहद तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ, सूरत

भारत सरकार पंजीयन क्रमांक 13067/57
Regd. News Paper Under Regn. No. CPMG KA/BG (S) 2005/2006-08
एल/RNP/MP/MANDSAUR/113/15-17
Posting Date at Mandsour on 3rd Day of Every Month.

वर्ष 64 अंक-9 सितम्बर 2016 मूल्य रु. 20/- कुल पृष्ठ कवर सहित - 296

पूज्य गच्छाधिपति राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा.

## हार्दिक अभिनन्दन
## तथा कोटि-कोटि वंदनाएँ

श्री सौधर्मबृहत्तपोगच्छीय जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक त्रिस्तुतिक संघ, बागरा (राज.)
पोस्ट-बागरा-343025, जिला-जालोर (राज.)
दूरभाष-02971-254209 • E-mail : bagra100years@gmail.com